श्री डा. जीवनाथ ओझा द्वारा प्रवर्तित एवं रामेश्वरनाथ ओझा श्रीमती कान्ति ओझा, श्रेयांश ओझा द्वारा सम्पादित श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम् देखकर ही खरीदें।

विवाहे पञ्चशलाका चक्रम्

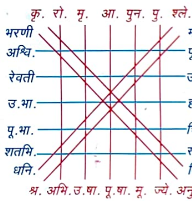

वधू प्रवेशनेदाने वरणे पाणिपीडने।
वेध: पञ्चशलाकाख्योऽन्यत्रसप्तशलाकक:।।

अथ ग्रहाणां चतुर्विध सम्बन्धमाह।

प्रथम: स्थानसम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयक: तृतीय: सत्येकतोदृष्टि: स्थित्येकत्र चतुर्थक:।।१।।

अन्योन्यगौ तथा स्वे स्वेसंयुतावन्यभेस्थिति:। पूर्णेक्षितौ मिथे वापि चैक वर्ग गतौ यदा।।२।।

अथ ग्रहाणां फल विचारे विशेषमाह उच्च त्रिकोण स्वसुहृच्छत्रु नीच गृहांकगै: शुभं सम्पूर्णपादेन दलं पादाल्प निष्फलमिति।

बाण पंचकम्। (रवि गतांशा)

व्रतेत्याज्य: रोग: ८, १७, २६

अनलोऽयंगृह स्याच्छादने त्याज्य: सशल्य: २, ११, २०, २९

नृपसेवायां नृप: ४, १३, २२

यात्रायांत्याज्य: चौर: ६, १५, २४

विवाहेत्याज्य: मृत्यु: १, १०, १९, २८

।।ॐ।।
श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्

राजा-सूर्य:

।श्री।
काशी का शुद्ध पञ्चाङ्ग

।।ॐ।।
श्री विश्वनाथाय नम:

मंत्री-सूर्य:

अथ ग्रहाणामरिष्टं परिहरत्वमत्राह

राहु: दोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चर:। त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्ण्णां दानवार्चित:।।१।।

पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमा। सप्तदोषं रविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे।।२।।

अथ स्थान विशेषेण ग्रहाणां विफलत्वमाह- सभानुरिन्दु: शशिजश्चतुर्थे गुरु: सुते भूमिसुत: कुटुम्बे।।भृगु: सपत्ने रविज: कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्तीति।।३।।

विवाहादन्यत्र सप्तशलाका चक्रम्।

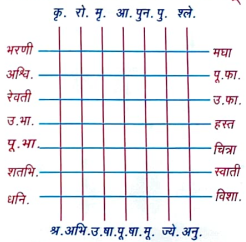

चक्रे सप्तशलाकाख्ये सवेध: सर्वकर्मसु। चिन्तनीयो विवाहे तु पञ्चरेखासमुद्भव:।।

श्री संवत् २०८२, शाके १९४७, बंगला सन् १४३१ मेषार्कत: १४३२, ईसवीय सन् २०२५-२०२६, फसली सन् १४३२-१४३३, हिजरी सन् १४४६-१४४७, गतकलि: ५१२६, वर्ष विश्वा १२ समताकरम्।

अकूपारं तीर्त्वा जनकतनयापादकमले।
प्रणम्याथो लंकामनयतसलीलं मलिनताम्।।
कृते यो रामस्य प्रथितचरितं कल्मषहरम्।
सदाऽहं तं वन्दे पवनतनयं भक्त परमम्।।

श्रीसंवत् २०८२, शाके १९४७ वर्षे समय-शुद्धि:

खरमास:-	वर्षारम्भात्- वैशाख कृष्ण १ रवित: (१३.४.२०२५) यावत्।
गुरु:	वर्षारम्भे वृष राशौ, ज्येष्ठ कृष्ण ३ गुरुत: (१५.५.२०२५) मिथुन राशौ, ज्येष्ठ शुक्ल १५ बुधत: (११.६.२०२५) पश्चिमास्त:। आषाढ़ शुक्ल १२ सोमत: (७.७.२०२५) पूर्वोदय:। मार्गशीर्ष कृष्ण ७ भौमत: (११.११.२५) वक्री, चैत्र कृष्ण ७ भौमत: (७.३.२६) मार्गी।
शुक्र:	पौष कृष्ण ७ गुरुत: (११.१२.२०२५) पूर्वास्त:, माघ शुक्ल १५ रवित: (१.२.२०२६) पश्चिमोदय:।
शनि:	वर्षारम्भात् (३०.३.२०२५) मीन राशौ वर्ष पर्यन्तम्। श्रावण कृष्ण २ शनित: (१२.७.२०२५) वक्री, मार्गशीर्ष शुक्ल ७ गुरुत: (२७.११.२०२५) मार्गी।
राहु:-	वर्षारम्भे मीन राशौ, ज्येष्ठ कृष्ण ३ गुरुत: (१५.५.२०२५) कुम्भ राशौ वर्षपर्यन्तम्।
केतु:-	वर्षारम्भे कन्या राशौ, ज्येष्ठ कृष्ण ३ गुरुत: (१५.५.२०२५) सिंह राशौ।
पौराणिक-	ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरुत: (२२.५.२०२५) अगस्त्यास्त:। आश्विन कृष्ण १ सोमत: (८.९.२०२५) अगस्त्योदय:।
खरमास:	धनु-मीन राशिगते सूर्ये खरमास:।
विवाह:	वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष शुक्ल, पौष कृष्ण, फाल्गुन, चैत्र कृष्ण पक्षे।

वर्ष लग्नम्

४।२४।२४।१४

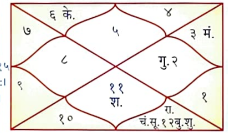

आर्द्रादौ भूमादौ वर्षाढक

आर्द्रा.	पुनर्व.	पुष्य	श्लेषा	मघा
२।।	२।।	२	१।।	२।।
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
१।।	१।।	१।।	१	१

आषाढे, ३, श्रावणे ४, भाद्रपदे ४, आश्विने १, कार्तिके, अन्येषु मासेषु साधारण वृष्टि:।

विन्ध्योत्तरवासिनांविशोंत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय:	योग:
१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	आय:	१२३
११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२	व्यय:	७५

विन्ध्यदक्षिणवासिनामष्टोत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय:	योग
२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५	आय:	९९
१४	५	२	२	११	२	५	१४	५	१४	१४	५	व्यय:	९३

अनेन चक्रेण विशेष विचार:- लाभव्ययौ समौकृत्वा एक हीनं तु कारयेत्। अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्।। लाभं१, सौख्यं २, क्लेश ३, रोगं ४, लोकापवादनं ५, सम्मानम् ६, विजयं ७, हानि: ८, कथितं पूर्व सुरभि:।। अथवा उभय लाभैक्यं लाभ:।। व्ययैक्यंञ्च व्यय इति। विभागे यत्र लाभेक्यमधिकं तत्र शुभम्। काश्यां पलभा ५।४५ आक्षांशा: २५।१८ चरखण्डा ५७।४६।१९, देशान्तर स्पष्ट घट्यादि: १।९

धर्मो रक्षति रक्षित: — **श्रीकाशीस्थधर्मसभासदांसम्मतम् - २०८२** — सत्यान्नास्ति परोधर्म:

वर्षारम्भे 'कालयुक्त' नाम संवत्सर: संकल्पादौ वर्षपर्यन्तम् योजनीयम्

श्री डॉ.जीवनाथ ओझा, एम.ए.गणित पीएच.डी. विद्यावारिधि ज्योतिषशास्त्राचार्येण प्रवर्तितम्

प्रधानसम्पादक
रामेश्वरनाथ ओझा एम.ए. ज्योतिषशास्त्राचार्य
सम्पादिका
श्रीमती कान्ति ओझा एम.एससी. गणित, ज्योतिषी
सहायक सम्पादक- श्रेयांश ओझा
कार्यालय श्री महावीर पञ्चाङ्गम्
बी.३७/१८२-क, खन्ना वाटिका, बिरदोपुर, वाराणसी। मो.९४५१५२८८३४
सलाहकार- डॉ.सुरेन्द्रनाथ ओझा पूर्व प्रोफे. राजकीय आयुर्वेदिक कालेज सं.सं.वि.वि. वाराणसी।
अजगरा (तारगाँव) चन्दौली, वाराणसी।

अग्रिम वर्षे चैत्र शुक्ल १ गुरुत: 'सिद्धार्थ' नाम संवत्सर: प्रवेक्ष्यति।

जगल्लग्नम्

११।२५।३३।३६

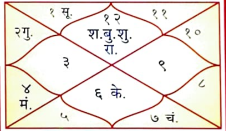

जन्मलग्नाज्जगल्लग्न फलम्

१ देह सुखम्	७ स्त्री
२ धन लाभ:	८ रोगभयम्
३ कुटुम्ब वृद्धि:	९ धर्म लाभ:
४ मित्र सुखम्	१० पुत्रप्राप्ति:
५ पुत्र प्राप्ति:	११ लाभ:सुखम्
६ शत्रु जय:	१२ व्यय कष्टम्

मूल्य- 85/-
विदेश में $ 6/-

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मुख्य पृष्ठ	१	दैनिक तेजी मन्दी	४०
समय शुद्धि	१	विभिन्न मन्त्र	४०
संवत्सरावली	२	पल्ली पतन फल	४०
वर्षफल	२	वास्तु शास्त्र चक्रावली	४१
राशिफल	३	यात्रा विचार	४२
मासफल	४	शिववास चक्र	४३
ग्रहण	४	ग्रहगोचर फल	४३
शनि की साढ़ेसाती	४	रेखाष्टक सारिणी	४३
पञ्चांग देखने की रीति	५	अक्षांश-देशान्तर एवं काशी की लग्न सारिणी	४४
मुहूर्त्त सूची	५-६	दशमलग्न सारिणी एवं विंशोत्तरी महादशा चक्रम	४५
मधुमेह रोग एवं उसकी चिकित्सा-व्यवस्था	७	योगिनी दशाचक्र	४५
पञ्चांग परिचय	७	ग्रहों का उच्च-नीच-मूल त्रिकोण, अङ्ग स्फुरण तिथि वार, योग इत्यादि	४६
होड़ा चक्र एवं मेलापक विचार	८	धर्मशास्त्रम्	४७
गुणमेलापक चक्र, ग्रह-गोचर मंत्र, रत्नधारण	९	संक्षिप्त पूजन विधि	४८
मुहूर्तबोधक चक्रावली	१०-११	संदिग्ध व्रत पर्व निर्णय	४८
कुण्डलीका भाव फल नष्टवस्तु ज्ञान चक्र	१२	भारतीय व्रत पर्व	४८
पक्ष १२ माह का	१३-३६		
सरलसंध्या, तर्पर्ण-विशिष्ट योगावली	३७-३८		
प्रसुति लग्न विचार राहुकाल	३८-३९		
सामान्य योग विचार	३९		

सर्वाधिकार प्रधान सम्पादक के अधीन

श्री पंडित ऋषिकेश पाण्डेयेन विरचितम्

प्रकाशक- ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर वाराणसी।

श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्

प्रवर्तक एवं आद्यसम्पादक
स्व.डॉ.जीवनाथ ओझा
एम.ए.गणित, ज्योतिषशास्त्राचार्य
विद्यावारिधि पीएच.डी.

विद्वत्सुपूज्यः कमनीयकीर्तिः। ज्योतिर्विदां यो गणिते च दक्षः।।
पञ्चांग निर्माण विधौ प्रशस्तः। तं जीवनाथं पितरं नमामि।।१।।
वाराणसी मण्डलमध्यवर्ती। ग्रामः सुधन्यो भुवि तारगाँवः।।
लब्धा च येनात्र जनिः पवित्रा। प्रीतिर्भवेत्तस्य सुपादपद्मे।।२।।
दूरीकृतस्तेन घनाऽन्धाकरः। शिक्षाप्रचारेण सदानराणाम्।।
सर्वं स्वकार्यं हनुत्प्रसादात्। संसाधितं तं प्रणमामि नित्यं।।३।।

दो शब्द

विगत ८२ वर्षों से प्रस्तुत **श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्** आपकी सेवा में अनवरत् प्रकाशित हो रहा है। अनन्त श्रीविभूषित स्वामी करपात्री जी ने सन् १९४३ में दिल्ली के यमुना तट पर एक यज्ञ का आयोजन किया था, उसी अवसर पर हमारे पूज्य पिता स्व०पण्डित जीवनाथ ओझा ने उनका दर्शन कर पञ्चाङ्ग निर्माण-प्रकाशन की अपनी अभिलाषा बताई तब श्रद्धेय स्वामी करपात्रीजी ने हनुमत् आराधना के लिए 'अकूपारं तीर्त्वा जनकतनया पादकमले......' श्लोक दिया तथा अपनी सम्मति एवं आशीर्वाद इस पञ्चाङ्ग के निमित्त प्रदान किया। तब से अद्यतन् यह पञ्चाङ्ग आपके सम्मुख है।

आप कृपालु पाठकों के स्नेह एवं सहयोग का ही परिणाम है कि आज काशी का यह प्राचीन एवं लोकप्रिय पञ्चाङ्ग भारत ही नहीं अपितु विदेशों में रहने वाले भारतीय बन्धुओं में भी सर्वथा प्रचलित है।

पञ्चाङ्गापेक्षित परामर्श, सुझाव का हम सदैव आदर करते हैं, अतः अपना अमूल्य सुझाव और सम्मत्ति भेजते रहें, इससे हमारा उत्साह बढ़ेगा। यद्यपि कि पूरा प्रयास किया जाता है कि कहीं कोई त्रुटि न रह जाये किन्तु दृष्टि में न आने के कारण यदि कोई छूट हो जाती है तो आप विद्वत्जनो से निवेदन है कि सहयोग करें।

पुनश्च—यदि पञ्चाङ्ग में छपाई से सम्बन्धित कोई त्रुटि हो जैसे पक्ष उल्टा लगा हो या ना लगा हो या छपाई से सम्बन्धित और कमी हो तो कृपया 9369516832 पर संपर्क कर अपना नाम, पता लिखवा दें। आपकी शिकायत दूर की जायेगी।

कृपाकांक्षी
रामेश्वरनाथ ओझा
श्रीमती कान्ति ओझा
9451528834

श्रीमंगलमूर्त्तयेनमः

काशीशं गणनायकं सुरगुरुं देवीं तथा श्रीपतिम्।
स्तुत्वावायुसुतं सभक्ति मनसा ध्यात्वा च नत्वा गुरुम्।।
स्वर्गीयं पितरं नमामि विबुधं श्रीजीवनाथं हि तम्।
नित्यं लोकहिताय यस्य कृपया पञ्चाङ्गमातन्यते।।

संवत्सरावली

सतयुग का मान	-	१७,२८००० वर्षाणि
त्रेतायुग का मान	-	१२,९६,००० वर्षाणि
द्वापरयुग का मान	-	८,६४,००० वर्षाणि
कलियुग का मान	-	४,३२,००० वर्षाणि

इस वर्ष कल्पारम्भ से १९५५८८५१२६ वर्ष कलियुग के आरम्भ काल से ५१२६ वर्ष, श्रीविक्रमादित्य के सिंहासनारोहण काल से २०८२ वर्ष एवं शकारम्भ से १९४७ वर्ष व्यतीत हुए। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ३० मार्च रविवार को सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण = ७१४४८४१६५०३५ + ३५५ = ७१४४८४१६५३९० एवं ग्रहलाघवीय अहर्गण ३७२९ तथा गत चक्र ४५ तदुपरि ४६ है। वर्षारम्भ से **कालयुक्त** नामक संवत्सर चलेगा, जो संकल्पादि में वर्षभर प्रयोग किया जायेगा। अगले संवत्सर में **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से सिद्धार्थ** नामक संवत्सर का प्रयोग प्रारम्भ होगा।

५२वाँ 'कालयुक्त' संवत्सर— **प्रजानां जायते रोगः कालयुक्ते विशेषतः।**
राजयुद्धं भवेद घोरं प्रजानाशो वरानने।।

शिवजी कहते हैं कि हे वरानने! कालयुक्त संवत्सर में जनता को रोग, राजाओं में भयंकर युद्ध तथा प्रजा का नाश होगा।

५३वां 'सिद्धार्थ' संवत्सर— **तोयपूर्णो भवेन्मेघो बहुसस्या वसुन्धरा।**
सुखिनः पार्थिवाः सर्वे सिद्धार्थे श्रृणु सुन्दरी।।

शिवजी पार्वती जी से कहते हैं कि सिद्धार्थ संवत्सर में मेघ जल से पूर्ण रहेंगे, पृथ्वी सस्ययुक्त रहेगी। अन्न का उत्पादन अधिक होगा। इस संवत्सर में राजा लोग सुखी रहेंगे।

ग्रह सभासद विचार— **चैत्रादिमेषादिकुलीरतौली मृगादिवाराधिपतिक्रमेण।**
राजा च मन्त्री ह्यथ सस्यनाथो रसाधिपो नीरसनायकश्च।।
आर्द्रादिनाथो घननायकश्च धान्याधिपश्चापदिनादिवारः।।

राजा सूर्य फलम्

सूर्ये नृपे स्वल्पजलाश्च मेघा स्वल्पं धान्यमल्पफलाश्चवृक्षाः।
स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम्।।

इस संवत्सर में राजा का पद सूर्यदेव को मिला है जिसके फल में अल्प वर्षा होगी, अन्न तथा फल का उत्पादन कम, गायें अल्प दूध देने वाली, जनता को पीड़ा, चोर तथा अग्नि का भय तथा राजाओं (शासक वर्ग) का मरण होगा।

मंत्री सूर्य फलम्

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनानिमहीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः।।

मन्त्री भी सूर्यदेव ही हैं जिसके फल में जनता को राजा, रोग तथा चोरों से भय, पृथ्वी पर प्रचुर अन्न का उत्पादन तथा रसपदार्थ सस्ते होंगे।

सस्येश बुध फलम्— **जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरूपद्रवम्।**
द्विजगणः स्तुतिपाठकरः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने।।

बुध के सस्येश होने के फलस्वरूप मेघ अधिक वर्षा करने वाले, जनता सुख-समृद्धि से युक्त, उपद्रव रहित, द्विज लोग शान्तिपूर्वक पूजा-पाठ करने में तत्पर रहेंगे।

दुर्गेश सूर्य फलम्— **नयविशेषकरस्तरणिस्तदा गतभया नरराजपुरोगमाः।**
समधिकेन तदा नृपतोन्यतः पथिषु संव्रजतां न भयं क्वचित्।।

यदि सूर्य दुर्गेश हों तो शासक लोग अधिक नीति सम्पन्न व्यवहार करने वाले, राजा-प्रजा निर्भय, शासन की सुव्यवस्था के कारण पथिकों को कोई भय उत्पन्न नहीं होगा।

धनेश बुध फलम्— **द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविधसंग्रहवस्तुफला तदा।**
द्विजवरा जपयज्ञसुसंयुताः कृषि विशेष विशेषित मानसाः।।

बुध ही धनेश भी है जिसके फल में लोग विविध वस्तुओं का संग्रह करेगें, विप्रवर्ग जप-यज्ञ में तल्लीन होगा तथा लोग (जनता) कृषि पर विशेष ध्यान देंगे।

रसेश शुक्र फलम्— **भृगुसुते रसनायकतां गते जनपदा जलतोषितमानसाः।**
सुखसुभिक्षप्रमोदवती धरा धरणिपा नरपालनतत्पराः।।

यदि रसेश शुक्र हो तो अच्छी वृष्टि से जनता प्रसन्न, सुख-समृद्धि सम्पन्न तथा शासक लोग जनता के पालन में तत्पर रहेंगे।

धान्येश मंगल फलम्- **गोधूमसर्षपा मुदगतिलभाषप्रवालकाः।**
महर्घं जायते घोरं भौमे धान्याधिपे सति।।

धान्येश मंगल के फल में गेहूँ, सरसों, मूँग, तिल, उड़द तथा मूँगा के भाव में महँगी होगी।

नीरसेश बुध फलम्— **चित्रवस्त्रादिकं चैव शंखचन्दनपूर्वकम्।**
अर्धवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि।।

बुध ही नीरसेश भी हैं जिसके फल में चित्रवस्त्र, शंख तथा चन्दन का मूल्य महँगा होगा।

फलेश शनि फलम्— **यदि शनि फलपः कलहो भवेज्जनित पुष्पगणास्तरवः सदा।**
द्विजभयं नरतस्कररजं तदा जनपदा जनराशिसमाकुला।।

यदि शनि फलेश हो तो फल-पुष्प तथा वृक्षों के लिये लड़ाई-झगड़े, मनुष्यों तथा चोरों से द्विजाति को कष्ट, जनपदों में जनसमूह व्याकुल रहेगा।

मेघेश सूर्य फलम्— **रवौ मेघाधिपे जाते स्वल्पतोयप्रदा घनाः। स्वल्पं धान्यं भवेल्लोके भयं च भूतले सदा।।** सूर्य के मेघेश होने के फलस्वरूप मेघ अल्प वर्षा करने वाले होंगे। अन्न का उत्पादन स्वल्प होगा तथा संसार में भय व्याप्त रहेगा।

रोहिणी वास फलम्— **समुद्रे तु महावृष्टि।** रोहिणी निवास समुद्र में होने से अधिक वर्षा के योग बन रहे हैं।

संवत्सर वास फलम्— **सर्व वस्तुसमर्घं स्यान्मालाकारगृहेऽब्दके।** संवत्सर का निवास माली के घर में होने से सभी वस्तुएँ सस्ती होगी हैं। *समय वाहन फलम्—* **गजारूढो वत्सरश्च सुभिक्षं च प्रजासुखम्। वर्षाकाले सुवृष्टिश्च सुखिनः सर्वजन्तवः।।** इस वर्ष समय का वाहन हाथी होने से सुभिक्ष तथा जनता को सुख होगा। वर्षाॠतु में अच्छी वर्षा होगी। सभी जीव सुखी रहेंगे। *आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश फलम्—तिथि फलम्—* **द्वादश्यां शुभदः प्रोक्तं।** द्वादशी तिथि में आर्द्रा प्रवेश शुभदायक होगा। *वारफलम्—* **रौद्रऽर्के भानुवारे स्यातप्रवेशे पशुनाशनम्।** सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश रविवार को हो रहा है। जो पशुओं का नाश करने वाला होगा। *नक्षत्रफलम्—* **भरण्यामशुभं प्रोक्तं-** भरणी नक्षत्र में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश अशुभ होगा। *योगफलम्—* **सुकर्म नामयोगके यदीशभ रविर्व्रजेत। तदा समस्त भूसुराः सुकर्म कर्तुयुद्यताः।।** सुकर्मा योग में आर्द्रा का प्रवेश होने से सम्पूर्ण ब्राह्मण लोग अच्छे कामों के करने में उद्यत रहेंगे। *बेलाफलम्-* **मध्यं दिने स्वल्प फला च पृथ्वी।** आर्द्रा नक्षत्र का प्रवेश मध्यान्ह काल में हो रहा है। अतः इस वर्ष फलों का उत्पादन मध्यम अर्थात् सामान्य होगा। *नवमेघानां—* **स्यान्नीलः क्षिप्रं तु वर्षति-** नील नामक मेघ में शीघ्र वर्षा का योग है। *चतुर्मेघानां—* **संवर्तो जलपूरितः-** संवर्त नामक मेघ होने से जल से पूर्ण होने का योग है।

वर्षा विचार

मानसून पूर्व १५ से २२ जून के मध्य वर्षा होने की सम्भावना बन रही है। तत्पश्चात् २२ जून से आर्द्रा नक्षत्र का प्रवेश जल राशि के लग्न में हो रहा है तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि भी पड़ रही है। अतः आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा होने के योग मिल रहे है। जुलाई के प्रथम सप्ताह में अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना है। ६ जुलाई को पुनर्वसु नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश भी जल लग्न में हो रहा तथा उस पर शुभग्रहों की दृष्टि होने से अच्छी वृष्टि की सम्भावना हैं। २० जुलाई को पुष्य नक्षत्र में सामान्य से लेकर अच्छी वर्षा होगी। जुलाई के अन्तिम सप्ताह में भी वृष्टि होने की सम्भावना अच्छी है। ३ अगस्त को श्लेषा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश एवं उसकी परिस्थितियों के अनुसार अच्छी वर्षा होगी। १८ अगस्त को मघा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश भी वृष्टिकारक है। अगस्त के अन्त में भी अच्छी वर्षा होगी। ३१ अगस्त को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में सामान्य वृष्टि होगी। सितम्बर के द्वितीय सप्ताह में वर्षा होने की सम्भावना है। उ.फा. नक्षत्र का सूर्य १३ सितम्बर को आयेगा। इसमें प्रवेश के समय तो सामान्य वृष्टि ही होगी। किन्तु बाद में अच्छी वृष्टि होगी। २७ सितम्बर हस्त नक्षत्र के सूर्य में भी सामान्य से लेकर अच्छी वृष्टि होगी। शेष चित्रा तथा स्वाती नक्षत्र में सामान्य वृष्टि ही होगी।

वर्ष फलम्

तीक्ष्णं तपत्यदितिजः शिशिरेऽपि काले नात्यम्बुदा जलमुचोऽचनसन्निकाशाः।
नष्टप्रभर्क्षगणशीतकरं नभश्च सीदन्ति तापसकुलानि सगोकुलानि।।
हस्त्यश्वपत्तिमदसह्यबलैरूपेता बाणासनासिमुशलातिशयाश्चरन्ति।
घ्नन्तो नृपा शुधि नृपानुचरैश्चदेशान् संवत्सरे दिनकरस्य दिनेऽथ मासे।।
तीक्ष्णोऽर्कः स्वल्पसस्यश्च गतमेघोऽतितस्करः।
बहूरगव्याधिगणो भास्कराब्दो रणाकुलः।।

'कालयुक्त' नामक नवसंवत्सर २०८२, रविवार ३० मार्च २०२५ ई. से प्रारम्भ हो रहा है। भारतीय सनातन पद्धति में धार्मिक कृत्यों एवं व्रत पर्वों का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और यह ज्योतिष शास्त्र द्वारा संचालित होता है। ज्योतिष शास्त्र भी वेद का एक अंग है इसे वेद का नेत्र कहा गया है। यह काल निर्धारक है और काल विधेयक भी। हर संवत्सर को संचालित करने के लिये ग्रह सभासदों की एक समिति बनायी जाती है जिसे **आकाशीय मन्त्रिपरिषद्** कहते हैं। इसमें कुल दस विभाग होते हैं। इस संवत्सर के मन्त्री परिषद् के पीठासीन अधिकारी अथवा **राजा ग्रहराज सूर्य** को बनाया गया है। चूँकि **मेष संक्रान्ति** भी रविवार के ही दिन लग रही है। अतः मन्त्री अथवा सचिव का पद भी सूर्यदेव को प्राप्त हो गया। राजा और मन्त्री दोनों महत्त्वपूर्ण पदों पर महातेजस्वी सूर्य ग्रह ही विद्यमान हैं। कुल १० विभागों में से ६ विभाग पाप ग्रहों के अधीन हैं तथा ४ विभाग ही शुभ ग्रहों के पास हैं। इस प्रकार आकाशीय मन्त्रि परिषद में पापग्रहों का ही बहुमत है, परिस्थितियाँ परिणाम की स्वयमेय ही सूचक है। सूर्य के राजा होने के फलस्वरूप पृथ्वी पर सर्वत्र फसलों का उत्पादन कम होगा। मनुष्यों एवं पशुओं तथा जंगली जानवरों को भी भोजन जुटाने के लिये कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। नदियाँ-सरोवर झील-तलाब सभी सूखने के कगार पर पहुँच जायेंगे। देश की प्रमुख नदियाँ भी पानी के अभाव में क्षीण दिखायी देंगी। औषधियाँ वनस्पतियाँ तथा काष्ठ औषधियाँ अपना पूरा असर चिकित्सा में नहीं कर पायेंगी। शीतकाल में भी सूर्य की किरणें तीक्ष्ण रहेंगी। बड़े-बड़े पर्वताकार बादल उमड़-घुमड़ कर आयेंगे किन्तु जल बरसाये बिना ही चले जायेंगे। चन्द्रमा और तारों की आभा मद्धिम जान पड़ेगी। साधु-सन्यासी, तपस्वी और धार्मिक आस्था से जुड़े लोगों को किन्हीं बातों से कष्ट पहुँचेगा। गायों एवं दुधारू पशुओं को भी पीड़ा पहुँचेगी। आधुनिक अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित सेना हर प्रकार से समर्थ रहते हुए भी तथा शासक वर्ग की प्रबल इच्छा के बावजूद हिंसा, उग्रवाद, तोड़फोड़ एवं पड़ोसी देशों के शत्रुओं के षडयन्त्र से पूर्ण सुरक्षित नहीं कर पायेंगी। फलस्वरूप आतंकी हमला से देश को क्षति पहुँचेगी। आतंकवादियों द्वारा अत्यन्त घातक अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग कर हमको भीषण क्षति पहुँचाने का कुत्सित प्रयास किया जायेगा। रासायनिक एवं विषैली गैसों का प्रयोग पड़ोसी शत्रुओं एवं आतंकवादियों द्वारा किया जा सकता है। पड़ोसी देश से युद्ध जैसी स्थिति बन जाने की सम्भावना है। देश को इस वर्ष एक साथ आन्तरिक एवं बाहरी दोनों प्रकार के शत्रुओं, रोग, तस्करी, अग्निकाण्ड, विस्फोट जैसी हिंसक घटनाओं से जूझना पड़ेगा। विस्फोट एवं अग्निकाण्ड की कई घटनायें घटेंगी। राजा सूर्य और मन्त्री भी सूर्य हैं। अतः सृष्टि के शासन संचालन में कोई विरोधाभास नहीं रहेगा। सिंह लग्न में इस संवत्सर का प्रवेश हो रहा है। जिसका फलप्रायः शुभफलकारक ही है। प्रायः आकाश में बादल दिखाई देते रहेंगे। धातुओं जैसे सोना-चाँदी ताँबा पीतल तथा लोहा का भाव तेज चलेगा। उत्तर भारत में अच्छी वृष्टि होने का फल प्राप्त हो रहा है।

वार्षिक फलादेश के लिये मेषार्क कुण्डली अर्थात् जगल्लग्न कुण्डली बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। इस वर्ष मेषार्क कुण्डली का लग्न मीन है और लग्न में ही चार ग्रह स्थित हैं जिसमें दो पाप ग्रह हैं एवं दो शुभ ग्रह हैं। यह साल भारत की अर्थ व्यवस्था को मजबूती प्रदान करेगा। कुछ बड़ी कम्पनियाँ भारत में आर्थिक निवेश करेगी। जनता के स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से यह वर्ष चुनौतियाँ ले कर आयेगा। संक्रमण जैसी बीमारियाँ फैलेगी। देश के यातायात-ट्रान्सपोर्ट इत्यादि के साधनों को काफी विस्तार मिलेगा। देश की सताधीन पार्टी को विपक्ष के आक्रमक रुख-रवैये से काफी परेशानियाँ उठानी पड़ेगी। शिक्षा के क्षेत्र में कोई महत्त्वपूर्ण सुधार नहीं होगा बल्कि यह क्षेत्र सरकार की उदासीनता के कारण पिछड़ जायेगा। विदेश नीति में विरोधाभास रहेगा तथा कोई निश्चित पालिसी (नीति) नहीं बन पायेगी। कुल मिलाकर देश की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। किन्तु उसका लाभ सामान्य जनता को नहीं मिलेगा। फसलों का उत्पादन सन्तोषजनक रहेगा। •

राशिफलम् संवत् २०८२

मेष— चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

वर्षारम्भ में गोचर से वृहस्पति की अनुकूलता बहुत सी उपलब्धियाँ प्रदान करेगी। धन सम्पत्ति का आगमन होगा। विरोधी एवं शत्रु आपको हानि नहीं पहुँचा पायेंगे। विवाह आदि मांगलिक कार्य करने के अवसर आयेगें। पारिवारिक एवं सामाजिक प्रेम-सौहार्द में वृद्धि होगी। यश और मान-सम्मान बढ़ेगा एवं आप स्वयं भी परोपकारी कार्य करने के लिए उत्सुक रहेंगे। वर्षारम्भ से ही शनि परिवर्तित

होकर द्वादश भाव का हो जायेगा। व्यय की अधिकता से आर्थिक स्थिति कमजोर पड़ जायेगी। १५ मई से बृहस्पति परिवर्तित होकर कुछ मध्यम हो जायेगा। खर्च पर नियन्त्रण रखना पड़ेगा तथा स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना आवश्यक होगा। पद-प्रतिष्ठा में कुछ कमी आने की स्थितियाँ बनेगी तथा सभी अधीनस्थ कार्यों में विलम्ब होगा। चढ़ती शनि की साढ़ेसाती के अरिष्ट फल से बचने के लिए हनुमान जी की आराधना निरन्तर करते रहें तथा प्रत्येक शनिवार को तिल-तेल का दीपक पीपल वृक्ष के नीचे हनुमान जी के निकट जलाते रहने से परेशानियों में कमी आवेगी। राहु-केतु १५ मई से परिवर्तित होकर कुछ राहत प्रदान करेगा। अकस्मात् कोई कार्य बन जायेगा। प्रत्येक गुरुवार को चने की दाल हल्दी और गुड़ गाय को खिलावें।

वृष– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

आपकी राशि में ही चल रहा बृहस्पति कुछ न कुछ परेशानियाँ पैदा करता रहेगा। अत्यधिक खर्च के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हो जायेगी। पद-प्रतिष्ठा में कमी आयेगी तथा मानसिक-बौद्धिक क्षमता कमजोर प्रतीत होगी। झगड़ा-झंझट से दूर रहना चाहिए। १५ मई से बृहस्पति बदल जायेगा तथा विगत सभी परेशानियों में कमी आने लगेगी। धन का आगमन होने लगेगा, स्वास्थ्य में भी सुधार होगा। विरोधी निष्क्रिय हो जायेंगे तथा अधीनस्थ सभी कार्यों में सफलता मिलने लगेगी। वर्षारम्भ से ही शनि एकादश भाव का होकर राशि वालों के लिए बहुत शुभ फल कारक हो जायेगा। चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि होने की सम्भावना बनेगी। अच्छे कार्य करने की प्रवृत्ति बनेगी। राहु भी कुल मिलाकर वर्ष भर मध्यम एवं सहायक ही है। केतु भी सहायता करता रहेगा। इस प्रकार रुके एवं अधूरे कार्य पूरे होने लगेंगे। प्रायः सभी कार्यों में परिश्रम करने से सफलता का मार्ग बनने लगेगा।

मिथुन– का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

राशि वालों के लिए यह पूरा वर्ष मध्यम फल कारक है। यद्यपि कि आप सही तरीके और पूर्ण परिश्रम तथा लगन के साथ अपना कार्य करेंगे किन्तु परिणाम आपके अनुकूल नहीं रहेगा। आपमें क्षमता एवं योग्यता रहते हुए भी तद्नुरूप आपको प्रतिफल प्राप्त नहीं होगा। १५ मई से बृहस्पति बदल जायेगा तथा आपकी ही राशि में आ जायेगा। पहले से तो कुछ ठीक होगा किन्तु शारीरिक एवं मानसिक परेशानियाँ घेरती रहेंगी जिससे कष्ट होगा। नकारात्मक विचार को अपने ऊपर हावी न होने दें अन्यथा स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। सगे-सम्बन्धियों परिजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त नहीं होगा। राहु-केतु दोनों ही शुभफल प्रदान कर रहे हैं जिससे बीच-बीच में अकस्मात् कुछ न कुछ काम बनता रहेगा तथा लाभ होता रहेगा। गुरु की शान्ति के लिए प्रत्येक बृहस्पतिवार को '**ॐ बृं बृहस्पतये नमः**' मंत्र का १ माला जप नित्य करते रहे तथा चने की दाल, हल्दी, गुड़ का लड्डू बनाकर गाय को खिलावें। गुरुवार को ब्राह्मण बटुकों को पीला वस्त्र फल-अन्न एवं पाठ्य पुस्तकों तथा धार्मिक पुस्तकों का दान दें। शनि के लिए हनुमान जी की आराधना करते रहें तो कष्ट कटता रहेगा।

कर्क– ही, हु, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो

वर्षारम्भ में राशि वालों के लिए परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल रहेंगी। मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धन का बहुविध लाभ होगा एवं स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। शुभ कर्मों में मन लगता है तथा उसको करने के अवसर भी प्राप्त होते हैं। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होते हैं नौकरी में पदोन्नति तथा व्यापार तथा व्यवसाय में वृद्धि होती है। शत्रु-विरोधी परास्त हो जाते हैं। १५ मई से बृहस्पति परिवर्तित होकर शुभ फल में कमी ला देगा। पुत्रादिकों परिजनों से मनमुटाव होने लगेगा। कष्टकर यात्रायें करनी पड़ेंगी। व्यय की अधिकता से आर्थिक स्थिति कमजोर पड़ जाती है। विश्वासपात्र व्यक्ति से भी धोखा मिलता है। शनि भी मध्यम फलकारक है। शत्रु और रोग दोनों परेशान कर सकते हैं। धार्मिक कार्यों में बाधायें खड़ी हो जाती हैं। राहु कुछ लाभ देगा तो कुछ शारीरिक परेशानियाँ जैसे आपरेशन इत्यादि की परिस्थितियाँ ला सकता है। केतु भी घाव फोड़ा फुंसी इत्यादि से कष्ट दे सकता है। कुल मिलाकर गोचर से वर्ष भर मध्यम फलकारक है। शनि एवं गुरु की शान्ति का उपाय करते रहने से लाभ होता रहेगा।

सिंह– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

राशि वालों के लिए यह वर्ष स्वास्थ्य धन और प्रतिष्ठा के क्षेत्र में चुनौतियाँ लेकर आयेगा। कोई भी ऐसा कार्य करने से बचें जिसको करने से मान-सम्मान में कमी आने की सम्भावना हो। व्यय की अधिकता से आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। १५ मई से गुरु का राशि परिवर्तन आपके लिए सुखद एवं अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने लगेगा। नौकरी में पदोन्नति होगी एवं व्यवसाय बढ़ेगा। पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान में वृद्धि होगी। घर में विवाह, पुत्र-जन्मादिक मांगलिक कार्य करने के अवसर आयेंगे। कोई स्थिर लाभ होने की सम्भावना बनेगी। शनि आपके लिए आठवें भाव का होकर नेष्ट फलकारक है। सगे सम्बन्धियों तथा परिजनों से अनबन की सम्भावना बनेगी। अतः झगड़ा-झंझट से दूर रहना ही श्रेयस्कर होगा। राहु-केतु भी अच्छा फल प्रदान नहीं कर रहे हैं। चूँकि आपके ऊपर शनि की ढैय्या का प्रभाव है अतः शनि की शांति का उपाय जैसे प्रत्येक शनिवार को पीपल वृक्ष के नीचे शनि भगवान् के सम्मुख तिल-तेल का दीपक जलायें तथा सुन्दर काण्ड का पाठ करते रहें। कष्ट कटता रहेगा और रास्ता निकलता रहेगा।

कन्या– टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो।

सर्वथा सुखद एवं अनुकूल परिस्थितियों के साथ वर्ष का आरम्भ हो रहा है। कार्य क्षमता में वृद्धि होगी एवं आपके द्वारा सराहनीय कार्य किये जायेंगे। अधीनस्थ सभी कार्यों में वृद्धि होगी। कई तरह से धन का आगमन होगा। किसी नये अधिकार एवं पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति सम्भावित है। कोई स्थिर लाभ होगा। १५ मई से बृहस्पति परिवर्तित होकर हल्का पड़ जायेगा तथा उसके शुभ फल में कमी आने लगेगी। पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान में कमी का अनुभव होने लगेगा। स्वास्थ्य भी कुछ प्रभावित हो सकता है। धन के आगमन में भी कमी का अनुभव होगा। शनि यत्र-तत्र भ्रमण करायेगा। जीवन साथी का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा। किसी प्रकार की बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। राहु-केतु भी स्वास्थ्य को प्रभावित करेंगे। आपरेशन इत्यादि की सम्भावना बन सकती है। शनि की शान्ति का कुछ न कुछ प्रयास करते रहने से शनि जन्य अरिष्ट फल का शमन होता रहेगा। हनुमान जी की यथा सम्भव आराधना करते रहें।

तुला– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

वर्षारम्भ में अष्टम का बृहस्पति अनेक प्रकार की परेशानियाँ खड़ी करता रहेगा। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा तथा रोग-शोक-बन्धन की स्थिति रहेगी। कष्टकर यात्रायें करनी पड़ेगी तथा प्रायः सभी कार्यों में बाधायें खड़ी होती रहेंगी। शनि वर्षारम्भ से ही बहुत शुभफल प्रदान कर रहा है। अतः अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ प्रदान करने लगेगा। शत्रु पराजित हो जायेंगे अथवा आपसे समझौता कर लेंगे। स्वास्थ्य सुधरने लगेगा। पारिवारिक जीवन में जीवन साथी के साथ सम्बन्ध प्रगाढ़ होंगे। १५ मई से बृहस्पति भी अनुकूल हो जायेगा। कार्य क्षमता में वृद्धि होगी तथा किसी नये पद अथवा अधिकार की प्राप्ति होगी। नौकरी में उन्नति होगी एवं वाणिज्य-व्यवसाय में वृद्धि होगी। अधीनस्थ सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। विवाह पुत्र जन्मादिक मांगलिक कार्य करने के अवसर आयेंगे। पुत्रादिकों की भी उन्नति होगी। धन-सम्पत्ति का आगमन होगा तथा कोई स्थिर लाभ हो सकता है। राहु-केतु भी प्रायः अनुकूल ही हैं। अच्छे समय का लाभ भी तभी मिलता है जब परिश्रम एवं प्रयास कर अपने कार्य को पूर्ण किया जाय।

वृश्चिक– तो, ना, नी, नु, ने नो, या, यी, यू

वर्षारम्भ में गोचर से बृहस्पति बहुत ही शुभफलकारक है। भौतिक सुख-सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी तथा स्त्री-परिवार का उत्तम सुख-सन्निध्य प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य करने का अवसर आयेगा। वर्षारम्भ से ही शनि पंचम का होकर नेष्टफल कारक है। आर्थिक स्थिति कमजोर पड़ जायेगी तथा घर-परिवार पुत्रादिकों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। अपनी स्वयं की बुद्धि भी काम नहीं करेगी तथा गलत निर्णय ले लेने से काम बिगड़ सकता है। नौकरी में झंझट तथा वाणिज्य-व्यवसाय में हानि होने की सम्भावना बन सकती है। राहु-केतु विरोधी पैदा कर देंगे जिससे परेशानी बढ़ सकती है। १५ मई से बृहस्पति भी बदल कर अष्टम भाव का हो जायेगा जो रोग-शोक और बन्धन की स्थिति ला देगा। आर्थिक संकट तथा स्वास्थ्य से सम्बन्धित परेशानी रहेगी। बृहस्पति एवं शनि दोनों की शान्ति का उपाय अवश्य करें। '**ॐ बृं बृहस्पतये नमः**' मन्त्र का १ माला जप प्रतिदिन करें तथा प्रत्येक गुरुवार को चने की दाल, हल्दी, गुड़ का लड्डू बनाकर गाय को खिलावें तथा पीली वस्तुओं का दान करें। शनि के लिये हनुमान जी की आराधना सहायक होगी।

धनु– ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

राशि वालों के लिये यह वर्ष मध्यम फलकारक है। गोचर से छठें भाव का आया बृहस्पति शारीरिक सुख-स्वास्थ्य को प्रभावित करेगा। सुन्दर से सुन्दर व्यक्ति एवं अच्छी से अच्छी वस्तु भी आपको प्रभावित नहीं कर पायेगी। शरीर थका-थका तथा मन उदास सा रहेगा। वर्षारम्भ से ही शनि की ढैय्या चल रही है। सगे-सम्बन्धियों एवं परिजनों का पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा, जिससे भावनात्मक कष्ट होगा। १५ मई से बृहस्पति परिवर्तित होकर शुभ फल देने लगेगा। जिसके कारण समय अच्छा हो जायेगा। घर-परिवार में मंगल कार्य होंगे तथा भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन जुटेंगे। सामाजिक सौहार्द बढ़ेगा तथा आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य भी सुधरने लगेगा। किसी नये अधिकार अथवा पद की प्राप्ति हो सकती है। राहु-केतु भी शुभ फलकारक हैं अतः सभी कार्य पूर्ण होने लगेंगे। शनि की शान्ति का उपाय करते रहने से कोई परेशानी विशेष रूप से नहीं आयेगी। सुन्दर काण्ड का पाठ करते रहने से शनि जन्य कष्टों में राहत मिलेगी।

मकर– भो, जा, जी (जू, जे, जो) खी, खू, खे, खो, गा, गी

राशि वालों के लिये अत्यन्त सुखद एवं अनुकूल परिस्थितियों के साथ वर्ष का आरम्भ हो रहा है। गोचर से आया पञ्चम का गुरु बहु विध लाभकारी तथा मंगलकारी है। विवाह पुत्र जन्मादिक शुभ कार्य सम्पन्न करने के अवसर आयेंगे। १५ मई से गुरु राशि परिवर्तित कर आपके लिये कुछ हल्का पड़ जायेगा तथा गुरु द्वारा प्राप्त हो रहे शुभफलों में कुछ कमी आ जायेगी। कार्यों में कुछ व्यवधान आने लगेगा जिससे आपके मनोबल पर असर पड़ेगा। शनि वर्ष भर गोचर से तृतीय भाव का होकर बहुत ही अनुकूल है। कोई स्थिर अचल सम्पत्ति का लाभ हो सकता है। स्वजन सहयोगी सहायक सभी आपके अनुरूप कार्य करेंगे। भौतिक सुख सुविधा के साधनों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य भी सुधार पर होगा। आप अपना कार्य साहस एवं पराक्रम के साथ सम्पन्न करेंगे। राहु-केतु धोखा दिलवाकर धन की हानि करा सकते है अतः आर्थिक लेन-देन में सतर्क रहें। गुरु की शान्ति का कुछ उपाय करते रहने से कोई विशेष परेशानी नहीं आयेगी।

कुम्भ– गु, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो दा

वर्षारम्भ में राशि वालों के लिए ग्रहों का गोचर फल मध्यम फलकारी है। चतुर्थ का बृहस्पति एवं शनि की उतरती साढ़े साती कुछ न कुछ परेशानियाँ खड़ी करते रहेंगे। वैसे शनि से काफी राहत भी मिलनी प्रारम्भ हो जायेगी। यद्यपि कि आप अपना कार्य पूर्ण मनोयोग एवं परिश्रम से करते रहेंगे किन्तु उस कार्य का सही मूल्यांकन नहीं हो पायेगा १५ मई से बृहस्पति राशि परिवर्तित कर गोचर से बहुत ही शुभ फलकारक हो जायेगा। नौकरी में पदोन्नति एवं व्यवसाय में उन्नति होगी। किसी नये अधिकार अथवा पद प्राप्ति के अवसर आ जायेंगे। घर-परिवार में विवाह पुत्र जन्मादिक मांगलिक कार्यों के अवसर आयेंगे। आपके द्वारा उल्लेखनीय कार्य किये जायेंगे जिसकी सराहना होगी। स्वास्थ्य सुधरेगा तथा जीवन साथी का उत्तम सुख सान्निध्य एवं सहयोग प्राप्त होगा। राहु आपकी ही राशि में आ गया है जो प्रायः शुभफल कारक ही है किन्तु कुछ मानसिक उलझनें देता रहेगा। शनि की शान्ति का उपाय कुछ न कुछ करते रहें। पीपल वृक्ष के नीचे हनुमान जी के निकट तिल तेल का दीपक जलावें तथा हनुमान चालीसा सुन्दर काण्ड का पाठ करते रहें।

मीन– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

राशि वालों के लिये पूरा वर्ष ही सामान्यता कुछ परेशानी पैदा करता रहेगा। १५ मई से गुरु परिवर्तित होकर पहले से कुछ तो राहत प्रदान करेगा किन्तु किसी न किसी रूप से कुछ न कुछ परेशानी देता ही रहेगा। अपना कार्य तो आप मेहनत एवं ईमानदारी से करेंगे। किन्तु तद्नुरूप परिणाम नहीं मिलेगा जिससे निराशा हाथ लगेगी। वर्षारम्भ से ही शनि आपकी ही राशि में आ गया है; अतः शनि की मध्य साढ़े साती का प्रभाव कष्टकर हो सकता है। राहु-केतु के कारण व्यय की अधिकता से आर्थिक स्थिति कमजोर पड़ जायेगी। गुरु एवं शनि की शान्ति का कुछ न कुछ उपाय करते रहें। प्रत्येक गुरुवार को चने की दाल, हल्दी, गुड़ का लड्डू बनाकर गाय को खिलावें। "**ॐ बृं बृहस्पतये नमः**" मन्त्र का १ माला जप नित्य करते रहें। ब्राह्मण बटुकों विद्यार्थियों को पीला वस्त्र पीला फल तथा धार्मिक पुस्तकें एवं पाठ्य पुस्तकों का दान करें। प्रत्येक शनिवार को "**ॐ शं शनैश्चराय नमः**" का जप तिल तेल का दीपक पीपल वृक्ष के नीचे जलाकर करते रहें। हनुमान जी की आराधना शनि ग्रह की शान्ति का सर्वोत्तम उपाय है। हनुमान चालीसा सुन्दर काण्ड का पाठ करें तो शनि जन्य कष्ट कम हो जायेगा।

मासफलम् : तेजी मन्दी विचार के साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष– संवत्सर का पहला पखवारा ही उपद्रवकारी एवं दुर्घटनाकारी समझ में आ रहा है। पक्ष भर चल रहा पंचग्रही योग दैवी-प्राकृतिक आपदा ला सकता है। भूकम्पादि की भी सम्भावना बन रही है। २ अप्रैल के आस-पास बूँदा-बाँदी आँधी तूफान के योग बन रहे हैं। शेयर बाजार में चल रही तेजी सुस्त पड़ने लगेगी।

वैशाख मास– मास के पाँच रविवार एवं लगातार चार ग्रहों का एक ही राशि पर चल रहा जमावड़ा कुछ न कुछ करामात दिखाकर ही रहेंगे। मास में पाँच सोमवार भी हैं जो कुछ राहत प्रदान करेंगे। शुक्ल पक्ष में अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का योग शुभफल-कारक है। रविवार की मेष संक्रान्ति जौ, गेहूँ, चना आदि खाद्यान्नों तथा हाथी दाँत, लाख, मोम, केसर सिन्दूर में तेजी कारक है। साथ ही सभी प्रकार के तरल पदार्थ धातुयें ऊनी वस्त्र अलसी, एरण्ड, तिल, मेथी, लाल चन्दन इलायची, लौंग, सुपारी, नारियल कपूर, हींग, गुग्गल भी तेजी का रुख पकड़ेंगे। रविवार की संक्रान्ति एवं रविवार की ही अमावस्या दैवी प्राकृतिक घटना-दुर्घटना का कारण बनेंगे।

ज्येष्ठ मास– मासारम्भ १३ मई के आस-पास आँधी-तूफान बूँदी-बाँदी एवं वर्षा होने के योग है। गर्मी अपने चरमोत्कर्ष पर पड़ेगी। बुधवार की वृष संक्रान्ति सोना, चावल, अफीम, कपड़ा शस्त्र में तेजी लायेगी। घी, गुड़, तेल एवं खाद्यान्न जैसे गेहूँ आदि में मन्दी की अवधारणा चलेगी। मास के पाँच मंगलवार एवं मंगलवारी अमावस प्रजा पीड़ा कारक है। मनुष्यों में कोई बीमारी फैलेगी जिससे जनता को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा के आसन्न वर्षा होने की सम्भावना है।

आषाढ़ मास– १५ से २२ जून के आसन्न मानसून पूर्व वर्षा होने की सम्भावना है। मिथुन की सूर्य संक्रान्ति एवं २२ जून को आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश वर्षा कारक है। अतः खेती प्रारम्भ करने लायक वर्षा हो जाने की सम्भावना है। मास के पाँच गुरुवार एवं बुधवार की अमावस शुभफलकारी है; वहीं रविवार की मिथुन संक्रान्ति से भीषण उमस वाली गर्मी पड़ेगी। कुल मिलाकर मानसून का आगमन अपने निश्चित समय पर हो जायेगा तथा अच्छी वृष्टि भी होगी। तेज हवा के साथ वर्षा होगी। खाद्यान्नों में मँहगाई आ जायेगी। शुक्ल पक्ष में पुनर्वसु नक्षत्र के प्रवेश के फल में ६-७ जुलाई के आसपास बहुत अच्छी वर्षा होने की सम्भावना है।

श्रावण मास– मास के पाँच शुक्रवार शुभ फलकारी एवं सुभिक्ष कारक है। कर्क राशि की सूर्य संक्रान्ति भी शुभफलकारक है। २० जुलाई को पुष्य नक्षत्र का सूर्य आयेगा इसमें सामान्य वर्षा होने की सम्भावना है तथा उसके बाद भी जुलाई के अन्तिम सप्ताह में वृष्टि होने के योग प्राप्त हो रहे हैं। वायुवेग के साथ वर्षा तो होगी किन्तु हवा के झोंके बादल को इधर-उधर करते रहेंगे। वृक्षों को क्षति पहुँचेगी। शुक्ल पक्ष में ३ अगस्त को श्लेषा नक्षत्र के सूर्य में भी वर्षा होने की मध्यम सम्भावना है। ८ अगस्त के आसन्न अच्छी वृष्टि के योग मिल रहे हैं।

भाद्रपद मास– मास के पाँच रविवार, शनिवार की अमावस्या एवं रविवार

की संक्रान्ति भारी पड़ेगी। १७ अगस्त को मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि की सूर्य संक्रान्ति के फल में अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना बन रही है। इस मास में कुछ दैवी प्राकृतिक घटना दुर्घटना घट कर धन-जन को क्षति पहुँचा सकती है। अगस्त के अन्तिम सप्ताह में एक बार अच्छी वर्षा होने की सम्भावना है। वायुवेग के साथ वर्षा होने के कारण मूंग, उड़द आदि भूसी वाले अनाजों को क्षति पहुँचेगी। भदई की फसल अच्छी होने की सम्भावना है। ज्वर-बुखार से सम्बन्धित बीमारियाँ फैलेगी। कुल मिलाकर यह मास दुर्भिक्ष एवं प्रजा पीड़ा कारक है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एवं सितम्बर के प्रथम सप्ताह में वर्षा होने की सम्भावना है।

आश्विन मास– यह महीना कुछ राहत प्रदान करेगा किन्तु रविवार की अमावस्या भारी पड़ेगी। १४ सितम्बर को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में सामान्य से अच्छी वर्षा होने के योग प्राप्त हो रहे है। गेहूँ, चावल, चना आदि हर प्रकार के अनाज तथा गुड़, खाण्ड, सोना-चाँदी में तेजी चलेगी। सरसो, तिल, तेल, घी में घटा-बढ़ी चलती रहेगी। शुक्ल पक्ष में सितम्बर के अन्त एवं २७ सितम्बर को हस्त नक्षत्र के सूर्य में भी गरज चमक के साथ सामान्य वृष्टि होने की सम्भावना है।

कार्तिक मास– मास के पाँच बुधवार व्यापार जगत के लिये उत्तम फलकारक है। मंगलवार की अमावस्या भारी पड़ेगी। अग्निकाण्ड की घटनाएँ सम्भावित है। चित्रा नक्षत्र का सूर्य ११ अक्टूबर को आयेगा। इसमें एक बार तेज हवा एवं गरज-चमक के साथ वर्षा होने के योग मिल रहे है। शुक्रवार की तुला संक्रान्ति एवं सोमवार की दीपावली देश के व्यापारियों के लिये अत्यन्त शुभफलकारक है। साथ ही सुभिक्ष एवं सुविधा का वातावरण बनेगा। सोना-चाँदी, नारियल, जायफल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अलसी, लोहा, जस्ता, कोयला, पत्थर इनका भाव तेजी पकड़ेगा। शुक्ल पक्ष में २४ अक्टूबर के आसन्न भी हल्की वर्षा होने की सम्भावना है।

मार्गशीर्ष मास– मास के पाँच गुरुवार तो शुभ फलकारक है, सुभिक्ष एवं सस्ती का वातावरण बनेगा एवं चावल-चीनी का उत्पादन अच्छा होगा। रविवार की संक्रान्ति विश्वव्यापी हिंसक वातावरण बनायेगी। कुछ देशों में युद्ध जैसी परिस्थितियाँ पैदा हो सकती है। गेहूँ, जौ, चना, चावल, तिल, तेल, सरसो, सोना, ताँबा, लोहा, जस्ता, पीतल, रुई, नमक, हल्दी, मिर्च व सफेद वस्तुओं में तेजी चलेगी। जूट सूती, ऊनी वस्त्र, गाय, भैंस में मन्दी रहेगी। गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी चलेगी। शुक्लपक्ष में किसी महापुरुष के वियोग की सम्भावना है।

पौष मास– ११ दिसम्बर के आसन्न मौसम एकाएक करवट बदलेगा। वर्षा हो सकती है। जिससे ठंडक एकाएक बढ़ जायेगी। मास के पाँच शुक्रवार शुभफलकारक है। पहाड़ों पर हिमपात होना प्रारम्भ हो जायेगा। धनु राशि की सूर्य संक्रान्ति मंगलवारी है। किराना की वस्तुओं में तेजी चलेगी। खाद्यान्नों का भाव सम चलेगा। मास के अन्त में ३ जनवरी के आसन्न ठंडक एकाएक बढ़ जायेगी। ओला पत्थर कोहरा तुषारपात एवं अन्य वर्षा इत्यादि की परिस्थितियों से ठण्डी हवाएँ हाड़ कँपा देने वाली सर्दी का वातावरण बनेगा। दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुयें सुलभ एवं सस्ती होकर उपलब्ध रहेंगी।

माघ मास– मास के पाँच रविवार रविवार की अमावस्या एवं रविवार की ही पुष्य नक्षत्र युक्त पूर्णिमा अनिष्टकारी है। भयंकर सर्दी से पूरा उत्तर भारत कँपकँपाने लगेगा। हिमपात एवं हिमस्खल अथवा अन्य कोई आपदा चतुर्ग्रही योग के कारण घट सकती है। बुधवार की मकर संक्रान्ति कुछ राहत देगी। ऊनी, रेशमी, कपड़े मेवा जैसे किशमिश पिस्ता के भाव एकाएक चढ़ जायेंगे। सोना-चाँदी का भाव तेजी पकड़कर फिर कुछ सुस्त हो जायेगा। खाद्यान्नों में दाल किराना में लौंग, इलायची, जावित्री तेज होगी। शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के आसन्न बादल-बदली वर्षा होने की सम्भावना बन रही है।

फाल्गुन मास– मास के पाँच सोमवार एवं मंगलवार शुभाशुभ फलकारक हैं। पहाड़ों पर हिमपात का सिलसिला जारी रहेगा। जिसके कारण ठिठुरन भरी सर्दी में कमी नहीं आयेगी। किन्तु धूप में भी तेजी रहेगी। शुक्रवार की कुम्भ संक्रान्ति सुभिक्षकारक है। किन्तु शीतकारी भी है। ज्वार, बाजरा, मक्का इत्यादि मोटे अनाज में मन्दी चलेगी। अलसी, तिल, तेल, सरसों, चावल, रुई, बिनौला, हल्दी आदि किराने की वस्तुयें तथा गुड़, शक्कर में तेजी रहेगी। फाल्गुन कृष्ण षष्ठी तिथि एवं चित्रा नक्षत्र का संयोग दुर्भिक्ष कारक है। फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का फल भी अच्छा नहीं माना जायेगा।

चैत्र कृष्ण पक्ष– संवत्सर का अन्तिम पखवारा कुल मिलाकर शुभफलकारक है। १० मार्च के आसन्न आँधी-पानी के साथ ओला-पत्थर पड़ने की सम्भावना है। जिससे खड़ी फसल को क्षति पहुँचेगी।

शनि की साढ़ेसाती

शनि वर्ष पर्यन्त मीन राशि में संचरण करेगा। कुम्भ राशि वालों के लिये उतरती, मीन राशि वालों को मध्य तथा मेष राशि वालों के लिए चढ़ती शनि की साढ़ेसाती चलेगी। सिंह एवं धनु राशि वालों को शनि की ढैय्या चलेगी।

परामर्श- **शनि जन्य कष्ट निवारणार्थ शनि स्तोत्रम-**

नमस्ते कोण संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते।। नमस्ते बभ्रुरुपायृष्णाय च नमोऽस्तुते।।
नमस्ते रौद्र देहाय नमस्ते चांतकाय च।। नमस्ते यम संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द संज्ञाय शनैश्चर नमोस्तुते।। प्रसीदं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

१. उपरोक्त शनि स्तोत्र अथवा महाराज दशरथ कृत शनिस्तोत्र का पाठ प्रत्येक शनिवार को करें, सम्भव हो तो नित्य करें। २. नौकर-भृत्य-सहायक का भरण-पोषण करें तथा उसको पास रख उसकी सहायता करें। ३. कौवे को चारा दें। ज्यादा कष्ट समझ में आवे तो काँसे के कटोरे में तेल रखकर उसमें अपनी मुखाकृति देख कटोरा सहित दान ग्रहण करने वाले को दान दें। ४. सुन्दरकाण्ड का पाठ नित्य करें।

शनिदान मंत्र-शनैश्चर प्रीतिकरं दान पीड़ा निवारकम्।
सर्वापत्ति विनाशाय द्विजाग्रयाय ददाम्यहम्।।

विंशोपका:

धान्यम् ११, तृणम् १५, शीतम् १३, तेजम् १०, उष्णम् १७, वायुः १३, वृद्धिः १५, विनाशः १५, विग्रहः ११, क्षुधा १०, तृष्णा ८, निद्रा १२, आलस्यम् १३, उद्यम् ११, शान्तिः १३, क्रोध ११, दम्भ ४, मैत्री १३, उत्सव ७, पाप ७, पुण्यत्व ७, उग्रता ११, रसोत्पत्ति ८, फलोत्पत्ति १०, व्याधि ५, व्यधिनाश ८, आचार ९, अनाचार १९, मृत्यु ८, जन्म १४, चौर १३, अग्नि ११, शमन १२, सत्यम् २, वर्षा १२, धर्म २, रत्न ११, वस्त्रम् ९, अनावृष्टि ४, अतिवृष्टि १४, मूषक ११ शूल १३, सेवकत्वम् ९, स्वामित्वम् १८, घृतम् ९, तैलम् ५, दुकूलम ५, ऊनी वस्त्रम् १६ भेदः २, उत्साह ९, भैषज्य ५।

ग्रहण विवरणम् संवत् २०८२ शाके १९४७

इस संवत्सर २०८२ में कुल चार ग्रहण पूरे विश्व में लगेंगे। दो सूर्य ग्रहण होंगे किन्तु दोनों ही सूर्य ग्रहण भारत भूमि में नहीं दिखाई देगे। दो चन्द्रग्रहण लगेंगे एवं दोनों ही चन्द्र ग्रहण भारत में दिखाई देंगे। सभी ग्रहणों के बारे में अपेक्षित जानकारी क्रमशः नीचे दी जा रही है–

१. चन्द्र ग्रहण– भाद्रपद शुक्ल १५ रविवार तदनुसार ७ सितम्बर २०२५ को चन्द्र ग्रहण लगेगा जिसे भारत भूमि से देखा जा सकेगा। भारत के अतिरिक्त इस ग्रहण को अंटार्कटिका पश्चिमी प्रशान्त महासागर, आस्ट्रेलिया, एशिया, हिन्द महासागर, यूरोप, पूर्वी अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा।

यह खग्रास चन्द्र ग्रहण सम्पूर्ण भारत वर्ष में दिखाई देगा और यह स्पर्श से लेकर मोक्ष तक देखा जा सकेगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि में **९ बजकर ५७** मिनट पर होगा। ग्रहण का मध्य समय **रात्रि ११ बजकर ४१** मिनट पर तथा मोक्ष अथवा ग्रहण की समाप्ति रात्रि १ बजकर २७ मिनट पर हो जायेगी। काशी सहित सम्पूर्ण भारत में ग्रहण का समय उपरोक्त ही होगा।

काश्यां ग्रहण विवरणम्- भाद्रपद शुक्ल १५, रविवार ७ सितम्बर २०२५ यह ग्रहण शतभिषा नक्षत्र तथा कुम्भ राशि में लगेगा। अतः उपरोक्त राशि नक्षत्र के लोग ग्रहण को न देखें।

स्पर्श रात्रि	९।५७ बजे
मध्य रात्रि	११।४१ बजे
मोक्ष रात्रि	१।२७ बजे

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	लाभः	सुखः	मा.ना.	अ.क.	पीड़ा	सौख्यं	चिन्ता	व्यथा	श्रीः	क्षति	घातः	हानिः

२. सूर्यग्रहण– आश्विन कृष्ण ३० रविवार, २१ सितम्बर २०२५ को लगने वाला खण्ड सूर्य ग्रहण भारत में दिखाई ही नहीं देगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि ११ बजे तथा मोक्ष रात्रि ३ बजकर २४ मिनट पर होगा। इस ग्रहण का कोई प्रभाव भारत में नहीं होगा। अतः संचार माध्यमों के भ्रम जाल में न पड़े।

३. सूर्यग्रहण– फा. कृ.३० मंगल. १७ फर.२०२६ को कंकणाकृति सूर्य ग्रहण भारत भूमि में नहीं लगेगा। अर्थात् नहीं दिखाई देगा। अतः इसका समय देना मात्र भ्रम फलाने का कारण बनेगा। श्रद्धालु पाठको से अनुरोध है कि किसी भ्रम-जाल में न फँसे।

४. चन्द्रग्रहण– फाल्गुन शुक्ल १५ पूर्णिमा, ३ मार्च २०२६ को खग्रास चन्द्र ग्रहण लगेगा जो भारत में ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण के रूप में दिखाई देगा अर्थात् जिस समय भारत के विभिन्न स्थानों पर चन्द्रोदय होगा उस समय ग्रहण लगा हुआ रहेगा एवं मोक्ष होते समय ही यह ग्रहण भारत में देखा जा सकेगा। ग्रहण का स्पर्श अथवा प्रारम्भ भारत के किसी भी स्थान में दिखाई नहीं देगा। ग्रहण की खग्रास स्थिति की समाप्ति सुदूर पूर्वी भारत के कुछ स्थानों से दिखाई देगी तथा देश के बाकी सभी स्थानों में खण्ड चन्द्र ग्रहण का मोक्ष ही दिखाई देगा।

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा १५ मंगलवार, दिनांक ३ मार्च २०२६ ई. काश्यां ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहणम्।

दृश्य समय	६।० सायं
मोक्ष	६।४८ सायं

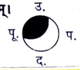

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे सिंह राशौ खण्डग्रासग्रस्तोदित चन्द्र ग्रहणम्।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	चिन्ता	व्यथा	श्रीः	क्षतिः	घातः	हानिः	लाभः	सुखं	मा.ना.	मृ.तु.क.	पीड़ा	सौख्यं

३ मार्च २०२६ को भारत के प्रमुख स्थानों पर ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का विवरण

स्थान	मोक्ष समय	स्थान	मोक्ष समय	स्थान	मोक्ष समय	स्थान	मोक्ष समय
अगरतला	सायं ५।२७	सीवान	,, ५।५६	भुवनेश्वर	,, ५।५३	लखनऊ	,, ६।७
गुवाहटी	,, ५।२४	मुजफ्फरपुर	,, ५।५१	पुरी	,, ५।५३	अयोध्या	,, ६।२
डिब्रूगढ़	,, ५।९	मुंगेर	,, ५।४८	बम्बई	,, ६।४५	बरेली	,, ६।१३
अहमदाबाद	,, ६।४४	भागलपुर	,, ५।५४	नासिक	,, ६।४९	मथुरा	,, ६।२०
प्रयागराज	,, ६।५	पूर्णिया	,, ५।४३	पुणे	,, ६।४९	जौनपुर	,, ६।०
अमृतसर	,, ६।३०	सीतामढ़ी	,, ५।५१	कानपुर	,, ६।१४	गोरखपुर	,, ५।५७
बंगलोर	,, ६।२८	दरभंगा	,, ५।४९	बाँदा	,, ६।१४	सीतापुर	,, ६।८
भोपाल	,, ६।२४	मोतीहारी	,, ५।५३	जबलपुर	,, ६।१४	हरदोई	,, ६।१०
चण्डीगढ़	,, ६।१९	जमशेदपुर	,, ५।५०	विलासपुर	,, ६।५	हरिद्वार	,, ६।१७
चेन्नई	,, ६।१७	राँची	,, ५।५३	कटनी	,, ६।११	रायपुर	,, ६।७
देहरादून	,, ६।१७	धनबाद	,, ५।४८	सतना	,, ६।९	आगरा	,, ६।२०
दिल्ली	,, ६।२२	डाल्टेनगंज	,, ५।५८	रीवा	,, ६।७	काङ्गमांडू	,, ६।३
पटना	,, ५।५१	देवघर	,, ५।४८	सिंगरौली	,, ६।२	पानीपत	,, ६।२१
आरा	,, ५।५७	हजारीबाग	,, ५।५३	जयपुर	,, ६।२९	शिमला	,, ६।२१
गया	,, ५।५४	आसनसोल	,, ५।४८	सूरत	,, ६।४४	मिर्जापुर	,, ६।१
बक्सर	,, ५।५७	कोलकत्ता	,, ५।४१	अहमदाबाद	,, ६।४४	गाजियाबाद	,, ६।२१
सासाराम	,, ५।५८	खडगपुर	,, ५।४५	हैदराबाद	,, ६।२२	मुरादाबाद	,, ६।१८
छपरा	,, ५।५४	राउरकेला	,, ५।५७	जम्मू	,, ६।२९		

सूतक– सूर्य ग्रहण का सूतक स्पर्श समय से १२ घंटे पूर्व प्रारम्भ हो जाता है एवं चन्द्र ग्रहण का ९ घंटे पूर्व। स्पर्श के समय स्नान पुनः मोक्ष के समय स्नान करना चाहिए। सूतक लग जाने पर मन्दिर में प्रवेश करना मूर्ति को स्पर्श करना, भोजन करना, मैथुन क्रिया, यात्रा इत्यादि वर्जित है। बालक, वृद्ध, रोगी अत्यावश्यक में पथ्याहार ले सकते हैं। भोजन सामग्री जैसे दूध, दही, घी इत्यादि में कुश रख देना चाहिए। ग्रहण मोक्ष के बाद पीने का पानी ताजा ले लेना चाहिए। गर्भवती महिलाएँ पेट पर गाय के गोबर का पतला लेप लगा लें। ग्रहण अवधि में श्राद्ध-दान-जप, मंत्र सिद्धि इत्यादि का शास्त्रोक्त विधान है। **ग्रहण जहाँ से दिखाई देता है सूतक भी वहीं लगता है एवं धर्मशास्त्रीय मान्यताएं भी वहीं लागू होती है तथा उसका फलाफल भी वही लागू होगा।**

आभार-ग्रहण विवरण तथा ग्रहों के उदय-अस्त, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त खोगल विज्ञान केन्द्र के सौजन्य से।

सम्पादन-**श्रीमती कान्ति ओझा (एम.एससी.गणित)**

शेष पृष्ठ ६ का

तिथि १५ गुरौ (१०.७.२५) भद्रा दिवा १।२६ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम्

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२५.७.२५) पुष्ये
तिथि ३ रवौ (२७.७.२५) मघा-पूर्वाफा.
तिथि १२ बुधे (६.८.२५) मूले
तिथि १३ गुरौ (७.८.२५) पूर्वाषाढ़ायाम् रिक्ता दिवा १।२६ वादनात्पूर्व

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (११.८.२५) शतभिषायां
तिथि १३ गुरौ (२१.८.२५) भद्रा दिवा १२।३६ वादनात्पूर्व पुष्ये

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि १ रवौ (२४.८.२५) पूर्वाफाल्गुन्यां
तिथि ११ बुधे (३.९.२५) भद्रा दिवा १।१३ वादनात्पूर्व पूर्वाषाढ़ायाम्

आश्विन कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (८.९.२५) पूर्वाभाद्रपदे

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि ७ सोमे (२९.९.२५) भद्रा दिवा १२।२६ वादनात्पूर्व मूले

कार्तिक कृष्ण पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (१७.१०.२५) मघायां

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ६ सोमे (२७.१०.२५) मूले
तिथि १२ रवौ (२.११.२५) पूर्वाभाद्रपदे

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ३ रवौ (२३.११.२५) मूले

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि ६ बुधे (१०.१२.२५)श्लेषायां मघायां
तिथि ७ गुरौ (११.१२.२५) दिवा ८।३ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १ रवौ (२१.१२.२५) पूर्वाषाढ़ायाम्
तिथि ५ गुरौ (२५.१२.२५) शतभिषायां
तिथि ६ शुक्रे (२६.१२.२५) पूर्वाभाद्रपदे

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (५.१.२६) पुष्य नक्षत्रे
तिथि ४ बुधे (७.१.२६) रिक्ता दिवा १०।२९ वादनात्परं मघायां
तिथि ५ गुरौ (८.१.२६) पूर्वाफाल्गुन्यां
तिथि १३ शुक्रे (१६.१.२६) मूले

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (२३.१.२६) पूर्वाभाद्रपदे

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ३ बुधे (४.२.२६) भद्रा दिवा १।४० वादनात्पूर्व पूर्वाफाल्गुन्यां
तिथि १० गुरौ (१२.२.२६) दिवा ११।११ वादनात्परं मूले
तिथि ११ शुक्रे (१३.२.२६) मूले

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ गुरौ (१९.२.२६) पूर्वाभाद्रपदे

विशेष (श्रेष्ठ) मुहूर्त्ताः

(षोडष संस्कारों को छोड़कर नूतन उद्योग-व्यापार वाहन क्रय इत्यादि के लिये)

चैत्र शुक्ल पक्षः

तिथि १ रवौ (३०.३.२५) रेवत्यां
तिथि ९ रवौ (६.४.२५) दिवा ९।४० वादनात्परं पुष्ये
तिथि १० सोमे (७.४.२५) दिवा ९।५४ वादनम् यावत् पुष्ये

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि ३ बुधे (१६.४.२५) दिवा १०।२६ वादनम् यावत् अनुराधायां
तिथि ८ सोमे (२१.४.२५) दिवा ७।५६ वादनात्परं १।४२ वादनम् यावत् श्रवणे

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (३०.४.२५) रोहिण्यां
तिथि ७ रवौ (४.५.२५) पुष्ये भद्रा दिवा १२।११ वादनात्पूर्व

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१४.५.२५) दिवा १०।३४ वादनम् यावत् अनुराधायां
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) दिवा १२।११ वादनात्परं रेवत्यां

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ९।१० शुक्रे (२०.६.२५) रेवत्यां

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि ११ सोमे (२१.७.२५) रात्रि ८।४१ वादनात्परं श्रवणे
तिथि ३० गुरौ (२४.७.२५) सायं ५।३२ वादनात्परं पुष्ये

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि १० सोमे (१८.८.२५) मृगशिरायां
तिथि १३ गुरौ (२१.८.२५) भद्रा दिवा १२।३६ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे

आश्विन कृष्ण पक्ष

तिथि ८।९ सोमे (१५.९.२५) प्रातः ६।२७ वादनम् यावत मृगशिरायां
तिथि १२ गुरौ (१८.९.२५) दिवा ८।५६ वादनम् यावत् पुष्ये

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि १० गुरौ (२.१०.२५) उ.षा.श्रवणे अपुच्छ मुहूर्त्ते

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

तिथि १२ रवौ (१६.११.२५) हस्त नक्षत्रे

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि १० रवौ (१४.१२.२५) भद्रा दिवा ८।१३ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे
तिथि १३ बुधे (१७.१२.२५) सायं ५।४५ वादनात्परं अनुराधायां रात्रि २।२६ वादना.

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि १ रवौ (४.१.२६) सायं ५।१५ वादनात्परं पुष्ये
तिथि ११ बुधे (१४.१.२६) अनुराधायां

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (१९.१.२६) दिवा १२।५ वादनात्परं श्रवणे
तिथि १५ रवौ (१.२.२६) दिवा ४।१३ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ९ बुधे (११.२.२६) दिवा ९।१ परं १०।३६ वादनम् यावत् अनुराधायां

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १३ रवौ (१.३.२६) दिवा ८।७ वादनम् यावत् पुष्ये

पञ्चाङ्ग देरवने की रीति

गत ८२ वर्षों से यह पंचाग प्रकाशित हो रहा है। अत: प्राचीन प्रेमियों के निमित्त पञ्चांग देखने की विधि बताना तो पिष्टपेषण मात्र ही हैं। पुनरपि, नवीन उत्सुक एवं जागरुक बन्धुओं के हित हेतु संक्षिप्त निर्देशन देना आवश्यक है।

प्रत्येक विज्ञान में बड़ी पारिभाषिक शब्दावलियों के स्थान पर सुविधार्थ संक्षिप्त संकेत निर्धारित कर लिए जाते हैं। इस पंचांग में भी किंचित् निर्णीत चिह्न हैं। उनका सम्यक् ज्ञान प्रथम ही आवश्यक हैं। वे निम्नांकित हैं।

उपरोक्त संकेतों को यदि किसी पक्ष का आश्रय लेकर समझा जाय तो सरलता से समझ में आ सकता हैं।

सांकेतिक चिह्न	स्पष्टार्थ	सांकेतिक चिह्न	स्पष्टार्थ	मुहूर्त के स्पष्टार्थ
दि.मा.	दिनमान	रा.	सायमान से राष्ट्री.तारीख	ग्र.व.वि. - ग्रहवल विस्वा
ति.	तिथि	चं.रा.प्र.	चन्द्रसंचार अर्थात् उक्त घटी पल पर चन्द्रराशि बदलेगा	सू.दा. - सूर्यदान
वा.	वार			चं.दा. - चन्द्र दान
घ.प.	घटी पल			भौ.दा. - भौम दान
घं.मि.	घण्टा-मिनट	सू.उ.	सूर्य-उदय	श.दा. - शनि दान
दि.	दिन	सू.अ.	सूर्य-अस्त	रा.के. - राहु-केतुदान
रा.	रात	उ.	उपरान्त	मृ.बा. - मृत्युबाण
न.	नक्षत्र	या.	यावत्	लग्न १ = मेष लग्न, लग्न २= वृष लग्न, लग्न ३ = मिथुन इसी तरह सभी लग्नों को दर्शाया जाता है।
यो.	योग	ति.दा.	तिथि-दान	
क.	करण	र.क्रां.	रविक्रान्ति (प्रतिदिन सूर्यो. कालिक क्रान्ति)	
अं.	अंग्रेजी तारीख	रे.अं.	रेलवे घटी अन्तर	ना.च.शु.= चक्र शुद्धि नही
सौ.	सौर तारीख	चं.अ.	चन्द्र-अस्त	भू.सू.= भूमि सुप्त
फ.	फसली	चं.उ.	चन्द्र-उदय	
		भ.	भद्रा	

उदाहरण- चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (ति.१५) को लीजिए। इस तिथि को दिनमान ३१।२१ लिखा गया है। इसका अर्थ हैं कि सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन का मान ३१ घटी २१ पल हैं। आगे तिथि वार में १५ शनिवार लिखा है, इसका अर्थ तिथि १५को शनिवार है। आगे घ.प.५६।४७ लिखा है। इसका अर्थ तिथि १५ का मान ५६ घटी ४७ पल तक रहेगा। घण्टा मिनट का खाना घटी पल को घण्टा मिनट में परिवर्तित कर देता हैं। जैसे तिथि १५ का मान रात ४ बजकर २७ मिनट तक रहेगा। इस तिथि को हस्त नक्षत्र का मान २८ घटी ४४ पल है जो दिन ५ बजकर १४ मिनट तक है। व्याघ्रात नामक योग है जिसका मान ३५ घटी ३० पल है जो रात ७ बजकर ५६ मिनट तक रहेगा। करण विष्टि का मान २४ घटी २० पल तक है। द्वितीय करण बव का मान ५६ घटी ४७ पल है। मृत्यु नामक योग है। इसके आगे चन्द्र संचार का खाना है जिसमें कन्या राशि का चन्द्रमा दिन-रात रहेगा। इसके बाद उस दिन का सूर्योदय ५।४४ पर एवं सूर्यास्त ६।१६ पर होगा। रविक्रान्ति जैसे ८।२७ है इसका अर्थ ८ अंश २७ कला उत्तर क्रान्ति है। सूर्योदय कालिक स्पष्ट सूर्य ११ राशि २८ अंश ४ कला १० विकला है। उस दिन की सूर्य गति ५८।४६ अर्थात् ५८ कला ४६ विकला है। रेलवे अन्तर -१ लिखा है। इसका अर्थ है उस दिन १ मिनट घटा देने पर उस दिन का रेलवे घड़ी (स्टैण्डर्ड टाइम) के अनुसार समय होगा। चन्द्र अस्त होने का समय आगे दिया गया है। इसके अतिरिक्त दैनिक सूर्योदय कालिक ग्रह दिये गये हैं। प्रत्येक दिन की ग्रहगति दी गई हैं। दैनिक लग्न सारिणी भी दिन-रात संयुक्त लिखी गई हैं। प्रत्येक पक्ष में पक्षफल, धर्मशास्त्र, राशिफल और मुहूर्त्त सरल नागरी लिपि में लिखा गया है। काशी सूर्य घड़ी के समय (लोकल टाईम) में पंचांग में दिए हुए दैनिक अन्तर को संकेत के अनुसार धन-ऋण कर देने से काशी में रेलवे घड़ी (स्टै.टा.) के अनुसार समय हो जायेगा।

मुहूर्त्त तालिका संवत् २०८२

नोट-विस्तार से पक्ष में देखकर निर्णय लें। तिथि एवं अंग्रजी तारीख का मिलान सम्बन्धित पक्ष देखकर अवश्य कर लें।

विवाह मुहूर्त्ता:

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां दिवा लग्नं २ वा लग्नं गोधूलि:।
तिथि २ भौमे (१५.४.२५) मैत्रे मृ.बा.।
तिथि ३ बुधे (१६.४.२५) भद्रा दिवा १०।२७ वादनात्परं अनुराधायां आ.लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ लग्न १० वा लग्नं ११
तिथि ४ गुरौ (१७.४.२५) रात्रि शेष ५।५ वादनात्परं मूल नक्षत्रे ल.१२ पञ्चेष्टाभाव:।
तिथि ५ शुक्रे (१८.४.२५) मूल नक्षत्रे दि.लग्नं २ वा लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ ल.१०वा११
तिथि ६ शनौ (१९.४.२५) प्रात: ६।३२ वादनम् यावत् पंचेष्टाभाव:।
तिथि ७ रवौ (२०.४.२५) उ.षा. दिवा लग्नं२ वा लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ ल.१० वा ११
तिथि ८ सोमे (२१.४.२५) दिवा ७।५६ वादनम् यावत् उत्तराषाढ़ायाम् दिवा लग्नं२
तिथि १२ शुक्रे (२५.४.२५) मृत्युबाण दिवा ११।२७ वादनात्परं उ.भा. शुभ लग्नाभाव:।
तिथि १३।१४ शनौ (२६.४.२५) भद्रा दिवा ४।२८ परं रेवत्यां लग्नं गो.वा रात्रौ ल.१०

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि २ भौम (२९.४.२५) रात्रि ९।३० वादनात्परं रोहिण्यां ल.१० वा ल.११
तिथि ३ बुधे (३०.४.२५) रोहिण्यां दिवा लग्नं २ वा ल.४ वा लग्नं गोधूलि: रात्रि८।१६ वादनात्परं मृगशिरायां ल.१०वा ल.११
तिथि ४ गुरौ (१.५.२५) मृगशिरायां भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं लग्नं गोधूलि:।
तिथि ८ सोमे (५.५.२५)सायं ५।५८ वादनात्परं मघायां लग्नं गोधूलि: वा ल.१०वा११
तिथि ९ भौमे (६.५.२५) मघायां दिवा लग्नं २ वा लग्नं वा लग्नं ४ वा लग्नं गोधूलि।
तिथि १० बुधे (७.५.२५) रात्रि८।२३ वादनात्परं उत्तराफा. पंचेष्टाभाव: भद्रा व्याप्ति:।
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा२।१६ वादनात्परं उ.फा.लग्न गोधूलि: ततो हस्त नक्षत्रे ल.१० वा ११
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे दिवा ल.२वा ५वा लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ ल.८
तिथि १३ शनौ (१०.५.२५) रात्रि ३।३ वादनात्परं स्वात्यां लग्नं १२ पंचेष्टलग्नाभाव:।
तिथि १४ रवौ (११.५.२५) स्वात्यां रात्रि ७।११ वादनात्परं आ.लग्नं गोधूलि:।
तिथि १५ सोमे (१२.५.२५) स्वात्यां भद्रा।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि १ भौमे (१३.५.२५) दिवा ८।१४ वादनात्परं अनुराधायां मृत्युबाण रात्रि २।३१ वादनात्परं लग्नं १२ पंचेष्टाभाव:।
तिथि २ बुधे (१४.५.२५) अनुराधायां दि.ल.२
तिथि ३ गुरौ (१५.५.२५) भद्रा रात्रि १।४५ वादनात्परं मूल नक्षत्रे ल.११ रात्रि ४।४३ वादनात्परं मृत्युबाण:।
तिथि ४ शुक्रे (१६.५.२५) मूले मृ.बा.व्याप्ति:।
तिथि ५ शनौ (१७.५.२५) दिवा ३।१२ वादनात्परं उ.षा.लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ लग्नं ९ वा लग्नं १२
तिथि ६ रवौ (१८.५.२५) उत्तराषाढ़ायाम् दिवा लग्ने पंचेष्टाभाव:।
तिथि १० गुरौ (२२.५.२५) भद्रा रात्रि ९।२४ वादनात्परं उ.भा. ल.११,१२ वा लग्नं२
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) उत्तराभाद्रपदे दिवा लग्नं २ दिवा १२।११ वादनात्परं रेवत्यां केतुवेध: आ.लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ लग्नं १० वा लग्नं २ वा लग्नं ११
तिथि १२ शनौ (२४.५.२५) रेवत्यां आ.दिवा लग्नं २।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १।२बुधे (२८.५.२५) मृगशिरायां दि. ल.२ वा गोधूलि वा रात्रौ ल.१० वा १२
तिथि ६ रवौ (१.६.२५) रात्रि १।४५ वादनात्परं मघायां ल.१२
तिथि ७ सोमे (२.६.२५) मघायां दिवा ल.४ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.१०
तिथि ८ भौमे (३.६.२५) रात्रि ३।५६ वादनात्परं उ.फा. मृत्युबाण व्याप्ति:।
तिथि ९ बुधे (४.६.२५) मृत्युबाण रात्रि १।१५ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां ल.१२
तिथि १०गुरौ (५.६.२५) प्रात:५।४४परं हस्त नक्षत्रे दिवा ल.४ वा ल.५ आ.ल.गोधूलि।
तिथि १२ शनौ (७.६.२५) दिवा १०।२५ वादनात्परं स्वात्यां दिवा ल.५ वा ल.७ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.१० वा ल.१२ वा ल.१ वा ल.२ पंचेष्टाभाव:।
तिथि १२ रवौ (८.६.२५) स्वात्यां दिवा ल.५ वा ल.७ **तत्परं गुरु वृद्धत्वदोष:।**

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १३ भौमे (१८.११.२५) मृत्युबाण रात्रि १।२ वादनात्परं स्वात्यां ल.६वा ल.७
तिथि १४ बुधे (१९.११.२५) दिवा ८।१२ वादनम यावत् स्वात्यां दिवा ल.८ पंचेष्टाभाव:। तत्परं मासान्त:।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२१.११.२५) दिवा १।२३ वादनम् यावत् अनुराधायां दिवा ल.१०
तिथि २ शनौ (२२.११.२५) दिवा ३।५२ वादनात्परं मूल नक्षत्रे लग्नं गोधूलि. वा रात्रौ ल.३ वा ल.४ वा ल.६ वा ल.७
तिथि ३ रवौ (२३.११.२५) मूले दिवा ल.१० वा ल. गोधूलि (सायं ६।६ वादनम् यावत्)
तिथि ४ सोमे (२४.११.२५) रात्रि ७।५५ वादनात्परं उ.षा. ल.३,४ वा ल.६वा ७
तिथि ५ भौमे (२५.११.२५) उ.षा. दिवा ल.९ वा ल.१० वा ल.गोधूलि: वा रात्रौ ल.३ वा ल.४ (रात्रि ९।१९वादनम् यावत्)।
तिथि ९ शनौ (२९.११.२५) रात्रि ९।५५ वादनात्परं उ.भा. ल.६ वा ल.७
तिथि १० रवौ(३०.११.२५)उ.भा. दि.ल.१० वा गोधूलि वा ल.३ रात्रि ९।१ वादनात्परं रेवत्यां ल.६ रात्रि ३।१५ वादनात्परं भद्रा।
तिथि ११ सोमे (१.१२.२५) भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां आ.ल.गोधूलि: रात्रि ७।४८ वादनम् यावत्।
तिथि १४।१५ गुरौ (४.१२.२५) भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां ल.गोधूलि: वा रात्रौ ल.६ वा ल.७।

पौष कृष्ण पक्ष:

तिथि १शुक्रे (५.१२.२५) रोहिण्यां दि.ल.१०। दिवा १।२६ वादनात्परं मृगशिरायां ल. गोधूलि सायं ६।४५ वादनात्परं मृ. व्याप्ति:।
तिथि २ शनौ (६.१२.२५) मृगशिरायां मृत्युबाण:,तत्परं परं **शुक्रवृद्धत्व शुक्रास्त:।**

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ३ बुधे (४.२.२६) भद्रा रात्रि १।८ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां ल.१०
तिथि ४ गुरौ (५.२.२६) उ.फा. दिवा ल.१० वा ल.१२ वा ल.गोधूलि वा ल.७। रात्रि १२।२६ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे.ल.८,१०
तिथि ५ शुक्रे (६.२.२६) हस्त नक्षत्रे दिवा ल.१० वा ल.गोधूलि: वा रात्रौ ल.५ वा ल.८ (रात्रि १।४२ वादनम् यावत्)।
तिथि ६ शनौ (७.२.२६) स्वात्यां रात्रि ३।१४ वादनात्परं भद्रा व्याप्ति:।
तिथि ७ रवौ (८.२.२६) भद्रा दिवा ४।५ वादनात्परं स्वात्यां राहुवेध: आ.ल.गोधूलि तत्परं पञ्चेष्ट लग्नाभाव:।
तिथि ८ भौमे (१०.२.२६) दिवा ७।५९ वादनात्परं अनुराधायां दिवा ल. पंचेष्टाभाव: वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.७ वा ल.१०।
तिथि ९ बुधे (११.२.२६) अनुराधायां दिवा ल.१०(दिवा ८।२२ वादनात्परं मृत्युबाण:)।
तिथि १० गुरौ (१२.२.२६) दिवा १।११ वादनात्परं मूल नक्षत्रे लग्नं गोधूलि वा रात्रौ ल.७ वा ल.८ वा ल.१०।
तिथि ११ शुक्रे (१३.२.२६) मूले दिवा लग्ने पंचेष्टाभाव:।
तिथि १२ शनौ (१४.२.२६) सायं ५।४५ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायां मृत्युबाण:।
तिथि १३ रवौ (१५.२.२६) मृत्युबाण: भद्रा।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ गुरौ (१९.२.२६) रात्रि ९।२३ वादनात्परं उ.भा. ल.७ वा ल.१०।
तिथि ३ शुक्रे (२०.२.२६) उ.भाद्रपदायां दिवा ल.१ वा ल.२ वा ल.गोधूलि। रात्रि ८।४४ वादनात्परं रेवत्यां रात्रि २।१८ से पूर्व ल.६ वा ल.७।
तिथि ४ शनौ (२१.२.२६) रिक्ता भद्रा दिवा १।३०वादनात्परं पंचम्यां रेवत्यां ल.गोधूलि:।
ति. ७ भौमे (२४.२.२६) भद्रा सायं ५।३३ वादनात्परं रोहिण्यां ल.गो.वा रात्रौ ल.७,१०
तिथि९ बुधे (२५.२.२६) रोहिण्यां दिवा ल.१ दिन १।३८उपरान्त मृगशिरायां ल. गोधूलि वा ल.६ वा ल.७ वा ल.९वा ल.१०
तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) मृगशि.दि.ल.१
तिथि १४ सोमे (२.३.२६) दिवा ७।२४ वादनात्परं मघायां भद्रा सायं ६।५१ वादनात्पूर्व दिवा लग्ने शुभ लग्नाभाव:।

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (४.३.२६) दिवा ७।१७ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां मृत्युबाण:।
तिथि २ गुरौ (५.३.२६) हस्त नक्षत्रे शनिवेध:।
तिथि ३ शुक्रे (६.३.२६) हस्त नक्षत्रे शनिवेध: भद्रा व्याप्तिश्च।
तिथि ४ शनौ (७.३.२६) दिवा १०।४५ वादनात्परं स्वात्यां भौमवेध:।
तिथि ५ रवौ (८.३.२६) स्वात्यां दिवा १२।४८ वादनम यावत् भौमवेध:।
तिथि ६ सोमे (९.३.२६) दिवा ३।११ वादनात्परं अनुराधायां लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ लग्नं ६,७ रात्रि १०।१ वादनात्परं भद्रा।
तिथि ७ भौमे (१०.३.२६) दिवा ११।७ परं अनुराधायां दिवा लग्नं ३ वा ४ पंचेष्टाभाव:।
तिथि ८ बुधे (११.३.२६) रात्रि ८।२४ वादनात्परं मुले लग्नं ७ वा ल.९ वा १०
तिथि ९ गुरौ (१२.३.२६) मुले दिवा लग्नं वा लग्नं १ वा लग्नं गोधूलि:।
तिथि १० शुक्रे (१३.३.२६) रात्रि १।३ वादनात्परं उ.षा. भद्रा मृत्युबाण: व्याप्ति:।
तिथि ११ शनौ (१४.३.२६) उ.षा. दिवा लग्नं १ वा लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ लं.६ वा लग्नं ९। **तत्परं मीनार्क: खरमास:।**

वर-वरणं कन्या वरणं मुहूर्त्ता:

(तिलक गोद भराई)

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां
तिथि ५ शुक्रे (१८.४.२५) मूल नक्षत्रे
तिथि ७ रवौ (२०.४.२५) पू.षा. दिवा ७।३४ वादनात्परं उ.षा.
तिथि ११ गुरौ (२४.४.२५) पूर्वाभाद्रपदे
तिथि १२ शुक्रे (२५.४.२५) उत्तराभाद्रपदे

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (३०.४.२५) रोहिण्यां
तिथि ४ गुरौ (१.५.२५) भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं मृगशिरायां
तिथि १० बुधे (७.५.२५) पू.फा.उ.फाल्गुन्यां
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१४.५.२५) अनुराधायां
तिथि ६ रवौ (१८.५.२५) उत्तराषाढ़ायाम्
तिथि ७ सोमे (१९.५.२५) श्रवणे कन्यावरणं
तिथि १० गुरौ (२२.५.२५) भद्रा रात्रि ८।२४ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) रेवत्यां

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १।२ बुधे (२८.५.२५) मृगशिरायां
तिथि ७ सोमे (२.६.२५) मघायां
तिथि १० गुरौ (५.६.२५) उ.फा. हस्त नक्षत्रे
तिथि ११ शुक्रे (६.६.२५) भद्रा दिवा ४।७ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे
तिथि १२ रवौ (८.६.२५) स्वात्यां

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२१.११.२५) अनुराधायां
तिथि ३ रवौ (२३.११.२५) मूले
तिथि ४ सोमे (२४.११.२५) भद्रा रात्रि सायं ६।१६ वादनात्परं उ.षा.
तिथि ६ बुधे (२६.११.२५) श्रवणे कन्यावरणं
तिथि १० रवौ (३०.११.२५) उ.भाद्रपदे
तिथि ११ सोमे (१.१२.२५) भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां
तिथि १४।१५ गुरौ (४.१२.२५) भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां।

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि १ शुक्रे (५.१२.२५) रोहिण्यां मृगशिरयां

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (६.२.२६) हस्त नक्षत्रे
तिथि ७ रवौ (८.२.२६) भद्रा दिवा ४।५ वादनात्परं स्वात्यां
तिथि ९ बुधे (११.२.२६) रिक्ता दिवा ९।१ वादनात्परं अनुराधायां
तिथि १० गुरौ (१२.२.२६) भद्रा दिवा १।११ वादनात्परं मूल नक्षत्रे
तिथि ११ शुक्रे (१३.२.२६) मूले
तिथि १३ रवौ (१५.२.२६) भद्रा सायं ३।५९ वादनात्पूर्व उत्तराषाढ़ायाम्

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ गुरौ (१९.२.२६) पूर्वाभाद्रपदे
तिथि ३ शुक्रे (२०.२.२६) उत्तराभाद्रपदे
तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम् यावत्।

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (४.३.२६) उत्तराफाल्गुन्यां
तिथि २ गुरौ (५.३.२६) उ.फा. हस्त नक्षत्रे
तिथि ५ रवौ (८.३.२६) स्वात्यां
तिथि ६ सोमे (९.३.२६) दिवा ३।११ वादनात्परं अनुराधायां
तिथि १० शुक्रे (१३.३.२६) सायं ५।० वादनात्पूर्व पूर्वाषाढ़ा

वैवाहिक वधूप्रवेश मुहूर्त्ता

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां ल.६
तिथि ५ शुक्रे (१८.४.२५)मूल नक्षत्रे (पंचम्यां)
तिथि ८ सोमे (२१.४.२५) रिक्ता दिवा १।४२ वादनात्पूर्व उ.षा.श्रवणे ल.२
तिथि १२ शुक्रे (२५.४.२५) उ.भा.ल.३

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ४ गुरौ (१.५.२५) मृगशिरायां भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं ल.६
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे ल.३

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ७ सोमे(१९.५.२५) श्रवणे-धनिष्ठा.ल.६
तिथि १० गुरौ (२२.५.२५) भद्रा रात ८।२४ वादनात्परं उ.भा. ल.९
तिथि ११ शुक्रे(२३.५.२५)उ.भा.रेवत्यां ल.६

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ७ सोमे (२.६.२५) मघायां ल.७
तिथि १० गुरौ (५.६.२५) उ.फा. हस्त ल.३
तिथि ११ शुक्रे (६.६.२५) भद्रा दिवा ४।७ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे ल.३

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२१.११.२५) दिवा १।२३ वादनय यावत् अनुराधायां ल.९
तिथि ४ सोमे (२४.११.२५) भद्रा रात ६।१६ वादनात्परं उ.षाढ़ायां ल.३
तिथि ७ गुरौ (२७.११.२५)धनिष्ठा.ल.१२
तिथि ११ सोमे (१.१२.२५) भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां ल.गोधूलि
तिथि १४।१५ गुरौ (४.१२.२५) भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां ल.३

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि १ शुक्रे (५.१२.२५) रोहि.-मृग.ल.१२
तिथि ४ सोमे (८.१२.२५) रिक्ता रात ९।१८ वादनात्परं पुष्ये ल.६

फाल्गुन कृष्ण पक्ष:

तिथि ५ शुक्रे (६.२.२६)हस्त नक्षत्रे ल.२
तिथि १० गुरौ (१२.२.२६) दिवा १।११ वादनात्परं मूले ल.३
तिथि ११ शुक्रे (१३.२.२६) मूले ल.१२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ गुरौ (१९.२.२६) रात्रि ९।२३ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे ल.७
तिथि ३ शुक्रे (२०.२.२६) रिक्ता दिवा ३।६ वादनात्पूर्व उ.भाद्रपदे ल.३
तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम् यावत् मृगशिरा ल.१२ वा २

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि २ गुरौ (५.३.२६) उ.फाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे ल.१२ वा ल.२
तिथि ६ सोमे (९.३.२६) दिवा ३।११ वादनात्परं अनुराधायां ल.गोधूलि।
तिथि ११ शनौ (१४.३.२६) उत्तराषा.ल.२

द्विरागमन मुहूर्त्ता

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां ल.६
तिथि ५ शुक्रे (१८.४.२५) मूले ल.२
तिथि ८ सोमे (२१.४.२५) उत्तराषाढ़ायां श्रवणे ल.२
तिथि १० बुधे (२३.४.२५) भद्रा दिवा १२।२२वादनात्परं शतभिषायां ल.गोधूलि
तिथि ११ गुरौ (२४.४.२५) प्रात: ६।३५ वादनात्पूर्व शतभिषायां
तिथि १२ शुक्रे (२५.४.२५) उत्तराभाद्रपदे (त्रयोदशम्यां) ल.३

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (३०.४.२५) रोहिण्यां ल.२वा३
तिथि ४ गुरौ (१.५.२५) रिक्ता भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं मृगशिरायां ल.६
तिथि ५ शुक्रे (२.५.२५) सायं ६।६ वादनात्परं पुनर्वसौ ल.७
तिथि १० बुधौ (७.५.२५) रात्रि ८।२३ वादनात्परं उ.फा. लग्नं ९
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां ल.गोधूलि
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे ल.३ वा गोधूलि (त्रयोदशय्यां)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१४.५.२५) अनुराधायां दिवा १०।३४ वादनापूर्व।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२१.११.२५) दिवा १।२३ वादनम यावत् अनुराधायां ल.९

तिथि ४ सोमे (२४.११.२५) रिक्ता भद्रा सायं ६।१६ वादनात्परं उ.षा. ल.८
तिथि ६ बुधे (२६.११.२५) धनिष्ठायां रात्रि १०।११ वादनात्परं रात्रि शेषे ल.८
तिथि ७ गुरौ (२७.११.२५) धनिष्ठा.ल.१२
तिथि ८ शुक्रे (२८.११.२५) भद्रा प्रातः ७।४ वादनात्परं शतभिषायां ल.१२
तिथि ११ सोमे (१.१२.२५) भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां ल.गोधू. ल.३
तिथि १४।१५ गुरौ (४.१२.२५) भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां ल.३

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि १ शुक्रे (५.१२.२५) रोहिण्यां ल.१२
तिथि ४ सोमे (८.१२.२५) रिक्ता रात्रि ९।१८ वादनात्परं पुष्ये ल.६

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (१३.२.२६) मूले ल.१२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (१८.२.२६) शतभिषायां ल.३
तिथि २ गुरौ (१९.२.२६) रात्रि ९।२३ वादनात्परं उ.भा. ल.७
तिथि ३ शुक्रे (२०.२.२६) रिक्ता दिवा ३।१६ वादनात्पूर्व उ.भाद्रपदे ल.३
तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम् यावत् मृगशिरायां ल.१२वा २

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि १बुधे (४.३.२६) दिवा ७।१७ वादनात्परं उ.फा. ल.२
तिथि २ गुरौ (५.३.२६) उ.फा.हस्त नक्षत्रे ल.१२ व २
तिथि ८ बुधे (११.३.२६) रात्रि ८।२४ वादनात्परं मूले ल.७

गर्भाधान

मानव जीवन के षोडश संस्कारों में गर्भाधान संस्कार ही आधारभूत संस्कार है और इसको अवश्य ही तिथि नक्षत्रों एवं लग्नों से ग्रहों के बलाबल को ध्यान में रखते हुए करना एक यशस्वी सन्तान हेतु आवश्यक एवं समीचीन होगा। इसलिए इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रमुखता से दिया जा रहा है।

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि ४।५बुधे (२.४.२५)रात्रौ रोहिण्यां ल.८
तिथि १३ गुरौ (१०.४.२५)उ.फा.रात्रौ ल.८

वैशाख कृष्ण पक्षः

तिथि १सोमे (१४.४.२५)स्वात्यां रात्रि१०।२५
तिथि १० बुधे (२३.४.२५) शतभिषायां रात्रौ ल.८ व ९

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ११गुरौ(८.५.२५) उ.फा.रात्रौ ल.९व११
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५)हस्त नक्षत्रे रात्रौ ल.९

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ७ सोमे (१९.५.२५) श्रवणे रात्रौ ल.९
तिथि १० गुरौ (२२.५.२५) उ.भा.रात्रौ ल.९

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि१०गुरौ (५.६.२५)उ.फा.हस्त नक्षत्रे रात्रौ।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (१३.६.२५) रात्रि १०।५४ वादनात्परं उ.षा. ल.११

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि १२ सोमे (७.७.२५) अनुराधायां

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि १ शुक्रे (११.७.२५) उ.षाढ़ायाम् रात्रौ
तिथि ३ रवौ (१३.७.२५) धनिष्ठायां रात्रौ
तिथि ११ सोमे (२१.७.२५) रोहिण्यां रात्रौ

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि १० सोमे (१८.८.२५)मृगशिरायां रात्रौ

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि २ सोमे (२५.८.२५) उ.फाल्गुन्यां रात्रौ

आश्विन कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (८.९.२५) रात्रि १०।१५ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि ४ शुक्रे (२६.९.२५) रात्रि ८।३२ वादनात्परं अनुराधायां
तिथि ९ बुधे (१.१०.२५) उत्तराषा. रात्रौ
तिथि १० गुरौ (२.१०.२५) श्रवणे रात्रौ
तिथि ११ शुक्रे (३.१०.२५) धनिष्ठायां रात्रौ

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (२२.१०.२५) स्वात्यां रात्रौ
तिथि ३शुक्रे (२४.१०.२५) अनुराधायां रात्रौ
तिथि ८ बुधे (२९.१०.२५) श्रवणे रात्रौ

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ४ सोमे (२४.११.२५) उ.षाढ़ायां रात्रौ
तिथि ६ बुधे (२६.११.२५) रात्रि १०।११ वादनात्परं धनिष्ठायां

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि ४ बुधे (२४.१२.२५) धनिष्ठायां रात्रौ

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ६ शुक्रे (९.१.२६) रात्रौ हस्त नक्षत्रे

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (२१.१.२६) शतभिषायां रात्रौ
तिथि ५ शुक्रे (२३.१.२६) उ.भाद्रपदे रात्रौ
तिथि ११ गुरौ (२९.१.२६) मृगशिरायां रात्रौ

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (६.२.२६) हस्त नक्षत्रे रात्रौ

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (१८.२.२६) रात्रौ शतभिषायां

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (४.३.२६) उ.फाल्गुन्यां रात्रौ
तिथि १२ सोमे (१६.३.२६) धनिष्ठायां रात्रौ

चौल केशान्त मुण्डन मुहूर्त्त

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां ल.३
तिथि ४ गुरौ (१७.४.२५) रिक्ता दिवा १२।१ वादनात्परं ज्येष्ठायां ल.४
तिथि १० बुधे (२३.४.२५) भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं ल.४
तिथि ११ गुरौ (२४.४.२५) प्रातः ६।३५ वादनात्पूर्व शतभिषायां

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ४ गुरौ (१.५.२५) रिक्ता भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं मृगशिरायां
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे ल.३

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ गुरौ (१५.५.२५) दिवा १२।३३ वादनात्पूर्व ज्येष्ठायां
तिथि ७ सोमे (१९.५.२५) भद्रा दिवा २।३३ वादनात्परं श्रवणे ल.६
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) दिवा १२।११ वादनात्परं रेवत्यां ल.५ वा ल.६

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १।२बुधे (२८.५.२५) मृगशिरायां ल.३
तिथि १० गुरौ (५.६.२५) हस्त नक्षत्रे ल.३
तिथि ११ शुक्रे (६.६.२५) भद्रा दिवा ४।७ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे ल.३

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ शुक्रे(६.२.२६) हस्त नक्षत्रे ल.१२वा२
तिथि ९ बुधे (११.२.२६) रिक्ता दिवा १०।३६ वादनात्परं ज्येष्ठायां ल.२
तिथि १० गुरौ (१२.२.२६) भद्रा दिवा ११।७ वादनात्परं ज्येष्ठायां ल.२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (१८.२.२६) शतभिषायां ल.३
तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम यावत् मृगशिरायां ल.१२व २
तिथि ११ शुक्रे (२७.२.२६) भद्रा दिवा ११।३ वादनात्पूर्व पुनर्वसौ ल.१ वा २

उपनयन व्रतबन्ध मुहूर्त्ताः (जनेऊ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि २ सोमे(३१.३.२५) अश्विन्यां वि.कु.ल.३
तिथि ४।५ बुधे (२.४.२५) दिवा १।२१ वादनात्परं रोहिण्यां वि.कु.ल.५
तिथि १० सोमे (७.३.२५) पुष्ये-श्लेषायां ल.३ वि.कु.
तिथि १२ बुधे (९.४.२५) दिवा ११।२२ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपद वि.कु.ल.५

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां ल.३
तिथि ५ शुक्रे (१८.४.२५) मूले ल.३
तिथि १० बुधे (२३.४.२५) भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं शतभिषायां ल.४
तिथि ११गुरौ (२४.४.२५) पूर्वाभाद्रपदे ल.३

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (३०.४.२५) रोहिण्यां ल.२
तिथि १०बुधे (७.५.२५) पूर्वाफाल्गुन्यां ल.३
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां ल.५
तिथि १२शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे ल.३,५

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१४.५.२५) अनुराधायां ल.३
तिथि १० गुरौ (२२.५.२५) भद्रा दिवा ९।२४ वादनात्पूर्व पूर्वाभाद्रपदे ल.३
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) उत्तराभाद्रपदे रेवत्यां ल.५ वा ६

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १।२ बुधे (२८.५.२५)मृग.ल.३वा ६
तिथि ३ गुरौ (२९.५.२५) आर्द्रायाम् ल.३वा६
तिथि १० गुरौ (५.६.२५) उ.फा.हस्त नक्षत्रे ल.३ वा ५
तिथि ११ शुक्रे (६.६.२५) भद्रा दिवा ४।७ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे ल.३ वा ५
तिथि १२ रवौ (८.६.२५) स्वात्यां ल.३

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (६.२.२६) हस्त नक्षत्रे ल.२
तिथि ९ बुधे (११.२.२६) रिक्ता दिवा ९।१ वादनात्परं अनुराधायां ल.१

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (१८.२.२६) शतभिषायां ल.३
तिथि २ गुरौ (१९.२.२६) पूर्वाभाद्रपदे ल.३
तिथि ३ शुक्रे (२०.२.२६) दिवा ३।६ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे ल.२
तिथि ५ रवौ (२२.२.२६) अश्विन्यां ल.३
तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम यावत मृगशिरायां ल.१२ वा २।
तिथि११ शुक्रे (२७.२.२६) भद्रा दिवा ११।३ वादनात्पूर्व आर्द्रायाम् ल.१ वा २

कर्णवेध (नासिका छेदन) मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां ल.३

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि४गुरौ (१.५.२५) रिक्ता भद्रा दिवा ४।० मृगशिरायां सायं ६।५५ वादनात्पूर्व
तिथि ५ शुक्रे (२.५.२५) आर्द्रायां
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे ल.३

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१४.५.२५) अनुराधायां ल.३
तिथि ७ सोमे (१९.५.२५) भद्रा दिवा २।३३ वादनात्परं श्रवणे ल.६
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) उ.भाद्रपदे

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १।२बुधे (२८.५.२५) मृगशिरायां ल.३
तिथि ३ गुरौ (२९.५.२५) आर्द्रायां ल.३वा६
तिथि १० गुरौ (५.६.२५) उ.फा.हस्त ल.३

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२१.११.२५) दिवा १।२३ वादनम् यावत् अनुराधायां
तिथि ६ बुधे (२६.११.२५) श्रवणे
तिथि ७ गुरौ (२७.११.२५) धनिष्ठायां
तिथि ११ सोमे (१.१२.२५) भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (६.२.२६) हस्त नक्षत्रे ल.१२व२
तिथि ९ बुधे (११.२.२६) रिक्ता दिवा ९।१ वादनात्परं अनुराधायां

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम् यावत् मृगशिरायां ल.१२ वा २
तिथि ११ शुक्रे (२७.२.२६) भद्रा दिवा ११।३ वादनात्पूर्व आर्द्रायां

गृहारम्भ मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां ल.३
तिथि ११ गुरौ (२४.४.२५) प्रातः६।३५ वादनात्पूर्व शतभिषायां

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि १० बुधे (७.५.२५) रात्रि ८।२३ वादनात्परं उ.फा. ल.८ वा ९
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां ल.गोधूलि
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे ल.८
तिथि १३शनौ (१०.५.२५) चित्रायां ल.२वा५

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१४.५.२५) अनुराधायां ल.३

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ११शुक्रे(६.६.२५)भद्रा दि.४।७ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे ल.२ वा ३ चित्रायां ल.५
तिथि १२ शनौ (७.६.२५) चित्रायां ल.२वा३

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ८ शुक्रे (१.८.२५) स्वात्यां भद्रा सायं ५।२१ वादनात्परं ल.६
तिथि १५ शनौ (९.८.२५) दिवा ३।२९ वादनात्परं धनिष्ठायां ल.९

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (११.८.२५) शतभिषायां ल.८

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (२७.११.२५) धनिष्ठायां ल.१२
तिथि ९ शनौ (२९.११.२५) रात्रि ९।५५ वादनात्परं उ.भा. ल.६ वा रात्रि शेष ल.७
तिथि ११ सोमे (१.१२.२५) भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां ल.गोधूलि
तिथि १४।१५ गुरौ (४.१२.२५) भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां ल.३

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम् यावत् मृगशिरा ल.१२व२(भू.सु.)
तिथि १२शनौ (२८.२.२६) पुष्ये ल.२(भू.सु.)

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १२ शुक्रे (२५.४.२५)उ.भाद्रपदे ल.२

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि १० बुधे (७.५.२५) रात्रि ८।२३ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां ल.८वा ९
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां ल.गोधूलिः।
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त नक्षत्रे ल.८
तिथि १३शनौ (१०.५.२५) चित्रायां ल.२वा५

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि १० गुरौ (२२.५.२५) भद्रा रात्रि ८।२४ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे ल.९
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) उ.भा.-रेवत्यां ल.२ वा ५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (६.६.२५) भद्रा दिवा ४।७ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे ल.२,३चित्रायां ल.५
तिथि १२ शनौ (७.६.२५) चित्रायां ल.२वा३

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ९ बुधे (११.२.२६) रिक्ता दिवा ९।१ वादनात्परं अनुधायां च.शु.
तिथि १२ शनौ (१४.२.२६) सायं ५।४५ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् ल.गो.(भू.सु.)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम् यावत् मृगशिरायां ल.१२वा२
तिथि १२शनौ(२८.२.२६) पुष्ये ल.२(भू.सु.)

जीर्णादि गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

नोट- पुराने मकान को तोड़कर बने नये घर तथा फ्लैट इत्यादि में प्रवेश के लिये नूतन गृहप्रवेश के मुहूर्त तो शुभ है ही साथ में श्रावण कार्तिक, मार्गशीर्ष में जीर्णादि गृहप्रवेश के मुहूर्त में प्रवेश किया जा सकता है।

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि ११ सोमे (२१.७.२५) रोहि.-मृग.ल.६

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ६ बुधे (३०.७.२५) हस्त नक्षत्रे ल.६
तिथि ७ गुरौ (३१.७.२५) चित्रायां
तिथि ८ शुक्रे (१.८.२५) भद्रा सायं ५।२१ वादनात्परं स्वात्यां ल.६

कार्तिक कृष्ण पक्ष

ति.९ बुधे (१५.१०.२५) रिक्ता दिवा २।४४ वादनात्परं पुष्ये ल.१२
तिथि १२ शनौ (१८.१०.२५) सायं ५।३६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां लग्नं गोधूलिः

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि १० शुक्रे (३१.१०.२५) दिवा २।५४ वादनात्परं शतभिषायां ल.१२ वा गोधूलि.
तिथि १३ सोमे (३.११.२५) दिवा १।५ वादनात्परं रेवत्यां ल.११ वा १२

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि ११ शनौ (१५.११.२५) उ.फा.ल.९
तिथि १३ सोमे (१७.११.२५) चित्रायां ल.९

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ६ बुधे (२६.११.२५) रात्रि १०।११ वादनात्परं धनिष्ठायां रात्रि शेषे ल.८
तिथि ७ गुरौ (२७.११.२५) धनिष्ठायां ल.१२
तिथि ९ शनौ (२९.११.२५) रात्रि ९।५५ वादनात्परं उ.भा.ल.६ वा रात्रि शेषे ल.७
तिथि ११ सोमे (१.१२.२५) भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां ल.गोधूलि

सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशय-वाटिका (बगीचा) आरम्भ मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.४.२५) स्वात्यां ल.३
तिथि ८ सोमे (२१.४.२५) रिक्ता दिवा १।४२ वादनात्पूर्व उ.षा. श्रवणे ल.२
तिथि१०बुधे (२३.४.२५)भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं शतभिषायां ल.६ वा गोधूलि
तिथि ११ गुरौ (२४.४.२५) प्रातः ६।३५ वादनात्पूर्व शतभिषायां
तिथि १२शुक्रे (२५.४.२५) उ.भाद्रपदे ल.२

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (३०.४.२५) रोहिण्यां ल.२वा३
तिथि ४ गुरौ (१.५.२५) रिक्ता, भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं मृगशिरायां ल.६
तिथि १० बुधे (७.५.२५) रात्रि ८।२३ वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां ल.८ व ९
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उ.फा. ल. गोधूलि।
तिथि १२ शुक्रे (९.५.२५) हस्त लक्षत्रे ल.८

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१४.५.२५) अनुराधायां ल.३
तिथि ७ सोमे (१९.५.२५) भद्रा दिवा २।३३ वादनात्परं श्रवणे-धनिष्ठायां ल.६
तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) उ.भा.ल.२वा५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १।२ बुधे (२८.५.२५) मृग.ल.३ वा४
तिथि १० गुरौ (५.६.२५) उ.फा.हस्त ल.३,५
तिथि ११शुक्रे (६.६.२५) भद्रा दिवा ४।७ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे ल.२ वा३

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (६.२.२६) हस्त नक्षत्रे ल.२
तिथि ७ रवौ (८.२.२६) भद्रा दिवा ४।५ वादनात्परं स्वात्यां ल.गोधूलि
तिथि ९ बुधे (११.२.२६) रिक्ता दिवा ९।१ वादनात्परं अनुराधायां

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (१८.२.२६) शतभिषायां
तिथि ३ शुक्रे (२०.२.२६) रिक्ता दिवा ३।६ वादनात्पूर्व उ.भा. ल.२ वा ३
तिथि १० गुरौ (२६.२.२६) दिवा १२।० वादनम् यावत् मृगशिरायां ल.१२ वा२
तिथि १२ शनौ (२८.२.२६)पुनव.-पुष्ये ल.२

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (४.३.२६) दिवा ७।१७ वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां ल.२
तिथि २ गुरौ (५.३.२६) उ.फा.-हस्ते ल.१२
तिथि ६ सोमे (९.३.२६) दिवा ३।११ वादनात्परं अनुराधायां ल.गोधूलि।

चूल्हिका स्थापना मुहूर्त्ताः

(सभी मुहूर्त्तों में चक्र शुद्धि प्राप्त है।)

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि ११ गुरौ (२४.४.२५) पूर्वा भाद्रपदे

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (३०.४.२५) रोहिण्यां
तिथि ४ गुरौ (१.५.२५) रिक्ता, भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं मृगशिरायां (सायं)
तिथि ११ गुरौ (८.५.२५) भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (२३.५.२५) उत्तराभाद्रपदे

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ गुरौ (२९.५.२५) आर्द्रायां
तिथि १० गुरौ (५.६.२५) उत्तराफाल्गुन्यां

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि १ शुक्रे (११.७.२५) दिवा ६।३३ वादनात्परं उ.षा. नक्षत्रे
तिथि ११ सोमे (२१.७.२५) रोहिण्यां

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२५.७.२५) पुष्य नक्षत्रे

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि २ सोमे (२५.८.२५) उत्तराफाल्गुन्यां
तिथि १२ गुरौ (४.९.२५) उत्तराषाढ़ायाम्

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (२२.९.२५) उत्तराफाल्गुन्यां
तिथि १४ सोमे (६.१०.२५) रिक्ता दिवा ११।२४ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (७.११.२५) प्रातः७।१ वादनात्परं रोहिण्यां

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १४।१५ गुरौ (४.१२.२५) भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि १ शुक्रे (५.१२.२५) रोहिण्यां

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ३ शुक्रे (२०.२.२६) उत्तराभाद्रपदे रिक्ता दिवा ३।६ वादनात्पूर्व

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (४.३.२६) दिवा ७।१७ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

जल यंत्र कर्म मुहूर्त्ताः

(नलकूप, चापाकल इत्यादि के लिए बोरिंग, समरसेबुल पम्प)

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि १० सोमे (७.४.२५) पुष्ये
तिथि १२ बुधे (९.४.२५) दिवा ११।२२ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां
तिथि १३ गुरौ (१०.४.२५) पूर्वाफाल्गुन्यां

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (१८.४.२५) मूल नक्षत्रे
तिथि ७ रवौ (२०.४.२५) पू.षाढ़ा.(प्रातः)
तिथि १० बुधे (२३.४.२५) भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं शतभिषायां
तिथि ११ गुरौ (२४.४.२५) प्रातः ६।३५ वादनात्पूर्व शतभिषायां

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ७ रवौ (४.५.२५) भद्रा दिवा १२।११ वादनात्पूर्व पुष्ये
तिथि ८ सोमे (५.५.२५) श्लेषायां दिवा ११।४८ वादनात्पूर्व

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि १० गुरौ (२२.५.२५) भद्रा दिवा ९।२४ वादनात्पूर्व पूर्वाभाद्रपदे

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ६ रवौ (१.६.२५) श्लेषायां
तिथि ७ सोमे (२.६.२५) मघायां

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (१२.६.२५) मूले
तिथि २ शुक्रे (१३.६.२५) पूर्वाषाढ़ायाम्
तिथि ७ बुधे (१८.६.२५) पूर्वाभाद्रपदे

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि २ शुक्रे (२७.६.२५) दिवा ९।३१ वादनात्परं पुष्ये
तिथि ५ सोमे (३०.६.२५) मघायां

....शेष पृष्ठ ४ पर देखें।

मधुमेह रोग एवं उसकी चिकित्सा-व्यवस्था

प्रस्तुति-प्रो.जे.के.ओझा, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी।

मधुमेह अथवा डायबिटीज स्वयं कोई रोग नहीं है, अपितु कई रोगों की उत्पत्ति का कारण अवश्य है। मेह का अर्थ वर्षा या जल त्याग से है, अर्थात् जिस रोग में मधु के समान (मधुर-कषाय) रस वाला मूत्र त्याग होता है उस रोग को मधुमेह कहते है। मधुमेह रोगी के शरीर से (मधु एवं ओज जो रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र का सार है) मूत्ररूप में शरीर से बाहर निकल जाता है जिसके कारण बल क्षीण हो जाता है तथा शरीर निस्तेज एवं दुर्बल प्रतीत होने लगता है। आयुर्वेद के महान ग्रन्थ "चरक संहिता" में इसका उल्लेख है।

कारण-अनुवांशिक कारण में माता-पिता अथवा रक्त सम्बन्धी के मधुमेही होने पर सन्तान में यह रोग हो सकता है फिर भी यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। अनुवांशिकी रोगी में मधुमेह के लक्षण कम उम्र में ही प्रकट होने लगते हैं एवं तीव्रता से बढ़ते हैं।

आहार-विहार-मुख्यरूप से मधुमेह का सम्बन्ध आहार-विहार अर्थात् खाने-पीने रहन-सहन, दिनचर्या पर निर्भर करता है। जैसे-चावल, आलू, शकरकन्द, रस तथा बचपन में चाकलेट, टाफी, मिश्री, मिष्ठान, पिपरमिन्ट की गोलियाँ है। शक्कर, वनस्पति घी प्रमुख है। मांसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारी जनों में मधुमेह कम होता है। अव्यवस्थित दिनचर्या से मधुमेह रोग के बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

स्थूलता-आहार (डाईट) एवं मोटापा का आपस में गहरा रिश्ता है। मोटे लोगों में ८०% मधुमेह रोग पाया जाता है। उसका कारण अधिक वसायुक्त भोजन, शर्करा का सेवन चर्बी के रूप में परिवर्तित होकर मोटापा में वृद्धि करता है। शर्करा को चर्बी में परिवर्तित करना अग्न्याशय से उत्पन्न इन्सुलिन के कारण होता रहता है जो शरीर में उदर, नितम्ब, जंघा, छाती में दिखाई देता है। मधुमेह रोगी ३ प्रकार के होते हैं-१.स्थूल एवं बलवान २.दुर्बल ३.बालमधुमेही। यह रोग प्रायः सम्पन्न किन्तु आलसी लोगों में ज्यादा होता है। बैठकर कार्य करने वालों में भी इस रोग की सम्भावना अधिक रहती है। प्रायः लेटकर जीवन-यापन करने से मधुमेह होता है। आयु की दृष्टि से प्रायः ३५ से ४५ वर्ष के व्यक्ति में प्रायः मधुमेह की संख्या अधिक होती है। स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा मधुमेह कम पाया जाता है। ७०-८० वर्ष की आयु वालों में मधुमेह किंचित् ही होता है।

चिकित्सा-व्यवस्था-आहार प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग हो सकता है शर्करा, वसा के सेवन पर यथेष्ट नियंत्रण रखें। शक्कर की जगह गुड़ का सेवन अपेक्षाकृत कम शर्करा उत्पन्न करता है। मोटा अनाज, शाक-सब्जी, भूना हुआ आहार का पर्याप्त सेवन किया जा सकता है। सतू सर्वोत्तम है। अनाज में जौ-चना का सेवन पर्याप्त मात्रा में कर सकते है। नियमित भोजन में निम्न तालिका के अनुसार खाद्य पदार्थ ग्रहण किया जाना उत्तम होगा। पका चावल ७५ ग्राम, रोटी, चपाती २० ग्राम, ईडली-१, ब्रेड २०-३० ग्राम (२ब्रेड), डोसा-१ मध्यम आकार का, बिस्कुट ३ पीस। दाल इनमें से एक-राजमा २५ ग्राम, काला मूंग २५ ग्राम, लाल चना २० ग्राम, मसूर दाल २५ ग्राम। दूध-गाय का दूध १५० मि.लीटर, भैंस का ९० ग्राम, मक्खन मिला दूध-३०मि.ली., मट्ठा ७५० मि.ली., चीज ३०ग्राम, दधि गाय की ३० ग्राम, फल कोई एक संतरा १ मध्यम, १ सेब मध्यम, केला-१ आम ५० ग्राम, तरबूज ३०० ग्राम, पपीता २०० ग्राम, अंगूर ७५ ग्राम, मटर दाना ९० ग्राम अनन्नास ९० ग्राम, नारियल पानी २०० मि.ली. अमरुद १०० ग्राम।

व्यायाम-व्यायाम करने से पहले निश्चित कर कि शरीर एवं मन व्यायाम योग्य हो। टहलते अथवा व्यायाम करते समय कसा हुआ जूता न पहने। घाव न हो इसका ध्यान रखें। १. तेज गति से चलना, साईकिल चलाना, एक जगह खड़े होकर उछलना, दौड़ना, तैरना, टेनिस खेलना व्यायाम की समय सीमा ३०-४५ मिनट। प्रारम्भ में १०-१५ मिनट से शुरु कर धीरे-धीरे बढ़ायें। कार्यालय में कार्य करने वाले अपने वाहन को दूर खड़ा करें एवं उस दूरी को पैदल तय करें।

सामान्य औषधि-चिकित्सक की सलाह से ही दवा लें। वैसे सामान्य रूप से निम्न चूर्ण काफी फायदेमन्द होगा। मेथी का चूर्ण ५० ग्राम, चिरायता का चूर्ण ५० ग्राम, दालचीनी ५० ग्राम, १०० ग्राम, विजयसार चूर्ण ५० ग्राम, गुड़ूची चूर्ण ५० ग्राम, शिलाजीत २ रत्ती। सबको मिलाकर मात्रा के अनुसार प्रतिदिन सेवन करने से निश्चित लाभ होगा। कोई नशा न करें।

ज्योतिष की दृष्टि से मधुमेह–शुक्र ग्रह मधुमेह रोग का कारण होता है। अष्टमभाव गत शुक्र यदि पाप ग्रहों द्वारा देखा जाता हो तो मधुमेह रोग हो सकता है। इसको अष्टमेश से भी देखा जा सकता है।

अष्टम स्थान गते शुक्रे पापग्रह निरीक्षिते।
वातरोगात् क्षयाद्वाऽपि प्रमेहाद्वामृतिंवदेत्।।

परामर्श–७ रत्ती, असमर्थता मे २ रत्ती का वज्रमणि (हीरा) शुक्रवार मृगशीर्ष नक्षत्र में धारण करना चाहिए। उपरत्न-चांदी में जड़ी हुयी मोती।

जड़ी-विच्छोल की जड़ सफेद कपड़े में बाँधकर दाहिनी भुजा में धारण करें। प्रत्येक शुक्रवार को, दूध, दही खीर का दान करें।

पञ्चांग परिचय

भारतीय गणितानुसार प्रधान रूप से पाँच प्रकार की गणना होती है- सौर, चान्द्र, सायन, नक्षत्र और बार्हस्पत्य। जितने समय में मेषादि बारहों राशियों में सूर्य भोग करे उसे सौर वर्ष जितने दिन में मेषादि प्रत्येक राशि का भोग करें उसको सौर मास तथा जितने काल में प्रत्येक राशि का एक-एक अंश भोग करे उसे सौर दिन कहते हैं। जिस दिन में चन्द्रमा सूर्य एक राशि में हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक के समय को चान्द्रमास कहते हैं। एक इसका तीसवाँ भाग चान्द्र दिन या एक तिथिमान कहलाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदयों के बीच को सावन दिन कहते हैं। नाक्षत्र का अर्थ है नक्षत्र सम्बन्धी, यह समय नाक्षत्री ६० घड़ी के तुल्य है। एक वर्ष ३६५ दिन १५ घटी ३० पल २२।। विपल का होता है। **तिथि, नक्षत्र, वार, योग और करण नामक पाँच मुख्य विषयों का निश्चय जिससे किया जाता है उसे पञ्चांग पंजिका कहते हैं।** सूर्योदय सब स्थानों में एक समय नहीं होता है। पूरव के स्थानों में पहले और पश्चिम के स्थानों में पीछे सूर्योदय होता है। इसलिये भिन्न-भिन्न स्थानों में भेद होना स्वाभाविक है। पर भिन्न-भिन्न देश में लौकिक कार्यों में भारी भ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिए यह नियम बना दिया कि सब स्थान में वार की प्रवृत्ति उस समय से मानी जाय जिस समय उज्जैन में प्रातःकाल ६ बजता है।

दिनमान-सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहतेहैं। सूर्य की गति और दक्षिण के स्थानों के भेद के कारण इनके मानों में भिन्नता रहती है। जब सायन सूर्य मेष पर जाता है तब सब जगह रात्रि और दिन बराबर होते हैं। जब सायन सूर्य कर्क पर जाता है तो उत्तर अक्षांश में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। जब सायन सूर्य तुला पर जाता है तब रात सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है। किन्तु दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत होता है।

इस पञ्चांग में दिन मान सूर्योदय सूर्यास्त आदि सब सूर्य घड़ी के अनुसार दिये गये हैं। शुद्ध इष्ट काल के लिये रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का अन्तर संस्कार आवश्यक है। प्रत्येक पक्ष में रेलवे घड़ी का दैनिक अन्तर दिया गया है। पण्डितगण धन-ऋण देख लेवें। पञ्चांग में दिये हुए सूर्य घटी में धन-ऋण संस्कार कर देंगे तो रेलवे घटी का स्टैण्डर्ड समय हो जायेगा।

तिथि-जिस समय सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में होते हैं अर्थात् जिस समय दोनों के भोग्यांश समान होते हैं, उस समय अमावस्या का अन्त होता है। चन्द्रमा की गति तीव्र होती है, इसलिए अमावस्या के उपरान्त वह आगे हो जाता है। प्रत्येक १२ अंश आगे होने पर एक तिथि बढ़ती जाती है। जब चन्द्रमा सूर्य के १२X१५=१८० अंश आगे हो जाता है तब १५ वीं तिथि पूर्णिमा का अन्त होता है। १६ वीं तिथि अथवा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा लगती, जब फिर अमावस होती है तब ३० तिथियां बीत चुकती है। इसलिए अमावस की जगह ३० का अंक लिखा जाता है।

तिथिक्षय और तिथिवृद्धि-सूर्य चन्द्रमा की गतियां सदा समान नहीं रहती। कभी सूर्य मन्द या तीव्र होता है उसी तरह चन्द्रमा भी कभी अधिक गति से कभी मन्द गति से चलता है। इसी कारण तिथियों का भी मान सदा समान नहीं होता। तिथि का मान अधिक से अधिक ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५४ घटी के लगभग होता है परन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सदैव कल्पित ६० घटी ही होता है। इसलिए एक दिन में किसी समय तिथि बदल जाती है।

कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही बार में पूरी होती है, और वार के समाप्त होने के पहले तीसरी तिथि लग जाती है। ऐसी दशा में उस वार के सूर्योदय काल में जो तिथि विद्यमान रहती है वहीं मानी जाती है। अगले वार तीसरी तिथि होती है। दूसरी का मान पञ्चांग में पहली तिथि के नीचे दिया रहता है। परन्तु लौकिक व्यवाहर में नही मानी जाती है। **ऐसी तिथि को क्षय तिथि या अधम कहते हैं।** प्रायः कभी-कभी एक ही तिथि दो सूर्योदय काल में विद्यमान रहती है। ऐसी दशा में वह तिथि दो बार मानी जाती है। **इसी को तिथि वृद्धि कहते हैं।** इन सब कारणों से कभी १६ दिन, कभी १५ दिन और कभी १४ दिन का पक्ष होता है। कई वर्षो के बाद १३ दिन का भी पक्ष हो जाता है जो जगत केलिये अनिष्ट कर होता है। शुक्लपक्ष में इसका प्रभाव विशेष रूप से पाया गया है।

करण–आधी तिथि जितने समय में बीतती है उसको करण कहते हैं। यह कुल ११ हैं। इसके नाम ये हैं- वब, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुन, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

नक्षत्र-तारों के बीच पश्चिम से पूरब की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य साल भर में चक्कर लगाता हुआ दीख पड़ता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं इसके आसपास चन्द्रमा भी अपना चक्कर लगाता है जो मध्यम मान से २९ दिन १९ घटी १८ पल और १२ विपल में पूरा होता है। इस मार्ग के २७ वें भाग को नक्षत्र कहते हैं। इसका मान १३ अंश २० कला का होता है।

गोल अयन-यदि आकाश गोल के दो भाग इस प्रकार किये जायँ कि एक भाग के मध्य में आकाश का उत्तरी ध्रुव हो, और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिणी ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं। सायन मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या-ये छः राशियाँ उत्तर गोल में हैं। सायन तुला, वृश्चिक, धनु मकर, मीन - ये छः राशियाँ दक्षिण गोल में हैं।

एक वर्ष में दो अयन होते हैं-उत्तरायण और दक्षिणायन। सायन मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भहोता है और सायन मिथुन की समाप्ति तक रहता है। सायन कर्क संक्रान्ति से लेकर सायन धनु के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। उत्तरायण में दिन क्रम से बढ़ता है और दक्षिणायन में रात्रि क्रम से बढ़ती है।

अहर्गण-किसी निश्चित काल से किसी अन्त काल तक जितने अहोरात्र होते हैं उस संख्या को अहर्गण कहते हैं। साधारण कलियुग के आदि से अहर्गण की संख्या गिनी जाती है। सूर्य सिद्धान्त में सृष्ट यादि से अहर्गण गणना विधि है। ग्रह लाघव की गणित शक १४४२ से चलती है। इसके अहर्गण के रूप की ११ वर्ष के पश्चात् पुनरावृत्ति होती है। तदनुसार सं.२०३२ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को अहर्गण १८०८ हुआ।

योग-अश्विनी नक्षत्र के आदि विन्दु से सूर्य और चन्द्रमा जितने अंशों की दूरी हों उसको एक जगह लिखकर जोड़ने और ४०/३ से भाग देने से लब्धि बीते हुए योग और आगे आनेवाला वर्तमान योग होता है। कुल २७ योग होते हैं-१.विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सोभाग्य, ५.शोभन, ६.अतिगण्ड, ७.सुकर्मा, ८.धृति, ९.शूल, १०.गण्ड, ११.वृद्धि, १२.ध्रुव, १३.व्याघात, १४.हर्षण, १५.वज्र, १६.सिद्धि, १७.व्यतीपात, १८.वरीयान्, १९.परिघ, २०.शिव, २१.सिद्ध, २२.साध्य, २३.शुभ, २४.शुक्ल, २५.ब्रह्म, २६.ऐन्द्र, २७.वैधृति। योग के भोग्यकाल समान नहीं होते और तिथि नक्षत्रों की तरह इनमें भी क्षय-वृद्धि होती है।

अथारिष्टशान्तये महामृत्युञ्जयवैदिकमन्त्रजपविधिः।।

आचम्य प्राणानायम्य, शान्तिपाठं पठित्वा सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्पः।। अमुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरोत्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यसततारोग्यतावाप्तये महामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।। **ऋष्यादिन्यासः।।** वामदेवकहोलवसिष्ठऋषयः मूर्ध्नि।। पंक्तिर्गायित्री अनुष्टुपछन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिवमहामृत्युञ्जय रुद्र देवतायै नमः हृदि।। ह्रीं शक्तये नमो लिंगे।। श्रीबीजाय नमः पादयोः।। इति ऋष्यादिन्यासः।। ॐ हौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ।। ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेकहोलवसिष्ठऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता ह्रीं शक्तिः श्री बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे, ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं, ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वौषट्।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां ही हौं कवचाय हुं।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट।। ॐ हौं ॐ जूं सः भुर्भवः स्वः मामृतात ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वालाय मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडङ्गन्यासः।।

त्र्यम्बकं शिरसि।। यजामहे भ्रुवोः।। सुगन्धिं नेत्रयोः।। पुष्टि वर्द्धनं मुखे।। उर्व्वारुकं गण्डयोः।। इव हृदये।। बन्धनात् जठरे।। मृत्योर्लिङ्गे।। मुक्षीय उर्वोः।। मा जान्वोः।। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यासः।। मूलेनव्यापकं कृत्वाध्यानं कुर्यात्। **अथ ध्यानम्।** हस्ताम्भोजयुगस्थं कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयंशिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौकरौ। अक्षस्रग्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषोत्रतनुंभजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिपीयूषपात्रंवहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्।। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।। **इति ध्यात्वा।।** मानसोपचारैः संपूज्य ॐलं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि।। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। मंत्रं जपेत्।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ।। ततोजपानन्तरं देवदक्षिणकरेजपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।।१।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।२।। **अर्पणम्**-अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेनमन्त्रं तुत्र्यंबकम्।। जपसांगतासिद्धयर्थं यथाकामनाद्रव्येणतद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्तापामार्गसमिदिभर्होमं तद्दशांशः मार्जनम्।। तद्दशांशंतर्पणम्।। तद्दशांशंब्राह्मणभोजनं कारयेत्।। इति।।

।। अथारिष्टशान्तये शताक्षरागायत्रीमन्त्रजपविधिः।।

ॐ अस्य श्रीशताक्षरगायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवसिष्ठऋषयो गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुपछन्दांसि सावित्री जातवेदस्त्र्यम्बका देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्ट शान्तये जपे विनियोगः। विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठ ऋषिभ्योनमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टु बनुष्टु छन्देभ्यो नमः मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये।। गायत्र्यक्षराणि बीजानि गुह्ये।। त्रिष्टुबक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः ॐ धियो यो नः प्रचोदयात, शिरसे स्वाहा।। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदाहतिवेदः। शिखायैवोषट्। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वनावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः कवचाय हूँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिपुष्टि वर्द्धनं नेत्रत्रयायवौषट्। ॐ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।। अथ ध्यानम्।। स्मर्त्तव्याखिलोकवर्त्ति सततं यज्जंगमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिद्धयति।। यदा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं धृत्वा च यद्गीयते तद्वत्तस्थिति सिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः।।१।। एवं ध्यात्वाशताक्षरां भावयेत्।। अथहोमार्थसताक्षरागायत्रीमन्त्रः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदहातिवेदः। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्ध्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

नवग्रहाणां जपार्थ वैदिकमन्त्राः।। सूर्यस्य।।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो यातिभुवनानि पश्यन्।। **चन्द्रस्य** ॐ इमन्देवाऽअसपत्नठं सुबध्वं महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इमममुष्यैपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाठं राजा।। **भौमस्य**।। ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाठं रेताठं सि जिन्वति।। **बुधस्य**।। उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजा गृहीत्वमिष्टापूर्त्तेसठं सृजेथामयञ्च।। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत।। **गुरोः**।। ॐ बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।। यदीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मा-सुद्रविणंधेहिचित्रम्। **शुक्रस्य**।। ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रंपयः सोमं प्रजापतिः।। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानठं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधुः।। **शनेः**।। ॐ शं नोदेवीरभिष्टयेआपाभवन्तुपीतये शय्योरभिस्रवन्तु नः।। **राहोः**।। ॐ कयानश्चित्रऽआभूवदूतीसदावृधः सखा।। कयाशचिष्ठ यावृता।। **केतोः**।। ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे समुषद्भि रजायथाः।। इति।।

अथ वशिष्ठकल्पोक्तमृतसंजीवनीमन्त्रः

ओं हौं जूँ सः ओं भूर्भुवः स्वः ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ओं स्वः भुवः भूः ओं सः जूँ हौं ओं।

पुराणोक्तमृत्युञ्जयमन्त्रः

ॐ मृत्युञ्जयाय रुद्राय, नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय, महादेवाय ते नमः ॐ।

अथ सारिणीतीदृष्टानयनम्

द्रष्टाविहीनदृश्यस्य ग्राह्यं राश्यंशतः फलम्। कलादिकं-गुणगणं होराप्तं तेन संस्कृतम्। धनर्ण-रीत्या तत्स्पष्टं फलग्राह्यंहिदृक्फलम्।

अथात्र त्रिराशिपाः

ल.२	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	सो.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	सो.
रात्रौ	गु.	सो.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	सो.

अथ होराचक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	अं.
५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	१५
सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	१५

अथ द्रेष्काण चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	अं.
१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१०
५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	२०
९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	३०

अथ त्रिशांशचक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	रा.
५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ पं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	अं. स्वा.
५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	अं. स्वा.
८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	अं. स्वा.
७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	अं. स्वा.
५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	अं. स्वा.

द्वादशाक्षरो मृत्युञ्जय मन्त्रः

ॐ जूँ सः पालय पालय सः जूँ ॐ।

(स्वयं के लिए-करना हो तो पालय के पूर्व **माम्** जोड़े दूसरे के लिए करना हो तो **उसका नाम** जोड़े)।

अथ होड़ाचक्रं वरकन्ययोर्भस्य-मेलापकविचारोपयोगीदम्

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
अक्षरः	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. ऊ.ए.	ओवा वी.वू.	वे.वो का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे हो.डा	डी.डू डे.डो.	मा.मी मू.मे	मो,टा, टी.टू.	टे,टो पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.
राशिः	मेष	मेष	मे.१ वृ.३	वृष	वृ.२ मि.२	मिथुन	मि.३ क.१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं.१ क.३	कन्या
वर्णा	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य
वश्य.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.२ न.२	नर	न.३ जल.१	जल	जल	वन	वन	व.१ न.३	नर
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प.	सर्प.	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो.	महिष
वैरम्	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग.	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व
राशीश	मं.	मं.	मं.१ शु.३	शु.	शु.२ बु.२	बु.	बु.३ चं.१	चं.	चं.	सूर्य	सूर्य	सू.१ बु.३	बुधः
गणः	देव	मनु.	राक्ष.	मनु.	देव	मनु.	देव	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु.	मनु.	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि

नक्षत्र	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
अक्षरः	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	ना.नी नू.ने.	नो.या यी.यू	ये.यो. भा.भी	भू.धा. फा.ढा.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी.	दू.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची.
राशिः	कं.२ तु.२	तुला	तु.३ वृ.१	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	धनु	ध.१ म.३	मकर	म.२ कुं.२	कुम्भ	कुं.३ मी.१	मीन	मीन
वर्णा	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.
वश्य.	नर	नर	न.३ की.१	कीट	कीट	नर	न।। च.३।।	चतु.	च.१।। ज.२।।	ज.२ न.२	नर	न.३ ज.१	जल.	जल.
योनिः	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग.	मृग.	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
वैरम्	गौ	अश्व	गौ.	श्वान	श्वान	मृग.	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	बु.२ शु.२	शुक्रः	शु.३ मं.१	मं.	मं.	गुरु	गुरु	गुरु १ शनि ३	शनि	शनि	शनि	श.३ गु.१	गुरु	गुरु
गणः	राक्ष.	देव.	राक्ष.	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव
नाडी	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

१ वर्णगुणज्ञानाय चक्रम् । वरः

(कन्या)

वर्णाः	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुण। वरः

(कन्या)

वश्यः	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्प	२	१	१	०	१
नर	१	२	॥	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	०	१	०	२

६ गुणगुणाः वरः

(कन्या)

गणाः	देव	मनुष्य	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

३ तारागुण। वरः

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुण । वरः

(कन्या)

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्रः	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्रः	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

४ योनिगुण। वरः

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	१	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	२	१	२	२	४

अथाष्टौ वर्गास्तद्दोषाश्च

७अ.	५क.	५च.	५ट.	५त.	५प.	४य	४श.	वर्गा
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष	स्वामिन

७. राशिकूटस्य गुणबोधकचक्रम्। वरः

राशय	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथु.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कं.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कु.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

८ नाड़ीकूटस्य गुणचक्रम् वरस्य

(कन्या)

नाड़ी	आ.	म.	अं.
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

अथोद्वाहलग्नेरेखा प्रदग्रहाः

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।

सू.श.रा.के. ३।११।६।८ मं. ३।६।११ चं.२।३।११ बु.वृ. १।२।३।४।५।६।९।१०।११ शु. १।२।४।५।९।१०।११ उक्तस्थानस्यग्रहांकान् संयोज्यविवाहलग्ने ग्रहबलविश्वाज्ञेया। लग्नेशनबलवेशौ १।४।७।१०।११ स्थानेषुदोषसमूहं नाशयतच।

वैधव्यदोषपरिहारः - लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वामदनाधिपश्च। द्यूनिस्थितो हन्त्यपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाङ्नाख्यम्।। केन्द्रकोणे शुभाढयश्चेन्त्रिषडायेऽप्यसदग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपेतथा।।

अथ गुणानामैक्येन ग्राहाग्राह्यविचारः

गुणैः षोड़शभिनिन्द्यंमध्यमं विंशतिस्तथाश्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूतमोतमम्।। सद्भकूटेप्रीतिज्ञे-यादुष्ट कूटे नचान्यथा। निन्द्यंगुणैरविंशतिभिर्मध्यं वाणाधिकैः स्मृतम्। ऊर्ध्वंच पंचविंशत्या श्रेष्ठं श्रेष्ठतरं ततः।।

ग्रहाणां नैसर्गिकमैत्रीचक्रम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्रः	शनि.	ग्रहाः
चं.मं. गुरु	सूर्यः बुध	सू.चं. गुरु	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः चं.मं.	बुधः शनिः	बुध शुक्रः	मित्राणि
बुधः	मं.गु. शु.श.	शुक्र शनिः	मं.गु. शनि	शनि	मंगल. गुरु	गुरु	समाः
शुक्र शनिः	०	बुध	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्य चं.मं.	शत्रवः

नक्षत्रयुजिभचक्रम्

रे. अ. भ. कृ. रो.मृ.	आ. पुन. पु. श्ले. म. पू. फा. उफा. ह. चि. स्वा.वि.अनु.	ज्ये. मू. पू. षा. उषा. श्र. ध. श. पूभा. उ.भा.
पूर्वाभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
पतिः श्रेष्ठ	द्वयोः सुप्रीतिः	कन्या श्रेष्ठा

विवाहेरविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्

रविः	चन्द्रः	गुरुः	ग्रहाः
३।६ १०।११	३।६।७ १०।११	२।५।७ ९।११	शुभ स्थानानि
१।२ ५।७।९	१।२ ५।९	१।३ १०।६	पूज्य स्थानानि
४।८ १२	४।८ १२	४ ८।१२	निन्दित स्थानानि

द्विपदादिभानांबोधकचक्रम्

मानव द्विपद	चतुष्पद	जलचर	कीट
मि.कं. तुला	मेष वृष सिंह	कर्क कुम्भ मीन	वृश्चि.
धनु पूर्वार्द्धे	ध.उतरा म.पूर्वार्द्धे	मकर उत्तरार्द्धे	

अथ सामान्य विवाह कृत्यम्

(वर-कन्या कुण्डली मेलापक व्यवस्था) वशिष्ठ ऋषि के अनुसार "ऋणत्रयं-देवऋणं पितृऋणमृषिऋणं को उतारने के लिये विवाह ही माध्यम है **"कश्चिद् गृहाश्रम समो न परोऽस्ति धर्मः सोऽपि स्थितः सुगुण वृत्त युताङ्गनासु। उद्वाहलग्नवशतोगुणवृत्तलब्धिस्तासां तथा विध सुलग्न मतः प्रवच्मि।।"** गृहस्थाश्रम से बढ़कर कोई धर्म नही है एवं उसकी नींव विवाह से ही पड़ती है, अतः अलंकारादिकों से वर-कन्या का पूजन कर विचारवान् विवेकी वर को कन्या का दान ही विवाह अथवा ब्राह्म विवाह है। इससे उत्पन्न सन्तान पूर्व की २१ पीढ़ी तक को पवित्र करती है। अतः सर्वप्रथम ज्योतिषी की पूजा कर प्रश्न पूछना चाहिए। **"आदौ सम्पूज्य रत्नादिमिरथ गणक वेदयेत्स्वस्थचित्तं।"**

विवाह मेलापक में विचारणीय विषय

धर्मशास्त्र, कुल परम्परा एवं लोकरीति से सम्पन्न विवाह ही सार्थक एवं सिद्धिप्रद होता है तथा वैवाहिक जीवन सुखमय व्यतीत होता है। विवाह के लिये वर-कन्या के गोत्र को एक नहीं होना चाहिए। गोत्र और प्रवरों की संख्या अधिक है। इनसे वंश परम्परा के अवान्तर भेदों से बहुत से कुल उत्पन्न हो गये हैं अतः कोई सीमा बनानी पड़ेगी, जो विचारणीय है। वैसे तो वर कन्या मेलापक की कई विधियाँ है किन्तु मुख्यरूप से दो ही शास्त्र सम्मत एवं व्यावहारिक हैं-१. **नाक्षत्र** मेलापक और २.**ग्रह मेलापक**। इनमे भी नक्षत्र मेलापक प्रधान है। दक्षिण भारत में दशविध मेलापक प्रचलित है। उत्तर भारत में अष्टविध मेलापक का प्राविधान है, ये है-१.वर्ण २.वश्य ३.तारा ४.योनि ५.ग्रहमैत्री ६.गणमैत्री ७.भकूट ८.नाड़ी। इन आठो कूट में प्राप्त अंको को जोड़ने पर गुण बनते है जो पञ्चाङ्ग में दिये गये चक्र से ज्ञात किया जा सकता है। कुल गुण ३६ होते हैं। अष्ट विध मेलापक में वर-कन्या की नाड़ी का विचार प्रमुखता से करने का निर्देश आचार्यो ने बताया है। वस्तुतः नाड़ी का सम्बन्ध शरीर संरचना के आवश्यक अवयवों से है जिसको हम वैज्ञानिक रूप में जेनेटिक जीन्स या डी.एन.ए. भी कह सकते हैं। **वर-कन्या की एक नाड़ी सर्वथा वर्जित है।** वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु राशि भिन्न हो तथा राशि एक ही हो किन्तु नक्षत्र भिन्न हो एवं नक्षत्र एक, राशि एक होने पर नक्षत्र के चरणों में अन्तर हो जाने पर भी नाड़ी दोष नहीं होता-**"राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोःस्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाड़ी दोषो नोगणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पाद भेदे शुभं स्यात्।** उपरोक्त परिस्थिति में नाड़ी एवं गण दोनो ही का दोष नहीं माना गया है। तत्पश्चात् ग्रह मैत्री अर्थात् वर-कन्या के राशि स्वामीयो में परस्पर मैत्री एवं शत्रुता का विचार भी प्रमुख है। भकूट से तात्पर्य वर कन्या के राशियों का परस्पर सम्बन्ध से है। ग्रह मैत्री एवं भकूट दोनों में से एक का मिलना आवश्यक है।-**'मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ द्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः। खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापिदुष्टंभकूटं।** राशियों के नवांशो के आधिपतियो में भी मैत्री होने पर गण दोष का परिहार हो जाता है। ग्रह मैत्री का सम्बन्ध पति-पत्नी के पारस्परिक सामञ्जस्य से है अतः इसको महत्व दिया जाना चाहिए। **नाड़ी दोष में मध्य नाड़ी का दोष सबसे गम्भीर प्रकृति** का है। नाड़ी दोष के परिहार में यदि वर कन्या की एक ही नाड़ी हो किन्तु उनके जन्म नक्षत्र के चरणों में परस्पर वेध न हो तो नाड़ी दोष कम हो जाता है। चक्रतः स्पष्ट है- **"आद्यांशेन चतुर्थांशेन चतुर्थांशेनचादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्।। एवं भांशव्यधो येषां जायते वरकन्ययोः। तेषां मृत्युन सन्देहः शेषांशाःस्वल्पदोषदाः।।**

१	२	३	४
४	३	२	१

नाड़ीदोष का परिहार–रोहिण्यार्द्रामृगेंद्राणांपुष्य श्रवणपौष्णभम्। अहिर्वुर्ध्यक्षमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते। अर्थात् रोहिणी, आर्द्रा, मृग.,विशाखा,पुष्य, श्रवण, रेवती, उ.भा.। इन नक्षत्रों में नाड़ी दोष का विचार नहीं किया जाता। ***वृहद्दैवज्ञरंजन पृष्ठ- २१२***

नाड़ीदोष न होने तथा ग्रहमैत्री अथवा भकूट शुद्ध होने पर अन्य दोष अपेक्षाकृत स्वयं ही कम हो जाते है। १८ से २० गुण का मेलापक सामान्य, २० से २५ गुण का मेलापक मध्यम तथा इसके ऊपर के गुणमेलापक उत्तम श्रेणी के माने गये है।

कन्यायाः वैधव्यादिदोषविचारः वा मंगलीक योग

आजकल इसी को मंगला- मंगली योग किंवा दोष कहा जाने लगा है। वस्तुतः यह मंगलीक योग है, दोष नही। **लग्ने व्यये च पाताले जामित्रेचाष्टमें कुजे। कन्याभर्तृविनाशाय भर्त्ता पत्नी-विनाशकृत्।** इदं लग्नचन्द्राभ्यां वरकन्ययोः जन्मकुण्डल्यां विचार्यम्। एवं यदि कन्याकुण्डल्यां लग्नाद्वा चन्द्रात् (१।४।७।८।१२) स्थानेषु कश्चित् पापग्रहों भावेश-त्वेन स्थितस्तदाप्यनिष्ट करः। सप्तमेशोऽष्टमषष्ठ रिष्फेषु गतोऽनिष्टः अथ तेषां वरकुण्डल्यां (१।४।७।८।१२) स्थानानामन्यतमे स्थाने शनिभौमोवा अन्यः कश्चित्क्रूरग्रहस्तिष्ठे तदा विवाहः शोभनः। उक्तं च- जामित्रे च यदा सौरिलग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्। कन्यायास्सप्तमभावनाथ-शुक्रादि शुभग्रहाणां शुभस्थानस्थित्याऽस्याः सौभाग्यादियोगः दीर्घायुर्योगश्च विलोकनीयः। एकं द्वयोः ग्रहसाम्येऽथवा वरस्य ग्रहाधिक्यं मेलापकः शोभनो नान्यथा। शशांक पञ्चाङ्ग शुचौ सौम्ये चैव विवाहभे राज्ञो गोधूलिके लग्ने खड्गोद्वाहः प्रशस्यते।।१।। अथोद्वाहान्ते मण्डपोद्वासनं। युग्मे घस्त्रे षष्ठहीने च पञ्च सप्ताहे कार्यं शुभ वारे।। इति।।

जातकोक्तसूत्रात् कन्या वैधव्यविषाख्यादियोगज्ञानम्। लग्नाच्चन्द्रादन्यतमतः पापाः सप्तमेऽष्टमेवा विधवा।।१।। भौमे राहौ सप्तमेऽऽष्टमे व्यये वा विधवा।।२।। द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्ता।।३।। लग्नेन्दु पापान्तरगोशुभैरदृष्टो कुलद्वयघ्नी।।४।। द्युनेऽङ्गे पापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्दे विधवा।।५।। षष्ठेऽष्टमे चन्द्रेऽष्टमाब्देरन्डा।।६।। सप्तमे रन्ध्रेशे पापदृष्टनवोडा रण्डा।।७।। षष्ठ्यष्टमेशो षष्ठगतो व्यये पापस्तदापि विधवा।।८।। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा।।९।। कुजेऽष्टमे कुल्टा मन्देऽष्टमे पतिरोगवान्।।१०।। सूर्येऽष्टमे पापयुक्ता भवति।।११।। रन्ध्रे राहौ कुलद्वयघ्नौ।।१२।। लग्नतुर्याष्टमान्त्यासंस्थाः पापास्तदा पतित्यक्तापरासक्ता च भवति।।१३।। सप्तमेशोष्टमेतस्याः सप्तमे निधनाधिपः। पापाश्रयता बाल वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्ताष्टमपती षष्ठे व्यये वा पापपीड़ितौ। तदा वैधव्यमाप्रोतिनारी नैवात्र संशयः। मन्दाश्लेषा द्वितीयायां जाता विषाख्या।।१४।। सूर्यवारुणद्वादश्यां जातविषाख्या।। कुजविशाखासप्तम्यां जाता विषाख्या।।१६।। पापाङ्गं सशुभोपापावरिगौ जाता विषाख्या।।१७।। पुत्रेऽर्के मन्देऽङ्गे भौमेऽङ्गे विषाख्या।। अथ विषाख्या योगस्यापवादमाहलग्नादिन्दोवा यदि जन्मकाले शुभ ग्रहों वा मदनाधिपश्च। द्यूने स्थितोहन्त्यनपत्यदोषं च विषाङ्गनाख्यम्।।१९।। भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभद प्रोक्तः चिरायुपुत्रपौत्रदः।।२०।।

अथ मंगलीकयोग वैधव्य योग परिहारः

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्यतस्यास्ति वृद्धिः। पापैरेवं तस्य भावस्य हातिर्विदिष्टत्या पृच्छतां जन्मतो वा।' स्वस्वामि-सौम्येरीक्षितं चेत्सप्तमस्थानं भवति यदा तद्भावसुखं वाच्यम्। केचित्तु स्त्रीणां महत्यारिष्ट योगे भर्तुश्च स्वल्पारिष्ट योगे तत्परिहारमाहुः। इति भट्टोत्पलोक्तेः। इसके अतिरिक्त मंगलीक योग के लिये निम्नलिखित परिहार वचन प्राप्त होते हैं। **१. भौम तुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्तः चिरायु पुत्र पौत्रदः।।** वर-कन्या की लग्न कुण्डली, चन्द्रकुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली में मंगल या पाप ग्रह के समतुल्य भावों में मंगल या अन्य पापग्रह रहने पर परस्पर विवाह शुभफलकारक होता है। २. वर-कन्या के १,४,७,८,१२ वें भाव में शनि से मंगलीक योग स्वयं समाप्त हो जाता है। **'शनि भौमोऽथवा कश्चितपापो वातादृशो भवेत।तष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाशकृत। ३. कुजजीव समायुक्तो युक्तो वा कुज चन्द्रमाः। चन्द्रः केन्द्रगतो वापि तस्य दोषो न मङ्गली।।** मंगल गुरु एक साथ हो अथवा मंगल चन्द्रमा का योग हो वा चन्द्रमा केन्द्र (१,४,७,१०) स्थान में हो तो मंगलीक होने का दोष कट जाता है। **४. न मंगली चन्द्र मृगौ द्वितीये न मङ्गली पश्यति जीवयस्यः। न मंगली चन्द्रगतश्च केन्द्रे न मंङ्गली मङ्गल राहुयोग।।** चन्द्रमा शुक्र दूसरे स्थान में हो, अथवा मंगल पर बृहस्पति की दृष्टि हो अथवा मंगल राहु के एक साथ होने पर भी मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है। ५. इसके अतिरिक्त वर-कन्या के जन्माङ्ग में मंगल शत्रुक्षेत्री (मिथुन-कन्या) अथवा नीच (कर्क) का हो तो भी मंगलीक दोष नहीं होता। ६. गुणाधिक्य २५ गुण से अधिक का मेलापक हो जाने पर मंगलीक योग शिथिल हो जाता है। **'गुणाधिक्ये भौम दोषं न विद्यते।'** इति।

कुण्डली मिलाने की रीति

फलित ग्रन्थों के द्वारा स्त्री-नाशक या पति-नाशक,योग प्रसिद्ध है। उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है।

कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह का होना प्रायः पतिनाशक या पत्नीनाशक योग होता है, इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते है। यह पण्डितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मंगल, उससे कम बाकी पापग्रह होते हैं।

इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम अष्टम भावों में भी पाप योग होना अधिक अनिष्ट कर है। द्वितीय अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग प्रायः वैधव्य सूचक भी होते हैं। एकादश या पंचम स्थान में विशेष पाप योग वैधव्य सूचक होता है। इन योगो के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु सन्तान और भाग्य योग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्न लग्न से या लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठें या सातवें मंगल होतो भी वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रबल वैधव्य योग होतो ब्रह्मविवाह, कुम्भ, विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवो वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता। परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ सप्तम, नवम, अष्टम द्वादश में पापायुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्ट दोष होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना अच्छा नहीं होता। ज्योतिष के फलित शास्त्र में दो ही वस्तु की अधिक प्रधानता है। (१) लग्न और (२) चन्द्रमा इनमें लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते है। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्मराशि के मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ा गोचर, विचार मंगल-कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्म नाम की ही प्रधानता है। जन्म नाम न रहने पर प्रसिद्ध नामसे गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हों तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम औरद दूसरे का जन्म नाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र में हो तो विवाह नहीं करना चाहिए।

चैत्र अयनांशानयनाय एकादिगुणकाः।।

१.गुणोत्तराः १० गुणोत्तराः।।					
१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५१	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२२
०	क.	वि.	१००	८३	४३

अस्मिन्वर्षस्फुटायनभागे - प्रत्यब्दिक-गतियोगादग्रिम-वर्षादावयनभागा भवन्ति। शके १८०० वर्षस्फुटायनांशाः २२।८।३३ अतोऽग्रेष्टे च।।

अथ काश्यां निरयणसायनादिलग्नमानानि लंकोदयाश्च

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय
३	४	५	७	५	५	५	५	५	५	४	३	सा.ध.
४१	१३	४	४२	४५	३५	३५	४५	४२	४	१३	४१	
४	४	५	५	५	५	५	५	५	४	३	३	नि.ध.
५	५१।	३।।	४४।।	३७।।	३५	४२।।	४२	१३।।	२४।।	३९	४१	
२२१	२५३	३०४	३४५	३४५	३३५	३३५	३४५	३४२	३०४	२५३	२२१	पलात्मकं
२७८	२९९	३२३	२९९	२७८	२७८	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	लंकोदय

गणनागुणैक्यबोधकचक्रम्। वरायनक्षत्राणि। (कन्या नक्षत्राणिपार्श्वे)

कन्या	वर / नक्षत्र	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि.	भरणी	कृति.१	कृति.३	रोहिणी	मृग.२	मृग.२	आर्द्रा४	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त	चित्रा२
मेष	अ	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२२।।	२६	१७	१८	२२।।	३१।।	२७	२०।।	२६	१७।।	११	९	१३
	भ.	३४	२८	२९	१९	२२।।	१३।।	१७	२६	२६	३०।।	२३।।	२४।।	२१	१९	२८	२१।।	२०	६
	कृ१	२७।।	२७।।	२८	१६।।	९	१५।।	१९	२०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	१७।।	२१	२२	१५।।	१५।।	१८।।
वृष	कृ३	१८।।	१८।।	१९	२८	१९	२५।।	१६।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१९।।	२३	२४	२१	२१	२३।।
	रो	२३।।	२३।।	१०	१९	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२८	१३	१२।।	२६।।	२८	२५	२६	२०
	मृ२	२३।।	१३।।	१८।।	२८।।	३४	२८	२०	२५	२३।।	२६	२०	२२	२१।।	१७।।	२५।।	२३।।	२७	१३
मिथुन	मृ२	२७	१८	२१	१८।।	२६।।	२०	२८	३३	३१।।	१९।।	१२	१५।।	२४	२०।।	२८।।	३०।।	३४	२१
	आ.	१९	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१३	२०।।	१३।।	२३।।	२९।।	२२।।	२४।।	२४।।	२७
	पुन.३	१९	२६	२३	२०।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१६	२३	१६।।	२२।।	२७।।	२१।।	२३।।	२४।।	२५।।
कर्क	पुन.१	२१।।	२८	२५।।	२०।।	२४	२५	१९	१०।।	१४।।	२८	३५	२८।।	१५।।	२०	१४।।	१७	१८	२०।।
	पुष्य	३०।।	२१।।	२६।।	२३	२४	१७	१०	१८	२१।।	३५	२८	३०	१८।।	१४।।	२३।।	२६	२७	१२
	श्लेषा	२५	२३।।	२२।।	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८।।	२८।।	२८	१५	१५।।	१७।।	२०।।	२०।।	२६
सिंह	म	२१	२१	१७।।	१८।।	११।।	१९।।	२२।।	२२।।	२१।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१६।।	१६।।	२२।।
	पूफा.	२७	१९	२१	२२	२५।।	१७।।	२०।।	२८।।	२७।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४	२४	२२।।	८।।
	उ.फा२	१८।।	२७	२२	२३	२७	२५।।	२८।।	२१।।	२१।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	१८	१६।।	१४।।
कन्या	उ.फा३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२३।।	३०।।	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२१।।	१७।।	२५	१९	२८	२५।।	२४।।
	हस्त	१०	२०	१६।।	२१	२६	२६	३३	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२२	१७।।	२२।।	१७	२६	२८	२७
	चि.२	१३	६	१९	२५।।	२०	१२	१९	२६	२४।।	२०।।	१२।।	२६।।	२३।।	९।।	१५।।	२४।।	२७	२८
तुला	चि.२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	२०	१२	२६	२५।।	१०	१७।।	१७।।	२०	२१
	स्वा.	२७।।	२९।।	१७।।	१२।।	१६।।	२७	२७	२६	२६।।	२८	२८	१५।।	१३।।	२५।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१
	वि.३	२२।।	२२।।	२०।।	१५।।	१०।।	१८।।	१९।।	२१	२१	२२।।	२१।।	१९	१७।।	१९।।	१८।।	१७।।	१८।।	२७।।
वृश्चिक	वि.१	१६।।	१६।।	१४।।	१९।।	१४।।	२२।।	१३	१४।।	१४।।	१९	१८	१५।।	२१।।	२३।।	२१।।	१८	१९	२८
	अ	२४।।	१४।।	१९।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२१।।	२६।।	१८	२१	२४।।	२०।।	२९।।	२६	२७	१२
	ज्ये	१२	१८।।	२४।।	२९।।	२२।।	२२।।	१३	३	६	१०।।	२०	२६	३१	२३।।	१६।।	१३	१२	२५।।
धनु	मू.	१२	२०	२४।।	१९	१३	१४	२१	१५	१२	८।।	१७।।	२४	२५	१९	९।।	१३	१३	२६।।
	पू.।।	२६	१९	१८	१२।।	१९	११	१९	२७	२७	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२५	२८।।	२७	१२
	पू.३।।	२७	२०	१९	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२७	२७	२६	११
	उ.१	२५।।	२७	१४	८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	९।।	११।।	२७	२८	२८।।	२७।।	२०
मकर	उ.३	२८	२९।।	१६।।	१४	१७	२२।।	२०।।	२२।।	२२।।	२७	२८	१३	६।।	२२	२३	२६	२५	१७।।
	श्र.१।।	२८	२७	१४।।	१२	१८	२७	२४	२१।।	२१।।	२७	२५	१५	५।।	१९।।	२०	२४	२५	१९
	श्र.२।।	२७	२६	१३।।	१०	१७	२६	२३।।	२१	२३।।	२८	२६	१५	६।।	१८।।	२०।।	२३।।	२४।।	१८।।
	ध.२	२०।।	१०।।	२६	२३।।	२०	१२	८।।	१७।।	१७।।	२२	१३	२८	१८।।	५।।	१२।।	१६	१७।।	१६।।
कुम्भ	ध.२	२०	११	२६	३०।।	२७।।	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०	२५।।	११।।	१९।।	१७।।	२१	१८
	श.त.	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२५	१८	१०	१३	७।।	१५	२०	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	८।।	२६
	पू.भा.३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	३१	२४।।	१७	१७	१३।।	२०।।	१४	१९।।	२५।।	१६।।	१५।।	१७।।	१८।।
मीन	पू.१	१४।।	२१।।	१६।।	१९	२६	२६	२५।।	१८	१८	१८	२५।।	१८।।	१६।।	२२।।	१४।।	१६।।	१८।।	१९।।
	उ.भा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५	१७	१६।।	२५।।	२७	२६	१९	२०	१७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६	९।।
	रेवती	२५	२४।।	११।।	१४	१७	२६	२५।।	२४	२५।।	२४।।	२७	१३	१२	२२	२२	२४	२६।।	२०।।

कन्या	वर / नक्षत्र	तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
		चित्रा२	स्वाती	विशा.३	विशा.१	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा.।।	पूषा.३।।	उ.१	उ.३	श्र.१।।	श्र.२।।	धनि.२	धनि.२	शतभि.	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भा.	रेवती
मेष	अ	२२।।	२६।।	२२।।	१९।।	२६।।	१५	१३	२६	२७	२४।।	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४।।	२४।।	२६
	भ.	१४।।	२९।।	२२।।	१९।।	१७।।	११।।	२०	१९	२०	२७	२८।।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१६।।	२८
	कृ१	२७।।	१५।।	१९।।	१६।।	२०।।	२६।।	२४।।	१८	१९	१४	१५।।	११।।	१०।।	२५	२५	२७	१९।।	१७।।	१९।।	११।।
वृष	कृ३	२२।।	१०।।	१४।।	२१।।	२५।।	३१।।	२०	१२।।	१३।।	९।।	१४	११	१०	२२।।	२१।।	३१	२३।।	२०	२२	१४
	रो	१९	१५।।	९।।	१६।।	३०।।	२४।।	१४	१९	२०	११।।	१७	१९	१८	२०	२६	२४।।	३०।।	२७	२६	१९
	मृ२	१२	२५।।	१७।।	२३।।	२२।।	२५।।	१५	१२	११	१८	२१	२४।।	२४।।	१३	१९	२७	२९।।	२६।।	१७	२७
मिथुन	मृ२	१४	२७	१९।।	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०।।	२५	२५	१२	१३	२१	२३।।	२७।।	१७	२७
	आ.	२०	२७	२०	१३।।	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२।।	२२।।	२२।।	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
	पुन.३	१८।।	२७	२१	१३।।	२०।।	५	१३	२७	२६	२७	२१।।	२२।।	२३।।	१७।।	१८।।	११	१७	१९।।	२७।।	२८
कर्क	पुन.१	२०	२७	२०	१९	२६	२०।।	८	२१	२०।।	२१।।	२६।।	२५	२७	२१	२२।।	७	११	१७	२५	२५।।
	पुष्य	११।।	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११।।	२२।।	२६	२४	२५	१३	४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
	श्लेषा	२५।।	११।।	१६।।	१५।।	२०	२६	२२।।	१६	१७।।	८।।	१२	१३	१३	२७	१८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
सिंह	म	२५।।	११।।	१७।।	२४।।	२६।।	३४	२४	२०	२१	११।।	५।।	५।।	४।।	१८।।	२४।।	२५।।	१८।।	१७।।	१८।।	१२
	पूफा.	११।।	२५।।	१९।।	२६।।	२४।।	२४।।	१९	१८	१९	२७	२१	१९।।	१८।।	४।।	११।।	१९।।	२४।।	२३।।	१६।।	२४
	उ.फा२	१७।।	२६।।	१७।।	२४।।	३०।।	१९।।	१०।।	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११।।	१८।।	१२।।	१५।।	१५।।	२६।।	२४।।
कन्या	उ.फा३	१६।।	२५।।	१६।।	१८	२७।।	१३	१५।।	२९।।	२८।।	२९।।	२६	२५	२५	१६।।	१६।।	१०।।	१४।।	१८	२९	२७
	हस्त	१९	२६।।	१७।।	१९।।	२६	१२	१४	२७	२६	२७।।	२३	२४	२४	१९	१९	९।।	१४।।	१९	२७	२७
	चि.२	२०	१९	२६।।	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७।।	१९	१९	१८	१८	२४	१८।।	२२	१०।।	२१
तुला	चि.२	२८	२७	३४।।	२४।।	७।।	२१।।	२८	१४	१३	२१	२५।।	२७।।	२७	२६	२०	२६	२०।।	१५	४	१३
	स्वा.	२८	२८	२०	१०	२३।।	१८।।	२३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३।।	२७	२१	२०	२५	१९।।	२०	१२।।
	वि.३	३४।।	१८	२८	१८	१७	२१।।	२८	२२	२१	१३	१७।।	१७।।	१७।।	३२।।	२६।।	२६	२२	१६।।	१३।।	५
वृश्चिक	वि.१	२३।।	८।।	१७	२८	२७	३१।।	२३।।	१७।।	१६।।	९।।	१२	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१८	९।।
	अ	७।।	२२।।	१७	२८	२८	३१	१६।।	१४।।	१४।।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४।।	२४	१८	२७
	ज्ये	२०।।	१६।।	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२५	२५	१९	११	९।।	२१	२१
धनु	मू.	२७	२१	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	२८	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१५।।	२२।।	२८	२१।।	१५।।	१६।।	२५।।	२७
	पू.।।	१२	२७	२०	१६।।	१८।।	१८।।	२८	२८	२७	३३	२३	२३।।	२३।।	८।।	१६।।	२३।।	३१।।	३२।।	२३।।	३२।।
	पू.३।।	११	२६	१९	१८।।	१८।।	१९।।	२७।।	२७।।	२८	३५	२४	२४	२३।।	८।।	१५।।	२२	२९।।	३२।।	२३।।	३२।।
	उ.१	२०	१९	१२	११।।	२५।।	१९।।	२५।।	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
मकर	उ.३	२४।।	२३।।	१६।।	१४।।	२८।।	२२	१६।।	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	१७।।	२३।।	३०।।	३२।।	२३।।
	श्र.१।।	२६	२३।।	१६।।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८।।	२३।।	३१।।	३०।।	२२।।
	श्र.२।।	२५।।	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५।।	१५	२४	२७	२८	३०	२०।।	१८	२३	२९।।	३१।।	२४।।
	ध.२	२४	२६	३०	२८	१४	२७	२१	९	९।।	१६।।	२५।।	२८	२८	२८	१८।।	२३।।	२१	२६।।	१५।।	२२।।
कुम्भ	ध.२	१९	२२	२५।।	२८	१२	२६	२९।।	१७।।	१६।।	२३।।	१८।।	२१	१८।।	२०	२८	३३	२८।।	१८।।	७	१४।।
	श.त.	२६	१९	२६	२६।।	२१	१९।।	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८।।	२५	३३	२८	१९	९	१७	१६।।
	पू.भा.३	१९।।	२८	२१	२१।।	२७।।	१२	१५।।	३१।।	३०।।	२९।।	२४।।	२५।।	२५।।	२०।।	२७।।	१९	२८	१८	२३	२०।।
मीन	पू.१	१२।।	१९।।	१४	२१	२७	११।।	१५	३१	३१।।	३०।।	२८।।	२९।।	३०।।	२५।।	१७	७।।	१६।।	२८	३३	३०।।
	उ.भा.	५	१९।।	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२।।	३१।।	२९।।	२८।।	२९।।	१४।।	६	१६।।	२१।।	३३	२८	३४
	रेवती	१३।।	११।।	५।।	१२।।	२७	२२	२७	३०।।	३०	२१	१९	२०	२२।।	२२।।	१४	१६	१८	२९।।	३३	२८

अथ ग्रहाणा होमार्थे समिधाः-अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथपिप्पलः।। औदुम्बराः शमीदुर्वाकुशाश्चसमिधः क्रमादिति।।१।। **अथग्रहाणां होमप्रमाणम्।।** एकैकस्याष्ट शतकमष्टाविंशति रेव वा।। होतव्या मधुसर्पिभ्यां सहस्रम् चाष्ट संयुतम्।। इति।।२।। **सन्ततिप्रदमन्त्रौ।** देवकीसुतगोविन्दवासुदेवजगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः।। कौशल्या शुशुभे तेन पुत्रणामिततेजसा। यथा वरेणदेवानामदितिवज्रपाणिना।।३।। सपादलक्षजपः।। तिलपायसघृतदशांशहवनं तद्दशांशतर्पणम्। तद्दशांशब्राह्मणभोजनम्।।४।। **जन्मराशिनामराश्योः प्रधानता निर्णीयते। विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यहारके। नामभाच्चिन्तयेत्सर्वयदि जन्म न ज्ञायतते यदा।।५।।** अन्योप्यावश्यककार्य विशेषोवृहस्पतिनाभिहितः।। मासप्रयुक्तकार्येषु मूढत्वं गुरुशुक्रयोः। न दोषकृन्मलमास गुर्वादित्यादिकं तथा इति। शुभाछिक्काः भोजने। शयने दाने। आसने। वामे। पृष्ठे । पूर्वे। औषध सेवने। अध्ययने। बीजवापे एषु सत्।।६।।

।। अथ गोचराद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलस्य शमनाय प्रत्येकग्रहाणांदानवस्तूनि।।

सूर्यदानम्	चन्द्रदानम्	भौमदानम्	बुधदानम्	गुरुदानम्	शुक्रदानम्	शनिदानम्	राहुदानम्	केतुदानम्
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम,पृथ्वी	कांस्यपात्र	पीत धान्य	श्वेत चन्दन	नीलम,तिल	सप्तधान्य	कम्बलकस्तुरी
गोधूम,गुड़	श्वेत चावल	मसूर,द्विदल	हरित वस्त्र	पीतवस्त्र,सुवर्ण	श्वेत चावल	माषान्न, तेल	माषान्नहेमनाग	माषान्न
सवत्सागो	श्वेत वस्त्र	गोधूम	गजदन्त,घृत	घृत,पीतपुष्प	श्वेत चित्रवस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नीलवस्त्र,गोमेद	वेदूर्यमणि
कमलपुष्प	श्वेत चन्दन	रक्त वृषभ	मुद्गान्न पन्ना	पीतफलं	श्वेत पुष्प	कुल्थी,लोहा	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प
नूतन गृह	श्वेत पुष्प	गुड़,रक्तचंदन	सुवर्ण,दासी	पुखराज	रजत,हीरा	महिषी वा	खड्ग तिल	तिल तेल
रक्त चन्दन	चीनी, रजत	रक्तवस्त्र	सर्वपुष्प, रत्न	हरिद्रा अश्व	घृत सुवर्ण	कृष्णधेनु	तैल, लोह	रत्न सुवर्ण
रक्त वस्त्र	वृषभ, घृत	रक्त पुष्प	कपूर,शंख	पुस्तक मधु	श्वेताश्व दधि	कृष्णपुष्प	शूर्पकम्बल	लोहा,बकरा
सुवर्णताम्र	शंख,दधि	सुवर्ण,ताम्र	अनेक फल	लवण शर्करा	सुगंधद्रव्याणि	उपानह	सतिलताम्रपात्र	शस्त्र
केशर,मूंगा	मोती कपूर	केशर,कस्तूरी	षट्र सभोजन	भूमि छत्र	शर्करा, गौ	कस्तूरी,सुवर्ण	सुवर्ण रत्न	सप्त धान्य
वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा
ज.सं.७०००	ज.सं.११०००	ज.सं.१००००	ज.सं.९०००	ज.सं.१९०००	ज.सं.१६०००	ज.सं.२३०००	ज.सं.१८०००	ज.सं.१८०००

अथ योगिनीदशाकृतारिष्ट शमनाय जपार्थं मंगलादीनां मन्त्राः

मंगलामन्त्रः	अथ पिंगलामन्त्रः	धान्यामन्त्रः	अथभ्रामरी मन्त्रः	भद्रिका मन्त्रः	उल्का मन्त्रः	सिद्धामन्त्रः	संकटामन्त्रः
ॐ ह्रीं मंगले	ॐग्लौपिंगले बैरिका	ॐश्रीधनदे	ॐभ्रामरिजगतामधी	ॐ भद्रिके	ॐउल्के	ॐह्रीं सिद्धे	ॐ ह्रीं संकटे
मंगलायै	रिणिप्रसीदफट्	धान्यै	श्वरीभ्रामरीक्लीं	भद्रंदेहिअभद्रं	रोगंनाशय	मे सर्वमानसं	मम रोगं
स्वाहा	स्वाहा	स्वाहा	स्वाहा	नाशय स्वाहा	जृंम्भयस्वाहा	साधय स्वाहा	नाशय स्वाहा

अथात्रग्रहाणामेकर्क्ष भोगफलसमयादिज्ञानम्

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः केतुः	ग्रहाः
मा.१	दि.२।	मा.१।।	मा.१	मा.१३	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकर्क्षभोग
आदौ	अन्त्ये	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फल समय
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गन्तव्यराशे प्राक्फलदा

अथ सर्वग्रहाणां दोषापनुत्तये सामान्यौषधयः

सर्षप	देवदारु	हरिद्रा	लोध	सरपुखा	कुष्ठ	तीर्थोदक
धनलावा	वरियरा		लजारु	नागरमोथा	कंगुनी	

एतैस्सवारिभिः स्नानंप्रोक्तंदानपुरस्सरम्। एतत्सामान्यत् सर्वग्रहपीडोपशांतये।।१।। यथासिद्धौषधैः रोगान्नश्ये युर्मन्त्रतोभयम्। तथा स्नान विधानेनग्रहदोषः प्रणश्यति।

अथात्रषड्भानि

जन्म	१	मृत्युभयः
कर्म	१०	कर्मनाशः
संघात	१६	बन्धुनाशः
समुदायः	१८	सुखनाशः
विनाशः	२४	देहनाशः
मानसः	२५	मनस्तापः

ग्रहाणां धारणमणयः

रवि	माणिक्यम्	विद्रुमम्
सोम	मोती	चाँदी
मंगल	मूंगा	मूंगा
बुध	पन्ना	सोना
गुरु	पुष्पराग	मोती
शुक्र	वज्र	चाँदी
शनि	नीलम	लोहा
राहु	गोमेद	लाजावर्त
केतु	वेडूर्य	लाजावर्त

अथात्र मासि जनिभेरविवासरादौ फलम्।

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः
गम	सुभो-	वह्नि	सम्म	वस्त्र	सौ-	दुःखम्
नम्	ज्यम्	भयम्	ति.	लाभः	ख्यम्	

एकस्मिन्नेकोष्ठात्मकेयन्त्रे मणिन्यासक्रमः

ऐशात्यां	पूर्वे	आग्नेय
बुधपन्ना	शुक्र हीरा	चन्द्रमोती
उत्तर	मध्ये	दक्षिणे
वृ.पुष्पराज	सूर्यमाणिक	मं.मूगा
वायव्ये	पश्चिमे	नैऋत्ये
केतु वैडूर्य	शनिनीलम्	राहुगोमेद

आवश्यकेऽनिष्ट तिथ्यादौ दानम्

तिथौ	वारे	न.	करणे	योगे
तण्डुं	रत्नं	गौ.	धान्यम्	सुवर्ण
चन्द्रं	भद्रां	ता.	ब्राह्मण दत्वा	
शंख	धान्य	लवणं	तत्कर्म कार्यम्	

मुन्यादानम्
वर्षपत्रे
चावल
सुवर्ण
कांस्य
पात्र
घृत
पीतवस्त्र
वर्ण
दक्षिणा

ग्रहाणांतन्त्रसारोक्तमन्त्राः

ग्रहाः	मन्त्राः
रवि	ॐ घृणिः सूर्याय नमः
सोम	ॐ सों सोमाय नमः
मंगल	ॐ अं अङ्गारकाय नमः
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः
गुरु	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ रां राहवे नमः
केतु	ॐ कें केतवे नमः

अथ स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने श्रेष्ठ मासपक्षतिथ्यादयः।

तत्र श्रेष्ठ पक्ष मासा	वैशाखे फाल्गुने माघे मार्गशीर्षे ज्येष्ठे श्रावणाश्विने।। एषुसितेपक्षे चोत्तमम्। श्वेतवस्त्रे श्रेष्ठोऽयम्।। नान्याम्बरे।।
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५। एतासु तिथिषुसत्। परन्तु तत्र कृष्ण पक्षस्यदशमीयावन्मध्यमम्।। तदुपरिकुलटात्वं स्यात्।।
वाराः	चन्द्र।। बुध।। गुरु।। शुक्र।। एषां वारे प्रशस्तम्।।
शुभ नक्षत्राणि	अश्वि.मृ.श.ध.रे.चि.अनु.ह.श्रवण पुष्य, उत्तरा ३, रो.एषु भेषु शुभः।। मू.पुनर्व,म.वि.कृ.एषु मध्यमं परेष्वसत्।। दिवादुर्योगभद्रादिरहिते श्रेष्ठं न रात्रौ।
शुभ लग्नानि	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्याङ्गेषु सद्भिर्दृष्टे सत्युत्तमम्।। तत्र विवाहवद्ग्रहसंस्थाऽपि विचार्य्या इति।।

अथ रजोदर्शने निषिद्धसमयमाह

अष्टम्यां द्वादशीषष्ठ्योरिक्तादर्शेऽथसंक्रमे।।
भद्रा निद्रा व्यतीपाते ग्रहणे स्रजि वैधृतौ।।१।।
परतात गृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवाससि।।
प्राग्रजोदर्शने नेष्टं शान्त्या तु शुभदं भवेत्।।२।।
प्रागुक्तं विलयं यान्ति रजोदर्शनसंभवाः।।३।।

अथ ऋतुमत्याः स्नानमुहूर्त्तस्य विचारः

ह.स्वा.अश्वि.मृ. अनु.ध.रो.उत्तरा ३ ज्ये. एषुभेषु शुभतिथौ। सद्वारे।। सत्तनौ स्नाया-दृतुमती नारी।

अथ गर्भाधानमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्र त्रिविधं गण्डान्तम्। जन्मताराम्। मू. म. अश्वि. रे.। ग्रहणदिनम्। व्यतिपातवैधृति- श्राद्धदिनम्। दिवा परिघाद्यर्द्ध उत्पातहतभम्। जन्मराशितोषष्ठाष्टमं पापग्रहस्य भवनम्। भद्रा पर्वदिनं ४।६।९।१४ तिथिषु संध्यायाम् सू. मं. श. वासरान्। रजोदर्शनाच्चतुर्थ-रात्रिपर्यन्तं न शुभः। उत्तरा ३, म, ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श., एषु भेषु लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैः। लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः। सू. मं. वृ. दृष्ट लग्ने विषमराशिनवांशके चन्द्रे शुभम्। युग्म (६।८।१०।१२) रात्रौ चोत्तमं गर्भाधानम्। चि., पुन., पुष्य., अश्वि., एतद्भेषु मध्यम स्यादिति।।

अथास्यशान्तिः कल्पोक्तः

घृतदूर्वातिलाक्षतैर - ष्टोत्तरशतं जुहुयादिति। स्वर्णगोभूदानं - च विस्तर-स्त्वत्रनिबन्धेभ्य।। इति।।

अथ गर्भाद्दशमासानामधिपाः

१	२	३	४	५	६	मासाः
शु.	मं.	वृ.	सू.	सो.	श.	पतयः
७		८		९	१०	मासाः
बु.	गर्भलग्नपति			सो.	सू.	पतयः

अथ गर्भसंस्कारे विशेषमाह

स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति-विवाहगर्भ संस्कारयोरितर-कर्मसु भर्तुरेव इति।

अथ जातकर्मानन्तरकृत्यम्

जन्मलग्नंनिरीक्ष्य-तत्रस्थग्रहदोष परिहाराय ग्रहदानं जपं वा कुर्यात्। जातमात्रस्य मूलोत्पन्नस्य मुखमालोक्य स्नायादिति।।

अथ पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्त्तः

तत्र गर्भतोद्वितीये तृतीये वा मासिपुंसवनंकर्मविधेयं।। षष्ठे वाष्ट मेमासि मासाधिपतौसबलेसतिसीमन्तोन्नयनं प्रशस्तम्।। नात्रशुक्रेज्ययोर्मूढत्वदोषः।।

सद्वाराः	सू.मं.वृ. एषां वारे मतान्तरेण ज्ञेन्दुशुक्राणां वारे वा दम्पत्यो श्चन्द्रताराशुद्धौ सत्यां पुंसवनसीमन्तसंस्कारो भवतः।।
सद्भानि	मृ. पुष्य, मू. श्रवण.पुनर्व., हस्त. रे. रो. उत्तरा ३ एतद्भेषु पुंजन्मभं विना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनञ्च प्रशस्तम्।।
सत्तिथय	१।२।३।५।७।१०।११।१३ एतासु तिथिषु सिते। तिथि १० यावत् कृष्णे चोत्तमः परन्तु पूर्वाह्ने एव कार्यो नापराह्ने।।
साङ्ग-लग्न शुद्धिः	संस्कारद्वयं पुंभस्याङ्गे पुंभांशे च श्रेष्ठम्। तत्रलग्नात् १।४।५।७।९।१० एषु शुभैः।३।६।११। एषु पापैश्चोत्तमः। चन्द्रे १।६।८।११ वर्जिते श्रेष्ठः। ४।८।१२ पाप एकोप्यसत्।

अथ सूतिकायाः सूतीगृहप्रवेशमुहूर्त्तस्य विचारः

रो. मृ. पुष्य. स्वा. श. पुनर्व. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. उ.३ श्र. एषु भेषु।। शुभवासरे।। सतिथौ रिक्ता षष्ठ्यष्टमीवर्जिते।। शुभाङ्गे।। लग्नतः केन्द्रेषु शुभेषु।। ३।६।११ पापेषु।। शुभांशे सत्युत्तमः।।
श्रुत्वा जातं पितापुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत्।। एतच्च रात्रावपि कर्तव्यम् श्राद्धादिकं हेम्रा कर्तव्यम्।। तत्कालाभावे सूतकान्तेऽपि कर्तव्यम्।।

तत्कालातिक्रमणे जातकर्मणि विचारः

सत्तिथय	१।२।३।५।६।७।१०।।११।१२।१३ एतासु तिथिषु व्यतिपातसंक्रान्ति-भद्रादिदोषरहितासु श्रेष्ठम्।
सद्वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां वारे। जन्माहात् प्रथम एकादशद्वादशदिने चोत्तमः।।
सद्भानि	मृ.,रे.,चि.,अनु.,उत्तरा ३, रो. पुनर्व., स्वा., ध., श्र., श., ह., पुष्य, अश्वि., एषु सत्तनौ चायं श्रेष्ठः।।

स्तनपानमुहूर्त्तस्य विचारः

उतरा ३, रो. अश्वि., रे., पुष्य, पुनर्व., अनु., ह., चि., मृ., ध., श्र., श., एषु भेषु शुभवासरे।। शुभतिथौ। स्थिराङ्गे स्तनपानं प्रशस्तं स्यादिति।।

अथ सूतकापथ्यम्।। अन्नप्राशनोक्तभे तिथौ च दुर्योगादिरहिते श्रेष्ठम्।

बालस्यादौ दुग्धपानसमयश्च

ई.४ उ.७ २वा.	पू.१ चरयोगिनी ५ प.	आ.६ ३ द. ८ नै.	एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शंखेन पाययेत्। अन्नप्राशन नक्षत्रदिवसोदयराशिषु।। इन्द्रवायु-यमशूलहस्तिनां वर्हिषाश्रवणरक्षसा क्रमात्।। अर्द्धवाममनुवासरादितोदिक्षु संभ्रमति योगिनीचरा।।

अथ चैत्रादि १२ मासानां नामानि

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	मासाः
वैकु	जना	उपे	यज्ञ	वासु	त्रिवि	योगी	पुंडरी	कृष्ण	अन	अच्यु	चक्र	नामा
ण्ठ	र्दनः	न्द्रः	पुरुष	देवः	क्रमः	शः	काक्षः		न्तः	तः	धरः	नि

अथ खट्वारोहणमुहूर्त्तस्य विचारः।। जन्माहात् १०।१२।१६।२२ एषु दिवसेषु। मृ.रे.चि.अनु.उत्तरा.३, रो., ह. अश्वि., पुष्य, अभि.,एषु भेषु।। शुभाहे।। रिक्तामारहितोतिथौ प्राक्शीर्ष बालकं तत्र विन्यसेत्।

अथ सूतिकाक्वाथौषधिभक्षणमुहूर्त्तज्ञानम्।। हस्त., अश्विनी, पुष्य, अभि., मृ., अनु., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., भानि। ३।६।९।१२ लग्ने। सू.चं.बृ.शु. वाराः। लग्नात् ७।८।१२ शुद्धेषु। रिक्ताऽमा रहिते तिथौ। पुंलग्ने पूर्णेन्दुयुते श्रेष्ठः। जन्मराशौ न रसभक्षणम्।

सूतिस्नानमुहूर्त्तस्य विचारः।। रे., उ.३, रो., ह., स्वा., अश्वि., अनु., एषु भेषु रवि, भौम, गुरु, दिवसेषु १।२।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु सत्। आर्द्रा. पुन. पु. श्र. म. भ. वि. कृ. मू. चि. एषु भेषु बुधशनिवारयोः ४।६।८।९।१२।१४ तिथिषु न सत् एतदिभन्नतिथिनक्षत्रवारेषु मध्यमम्।

अथ भूम्युपदेशनमुहूर्त्तविचारः

तत्रादौ पृथ्वीवराहञ्चाभि पूज्य भौमबले पञ्चमे मासि कार्यम्।। उ.३, रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य, अभि. एतदभेषु। रिक्तामारहिततिथौ।। स्थिरभस्याङ्गे।। शुभवासरे च।। बालकस्य कटिस्थले कटिसूत्रं बध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।। तत्र मन्त्राः।। रक्षैनं वसुधे दैवि सदा सर्वगते शुभे।। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रियेति।। अथात्रैव बालाग्रे इमानि स्थापयेत्।। वस्त्रं।। शस्त्रं।। पुस्तकं।। लेखनीं।। स्वर्ण।। रौप्यं।। एषु एतद्बालो गृहणाति तैराजीविनी वृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत्।।

अथ निष्क्रमणमुहूर्त्तज्ञानम्। जन्मतश्चतुर्थे मासे यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेहि वा सत्।

अथ नामकरणमुहूर्त्तस्य विचारः

सूतकान्ते नामकरणं कर्त्तव्यं स्वकुलोचितं।। बृहस्पतिः।। द्वादशे दिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे।। षोडशे विंशतौ चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।।

भानि	मृ., रे., चि., अनु., उ.३., रो., ह., अश्वि., पुन., अभि., स्वा.,पु.,श्र., ध., श., नक्षत्रेषु।
वाराः	चं. बु., बृ. शु. एषां वारे नामकर्महितम्।
तिथयः	१।२।३।५।७।११।१२।१३ तिथौ भद्रारहिते सत्युत्तमम्।
शुद्ध लं.	२।५।८।११ एतद्भस्याङ्गेऽष्टमशुद्धौशुद्धलग्ने शुभांशे चोत्तमम्।
लग्न शुद्धिश्च	लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैर्लग्नात् ३।५।११ पापैश्चोत्तमः।। लग्नात् ६।८।१२ सर्वे न शुभाः।। चन्द्रताराबले पितृपुत्रयोः।। दिवापूर्वाह्णे एव कर्तव्यं। मध्याह्ने मध्यमं तदग्रे न सत्।।

व्यतिपात - संक्रान्त्यमावैधृतिग्रहणाह - श्राद्धाह - पक्षच्छिद्ररिक्तापूर्णा शकुनोकिंस्तुध्नाविष्टि - करणादीन्वर्जयित्वोक्त - तिथ्यादीनामकर्मविहितम्।। अथ विहित-कालातिक्रमे सतीदं गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषरहिते सौम्यायने कार्यम्।। नान्यथेति।

अथान्नप्राशनमुहूर्त्तज्ञानाय चक्रमिदम्

तत्र बालानां षण्मासादारभ्य सममासेषु। कन्यकानां पञ्चममासादारभ्य विषममासेषु कार्यम्।। मासगणनासौरेणान्नप्राशनं परिमितिर्ज्ञेया।।

सद्भानि	रो. उत्तरा ३ मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य. अश्वि. अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. एषु भेषु शुभः।। अन्नसप्तशलाकविद्धं ग्रहणभं त्याज्यम्।
तिथयः	२।३।५।७।१०।१३।१५ सत् अन्येषु समः। वाराः चं. बु. वृ. शु.

एषां वारे श्रेष्ठः।। नान्यस्मिन्नह्नि। लग्नानि २।३।४।५।६।७।१०।११ एषु जन्माङ्गभयोर्मृत्युभस्याङ्ग तदंशकञ्च हित्वा प्रशस्तम्, नान्यलग्ने।

अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफलबोधकचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मासाः
स्वयं नाशः	कनिष्ठ भ्रातृ नाशः	भगिनी नाशः	मातृ नाशः	ज्येष्ठ भातृ नाशः	सुभोगम्	तातात्सुखं	पुष्टता	लक्ष्मी	सौख्यं	सौख्यं	धन संपत्ति	फलानि

अथ जनौसदनो वोध्यं स्वपित्रादिहा। तदर्थ शान्तिविधेया इति।।

अथ जलपूजनमुहूर्त्तविचारः।। तत्र सूतिकायाः मासपूर्तौ सत्यां शुक्रे ज्योरस्ते चैत्रपौषयोर्मासे तथाधिकमासे जलं न पूजयेत्।। श्र., पुष्य., पुन., मृ., ह., मू., अनु. एषु भेषु विरिक्ते तिथौ।। चं.बु.गु. एषां वारे शुभम्।।

अथ कर्णवेधमुहूर्त्तज्ञानाय चक्रमिदम्

तत्र जन्माहात् १२।१६ दिने।। ततः ६।७।८ मासि।। ततः विषमवर्षे कर्णवेधः शुभः। चैत्रपौषावामाजन्म-मासचातुर्मास्यारिक्ता अमासमवर्षजन्मतारां हित्वा प्रशस्तः कर्णवेध इति।।

सत्तिथयः	१।२।३।५।७।१०।१२।१३।१५ एतत्तिथौ सिते।। कृष्णे च ति. १० यावत् शुभः।।
वाराः	चं.बु.बृ.शु एषां वारे भद्रारहिते सत्युत्तमः।।
सद्भानि	पुनर्वसु., अश्वि., ह., पुष्य., अभि., मृ., चि., अनु., रे.,श्र., ध., एतद्भेषु चन्द्रबले सति प्रशस्तः।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नेस्वंशेषु च सत्।।
लग्न शुद्धिः	लग्नादष्टमभवनेसंशुद्धे।। लग्नात् १।३।४।५।७।९।१०।११ एषुशुभैः तथा ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः।। लग्नस्थे गुरौकर्णवेधः शुभावहः।।

अथ चौल मुहूर्त्तस्य बोधकार्थमिदं चक्रम्। तत्र वर्षत्रयाद्विषमवर्षे जन्मतः विचैत्रोद्गमने भानो चोत्तमम् मनुना प्रथमवर्षेऽपि सदुक्तम् चौलम्।।

साद्भानि	ज्ये.,मृ., रे., चि., ह., अश्वि., पुष्य., अभि., स्वा., पुनर्वसु., श्र., ध., श., एषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः।।
वाराः	चं. बु. गु. शु. एतद्वारेषु भद्रादिदोषरहिते श्रेष्ठम्।।
सत्तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ सत्।। परन्तु पूर्वाह्नो।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे श्रेष्ठोऽयम्।।

अथाक्षरारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्रोत्तरायणे रवौ। पञ्चमेब्दे गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मीकुलदेवान्नत्वा सविधि सम्पूज्य च शिशोर्नूतनाक्षरलेखनारम्भः कार्यः।

तिथयः	२।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु दुर्योगादिरहितासु शुभः।।
वाराः	चं.बु. गुरु शुक्र एषां वारेषु। शुक्लपक्षे चाक्षरारम्भः शुभः।।
भानिः	अश्वि.आर्द्रा,पुनर्व,पुष्य.,ह.,चि.,स्वा.अनु.,श्र.,रे.,एषु भेषु शुभः।।
लग्न शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेतंदशेचोत्तमः।। अत्राष्टमशुद्धेकुम्भां शकंविनोत्तमः।। जीवे वुध शुक्रे लग्ने खेटबलाढ्ये श्रेष्ठोऽयम्।।

अथ विद्यारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्रादौ अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सौम्यायने रवौ आश्विने कन्यार्के बुधप्राबल्ये

सद्वाराः	बु.सू.बृ.शु. एतद्वारेषु शुभः। गणेशवाग्देवतामभ्यर्च्य कार्यः।।
सद्भानि	अश्वि.पुष्य.आ.अनु.मृ. पुन. ह. चि. स्वा. श्र. ध. मू. पू.३. श्लेषा सत्
सत्तिथय	२।३।५।६।१०।११।१२ एषुसिते।। ति.५ यावत्कृष्णेचोत्तमः एषु सत्
साऽङ्ग लग्न शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेशुभः।। लग्नादष्टमे सर्वग्रहाः नेष्टाः। लग्नात १।२।४।५।७।९।१०।११ एषु शुभैः ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमा अधीतिः ।।इति।।

अथ व्रतबन्धमुहूर्त्तबोधकचक्रमिदम्

तत्रगुरुशुक्रयोर्वृद्धत्वास्तशिशुत्वकालंविनोत्तरायणे रवौ मघादि ५ मासेषु शुभः।। परन्त्वर्केन्दुगुरुशुद्धिवशेन। चैत्रे सति मीनार्के ब्राह्मणानां व्रतं सत्।।

सद्भानि	अश्वि,ह. पुष्य. उत्तरा ३ रो. ऽश्ले. स्वा. पुन. ध. श्र. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा ३. रेव. आर्द्रा. एतद्वेधरहितेषु सत्।। परन्तुनापराह्ने।
तिथयः	२।३।५।१०।११।१२ एतासु शुक्ले २।३।५ कृष्णे तिथिसु चोत्तमः। केचन्मते ७।१३
सद्वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रारुवाणादिदोषरहिते सत्युत्तमः।।
लग्न शुद्धि-ज्ञान माह	त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रोद्विद्यूनादिकत्रिभः।। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्था लाभसर्वे-व्रतेशुभाः।।१।। चं.सु.बृ. लग्नेशोलग्रात ६।८ नशुभाः।। चन्द्रशुक्रौ लग्नात १२ निंद्यौ। ११।५।८ पापाः न शुभाः। ६।८।१२ सौम्या न शुभाः ।। ३।६।११ पापाः शुभदा। पूर्णेन्दु वृषकर्कगतोलग्नेश्रेष्ठोऽन्यथान।। लग्नेऽर्कशुभः।। चन्द्रांशं विनेति।।

अथ दीक्षाग्रहणमुहूर्त्तस्य बोधकचक्रमिदम्

मासः	चै. वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. फा. एतन्मासेषुशुभमधिमासे।।
भानिः	अश्वि. रो. उ.३ पू.३ चि. अनु. पुष्य. स्वा. पुन. मू. श्र. ध. श. एषु सत्।।
वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्।।
तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१२ एतासु तिथिषु श्रेष्ठं कृष्णेयावत्पंचमीसत्।।
शुद्धलग्नं	२।३।४।५।६।७।९।१२ एतद्भस्याङ्गेषुचंद्रतारानुकूलेसति शुभम्।
लग्न शुद्धिश्च	लग्नात् ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।९।१० एषु शुभैश्चोत्तमम्। अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागेनोत्तमम्। गुरुशुक्रयोरुदये श्रेष्ठम्।

अथ द्वादशस्थचन्द्रफलम्। पाणिग्रहें स्त्रीसुरतोभिषेकेयात्राव्रतबन्धने च।। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वै प्रोक्तः शुभोद्वादशो हिमांशुः ।।इति।।

षोडशसंस्काराः।।- गर्भाधानमतश्च पुंसवनकं सीमन्तजाताभिषे। नामाख्यं सहनिष्क्रमणे च तथाऽन्नप्राशनं कर्म च।। चूडाख्योव्रतबन्धको -ऽप्यथचतुर्वेद-व्रतानां पुनः। केशान्तः सविसर्गकः परिणयः स्यात् षोडशीकर्मणाम्।। ब्रह्म-क्षत्रियविट् शूद्रा वर्णास्त्वाद्यस्त्रयोद्विजः।। निषेकादिश्म-शानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रिया।। शूद्रोऽप्येवंविधः कार्यो विना मन्त्रेण संस्कृतः।। स्त्रीणां चौलान्तसंस्कारान् प्रकुर्वीत ह्यमन्त्रकाद। पुंस्त्रियोरुभयोरत्र विवाहः स्याद्यथाविधिः।।

अथ विवाहमुहूर्तस्य विचारः

स्त्रीणामष्टमवर्षातस्त्रि अतः परं सम वर्षे नृणां विषमवर्षेषु। विवाहसमये स्त्रीणां नृणां क्रमेण गुर्वर्कः सबली। तद्दिने उभयोश्चन्द्रबलं विवाहः शुभाः प्रोक्तः।

सद्वारा- शु. चं. बु. वारेषु श्रेष्ठ । सत्तिथयः- रिक्ता (४।९।१४) मावर्जयित्वा सर्वासु तिथिषु श्रेष्ठः। सद्भानि-मृग, ह., अनु. म. रो. उत्तरा ३ स्वा. रेवती मूल एषु भेषु वेधादिदोषरहितेषु शुभः।।

लग्नानिः- लग्नात् ३।६।११ एषु स्थानेषु भौमः २।३।११ स्थानेषु चन्द्रः ७।८।१२ एषु स्थानेष्वतिरिक्तस्थानेषु बुधगुरु ३।६।७।१२।८ एतदिभन्नस्थानेषु शुक्रः शुभः। वर्गोत्तमांशश्च शुभदः स्यात्।

अथ वधू प्रवेश मुहूर्तस्य विचार

विवाहादूर्ध्वं वध्वाः प्रथम भर्तृगृहें प्रवेशो वधूप्रवेशः स च विवाहदिवसात् २।३।४।५। ६।९।१०।१२।१४।१६ दिवसेषु शुभः अतः ऊर्ध्वं विषममासवर्षेषु पञ्चवर्षात्परं स्वेच्छया।।

सद्वाराः- चं.बृ.शु.बु. दुष्टयोगादिरहितेषु शुभा सत्तिथयः १।२।३।५।६।७।८।१०। ११।१२।१३।१५ एषु भद्रादिदोषरहितेषु शुभः।

साङ्गलग्नशुद्धिः- २।३।५।६।८।९।११।१२ एतद्भस्यांगे शुभः। लग्नात् १।३।५।७ ।९।१०।११ स्थानेषु शुभः। १।६।११ स्थानेषु शुभः ३।६।११ स्थानेषु पापाः चतुर्थाष्टमशुद्धौ निशिप्रवेशः शुभः।

अग्न्याधानमुहूर्त्तस्य विचारः- तथोत्तरायणे रवौ स्वशाखेशगुरु सितानामुदये चोत्तमः।

सद्वारा - सू. चं. बु. गु. श. एषु. वारेषु भद्रादिदोषरहितेषूत्तम्। सत्तिथयः २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथयः शुभाः।

सद्भानि- वि. कृ. रो. ज्ये. मृ. रे. उत्तरा ३ पुष्य एषु भेषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः। न्यूनाधिकमासे न कार्यः।

सल्लग्नानि - १।२।३।५।६।७।८।९ एतद्भस्य नवांशो चोत्तमः लग्नशुद्धिः त्रिकोणोपचये केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुषु। शेषे चोपचये शुक्रस्त्रेऽग्न्याधानं चोत्तमम् चन्द्रलग्नेन शुभः। रव्यारेन्दुशुक्रेज्य न नीचे नास्तंगते वारिगेहे वर्धिते चेत्दोत्तमः धनुलग्ने जीवयुते वा मेषगे भौमे ८।१० गते वा ३।६।११ गतेषु सूर्य चन्द्र शनि राहु एषामन्यतमे चक्रभेदे सत्युत्तमः।

अथ वृक्षारोपणस्य मन्त्रमप्याह - ओम् वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति वरदेति च। नमस्ते सुभगे देविद्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।

अथ राज्याभिषेकमुहूर्त्तस्य विचार-

तथोत्तरायणे रवौ गुर्वीन्दु शुक्रदृश्ये वधा भौमार्कलग्नेशदशमेशवायेचेदुत्तमः परन्तु अधिमासे, चैत्रे रात्रौ भौमे न शुभदः।

सद्वारा-सू. चं. बु. वृ. शु. एषु वारेषु चन्द्रबले कुयोगादिरहिते सति शुभदः।

सत्तिथय-१।२।३।५।७।८।१०।१२।१३।१५ एषु भद्रादिदोषरहिते शुभः।

सद्भानि-ज्ये. श्र. ह.अश्वि. पुष्य. मृ. रे. अनु. उत्तरा ३, रो. एषु शुभः।

सल्लग्नानि-२।३।५।६।७।८।११।१२ एतद्भस्यांशे वा जन्मराशि वा उपचये लग्ने सद्ग्रहेक्षिते शोभनः जन्मांगयोर्मृत्युराशौ लग्ने नेष्टः।

लग्नशुद्धि-लग्नाद् पापस्त्रिषष्ठायगतैः शुभः। लग्नाच्छुभग्रह केन्द्रे त्रिकोणायधनत्रिसस्थितैः शुभः मित्र क्षेत्र गतैः खेटैश्चेच्छुभः अस्तंगतेनीचारि शत्रु गृहे च न सत्। पञ्चदुष्ट ग्रहैश्चेदुत्तमोऽयम्।

अथ भर्तृ गृहान्पितृगेहगमनमुहूर्त्तस्य विचारः-दारुणोग्रभिन्नेषु भेषु शनिसूर्यभौमभिन्नवारेषु सत्तिथौ कुयोगादिभद्रादिदोषरहिते शुभलग्नेशुभः।

अथ कोष्ठादौ धान्यस्थापनमुहूर्त्तस्यात्र विचारः- मृ. पुन. रे, अनु. श्र. ध. अश्वि. पुष्य रो. ध. उ. एषु भेषु सत्तिथौ सू. चं. गु. शु. वारेषु।। अथ निष्कासनधान्यानां। उ. ३, रो. ध. श. एषुभेषुसद्वारे शुभांगे सत्तिथौचप्रशस्तः।

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठामुहूर्त्तस्य विचार- तत्रोत्तरायणे भानौ जीवेन्दुशुक्रे दृश्ये सिते पक्षे चोत्तमा प्रतिष्ठा।

सद्वारा- सू. चं. बु. गु. शु. एषु. वारेषु शुभः।

सत्तिथय- १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ एनासु तिथिषु भद्रादिदोषरहितासु शुभदः।

सद्भानि- मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३, रो. एषु भेषु चन्द्रतारानुकूलेषु सत्सु शुभः। अथवा यस्य देवस्य प्रतिष्ठा कर्त्तुमिष्टस्तस्य तत्स्वामिनक्षत्रकाले तिथौ च प्रशस्तः।

लग्नशुद्धि- २।३।५।६।९।११।१२ एतद्भस्यांगांशे शुभः चरांगे अशुभः। लग्नात् १।२।४।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभः ३।८।११ सन्द्भिः पापैश्चान्त्यैर्वोत्तमः पंचाष्ठखेटदुष्टलग्नं इष्टग्रहे शुभांशे श्रेष्ठम्।।

अथ वापीकूपतड़ागादीनामारम्भः मुहूर्तस्य विचारः तद्वारा- चं. बु. बृ. शु. एषु वारेषूत्तमम्।

तिथयः- १।२।३।५।७।८।१०।१२।१५ एतत्तिथिषु शुभः। सद्भानि ह, अनु. रो. उत्तरा ३, घ. श. रे पुष्य, मू. पूषा एतद्भेषु स्वस्वचक्रशुद्धिसत्यां शुभे मासिगुरुसितयोरस्तादि-दोषभद्रादिदुर्योगरहिते दिने शुभः।

लग्नशुद्धि- लग्ने जीवज्ञऽथवा दुर्बलक्रूरं शुक्रे चापि मेषूरणस्थे। आप्येचन्द्रे सूर्यतोयश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।

अथचौलमुहूर्त्तस्य बोधकचक्रम्।

तत्रविशेषः - ऋतुमत्याः सूतिकायाः सुनोश्चौलादिना च सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूड़ाकर्म न कारयेत्। पञ्चमाब्दाद्चोर्ध्वं तु गर्भिण्यापि कारयेत्। तत्र जन्मतो द्वित्रिपंचोन्मितेऽब्दे स्वचराशे कुत्रचित्प्रथमवर्षेऽपि भवेत्। विचैत्रोदगयने भानोः तत्रापि ३ वर्षे श्रेष्ठ ५।७ वर्षे मध्यम ९।११ अधमस्मृतम, **सत्तिथयः-**२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथिपर्वोनादिषु शुभं लग्नशुद्धि - २।३।४।।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे शोभनम्। तत्रापिजन्मांगभात् मृत्युभं विनालग्नात् १।२।४।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभः ३।६।११ पापस्तधा ६।८।१२ स्थानातिरिक्त स्थानेष्विन्दो शुक्ररहिताष्टमभवने शुद्धे सत्युत्तमः। **सद्भानि** -मू. रे. ह. उ. ३ रो. पुनर्व. स्वा. अश्वि. नक्षत्रेषु सत्तनो चायं श्रेष्ठः।

द्विरागमन मुहूर्त्त- स च विवाहतो द्वितीयवारं भर्तृगृहे गमो द्विरागमः विषमाब्दमासयोः मेषवृश्चिककुम्भराशौ रवौसति शुक्लपक्षे वरस्य गुरुभान्वोः प्राबल्ये, गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषस्य वध्वा सम्मुखदक्षिणयोः शुक्रकृतदोषस्यचाभावे सत्युत्तमः सद्वाराः - चं. बु. वृ. शु. एषु वारेषु दुर्योगादिरहितेषु शुभः। सद्भानि- ह. अश्वि. पुष्य, उत्तरा ३, रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. रे. चि. अनु. एषुभेषु चन्द्रतारानुकूलेसति शोभनः लग्नशुद्धि लग्नात् ३।६।११ एषु स्थानेषु गुरौ १।४।७।१० स्थानेषु भृगो शुभलग्ने शोभनः।

अथ नूतनवध्वाः पाककर्ममुहूर्त

मृगोत्तरातिष्यकुशात्पाक श्रुतित्रये ब्रह्म दुर्द्वैव पौष्णम्। शुभे तिथो शुभांगे च प्रकुर्यान्नवधूनूतनपाककर्म।।१।। स्थिरे लग्ने सुखे शुद्धं सप्तमे च वलान्विते रन्ध्रे खेटविहीने न नवोढा पाकमाचरेत्।।२।।

व्यवसायमुहूर्त्तः-नक्षत्राणि- मृ. रे. चि. अनु. उत्तरात्रयं रो. ह. पुष्य अभि। तिथय- १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ ३०। वाराः- रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। लग्नानि-कुम्भेतराणि सर्वाणि शुभानि। शुक्रचन्द्रग्रहो लग्ने शुभदौ। ८, १२ स्थानगाः पापाः न शुभदाः २, १० ११ स्थानेषु शुभग्रहा शुभदाः।।

अथ क्षेमार्थ शान्तिमुहूर्त्तविचार– मू. ह. अश्वि. पुष्य उत्तरा ३, रो. रे. स्वा. श्र. आश्ले. ध. शः पुन. अनु. म. एषु शुभांगे वारे सप्तमी, सितेज्यरस्तादि दोषरहिते आवश्यके व्रतं शुभदः। लग्नात् विधौ ४ स्थे १० रवौ, १ लग्ने जीवे, ८।१ पापरहिते वाराः।

हलप्रवहणमुहूर्त्त - नक्षत्राणि - मू. वि. स्वा. पुन. म. ध. श. उ३ रो. मृ. रे. चि. अनु. हस्त. आर्द्रा पुष्य. अभि।वाराः- शनि रवि विहाय सर्वे शुभः। तिथयः- ४, ६, ९, १४, ३० बिहाय सर्वे शुभाः चन्द्रोदयः। चन्द्र मकर मीन कर्क नवांशेसु पापग्रहा निर्वलाः सिंह कुम्भ, मेष मकर तुलाराशि लग्नानि।

बीजवपनमुहूर्त्तः - नक्षत्राणि- मू. म. स्वा. ध. उ.३ रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. पुण्य. अश्वि. एषु भेषु। वाराः- सोम, बुध, गुरु, शुक्रः। तिथय- ४, ६, ९, १४, ३० विहाय सर्वे शुभाः।

कणमर्दन मुहूर्त्त -अनु. अ. भ. रे. पू. फा. ज्ये. रोहिणी, कृत्तिका, एषु भेषु सत्तिथौ, सद्वारे शुभांगे चोत्तमम्।

यात्रामुहूर्त्त-शुभनक्षत्राणि- अश्विनी मृ. पुन. पुष्य ह. अनु. श्र. ध. रे. मध्यमनक्षत्राणि- रो. उ.३, ज्ये. पू.३, श.। शुभतिथयः- भद्रा रहिता २, ५, ७, १०, ११, १३ तथा कृष्णपक्षे प्रतिपदा विशेष - कुम्भराशौ कुम्भनवांशके वा कदापि यात्रा न कर्त्तव्या। शुभलग्ने १, ४, ५, ६, ९, १० स्थानेषु शुभग्रहाः शुभदाः ३, ६, १०, ११ स्थानेषु पापग्रहा शुभाः अशुभ लग्ने १, ६, ८, १२ चन्द्रः। दशमे शनिः, शुभः सप्तमे शुक्रः ७, २, ६, ८ स्थानेषु लग्नेशः।

ध्रुवस्थिर-संज्ञकनक्षत्राणि - उ.३ रो. भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्। तत्र स्थिरं बीजगेह शान्तारामादि सिद्धये। तीनों उत्तरा रोहिणी हस्त और रविवार के नक्षत्र दिन योग से ध्रुव वा स्थिर संज्ञा होती है। इसमें स्थिर कार्य करना बीज बोना, गृह बनाना शान्ति करना बगीचा लगाना आदि कार्य करना शुभ फलदायक होता है।

चल-संज्ञक नक्षत्राणि-स्वात्यादित्ये श्रुते स्त्रीणिचन्द्रश्चापि चरंचलं। तस्मिनगजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्।। स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठ, शतभिषा और सोमवार इनका चर और चल नाम है। इन नक्षत्रों में घोड़ा आदि पर चढ़ना बगीचे में जाना शुभद होता है।

क्रूरोग्र नक्षत्राणि-पूर्वात्रयं याम्य मघे उग्र क्रूर कुजस्तथा। तस्मिन् घातागि्न शाठ् यानि विषशस्त्रादि सिद्धयति। तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और मंगलवार इनका नाम उग्र और क्रूर है। इनमें शठता, घात, विष, शस्त्र, अग्निकार्य करने में सफलता मिलती है।

मिश्र-साधारण संज्ञक नक्षत्राणि-विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम्। तत्राग्नि कार्यमिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्धयति। विशाखा कृतिका और बुधवार इनका नाम मिश्र और साधारण है। इसमें अग्निकार्य और साँड़ छोड़ना शुभद है।

क्षिप्रं लघु सज्ञक नक्षत्राणि-हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघुगुरुस्तथा। तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्।।हस्त, अश्वनी पुष्य, अभिजित् और गुरुवार इसका क्षिप्र और लघु नाम है। इसमें व्यवसाय करना रतिज्ञान, भूषणनिर्माण और रत्न धारण और चित्रण कला कार्यारम्भ होने का मुहूर्त्त होता है।

मृदु-मैत्रसंज्ञक नक्षत्राणि

मृगान्त्य चित्रा मित्रर्क्ष मृदुमैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बर क्रीडा मित्र कार्य विभूषणम्।

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनको मृदु मैत्र कहते हैं। इनमें गीत, कपड़ा, क्रीड़ा मित्र-कार्य और भूषण बनवाना शुभ है।

तीक्ष्ण-दारुण संज्ञक नक्षत्राणि

मूलेन्द्राद्राहिनं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम्।।

मूल, ज्येष्ठ, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार दारुण है। इनका नाम तीक्ष्ण और दारुण है। इनमें अभिचारघात, भेद पशुदमन आदि तीक्ष्ण कार्य सफल होते

तात्कालिक करणवशेन संक्रान्तीनां वाहनादिज्ञानाय चक्रम्।

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प	नाग.	किंस्तुः
स्थिति	निवि	उपवि.	ऊर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निवि	निविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फलं	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समहर्घ	महर्घ	महर्घ	समहर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवा.	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फलं	भीतिः	भयम्	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीतं	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	नग्न	धनाय
उपव.	श्वेत	रक्तं	चित्र	पीत	नील	कंबल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वेणव
आयुधं	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृतिका	गौरी	महावर	ओतु.	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कपूर
जातय	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण सं.
पुष्प	पुन्नाग	जाती	वकुल	केतकी	विल्व	अर्क	दूर्वा	कमल	वेला	पाटल	जपा
भो.पा.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	वज्र	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	भूर्जप.	सित	पांडु	नील	कृष्ण	चर्म	वल्कल	धूम्र
स्नान	गंगा	यमुना	सरस्व	मन्दा	नर्मदा	कृष्णा	गोदा	भागी.	तुंगा	कावेरी	कृष्णा
वय	बालं	कुमार	गतायुः	युवा	प्रौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	अन्ध्या	पुत्रार्थि	प्र.वा.

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दुष्ट फलं तदाह - वाहनान्नायुधाहारदीनां वृत्युपजीविनाम्। विनाशः स्याच्च संक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता।। स्थितिनिविष्टसुप्तानां तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

मासेषुशून्यतिथ्यादि ज्ञानाय चक्रमिदं शुभे न सत्।

चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मार्ग	पौष	माघ.	फा.	मासा
९	१२	कृ.१४	कृ.६	३	१	१०	कृ.५	७	४	कृ.५	कृ.४	शू.ति.प.
८	१२	शु.१३	शु.७	२	२	११	शु.१४	८	५	शु.६	शु.३	शू.ति.प.
अश्वि. रोहि.	चि. स्वा.	उ.षा. पुष्य	पू.फा. ध.	उ.षा. श्र.	श. रे.	पू.भा.	कृ. म.	वि. वि.	आर्द्रा अश्वि.ह.	श्र. मू.	भ. ज्ये.	शून्यन-क्षत्राणि
कृ.११	मी.१२	वृ.२	मि.३	मे.१	कं.६	वृ.८	तु.७	ध.९	क.४	म.१०	सिं.५	राशयः

काष्ठसंचयचक्रमर्कभात्।

अधः	६	पाकसुरसः
शीर्षे	२	शवदाहः
मध्ये	४	सर्पभयम्
पूर्वे	४	मित्रागमः
दक्षिणे	४	रोगभयम्
पश्चिमे	४	क्वाथादिः
उत्तरे	४	सुखम्

अश्वचक्रमर्कभात्

स्थान	न.	फलानि
शीर्षे	५	सुखम्
पृष्ठे	१०	लाभदः
पुच्छे	२	स्त्री.नाश
पादे	४	रणेभंग
उदरे	५	अश्वनाशः
मुखे	२	अर्थलाभः

शिविकाचक्रमर्कभात्

स्थान	न.	फलानि
पूर्वे	५	शुभम्
दक्षिणे	५	पीड़ा
पश्चिमे	५	भयम्
उत्तरे	५	रोगः
मौ.लौ.	३	सुखम्
दंडयोः	४	शुभम्

सफलंभद्रांगचक्रम्

स्थान	न.	फलानि
मुखे	५	कार्यहानिः
कण्ठे	१	पीड़नं
वक्षसि	१०	द्रव्यहानिः
नाभौ	४	कलहः
कटयां	६	अर्थनाशः
पुच्छे	३	शुभम्

अथवारदोषशमनार्थदानमाह-भानुस्ताम्बुलदानादपहरतिनृणांवैकृतंवासरोत्थं। सोमः श्रीखण्डदानादवनिबरसुतो भोजनात् पुष्पदानात्।। सौम्यः शुक्रस्यमन्त्रीर्हारहरनमनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रैः तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्महत्यां परे च।।१।। इति।।

त्रिधाशान्तिः ज्योतिः प्रकाशे।।- यथोक्तमौषधीस्नानं ग्रहविप्रार्चनं तथा।। ग्रहानुद्दिश्यहोमा वत्रिधा शांतिर्बुधै स्मृताः।।१।। श्रीपतिः।। देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहं, साधूनामपि भाषणाद्युतिरवेच्छ्रेयः कथाकर्णनात्।। होमादध्वरदर्शनाच्छुभमनोभावाज्जद्दान्तो न कुर्वन्ति कदाचिदेवपुरुषस्यैव ग्रहाः पीडनम्।।२।। इति।।

अथ दिनमानस्य १६ कलांश मुहूर्तादिज्ञानम्।

सूर्य	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
१४	९	३	८	६	४	१	दुष्टक्षण
	१२	४		१२	६	२	
१४	१२	१०	८	६	४	२ दि.	कुलिका
१३	११	९	७	५	३	१ रा.	कुलिका
६	४	२	१४	१२	१०	८	कंटकक्षण
८	६	४	२	१४	१२	१९	कालवेला
७	१३	३	९	१५	५	११	अर्धयाम
८	१४	४	१०	१६	६	१२	
१०	८	६	४	१३	१४	१२	यमघंट

अत्रदोषफलमाह - वशिष्ठः।

निधनं प्रहरार्घे तु निः स्वत्वं यमघंटके।
कुलिके सर्वनाशः स्याद्रात्रावेते न दोष भाक्।।

बिजोप्तिचक्र राहुभाद्दिनभाचक्रम्

८	सूर्य	अशुभम्
३	बुध	शुभम्
४	शुक्र	अशुभम्
३	रवि	शुभम्
१	सोम	अशुभम्
३	मंगल	शुभम्
१	बृह.	अशुभम्
३	राहु	शुभम्
४	केतु	अशुभम्

गजचक्रमर्कभात्

स्थान	नं.	फलानि
शीर्षे	३	लक्ष्मी
कण्ठे	३	श्रीलाभः
मुखे	२	मरणम्
हृदि	३	सुखम्
अग्रपादे	४	व्याधिः
पृष्ठपादे	४	भीतिः
पुच्छे	४	मृतिः
पृष्ठे	४	व्याधिः

द्वारचक्रमर्कभात्

नं.	फलानि
४	राज्यलाभः
२	हानिः
४	धनप्राप्ति
२	भयम्
४	मृत्युभयम्
२	मृत्यु
४	द्रव्यप्राप्तिः
२	शोकभयम्
२	धनलाभः

प्रयोगारम्भार्कभात्

स्थान	न.	फलानि
शीर्षे	३	हानिः
मुखे	४	सिद्धिः
कण्ठे	३	मृत्युः
हस्ते	४	शत्रुभयम्
हृदये	३	इष्टाप्तिः
उदरे	३	हानिः
कट्यां	३	इष्टाप्तिः
चरणे	४	धनप्राप्ति

नौकाचक्रंसूर्यभुक्तभात्

स्थान	न.	फलानि
स्तनाग्रे	३	अशुभम्
मध्ये	६	शुभम्
मुखे	३	अशुभम्
हृदि	३	अशुभम्
पृष्ठे	१	अशुभम्
अग्रे	३	अशुभम्
मुखाग्रे	३	अशुभम्
मध्ये	३	शुभम्

शनिचक्रंशनिभात्

स्थान	न.	फलानि
मुखे	१	अर्थनाश
द.भुजे	४	सुजयप्राप्ति
अङ्गे	६	भ्रमणम्
वा.भुजे.	४	रोगभयम्
हृदये	५	श्रियागमः
मस्तके	३	राज्यलाभ
नेत्रे	२	सौख्यं
गुह्ये	२	मृत्युभयं

मासदशानयनम् - गतवर्षसंख्यायां द्वादशगुणां विधाय तत्र जन्मवर्षसंख्या संयोज्यद्विहीनां तां नवभि र्भक्ते शेषेदशा नायको भवति।। वर्षमुद्दादशायां द्वादशो भागः मासदशाकालः।

शनिचक्रम् - द. कर. ४ - रोगः। पादयुगल ६ लाभ। वाम, ४ गमनम्। ज्वर, ५ दरिद्रता। ३- लाभम्। द. नेत्र वा. नेत्र १ - सौभाग्यम् गुदा. ९ अल्प मृत्युः।

जलाशयारम्भमुहूर्त्तः

भानि। ह. अनु. रे.उत्तरा ३ ध. श. म. रो. पुष्य, मृ. पू.षा. गुरुसितयोरस्तादि दोषरहिते चं. बु. बृ. शु. वारे च रिक्तोन तिथौ शुभः। लग्नेजीवेज्ञेऽथवा दुर्बलैश्च क्रूरैः शुक्रेवापिमेषूरणस्थे। आप्ये चन्द्रे सर्वतोयाश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।

अग्नि वास

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणेऽभ्रे भुवि ह्निवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च।।

तद्चक्रम्

शेषः	अग्निवासः	फलः
१	स्वर्गे	प्राणनाशः
२	पाताले	धननाशः
३,०	मर्त्ये	सुखः

विशेष-शुक्ल प्रतिपदा से तिथि गिने तथा एक जोड़े, रविवार से दिन गिने पुनः दोनो को जोड़कर चार का भाग दे बचे शेष के अनुसार फल होगा।

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां १२ भावस्थ ग्रहफलानि

भावाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र ५	रिपुः ६	जाया ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः अगदः	वक्ता रोगीधनी	सुखी विक्रमी	असुखी सोद्विग्नः	निरस्व असुतः	बलवान् शत्रुजितः	स्त्रीजितः खलः	नेत्ररोगी अल्पायुः	सुवीर्य सुखभाक्	सुखशौर्य भाक्	बहुधन वान्	व्यंगः पतितः
चन्द्रः	सुरुपः अन्धः	कुटुम्बी धनी	हिंस्र सात्विकः	ससुखी सुशीलः	धनी पुत्रवान्	अल्पायुः बहुशत्रुः	ईर्ष्यस्तीव्र मदः	रोग पीड़ितः	सौभाग्यः धनीच	धर्मार्थ शौर्ययुतं	ख्यातः सुलाभः	अंगहीनः हिंस्र
भौमः	क्रूरः व्रणी	कोपी कुटिलः	विक्रमी- सुधीः	विसुखः पीड़ितः	असुतः दरिद्रः	अरिजितः सुखी	दाराजित रणरुचिः	अल्पपुत्रः रोगी	पापरतः दुर्मनोरथः	सुखैश्वर्य वान्	बहुधनी सुखी	जातिभ्रष्टः दारहा.
बुधः	विद्वान् सुखी	धनी गुणी	दुर्ज्जनः अरिमर्दनः	पंडितः सुखी	मन्त्री असुतः	अशत्रुः विशीलः	धर्मज्ञः सुकीर्ति	सद्‌गुणी धनी	पुत्रार्थः सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	यशस्वी धनी	अज्ञः पतितः
गुरु	चिरायुः विद्वान्	सुवाक् धनी	कृपणः पापी	सुखी धनी	धीमान् प्रतापी	अशत्रुः कामी	पितृतो- ऽधिकः	नीचः अल्पायुः	तपस्वी पुत्रवान्	सधनः सुकृतः	सलाभः पुत्रप्राप्तः	खलः दरिद्रः
शुक्रः	सुकामी सुखी	धनी सु-वाक्यं	पापी कृपणः	सुखी सुधीः	सुखी धीमान्	रोगी अशत्रुः	कलह प्रियः	नीचः दीर्घायुः	प्रतापी तपस्वी	सुधनी मानवान्	सुमतिः सलाभः	खलः बंधुनाशः
शनिः	आलसी रोगी	वक्तारः गोधनी	मति विक्रमवान्	विसुखः दुःखी	दरिद्री विपुत्रः	शत्रुजित सुखी	स्त्रीजित दुःखी	नेत्ररोगी अल्पपुत्रः	सुतीर्थ सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	प्रभूत धनवान्	दुखीः पतितः
राहुः	सुकामी रोगी	अधमः विरोधी	सुधी विक्रमी	असुखी मातृहानि	कुमित्रः दुर्भगः	सबलः श्रीयुत्	सप्रमेह दुराचारी	रोगी गतायुः	सबलः दैन्ययुक्तः	सुखी मानी	धनीअपुत्र ख्यातः	कष्टः पतितः
केतुः	गतायुः सकामः	खलः धनहानिः	शूरः पराक्रमी	मातृहानि दुःखी	असुतः मूर्खः	धनी सवीर्य्यः	प्रमेह रोगी	क्लेशयुक्तः व्रणी	पापी दुर्भगः	श्रेष्ठपितृ हानिः	सधनः पराक्रमी	दुर्जनः पतितः
गुलिका	रोगार्तः सम्बन्धीः	क्रोधी विषयी	विशोदरः अशोकः	रोगी पापकृत	स्वल्पपुत्रः अल्पायु	रिपुहन्ता विनोदी	कुदारः कृतघ्नः	चिन्तित दुःखी	पापकृत निर्दयी	सुखी विमानः	सुधनी विपुत्रः	हीनांग नीचरताः

अथ स्त्रीजन्मुकुण्डल्यां १२ भावस्थग्रहाणां फलजातकोक्तम्।

श्रीः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र ५	रिपुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	विधवा सक्रोधा	दरिद्रा दुखार्ता	सुत धनान्विता	दरिद्रा सुपीड़ा	नष्टा- त्मजा	सुख धनाढ्या	सर्वसुख विमुक्ता	विधवा दुःखार्ता	धन धर्मा- न्विता	सुकर्म- रता	सुलाभा बहुपुत्रा	सरोगा विधवा
चन्द्रः	अल्पा- युषी	बहुधन पुत्रान्विता	सुखार्थ युक्ता	सुभागार्थ युक्ता	सुपुत्रा संसुता	सरोगा विधवा	पतिप्रिया सुदेहा च	रोगादिता कुनेत्रा	सुख पुत्रा- न्विता	धनधर्म युक्ता	भव्य विधिज्ञा	हीनांगी व्ययाढ्या
भौमः	विधवा दुःखार्ता	बन्ध्या सरोगा	सहज- विरहिता	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसंगता	रोगादि रहिता	विधवा कुलटा	विधवा रोगार्ता	विधर्मा दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ लाभा	खला रुग्नार्ता
बुधः	सौभाग्य वृद्धिः	धनाढ्या सतीच	धनाढ्या पुत्रवती	सुखगृहा- न्विता	श्रीकान्ति युक्ता	गतायुषा सकोपा	विदग्धा पतिव्रता	कृतघ्रा भीतियुता	सुभगा- युधर्मा	सत्कर्म बुद्धियुता	सुलाभा पतिव्रता	कृशांगा सुपुत्रा
गुरु	सती सुभगा	वित्तसौ भाग्ययुक्ता	सहजा- न्विता	सौख्यार्थ युक्ता	साध्वी सगुणा	बृहत्पदा सत्यहोत्री	सौभाग्य कीर्तियुता	सरोगा विशीला	कृतज्ञा पुत्राढया	साध्वी सुभगा	सुपुत्रा सुरुपा	सरुजा सुव्यथा
शुक्रः	सुमुखी पतिव्रता	धनी सुवाक्या	धनाढय परहन्त्री	सुख कीर्तियुक्ता	सुख सुतान्विता	विसुखा दरिद्रा	पतिव्रता शास्त्ररता	विसुखा प्रमत्ता	धर्मपरा सुभगा	सुकर्माथं युक्ता	पुत्रार्थ लाभयुक्ता	सुव्यथा दुःखार्ता
शनिः	बन्ध्या दरिद्रा	निर्धना दुखयुक्ता	सुभगा सुदत्ता	हृद्रोगार्ता बन्ध्या	विपुत्रा विसुखा	सगुणा सुभगा	विधवा सरोगा	विधवा दुःखिता	बन्ध्या शोकार्ता	पापरता सधवा	सुलाभा सुपुत्रा	रोगार्ता शुद्धश्च
राहुः केतुः	पुत्रदा दुःखार्ता	दरिद्री दुःखार्ता	सवित्ता रोगाढया	रोगार्त मातृहा	सुतार्थ- रहिता	निरोगार्थ युक्ता	सदुःखा विधवा	सदुःखिता विधवा	बन्ध्या शोकार्ता	कुकर्म- रता	निरोगी सुभगाः	खला सरोगी

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दुष्ट फलं तदाह- वाहनावपुषहारादीनां मृत्यूपर्जीविनाम्। विनाशः स्याच्चरसंक्रान्तेर्वस्रादीनां महर्घता।। स्थितर्निविष्ट सुप्तान तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

नक्षत्राणां स्वामिशुभाऽशुभादिविशेषसंज्ञा।

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभः	जातयः	संज्ञाः	मुखम्	घ.उ.ने.	यात्रादोहदम्
अश्विनी	अश्विकु.	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल
भरणी	यमः	नाशकः	चाण्डालः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	साक्षतमाषः
कृतिका	वह्नि	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि.सा.	अधः	३०	माषः
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभम्	शूद्रः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	४०	गव्यम्
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदुमै.	तिर्यक्	१४	गोघृतम्
आर्द्रा	शिवः	अशुभम्	क्रूरजातिः	ती.दा.	ऊर्ध्व.	२१	दुग्धम्
पुनर्वसु	अदितिः	शुभम्	वैश्यः	चर.च.	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्
पुष्य	गुरुः	शुभम्	क्षत्रियः	ल.क्षि.	ऊर्ध्वः	२०	मृगारक्तम्
श्लेषा	सर्पः	अशुभम्	चाण्डालः	ती.दा.	अधः	३२	पायसम्
मघा	पितरः	शोकदः	शूद्रः	क्रू.उग्र.	अधः	३०	चाषमांसम्
पू.फा.	भगः	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२०	मृगमांसम्
उ.फा.	अर्यमा	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	१८	शशकमांसम्
हस्त	सूर्यः	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	२१	साठी
चित्रा	त्वष्टा	शुभम्	कृषकः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०.	प्रियंगु.
स्वाती	वायुः	शुभम्	क्रूरजातिः	चं.च.	तिर्यक्	१४	अपूपम्
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभम्	चाण्डालः	मि.सा.	अधः	१४	नानापक्षिणः
अनुराधा	मित्रः	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	१०	सत्फलम्
ज्येष्ठ	इन्द्रः	शुभम्	कृषकः	दा.ती.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्
मूल	राक्षसः	क्षयः	क्रूराजातिः	दा.ती.	अधः	५६	सारिकमांसम्
पू.षा.	जलम्	धनहानिः	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	गोधिकामांसम्
उ.षा.	विश्वदे.	हानिः	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	२०	शल्वमांसम्
श्रवण	विष्णु	वृद्धिः	चाण्डालः	च.च.	ऊर्ध्वः	१०	कृशरान्नम्
घनिष्ठ	वसवः	शुभम्	कृषकः	च.च.	ऊर्ध्वः	१०	मुद्‌गमोदकम्
शतभिषा	वरुणः	शुभम्	क्रूरजातिः	च.च.	ऊर्ध्वः	१८	यवपिष्टम्
पू.भा.	अजैकच.	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	ऊर्ध्वः	१६	मत्स्यान्नम्
उ.भा.	अहिर्बु.	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर.	ऊर्ध्वः	२४	चित्रताम्
रेवती	पू.षा.	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०	दध्योदनम्

नष्ट वस्तुज्ञानाय सुलोचनादिसंज्ञा

नक्षत्र	संज्ञा	दि.	लाभाऽलाभ	ता.	स्वरूपाणि
अश्विनी	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	अश्वमुख
भरणी	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	योनिस्वरूपम्
कृत्तिका	सुलो.	उ.	अलाभ	६	छुरकाकृतिः
रोहिणी	अन्ध.	पू.	शीघ्रलाभ	५	शकट वत्
मृगशिरा	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	मृगास्य
आर्द्रा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	१	मणिसदृशम्
पुनर्वसु	सुलो.	उ.	अलाभ	४	गृहसदृशम्
पुष्य	अन्ध.	पू.	शीघ्रलाभ	३	बाणाकृतिः
आश्लेषा	मन्द	द.	यत्न लाभ	५	चक्राकारम्
मघा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	५	गृहसदृशम्
पू.फा.	सुलो.	उ.	अलाभ	२	मञ्चकाकृतिः
उ.फा.	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	२	खट्‌वाकारम्
हस्त	मन्द	द.	यत्न लाभ	५	हस्ताकारम्
चित्रा	मध्य	प.	दूरे श्रवण	१	मौक्तिकम्
स्वाती	सुलो	उ.	अलाभ	१	प्रवालाकारम्
विशाखा	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	४	तोरणसमम्
अनुराधा	मन्द	द.	यत्न लाभ	४	बलिसदृशम्
ज्येष्ठा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	कुण्डलाकृतिः
मूल	सुलो.	उ.	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
पू.षा.	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	२	गजदन्तम्
उ.षा.	मन्द	द.	यत्न लाभ	२	विमानसदृशम्
श्रवण	सुलोच.	प.	अलाभ	३	मञ्चकसदृशम्
धनिष्ठा	अन्ध	उ.	शीघ्रलाभ	४	मृदङ्गाकृतिः
शतभिषा	मन्द	पू.	यत्नलाभ	१०	वर्तुलम्
पू.भा.	मध्य	द.	यत्न लाभ	२	मञ्चकारम्
उ.भा.	सुलो.	प.	दूरे श्रवण	२	युग्मसदृशम्
रेवती	अन्ध	उ.	अ.लाभ	३२	मर्दलाकारम्

नक्षत्रस्य पादवशाच्चकष्टविलोकनचक्रम् ज्वरादि रोगोत्पत्तौ नक्षत्रस्य पादवशादत्र दिनसंख्या

दि.सं.	दानानि	१च	२च	३च	४च	जपार्थमन्त्राः
दि.९	भोजन	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमन्त्रजपः
दि.११	गोऽन्नादि	०	८०	४०	११	यमायत्वैतिमन्त्रः
दि.९	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निमूर्धेतिमन्त्रः
दि.७	घृतदान	७	९	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेतिमन्त्रः
मा.१	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेतिमन्त्रः
मृतिः	गोदान	०	१८	०	०	नमस्तेरुद्रमन्त्रः
दि.७	पित्तल	७	१५	२	२१	अदितिद्यौमन्त्रः
दि.७	तैलान्न	७	७	१०	२१	बृहस्पतेतिमन्त्रः
मृतिः	गोऽजानि	०	७	४१	०	नमोस्तुसर्पेतिमन्त्रः
दि.२०	वस्त्राज्य	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइतिमन्त्रः
मृतिः	भोजन	०	१५	०	३०	भएप्रणेतिमन्त्रः
दि.७	अन्नदान	७	१४	७	६०	अर्यमर्णमन्त्रः
दि.१५	तिलदान	११	१७	१५	०	उदुर्यजातवमन्त्रः
दि.११	दुग्धदान	११	९	९	१६	त्वष्टातुर्ग्येतिमन्त्रः
मृतिः	गो-घृत	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेतिमन्त्रः
दि.१५	गो-स्वर्ण	१५	०	४	१३	इन्द्राग्निरितिमन्त्रः
स्थिरः	गो-घृत	६०	१२	३६	६०	नमोमित्रेतिमन्त्रः
मृतिः	तिलदानं	५९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रेतिमन्त्रः
दि.९	रोप्योपान	०	९	१५	६	मातापुत्रेतिमन्त्रः
मृतिः	गोमुक्ता	०	१५	२५	१०	आपोधर्मेतिमन्त्रः
मास१	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वदेवेतिमन्त्रः
दि.११	श्रीफल	६०	२४	६	९	विष्णोररराटेतिमन्त्रः
दि.१५	अश्वान्न	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेतिमन्त्रः
दि.११	भोजनान्न	०	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेतिमन्त्रः
मृतिः	भोजन	०	१२	२१	१८	अजैकचरणोक्तमन्त्रः
दि.७	अन्नदान	१०	१	९	१५	अहिर्बुध्नेतिमन्त्रः
स्थिरः	वृषभदान	१८	१९	१९	२०	पूषान्तव्रतेतिमन्त्रः

अथ रोगार्त्तस्येष्टकालवशाद्बाधाज्ञानम्।

तिथिंवारञ्च नक्षत्रं लग्नयामञ्च संयुतम्। वसुभिस्तु हरेद्‌भागं शेषे बाधा नियोजयेत्।। हये ७ ऽग्नौ ३ देवबाधा स्यात् पितरौ नेत्रदन्तिनः २।८ षट् चतुर्थे।। ६।४ मृतबाधा ग्रहाणामेकपञ्जके १।५।। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवमरणं वदेत्।। रामवाणरसाष्टौ च नन्दरुद्रश्च (३।५।६।८।९।११) जीवति। एक १ पक्षी २ युगा ४ सप्तदशा, ७।१० अर्को १२ नात्र जीवति।। अन्यदपि राजमार्त्तण्डे।। वारर्क्षञ्चतिथिदिशा परिमिति संयोज्य नागैर्भजेल्लब्ध्वांकेनफलं च नाग ८ नयने २ दीर्घ पितृर्नान्यथा।। सप्ते राममिते ३ सुरस्य विदित मर्के ६ च वेदे ४ तथा। प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे १ वाणाधिके ५।। लब्धांक त्रि ३ गुणं तथा वसुयुतं वेदेन गुण्यन्ततः। सप्तान्येष्वधिकं यथा विधुमितं कौल्यञ्च दोषं वदेत् साम्यं वन्यभवं च राज कुलजं स्याच्छत्रुजं पंत्तिजं शून्ये व्योमभवं तथास्य विविधोपायश्च शान्तिं वदेत्। कौल्यं होमद्विजार्चनैः शुभकरं वाच्यं चतुष्कोणके। होमे वन्यभवे तिथिवरभर्वभोज्यश्च वस्त्रेण वा।। राज्ये तीर्थ पदे तथाप्यरिकृतेशक्तिक्रियादानतो गायत्री जपतोहि पंक्ति विषये आकाशजो दीपतः।। **सर्पदशने भेषजम्।।** गौमूत्रेनरमूत्रेर्वापुराणेन घृतेन वा। हरिद्रापानमात्रेण विषं हन्ति चराचरम्।। दशवर्षात्परं सर्पिः पुराणमिति कथ्यते। गोक्षीरे रजनीक्वाथं पिवेत्सर्वविषापहम्।।

सप्तमांश चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	अं.
१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	४ १७ ८
२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	८ ३४ १७
३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	१२ २५ ५१
४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	१७ ८ ३४
५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	२१ २५ ४२
६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ शु.	२५ ४२ ५१
७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	३० ०

अथात्र नवांशचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.	क.
मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	३	२०
शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	६	४०
बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	१०	०
सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	१३	२०
र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	१६	४०
बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	२०	०
शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	२३	२०
मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	२६	४०
गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	३०	०

द्वादशांश चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	अं.	कं.
मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	२	३०
शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	५	०
बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	७	३०
सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	१०	०
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	१२	३०
बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	१५	०
शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	१७	३०
मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	२०	०
गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	२२	३०
श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	२५	०
श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	२७	३०
गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	३०	०

दि.मा. घ.	प.	चैत्र शु. ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. उ.+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ चैत्र शुक्ल पक्षः।
३०	३४	**१**	रवि.	२०	५२	दिन	२	१४	रेवती	३०	५३	सायं	६	१४	ऐन्द्र	३४	३०	रात	७	४१	बव	२०	५२	बा	४७	५२	प्रवर्धमान	**३०**	१६	१६	९	मेष	३०	५३	५	५३	६	७	३	३१	११	१५	१६	४०	५९	१६	+	३	७	२१	मेषराशिः सायं ६।१४ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। चन्द्र (दर्शनम् मु.३० समताकरम्। याम्य श्रृंगम् महर्घताकरम् चान्द्र **नवसंवत्सर २०८२ विक्रमी, वासन्तिक नवरात्रश्च आरम्भः। शैलपुत्री तथा च** नवगौरी**(क)**
३०	३७	**२**	सोम	१४	५३	दिन	११	५०	अश्विनी	२६	४३	दिन	४	३४	वैधृति	२६	४०	दिन	४	३२	कौ	१४	५३	तै	४१	५५	राक्षस	**३१**	१७	१७	१०				५	५३	६	७	३	५४	११	१६	१५	५६	५९	१४	+	२	८	३०	**मु.सव्वाल १० हिजरी सन् १४४६। इदुल फितर (ईद)।** ब्रह्मचारिणीदेवी, ज्येष्ठागौरीदर्शनपूजनञ्च। **सिन्धारा द्वितीया २।** ⊙ रेवती नक्षत्रे रविः २४।१० (दि.३।३३)। **मस्त्यावतारः ३ (अपराह्ने)। (ख)**
३०	४१	**३**	मंगल	८	५५	दिन	९	२६	भरणी	२२	३८	दिन	२	५५	विष्कुंभ	१९	०	दिन	१	२८	गर	८	५५	व	३६	१	मुसल	**१**	१८	१८	११	वृष	३६	४०	५	५२	६	८	४	१७	११	१७	१५	१०	५९	११	+	२	९	४१	वृषराशिः रात्रि ८।३२ वादने। भद्रा ३६।१ (रा.८।१६) उ. (स्वर्ग)। **चन्द्रघण्टादेवी सौभाग्यगौरी दर्शनपूजनञ्च।** सरहुल (बिहार)। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। सौभाग्य सुन्दरी ३ व्रतम्, मनोरथ तृतीया३।**(ग)**
३०	४६	**४ ५**	बुध	३ ५४	७ ३४	प्रातः	७ ४	६ ५६	कृत्तिका	१८	४८	दिन	१	२१	प्रीति	११	२५	दिन	१०	२५	वि	३	७	बव वा	२८ ५४	५० ३४	सिद्धि	**२**	१९	१९	१२				५	५१	६	९	४	४०	११	१८	१४	२१	५९	९	+	२	१०	५०	भद्रा ३।७(प्रातः ७।६) यावत्। **कुष्माण्डादेवी श्रृंगारगौरीयात्रादर्शनम्४। स्कन्दमाता, विशालाक्षी गौरी यात्रादर्शनम्५।** पुष्पाञ्जली ४ (जैन)। श्रीपंचमी ५। श्रीरामराज्य महोत्सवः। मीनावतारः५। कल्पादिः ५ लक्ष्मी**(घ)**
३०	५१	**६**	गुरु.	५२	५०	रात	२	१८	रोहिणी	१५	२१	दिन	११	५८	आयुष्मान सौभाग्य	४ ५३	१२ १८	प्रातः	७ ४	३१ ५०	कौ	२५	४२	तै	५२	५०	उत्पात	**३**	२०	२०	१३	मिथुन	४५	५९	५	५०	६	१०	५	४	११	१९	१३	३०	५९	७	+	२	११	५५	मिथुनराशिः रात्रि ११।४६ वादने। **कात्यायनी देवी ललितागौरी दर्शनपूजनञ्च। श्रीस्कन्दषष्ठी रवि षष्ठी ६व्रतम् (चैती छठ)** (बि.-झार.)। श्रीस्कन्ददमनकोत्सवः। रवियोगः१५।२१ (दि.११।५८)उ.। पूर्व दिशायाम् बुधोदयः।
३०	५६	**७**	शुक्र.	४८	४७	रात	१	२०	मृगशिरा	१२	३६	दिन	१०	५१	शोभन	५१	३०	रात	२	२६	गर	२०	४८	व	४८	४७	मानस	**४**	२१	२१	१४				५	४९	६	११	५	२७	११	२०	१२	३७	५९	५	+	१	१२	५५	भद्रा ४८।४७ (रा.१।२०) उ. (स्वर्ग)। **कालरात्रि भवानी गौरी यात्रा दर्शनम् पूजनञ्च।** सूर्य सप्तमी सूर्यपूजाश्च ७। मोदन व्रतम् ७। नाम सप्तमी ७। **अन्नपूर्णा परिक्रमा** ४८।४७ (रा.१।२०) उ.। नवपद ओली**(ङ)**
३१	०	**८**	शनि.	४५	३९	रात	१२	४	आर्द्रा	१०	४४	दिन	१०	६	अतिगण्ड	४६	१५	रात	१२	१९	वि	१७	१३	ब	४५	३९	मुद्गर	**५**	२२	२२	१५	कर्क	५४	५९	५	४८	६	१२	५	५०	११	२१	११	४२	५९	२	+	१	१	४६	भद्रा १७।१३ (दि.१२।४१) या.। **कर्कराशिः** रात्रि ३।४८ वादने। **महाष्टमी ८ व्रतम्। महागौरीदेवी-मंगलागौरी यात्रा दर्शनम् पूजनञ्च।** बलिदानादिकञ्च महानिशा ८। **महानिशा (नवमी पूजा)। भवान्युत्पत्तिः।(च)**
३१	३	**९**	रवि.	४३	३५	रात	११	१३	पुनर्वसु	९	४३	दिन	९	४०	सुकर्मा	४१	५५	रात	१०	३४	बा	१४	३४	कौ	४३	३५	ध्वज	**६**	२३	२३	१६				५	४७	६	१३	६	१२	११	२२	१०	४४	५९	०	+	१	२	२९	**महानवमी ९ व्रतम्। श्रीरामनवमी ९ व्रतम्। सिद्धिदात्री देवी श्रीमहालक्ष्मी गौरीदर्शन पूजनञ्च। यावन्नवमी होमादिकञ्च** रात ११।१३ वादनम् यावत्। **श्री रामावतारः ९।** मध्यान्हे कर्क लग्ने श्रीराम जन्म**(छ)**
३१	७	**१०**	सोम	४२	४५	रात	१०	५३	पुष्य	९	५४	दिन	९	४५	धृति	३८	२५	रात	९	९	तै	१३	३७	गर	४२	४५	धाता	**७**	२४	२४	१७				५	४७	६	१३	६	३५	११	२३	९	४४	५८	५७	+	१	३	६	**पारणा नवरात्र व्रतस्य प्रातरेव।** 'दशम्यामेव नवरात्र व्रतीनाम् पारणा।' सर्वार्थसिद्धि योगः ९।५४ (दि.९।४५) यावत्। रवियोगः यावद्दिनम्। **पूर्व दिशायाम् शनि उदयः।** (ङ) प्रारम्भः (जैन)। रवियोगः १२।३६ (दि.१०।५१)या.।
३१	१०	**११**	मंगल	४३	१२	रात	११	३	श्लेषा	११	१७	दिन	१०	१७	शूल	३६	०	रात	८	११	व	१२	५८	वि	४३	१२	आनन्द	**८**	२५	२५	१८	सिंह	११	१७	५	४६	६	१४	६	५८	११	२४	८	४१	५८	५५	+	१	३	३९	**सिंहराशिः** दिवा १०।१७ वादने। भद्रा १२।४८ (दि.१०।५७) उ. ४३।१२ (रा.११।३) यावत् (मर्त्ये)। **कामदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** श्रीविष्णु दोलोत्सवः सायं दोलाधिरुढयोः लक्ष्मी नारायण पूजयेत्। सर्वार्थसिद्धियोग**(ज)**
३१	१२	**१२**	बुध	४५	२	रात	११	४७	मघा	१३	५९	दिन	११	२२	गण्ड	३४	४०	रात	७	३८	बव	१४	७	वा	४५	२	चर	**९**	२६	२६	१९				५	४६	६	१४	७	२०	११	२५	७	३६	५८	५३	+	०	४	८	**श्री भीमचण्डी विन्ध्याचली देवी दर्शन यात्रा।** मदन द्वादशी १२। श्रीविष्णुदमनकोत्सवः १२। बुधे भद्रा सिद्धियोगः ४५।२ (रा.११।४७) या.। **(ख)** यायि (मुद्दई) जयद् योगः २६।४३ (४।३४) उ.।
३१	१४	**१३**	गुरु.	४७	५४	रात	१२	५५	पूर्वाफा.	१७	५३	दिन	१२	५४	वृद्धि	३४	१०	रात	७	२५	कौ	१६	२८	तै	४७	५४	गद	**१०**	२७	२७	२०	कन्या	३४	७	५	४५	६	१५	७	४२	११	२६	६	२९	५८	५२	-	१	४	३६	कन्याराशिः रात्रि ७।२४ वादने। प्रदोष व्रतम **१३। श्रीमहावीर जयन्ती १३** (जैन)। **श्रीअनंग त्रयोदशी १३ व्रतम्।** मदन पूजा १३। रवियोगः १७।५३ (दि.१२।५४) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १७।५३ (दि.१२।५४)**(झ)**
३१	१७	**१४**	शुक्र.	५१	५४	रात	२	३१	उत्तराफा.	२२	५०	दिन	२	५३	ध्रुव	३४	३५	रात	७	३५	गर	१९	५४	व	५१	५४	शुभ	**११**	२८	२८	२१				५	४५	६	१५	८	५	११	२७	५	२१	५८	४९	-	१	५	४	भद्रा ५१।५४ (रा.२।३१) उ. (पाताले)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः २२।५० (दि.२।५३) या.। **(ज)** ११।१७ (दि.१०।१७) यावत्। रवियोगः ११।१७ (दि.१०।१७) यावत्। **(झ)** उ. ४७।५४ (रा.१२।५५) या.।
३१	२१	**१५**	शनि.	५६	४७	रात	४	२७	हस्त	२८	४४	दिन	५	१४	व्याघात	३५	३०	रात	७	५६	वि	२४	२०	बव	५६	४७	मृत्यु	**१२**	२९	२९	२२				५	४४	६	१६	८	२७	११	२८	४	१०	५८	४६	-	१	५	३३	भद्रा २४।२० (दि.३।२८) या.। **स्नानदानव्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा।** चैत्री पूर्णिमा १५। **श्रीहनुमज्जयन्ती १५** (दक्षिणात्य)। **काश्यां संकटमोचन मन्दिरे संगीत महोत्सवः।** सर्वदेवदमनकोत्सवः। मन्वादिः १५।**(ट)**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री क.	वि.	स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री क.	वि.	स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ र.	११	२३	७	४५	२	२८	३१	५४	१८	४७	११	४	५०	२	३५	२४	१	२१	२९	५३	९	६	११	४	१२	६	३१	४१	११	०	३	५५	७	१३	११	३	२९	२५
२ सो.	०	७	१७	२०	२	२८	५०	४१	१९	४	११	४	१४	३८	३३	३१	१	२१	३८	५९	९	८	११	३	४०	२५	३१	१७	११	०	१०	८	७	१३	११	३	२६	१४
३ मं.	०	२१	२५	५४	२	२९	९	४५	१९	५	११	३	४१	७	३०	५७	१	२१	४७	७	९	१०	११	३	९	८	३०	४१	११	०	१८	२३	७	१२	११	३	२३	३
४ बु.	१	५	३१	१६	२	२९	२८	५१	१९	५५	११	३	१२	४९	२८	३७	१	२१	५६	१७	९	११	११	२	३८	२७	३०	१४	११	०	२५	३५	७	११	११	३	१९	५२
६ गु.	१	१९	३१	४०	३	०	८	४९	२०	१६	११	२	४६	२५	२६	४८	१	२२	५	२९	९	१४	११	२	८	१३	२९	४१	११	०	३२	४६	७	१०	११	३	१६	४१
७ शु.	२	३	३१	४०	३	०	२९	६	२०	३०	११	२	२०	३५	२४	४८	१	२२	१४	४३	९	१५	११	१	३८	३२	२९	५	११	०	३९	५६	७	९	११	३	१३	३०
८ श.	२	१७	२७	३	३	०	४९	३६	२१	४४	११	१	५६	३१	२२	२१	१	२२	२३	५८	९	१७	११	१	९	२०	२८	३३	११	०	४७	५	७	९	११	३	१०	१९
९ र.	३	१	३८	५	३	१	११	४९	२२	०	११	१	३४	५९	१९	४०	१	२२	३३	१५	९	१९	११	०	४१	३३	२७	४९	११	०	५४	११	७	६	११	३	७	८
१० सो.	३	१४	५६	५२	३	१	३४	४०	२२	४०	११	१	२१	४५	१७	३१	१	२२	४२	३६	९	२२	११	०	५३	४१	२५	४४	११	१	१	१९	७	८	११	२	५९	५८
११ मं.	३	२८	०	४७	३	१	५७	२	२२	४०	११	१	७	४५	१५	३६	१	२२	५२	०	९	२५	११	०	४०	४	२२	४७	११	१	८	२६	७	६	११	२	५८	४७
१२ बु.	४	१०	४७	३७	३	१	५७	९	२२	५७	११	०	५३	३४	१६	८	१	२३	१	२५	९	३७	११	०	३३	४८	८	४१	११	१	१४	४६	६	५८	११	१	५७	३६
१३ गु.	४	२३	३०	२९	३	२	२०	३१	२३	२५	११	३	३२	२७	१८	९	१	२३	१२	४	९	४०	११	०	२४	५०	८	०	११	१	२१	५२	६	५४	११	१	५४	२५
१४ शु.	५	५	५०	११	३	२	४३	५६	२३	४६	११	३	५०	३६	२०	३८	१	२३	२१	४४	९	४७	११	०	१६	५०	६	५२	११	१	२८	४७	६	५२	११	१	५१	१४
१५ श.	५	१७	५८	२८	३	३	७	४२	२४	१०	११	४	११	१४	२१	२६	१	२३	३१	३१	९	५५	११	०	९	५८	मा.१	२५	११	१	३५	३९	६	५०	११	१	४८	३

पं.१ चैत्र शुक्ल ८ शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७३५
अयनांशाः २४/११/३७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	२	११	१	११	११	११	५
२१	१७	२९	२	२२	१	०	३	३
११	२७	४९	०	२३	९	४७	१०	१०
४२	३	३६	३१	५८	२०	५	१९	१९
५९	७७०	२१	२२	९	२८	७	३	३
२	४	४४	२१	१७	३३	९	११	११

१	१२रा.सू. शु.बु.श.	११	
२ गु.			१०
३ चं.		९	
४ मं.	६ के.		८
५		७	

भौमादीनां चारः
भौमः-पुनर्वसौ मिथुने ६ गुरुतः कर्के रात्रि ७।३० वादने। १५ शनितः पुष्ये। **बुधः**-(वक्री) मीन राशौ ९ रवितः मार्गी। **गुरुः**-रोहिण्यां वृषराशौ १३ गुरुतः मृगशिरायां रात्रि ३।१०वादने। **शुक्रः**-वक्री मीन राशौ १५ शनितः मार्गी। **शनिः**-पू.भा.४ चरणे। १.रवितः मीनराशौ सूर्योदयात् पूर्वः। **राहुः**-पू.भा.४ चरणे, **केतुश्च**-उ.फा. २ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

चैत्र शुक्ल लग्नांत ति.वा.	१ र. घं.	मि.	२सो. घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	६गु. घं.	मि.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०सो. घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	१५श. घं.	मि.
मीन	६	३८	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७
मेष	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५
वृष	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३१	९	२७	९	२३
मिथुन	१२	२७	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६
कर्क	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४
सिंह	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८
	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कन्या	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२९	६	२५	६	२१
तुला	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७
वृश्चिक	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५८	१०	५४
धनु	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९
मकर	३	३५	३	३१	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४
कुम्भ	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५

पं.२ चैत्र शुक्ल १५ शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७४२
अयनांशाः २४/११/३८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	३	११	१	११	११	११	५
२८	१७	३	४	२३	०	१	१	१
४	५८	७	११	३१	९	३५	४८	४८
१०	२८	४२	१४	३१	५८	३९	३	३
५८	७२८	२४	२१ २६	९	१ २५	६	३	३
४६	३५	१०	मा.	५५	मा	५०	११	११

१	१२रा. श.सू.बु.शु.	११	
२ गु.			१०
३		९	
४ मं.	६ के.चं.		८
५		७	

(क) यात्रा क्रमेण **मुखनिर्मालिका गौरी** दर्शन पूजनञ्च। **कलश स्थापनम्** दिवा २।१४ वादनम् यावत्। ध्वजारोपणम्, पञ्चांगफलश्रवणम्। वर्षपति पूजनम्। **नववर्षोत्सवः। झूलेलाल जयन्ती २,** चैती चाँद। साभ्यङ्ग स्नानम् प्रपा (पौसरा) दानारम्भः। अद्य प्रातः कालात् **कालयुक्त**' नाम संवत्सरस्य पूजनम् विनियोगञ्च धार्मिककृत्ये प्रारम्भः। कल्पादिः १। युगादिः १। गुड़ी पड़वा (मराठा)। उगादि (द.भा.) **तेलगुनववर्षारम्भः।** वायुपरीक्षणम्, मिश्री (शर्करा) युत् निम्ब कोपल प्राशनम्। विद्यारोग्यं तिलक व्रतं १। सर्वार्थसिद्धियोगः ३०।५३ (सायं ६।१४) उ.। **(ग)** मन्वादिः ३। अरुन्धती व्रत ३। गणगौरी व्रतम् ३ गौरी दोलोत्सवः। दोलाधिरुढयोः शिवपार्वत्योः पूजनम्। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।३८ (दि.२।५५) उ.। रवियोगः २२।३८ (दि.२।५५) उ.। **(घ)** पूजनम्। "शुक्लायामथपञ्चम्यां चैत्रेमासिशुभानना। श्रीब्रह्मलोकान्मानुष्यं सम्प्राप्ता केशवाज्ञया" पशुपतिश्वर पूजनम्। पुष्पाञ्जालेव्रतारम्भः (जैन)। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। **(च) अन्नपूर्णापरिक्रमा** ४५।३९ (रा.१२।४) या.। **अशोक कलिका प्राशनम् ८।** पुष्पांजलि व्रत समाप्तिः (जैन)। ब्रह्मपुत्रनदस्नानम्। हरिद्वारे मनसा देवी दर्शन पूजनञ्च। मेला बहूफोर्ट (जम्मू)। **(छ)** महोत्सवः सर्वत्र विशेषतो अयोध्यायाम्, श्रीराम जन्म भूमि राम लला दर्शनम्, सरयू स्नानम्। **श्रीरामचरितमानस जयन्ती। स्वामी नारायण जयन्ती ९** (अक्षरधाम)। रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः ९।४३ (दि.९।४०) उ.। **(ट)नवपद ओली समाप्तिः** (जैन)। श्रीद्वारिकाधीश अन्नकूट (मथुरा) चित्रवस्त्र दानम्। **वैशाखी पर्वः** (पंजाब) (१२ अप्रैल)। यात्रायाम निषिद्धयमघट योगः २८।४४ (दि.५।१४) या.। यायि जयद् योगः २८।४४ (दि.५।१४)या.।

फलम्– चैत्र शुक्लप्रतिपदा अर्थात् संवत्सर का प्रथम दिन जो की अंग्रेजी तारीख के अनुसार इस वर्ष ३० मार्च को है; वर्ष का सबसे महत्त्वपूर्ण दिवस माना जाता है। यह पुनीत दिवस इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि आज ही **श्री ब्रह्माजी** ने सृष्टि के साथ जीवजगत की रचना की थी। इसलिए आज के दिन को हर सनातन धर्मी महोत्सव के रूप में मनाता है। आज के दिन जो वार पड़ता है उसी को वर्ष का राजा मानते हैं। इस प्रकार रवि अर्थात् सूर्य वर्ष के राजा हुए हैं। चैत्र नवरात्र का पवित्र पर्व भी आज से प्रारम्भ हो जायेगा। **कलश स्थापन** प्रतिपदा तिथि पर्यन्त मध्यान्ह में २।१४ बजे तक किया जा सकेगा। सनातनधर्मी अपने घर को तोरण आदि से सुसज्जित करने के शास्त्रसम्मत विधान का पालन कर नवसंवत्सर का हर्षोल्लास के साथ स्वागत करेंगे। चैत्र नवरात्र में भगवती के साथ गौरी का भी दर्शन पूजन प्रतिदिन क्रमानुसार किया जायेगा। **चैती छठ** ३ अप्रैल गुरुवार को मनाई जायेगी एवं इसको भी डाला-छठ के विधान के अनुसार ही मनाया जायेगा। **महाष्टमी** का व्रत ५ अप्रैल शनिवार को होगा। घर-घर की जाने वाली **नवमी की पूजा** भी ५ अप्रैल शनिवार को ही की जायेगी। इसे भवानी उत्पत्ति के साथ बसियउरा के रूप में भी मानते हैं। **महानवमी** का व्रत ६ अप्रैल रविवार को होगा। नवरात्र की समाप्ति से सम्बन्धित हवन पूजा नवमी तिथि पर्यन्त ६ अप्रैल रविवार को रात ११।१३ बजे तक किया जायेगा। रामावतार का महानपर्व **श्रीराम नवमी** सनातनियों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है और इसका मान भी ६ अप्रैल रविवार को होगा। सर्वत्र विशेषकर रामलला की जन्मस्थली अयोध्या में विशेष धूम-धाम शास्त्रीय एवं पारम्परिक विधान के अनुसार इसको मनाया जायेगा। सर्वत्र **भए प्रकट कृपाला** की मधुरस्वर लहरी सब कुछ राममय कर देगी। गोस्वामी तुलसीदास ने आज के दिन ही श्रीरामचरित मानस की रचना प्रारम्भ की थी। इसके उपलक्ष्य में **मानस जयन्ती** मनायी जायेगी। पूर्ण **नवरात्रि व्रत** की पारणा दशमी तिथि में प्रातः ७ अप्रैल सोमवार को की जायेगी। **कामदा एकादशी** व्रत का मान सबके लिए ८ अप्रैल मंगलवार को होगा। विन्ध्याचल भगवती की यात्रा एवं दर्शन पूजन ९ अप्रैल ■ बुधवार को किया जायेगा। जैन जगत का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं पवित्र पर्व **महावीर जयन्ती** भी १० अप्रैल गुरुवार को मनायी जायेगी। स्नान-दान एवं **व्रत की पूर्णिमा** का मान १२ अप्रैल शनिवार को होगा। दक्षिणात्यमत से **हनुमान जी की जयन्ती** का पर्व भी १२अप्रैल शनिवार को होगा। काशीस्थ संकटमोचन हनुमान जी के श्रीचरणों में संगीत की स्वराञ्जली प्रस्तुत की जायेगी। **रेवती नक्षत्र** का सूर्य ३१ मार्च सोमवार को दिन ३।३३ बजे से आयेगा। जलोत्पन्न पदार्थ एवं सुगन्धित द्रव्यों को क्षति पहुँचेगी। चौपायों, मूँग, उड़द, लहसुन, सेमल की रुई का भाव तेज चलेगा। ३ अप्रैल के आसन्न बूँदा-बाँदी वर्षा होने की सम्भावना है।

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ रवौ**–रेवत्यां पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं वि.कु. उपनयनं ल.५ (द्वितीयायां), विपणि व्यापारः, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्र धारणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, वाहन क्रयः, शल्यकर्म सायं ६।१४ वादनात्परं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ सोमेः**–अश्विन्यायां आ. प्रसूति स्नानं, अन्नप्राशनं, अक्षरारम्भः वि.कु. **उपनयन ल.३**, आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं, अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं, विपणिव्यापारः वाहन क्रयः। **तिथि ३ भौमे**–भरणयां कृत्तिकायां च उग्रकर्माचरणं इष्टिका दहनं। **तिथि ४।५ बुधे**–दिवा १।२१ वादनात्परं रोहिण्यां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **वि.कु. उपनयनं ल.५**, विपणिः व्यापारः, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं, गर्भाधानं रात्रौ ल. ८, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ गुरौ**–रोहिण्यां-मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः, जातकर्म नामकरणं, विपणिव्यापारः, हलप्रवहणं बीजवपनं, शस्त्रधारणं, पूर्व दिग् यात्रा रात्रि ११।४६ वादनम् या.। **तिथि ७ शुक्रे**–मृगशिरायां आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः, हलप्रवहण बीजवपनं, धान्यच्छेदनं सेवारम्भः, शस्त्रधारण, शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं, वाहनक्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ शनौ**–भद्रा दिवा १२।४१ वादनात्परं पुनर्वसौ क्रय विक्रयः इष्टिका निर्माणं उग्रकर्माचरणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ९ रवौ**–पुनर्वसौ पुष्ये रोग विमुक्त स्नानं रात्रि ११।१३ वादनात्परं पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १० सोमे**–पुष्ये-जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं अक्षरारम्भ, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः (श्लेषायां) **वि.कु. उपनयनं ल.३** विपणि व्यापारः गवां क्रय-विक्रयः आभूषण निर्माणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापनं, सेवारम्भ जलयन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं मोती रत्नधारणं पुष्ये वाहनं क्रयः दिग् शूल ● विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ भौमे**–भद्रा दिवा १०।५७ वादात्पूर्व श्लेषायां उग्रकर्माचरणं। **तिथि १२ बुधे**–दिवा११।२२ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां विद्यारम्भः **वि.कु. उपनयनं ल.५** धान्यच्छेदनं कणमर्दनं जलयन्त्र कर्मः शय्यासनाद्युपभोग (मघायां) मुकदमा कार्य पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १३ गुरौ**–पू.फा.-उ.फा. प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं,विद्यारम्भः, विपणि व्यापारः हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं कणमर्दनं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः, जलयन्त्र कर्मः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं मुकदमा कार्यं, आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, वाहनक्रयः,गर्भाधानं रात्रौ ल.८,पूर्वदिग् यात्रा। **तिथि१४ शुक्रे**–रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १५ शनौ**–भद्रा दिवा ३।२८ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे नीलमादि रत्नकृष्ण वस्त्र धारणं इष्टिका निर्माणं दिवा५।१४ वादनात्परं चित्रायां दक्षिण दिग् यात्रा।

राशिफलम्

मेष-पीड़ा भयम्	**तुला**-रिपुनाशः
वृष-वित्ताप्तिः	**वृश्चिक**-दैन्यम्
मिथुन-सौख्यं	**धनु**-रोगं
कर्क-पापबुद्धिः	**मकर**-सुखं श्रीः
सिंह-रोग भयम्	**कुम्भ**-हानिः भयम्
कन्या-हानिः	**मीन**-स्थान हानिः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ वैशाख कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः मेषार्कतः सौम्यगोलः बसन्त ऋतुः।

दि.१३ - २७ अप्रैल सन् २०२५ ई.। (रा. चैत्र २३ - वैशाख ७)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३१	२५	१	रवि.	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	३५	९	रात	७	४७	हर्षण	३६	५७	रात	८	२०	बा	२६	२३	कौ	६०	०	पद्म	१३	१	३०	२३	तुला	१	५६	५	४३	६	१७	८	४१	११	२९	२	५६	५८	४४	-	२	६	४४
३१	३०	१	सोम.	१	५९	दिन	६	३४	स्वाती	४१	४४	रात	१०	२५	वज्र	३८	३३	रात	९	८	को	१	५९	तै	३४	३४	छत्र	१४	२	१	२४				५	४३	६	१७	९	११	०	०	१	४०	५८	४१	-	२	७	३७
३१	३४	२	मंगल	७	९	दिन	८	३४	विशाखा	४८	४	रात	१२	५६	सिद्धि	३९	५७	रात	९	४१	गर	७	९	व	३९	३२	श्रीवत्स	१५	३	२	२५	वृश्चिक	३१	२९	५	४२	६	१८	९	३२	०	१	०	२१	५८	३९	-	२	८	३१
३१	३७	३	बुध.	११	५४	दिन	१०	२७	अनुराधा	५३	४७	रात	३	१२	व्यतिपात	४०	५३	रात	१०	२	वि	११	५४	बव	४३	५४	सौम्य	१६	४	३	२६				५	४१	६	१९	९	५४	०	१	५९	०	५८	३७	-	२	९	२८
३१	४०	४	गुरु.	१५	५३	दिन	१२	१	ज्येष्ठा	५८	३२	रात	५	५	वरीयान	४१	८	रात	१०	७	बा	१५	५३	कौ	४७	२०	कालदण्ड	१७	५	४	२७	धनु	५८	३२	५	४०	६	२०	१०	१५	०	२	५७	३७	५८	३५	-	२	१०	२४
३१	४४	५	शुक्र.	१८	४७	दिन	१	११	मूल	६०	०	स	म	स्त	परिघ	४०	३१	रात	९	५२	तै	१८	४७	गर	४९	४०	स्थिर	१८	६	५	२८				५	४०	६	२०	१०	३६	०	३	५६	१२	५८	३२	-	३	११	१९
३१	४७	६	शनि.	२०	३४	दिन	१	५३	मूल	२	१३	दिन	६	३२	शिव	३८	५६	रात	९	१३	व	२०	३४	वि	५०	४७	गद्	१९	७	६	२९				५	३९	६	२१	१०	५७	०	४	५४	४४	५८	३०	-	३	१२	९
३१	५०	७	रवि.	२१	०	दिन	२	२	पूर्वाषाढ़ा	४	४९	दिन	७	३४	सिद्ध	३६	२०	रात	८	१०	बव	२१	०	बा	५०	३४	शुभ	२०	८	७	३०	मकर	२०	३	५	३८	६	२२	११	१८	०	५	५३	१४	५८	२८	-	३	१२	५७
३१	५३	८	सोम	२०	९	दिन	१	४२	उत्तराषाढ़ा	५	४५	दिन	७	५६	साध्य	३२	४४	सायं	६	४४	कौ	२०	९	तै	४९	७	मृत्यु	२१	९	८	१				५	३८	६	२२	११	३८	०	६	५१	४२	५८	५६	-	३	१	३९
३१	५६	९	मंगल	१८	५	दिन	१२	५१	श्रवण	५	४१	दिन	७	५३	शुभ	२८	११	दिन	४	५३	गर	१८	५	व	४७	३०	लुम्बक	२२	१०	९	२	कुंभ	३५	५	५	३७	६	२३	११	५७	०	७	५०	८	५८	२४	-	४	२	१८
३१	५९	१०	बुध	१४	५६	दिन	११	३४	धनिष्ठा	४	३०	दिन	७	२४	शुक्ल	२२	४८	दिन	२	४३	वि	१४	५६	ब	४३	५४	मित्र	२३	११	१०	३				५	३६	६	२४	१२	१९	०	८	४८	३२	५८	२१	-	४	२	५४
३२	१	११	गुरु	१०	५३	दिन	९	५७	शतभिषा पू.भाद्रपद	२ ५७	२८ ५	प्रातः	६ ५	३५ २५	ब्रह्म	१६	४३	दिन	१२	१७	बा	१०	५३	कौ	३८	२६	वज्र	२४	१२	११	४	मीन	४३	२५	५	३६	६	२४	१२	३९	०	९	४६	५३	५८	१८	-	४	३	३०
३२	५	१२	शुक्र	५	५९	दिन	७	५९	उत्तराभाद्र.	५६	२	रात	४	०	ऐन्द्र	९	५९	दिन	९	३५	तै	५	५९	गर	३३	१६	ध्वज	२५	१३	१२	५				५	३५	६	२५	१२	५९	०	१०	४५	१२	५८	१७	-	४	४	५
३२	८	१३ १४	शनि.	० ५४	३३ १०	प्रातः	५ ३	४७ २७	रेवती	५२	८	रात	२	२५	वैधृति विष्कुम्भ	२ ५२	४५ २९	प्रातः	६ ३	४० ४०	व	०	३३	वि भ्र	२७ ५४	१६ १०	धाता	२६	१४	१३	६	मेष	५२	८	५	३४	६	२६	१३	१८	०	११	४३	२९	५८	१२	-	४	४	४३
३२	११	३०	रवि.	४८	३९	रात	१	२	अश्विनी	४८	०	रात	१२	४६	प्रीति	४७	३३	रात	१२	३५	च	२१	२५	ना	४८	३९	आनन्द	२७	१५	१४	७				५	३४	६	२६	१३	३८	०	१२	४१	४४	५८	१३	-	५	५	२६

तुला राशिः प्रातः ६।२९ वादने। फसली वैशाख मासारम्भः। कच्छपावतारः१। युगादिः १। यावन्मासं प्रपा (पौसरा) धर्मघटादि दानम्, तुलसी पत्रेण श्रीविष्णु पूजनम्। गलन्तिकारम्भः।(क)

मध्याह्नं यावत् संक्रान्ति जन्य पुण्यकालः। सौर वैशाखमासारम्भः। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १।५१ (दि.६।३४) या.। मृत्युबाणः ५७।१०(ख)

वृश्चिकराशिः सायं ६।१८ वादने। भद्रा ३९।३२ (रा.९।३१) उ. (स्वर्ग)। आशा द्वितीया (आसोदूज)। मृत्युबाणः ५८।३५ (रा.शे. ५।६) यावत्।

भद्रा ११।५४ (दिन १०।२७) यावत्। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.९।२८) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगो ५३।४७ (रा.३।१२)।

धनुराशिः रात्रि ५।५ वादने। अनुसूया जयन्ती ४। गुरा पूर्णा सिद्धयोगः १५।५३ (दि.१२।१) उ.। (ख) (रा.शे. ४।३५) उ.। यमघण्टयोगः ४१।४४ (दि.१०।२५) उ.।

शुक्रे नन्दा सिद्धयोगः १८।४७ (दि.१।११) उ.।

भद्रा २०।३४ (दि.१।५३) उ. ५०।४७ (रा.१।५८) या. (पाताले)। दोषसंघविनाशको रवियोगः २।१३ (दि.६।३२) उ.।

मकरराशिः दिन १।३९ वादने। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ४।४९ (दि.७।३४) या.। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ४।४९ (दि.७।३४) उ. २१।० (दिन २।२) यावत्। सर्वार्थसिद्धियोगः(ग)

श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम् पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगः ५।४५ (दि.७।५६) उ.। (ग) ४।४९ (दि.७।३४) उ.।

कुम्भराशिः दिवा ७।३९ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ४७।३० (रा.१२।३७) उ. (मर्त्य)। चण्डिका नवमी ९।

भद्रा १४।५६ (दि.११।३४) या.। कुलाकुलगणः दुर्लभ सन्धिकरयोगः ४।३० (दि.७।२४) उ. १४।५६ (दि.११।३४) या.। बाबू कुँवर सिंह जयन्ती (बिहार)।

मीनराशिः रात्रि १०।५८ वादने। वरुथिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती ११। मृत्युबाणः १४।४० (दि.११।२७) उ.।

प्रदोष व्रतम् १२। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ५६।२ (रा.४।०) उ.। मृत्युबाणः १६।० (दि.१२।०) या.। (घ) ०।३३ (प्रातः ५।४७) उ.।

मेषराशिः रात्रि २।२५ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ०।३३ (प्रातः ५।४७) उ. २७।१६ (दि.४।२८) या. (मर्त्य)। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः(घ)

स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।० (रा.१२।४६) या.। पापवारान्वितेदर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।⊙ भरणी नक्षत्रे रविः ३८।१० (रा.८।५०)।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी क.	वि.	स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी क.	वि.	स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ र.	५	२९	१६	४१	३	५	३१	५२	२४	३६	११	४	३२	४०	२४	११	१	२३	४१	२६	१०	४	११	०	११	२३	२	०	११	१	४२	३१	६	४८	११	१	४४	५२
१ सो.	६	११	३१	३७	३	५	५६	२८	२४	४९	११	४	५६	५१	२७	४	१	२३	५१	३०	१०	२१	११	०	१३	२३	३	०	११	१	४९	१९	६	४८	११	१	४१	४१
२ मं.	६	२३	३७	५७	३	६	२१	२७	२५	२२	११	५	२१	५८	३०	५६	१	२४	१	४०	१०	३९	११	०	१६	२६	४	४	११	१	५५	५६	६	४५	११	१	३८	३०
३ बु.	७	५	४९	२९	३	६	४६	४९	२५	४२	११	५	५२	३४	३२	४९	१	२४	१२	१०	१०	५७	११	०	१९	४५	५	१	११	२	२	४	६	४५	११	१	३५	१९
४ गु.	७	१८	११	५०	३	७	१२	३१	२५	५८	११	६	२५	४४	३५	५१	१	२४	२२	२२	११	७	११	०	२३	४२	६	३	११	२	८	४९	६	४२	११	१	३२	८
५ शु.	८	०	४०	४४	३	७	३८	४२	२६	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	२८	५८
६ श.	८	१४	[illegible]	[illegible]	३	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	२५	४७
७ र.	८	२६	५२	३७	३	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	२२	३६
८ सो.	९	९	[illegible]	[illegible]	३	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	१९	५५
९ मं.	९	२२	२३	३६	३	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	१६	१४
१० बु.	१०	५	[illegible]	[illegible]	३	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	१३	३
११ गु.	१०	१८	४१	४३	३	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	९	५२
१२ शु.	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	६	४१
१३ श.	११	१७	४७	३३	३	९	११	५४	२६	५७	११	१५	२	२८	७०	५२	१	२६	२	१६	११	४०	११	३	१६	२	२७	१४	११	३	७	५८	६	१४	११	१	३	३०
३० र.	०	१	५६	१३	३	९	३८	५१	२६	५९	११	१६	१३	२०	७३	३१	१	२६	१३	५६	११	४६	११	३	४३	१६	२७	३७	११	३	१४	१२	६	१२	११	१	०	१९

फलम्– पक्षारम्भ १३ अप्रैल रविवार को **अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि** की सूर्य संक्रान्ति रात्रि शेष ५।१ बजे से आयेगी। इसका पुण्यकाल १४ अप्रैल सोमवार को मध्यान्ह तक होगा और इसी के साथ **खरमास समाप्त** हो जायेगा। इसीको **सत्तू संक्रान्ति** अथवा **सतुआ संक्रान्ति** भी कहते हैं। रविवार को **मेष संक्रान्ति** पड़ने से सूर्य वर्ष के मंत्री हुए। **भरणी नक्षत्र का सूर्य** पक्षान्त २७ अप्रैल रविवार के रात ८।५० बजे से आयेगी। मनुष्यों में कोई बीमारी फैलेगी। प्रतिपदा तिथि की वृद्धि हो गई है किन्तु चतुर्दशी तिथि २६ अप्रैल शनिवार को छयवति है। इसलिए यह पक्ष १५ दिन का ही है। पक्ष के ३ रविवार प्रजा-पीड़ा कारक हैं। भयंकर गर्मी पड़ेगी। चैत्र शुक्ल पूर्णिमा से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा तक प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान नदी या कुँआ, बावली, सरोवर अथवा अपने घर पर ही शुद्ध जल से स्नान करें। इसके अतिरिक्त "**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**" या "**हरे राम हरे राम**" मन्त्र का यथा शक्ति जप करके एक बार भोजन करें। इकतीस दिन तक ऐसा क्रम बनाये रखने से अनेक प्रकार के रोग और दोष दूर होते हैं एवं प्रभाव तथा पुण्य में वृद्धि होती है। देव विग्रहों के ऊपर परम्परागत तरीके से जल-निक्षेप '**गलन्तिका कार्य**' प्रारम्भ हो जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान १६ अप्रैल बुधवार को होगा। चन्द्रोदय रात ९।२८ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **श्रीशीतलाष्टमी (बसियउरा)** का व्रत २१ अप्रैल सोमवार ■

पं.३ वैशाख कृष्ण ८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७५१ अयनांशाः २४/११/३९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	३	११	१	११	११	११	५
६	१०	६	९	२५	१	२	१	१
५१	६	५७	४६	५	२२	३५	१९	१९
४२	११	४८	३२	३४	४८	५७	२५	२५
५८	७९८	२६	५६ ५८	११	१९ ३५	६	३	३
२६	२५	४५	मा	८	मा	३०	११	११

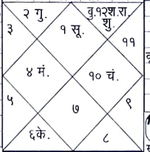

भौमादीनां चारः
भौमः-पुष्य नक्षत्रे कर्क राशौ। **बुधः**-मीन राशौ। **गुरुः**-मृगशिरायां वृषराशौ। **शुक्रः**-मीने राशौ। **शनिः**-पू.भा. ४ चरणे मीन राशौ ३०रवितः उ.भा. १ चरणे रात्रि शेष ४।१० वादने। **राहुः**-पू.भा.४ चरणे मीन राशौ। **केतुश्च**-उ.फा. २ चरणे।

वैशाख कृ. दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१र. घं.	मि.	लग्नांत	१सो घं.	मि.	२मं. घं.	मि.	३बु. घं.	मि.	४गु. घं.	मि.	५शु. घं.	मि.	६श. घं.	मि.	७र. घं.	मि.	८सो. घं.	मि.	९मं. घं.	मि.	१०बु. घं.	मि.	११गु. घं.	मि.	१२शु. घं.	मि.	१३श. घं.	मि.	३०र. घं.	मि.
मीन	५	४१	मेष	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७
मेष	७	२२	वृष	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४
वृष	९	१९	मिथुन	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७
मिथुन	११	३२	कर्क	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५
कर्क	१	५०	सिंह	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९
सिंह	४	४	कन्या	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२६	५	२२
रा.	रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कन्या	६	१७	तुला	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८
तुला	८	३३	वृश्चिक	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५
वृश्चिक	१०	५०	धनु	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०
धनु	१२	५५	मकर	२	३६	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५
मकर	२	४०	कुम्भ	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१७
कुम्भ	४	१२	मीन	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ रवौ–चित्रायां विद्यारम्भः लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं, शस्त्रधारणं, आवेदनपत्र लेखनं वाहन क्रयः दक्षिणदिग् यात्रा रात्रि ७।४७ वादनात्परं प्रसूति स्नानं तिथि १ सोमे–स्वात्यां प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णविधः कन्यानासिकाच्छेदन **चौलमुण्डनं** ल.३, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, **उपनयनं ल.३**, वरवरणं-कन्या वरणं, **वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.६** गवां क्रय-विक्रयः, दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माण धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं, आवेदनपत्र लेखनं, **गृहारम्भः ल.३**, सर्वदेवप्रतिष्ठा रात्रि १०।२५ वादनात्पूर्व गर्भाधानं वाहनक्रय, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि २ भौमे–** विशाखायां इष्टिकादहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ३ बुधे**–अनुराधायां भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ गुरौ**–रिक्ता दिवा १२।१ वादनात्परं ज्येष्ठाया नामकरणं **चौलमुण्डनं ल.४**, अक्षरारम्भः ग्रवां क्रयविक्रयः। **तिथि ५ शुक्रे**–मूले नामकरणं विद्यारम्भः **उपनयनं ल.३** वर वरणं-कन्या वरणं **वधूप्रवेश-द्विरागमनं ल.२**(पञ्चम्यां) दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं, बीजवपन कणमर्दनं जलयन्त्रकर्म मुकदमाकार्य भूमिक्रयः, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ शनौ–** भद्रा दिवा १।५३ वादनात्पूर्व पूर्वाषाढ़ायां इष्टिका दहनं कृष्णवस्त्र धारणं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ रवौ**–पूर्वाषाढ़ायां इष्टिकाहदनं दिवा ७।३४ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं विद्यारम्भः (प्रातः), **वरवरणं-कन्यावरणं**, विपणि व्यापारः, दीक्षाग्रहणं लालवस्त्रप्रवालरत्नधारणं, धान्यच्छेदनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, जलयन्त्र कर्म (प्रातः), शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं दहनं (प्रातः) वाहन क्रयः, शल्यकर्म, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ सोमे**–रिक्ता दिवा १।४२ वादनात्पूर्व उ.षा.-श्रवणे आ.प्रसूति स्नान जातकर्म नामकरणं आभूषण निर्माण धारणं च हलप्रवहण, धान्यच्छेदनं, कणमर्दन नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः वाहनक्रयः श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **वधूप्रवेश-द्विरागमनं ल.२**। **तिथि ९ भौमे**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० बुधे**–भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं शतभिषायां गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ८ वा ९, अन्नप्राशनं **चौल मुण्डनं ल.** विद्यालम्भ **उपनयनं ल.४ द्विरागमनं** गोधूल दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ, जलयन्त्र कर्मः आवेदनपत्र लेखनं **गृहप्रवेशः ल.६** वा गोधूलि सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशय वाटिकारम्भः, नूतनवध्वा पाककर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ गुरौ**–प्रातः ६।३५ वादनात्पूर्व-शतभिषायां **चौलमुण्डनं** विद्यारम्भः **द्विरागमनं गृहारम्भः** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वा पाककर्म, पूर्वाभाद्रपदे-पुंसवनं सीमन्तः ●

पं.४ वैशाख कृष्ण ३० रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७५७ अयनांशाः २४/११/४०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	३	११	१	११	११	११	५
१२	१	९	१६	२६	३	३	१	१
४१	५६	३८	१३	१३	४३	१४	०	०
४४	१३	५१	२०	५६	१६	१२	१९	१९
५८	८४६	२६	७३	११	२७	६	३	३
१३	१५	५९	३१	४६	३७	१२	११	११

(क) अश्वत्थ (पीपल) नीम्बमूले जलदानम् विद्यारोग्यार्थ तिलक व्रतम्। तैलाभ्यङ्ग दैनिक स्नानम्।⊙ **सं.अश्विनी नक्षत्रे मेषराशौ रविः** ५८।१५ (रा.५।१) मुहूर्त्त १५ जघन्या महर्घताकरम्। पर दिने पुण्यकालः। **सत्तू संक्रान्तिः सौम्य-गोलः। खरमास समाप्तिः।** बंगलानववर्ष १४३२ प्रारम्भः। **नेपाली वैशाखारम्भः।** बहाग बिहू (आसाम)। चड़क पूजा (बंगाल)। मेषादि तमिलनाडू। हरिद्वारे काश्यां, प्रयागे संगमे वा सर्वत्र गंगायाम् स्नानम्। ब्रह्मपुत्र नद् स्नानम्। सत्तू व्यंजन-जलकुम्भादि ऋतुफल दानम्। **गलन्तिका विशेषः–वसन्त-ग्रीष्मयोर्मध्ये यः पानीयं प्रयच्छति। पले पले सुवर्णस्य फलमाप्नोति मानवः।** तथा च–**सर्वदानेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्। तत्फलं समवाप्नोति माधवे जलदानतः।**

● प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **उपनयनं ल. ३ वरवरणं कन्यावरणं** दीक्षाग्रहणं धान्यच्छेदनं, चुल्हीकास्थापनं, जलयन्त्र कर्म, मुकदमाकार्यः भूमिक्रयः, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ शुक्रे**–उत्तराभाद्रपदे-गर्भाधानं रात्रौ ल.८ वा ९ आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **वरवरणं-कन्यावरणं, वधूप्रवेश, द्विरागमनं** (त्रयोदश्यां) ल.३, विपणि व्यापारः, दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माण धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं, नृत्यगीतवाद्य कलारम्भ, आभुषण निर्माण धारणं च सेवारम्भ शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपयोगं आवेदन पत्र लेखनं **गृहप्रवेश ल. २** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वा पापकर्म वाहनक्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १३/१४ शनौ**–भद्रा रिक्ता व्याप्तिः **तत्परं मासान्तः।**

■ को होगा। आज के दिन पूर्व रात्रि में की गई पूजा का वासी प्रसाद ग्रहण करने का पुण्यफलदायक विधान है। **वरुथिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए २४अप्रैल गुरुवार को होगा। **प्रदोष का व्रत** २५ अप्रैल शुक्रवार को सायंकाल गोधूली मे त्रयोदशी तिथि मिलने के कारण होगा। **मास शिवरात्रि व्रत** का मान २६ अप्रैल शनिवार को होगा। स्नानदान और श्राद्ध के लिये अमावस्या २७ अप्रैल रवि.को होगी। पक्ष के तीन रविवार एवं रविवार की सूर्य संक्रान्ति एवं रविवार की अमावस्या देश-काल के लिये भारी पड़ेगी। खाद्यान्नों तथा दैनिक उपभोग की वस्तुओं का भाव चढ़ जायेगा।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ सोमे–स्वात्यां रे.७ दिवा ल.२ इ.६, ग्र.व.वि.११।। वा ल.३ पंचेष्टाभावः। वा ल.४ पंचेष्टाभावः, वा ल.गोधूलि रात्रि १०।२६ वादनम् यावत्। **ति.२ भौमे**–रात्रि १२।२६ वादनात्परं अनुराधायां भद्रा, मृत्युबाणश्च व्याप्तिः। **ति.३ बुधे**–भद्रा दिवा १०।२७ वादनात्परं अनुराधायां व्याप्तिः आ.रेखा ९ ल.गोधूलि वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.५ (भौ.दा.) वा ल.११ इ.६ ग्र.व.वि.१३।। (रात्रि ३।१२ वादनम् यावत्)। **ति.४ गुरौ**–रात्रि शेष ५।५ वादनात्परं मूले नक्षत्रे रेखा ६, ल.१२ पंचेष्टाभावः। **ति.५ शुक्रे**–मूले नक्षत्रे रेखा ६ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.११।। (अष्ट चं.दा.)वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (सप्त.भौ.दा.) वा लग्नं ११ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८।। वा ल.१२ पंचेष्टाभावः। **ति.६ शनौ**–मूल नक्षत्रे दिवा ६।३२ वादनम् यावत् रेखा ६ पंचेष्टाभावः। **ति.७ रवौ**–दिवा ७।३४ वादनात्परं उ.षा. रेखा ८ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.११।। (अष्टचं.दा.)वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ ल.१० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (अष्ट भौ.दा.)वा ल.११ इ.६ ग्र.व.वि.१३।। वा लं.१२ पंचेष्टाभावः।

ति.८ सोमे–दिवा ७।५६ वादनम् यावत् उ.षा. रेखा ८ दिवा लग्नं २ इ.६ ग्र.व.वि.११।।

ति.१२ शुक्रे–मृत्युबाण दिवा ११।२७ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे रेखा ४ शुभलग्नाभावः।

ति.१३/१४ शनौ–भद्रा दिवा ४।२८ वादनात्परं रेवत्यां लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ ल.१० इ.७ ग्र.व.वि.१७(अष्ट भौ.दा.) **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	लाभकरः
वृष-	धनागमः
मिथुन-	धर्माचरणं
कर्क-	सुखलाभं
सिंह-	कष्टकरं
कन्या-	शोकः भयम्
तुला-	शत्रु पीड़ा
वृश्चिक-	पुत्रोन्नति
धनु-	द्रव्यलाभः
मकर-	अर्थागमः
कुम्भ-	धनप्राप्तिः
मीन-	सुखं

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ वैशाख शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः बसन्त ऋतुः।
दि.२८ अप्रैल - १२ मई २०२५ ई.। (रा.वैशाख ८ - २२)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३२	१४	१	सोम	४२	३३	रात	१०	३४	भरणी	४३	५२	रात	११	६	आयुष्मान	३९	५३	रात	९	३०	किं	१५	३६	बव	४२	३३	चर	२८	१६	१५	८	वृष	५७	५३	५	३३	६	२७	१३	५७	०	१३	३७	५७	५८	१०	-	५	७	१६
३२	१८	२	मंगल	३६	४०	रात	८	१२	कृत्तिका	३९	५६	रात	९	३०	सौभाग्य	३२	२१	सायं	६	२९	बा	९	३६	कौ	३६	४०	गद	२९	१७	१६	९				५	३२	६	२८	१४	१६	०	१४	३८	७	५८	८	-	५	८	२८
३२	२१	३	बुध.	३१	१०	सायं	६	०	रोहिणी	३६	२४	रात	८	६	शोभन	२५	७	दिन	२	३५	तै	३	५५	गर / ब	३१ / ५८	१० / ४२	शुभ	३०	१८	१७	१०				५	३२	६	२८	१४	३४	०	१५	३६	१५	५८	७	-	५	९	३९
३२	२४	४	गुरु	२६	१३	दिन	४	०	मृगशिरा	३३	२९	सायं	६	५५	अतिगण्ड	१८	२२	दिन	१२	५२	वि	२६	१३	बव	५४	९	मृत्यु	१	१९	१८	११	मिथुन	४	५६	५	३१	६	२९	१४	५३	०	१६	३४	२२	५८	५	-	५	१०	४३
३२	२७	५	शुक्र	२२	५	दिन	२	२१	आर्द्रा	३१	२८	सायं	६	६	सुकर्मा	१२	१६	दिन	१०	२५	बा	२२	५	कौ	५०	२९	पद्म	२	२०	१९	१२				५	३१	६	२९	१५	११	०	१७	३२	२७	५८	३	-	५	११	३९
३२	३०	६	शनि.	१८	५३	दिन	१	३	पुनर्वसु	३०	१५	दिन	५	३६	धृति	६	५२	दिन	८	१५	तै	१८	५३	गर	४७	४८	छत्र	३	२१	२०	१३	कर्क	१५	३४	५	३०	६	३०	१५	२९	०	१८	३०	३०	५८	१	-	५	१२	२६
३२	३३	७	रवि.	१६	४४	दिन	१२	११	पुष्य	३०	९	दिन	५	३३	शूल / गण्ड	२ / ५६	१८ / २२	प्रातः	६ / ४	२४ / ५७	व	१६	४४	वि	४६	१६	श्रीवत्स	४	२२	२१	१४				५	२९	६	३१	१५	४६	०	१९	२८	३१	५७	५९	-	५	१	६
३२	३६	८	सोम	१५	४८	दिन	११	४८	श्लेषा	३१	१३	दिन	५	५८	वृद्धि	५६	५	रात	३	५५	बव	१५	४८	बा	४५	५८	सौम्य	५	२३	२२	१५	सिंह	३१	१३	५	२९	६	३१	१६	४	०	२०	२६	३०	५७	५७	-	५	१	४०
३२	३९	९	मंगल	१६	९	दिन	११	५६	मघा	३३	३८	सायं	६	५५	ध्रुव	५४	२८	रात	३	१५	कौ	१६	९	तै	४७	१	कालदण्ड	६	२४	२३	१६				५	२८	६	३२	१६	२१	०	२१	२४	२७	५७	५५	-	५	२	११
३२	४२	१०	बुध	१७	५५	दिन	१२	३७	पूर्वाफा.	३७	१८	रात	८	२३	व्याघात	५३	४५	रात	२	५८	गर	१७	५२	व	४९	४५	स्थिर	७	२५	२४	१७	कन्या	५३	३०	५	२८	६	३२	१६	३८	०	२२	२२	२२	५७	५४	-	५	२	३९
३२	४५	११	गुरु	२१	३८	दिन	२	६	उत्तराफा.	४२	४	रात	१०	१७	हर्षण	५४	०	रात	३	३	वि	२१	३८	बव	५३	६	मातंग	८	२६	२५	१८				५	२७	६	३३	१६	५५	०	२३	२०	१६	५७	५१	-	५	३	७
३२	४८	१२	शुक्र	२४	३५	दिन	३	१६	हस्त	४७	४४	रात	१२	३२	वज्र	५५	२	रात	३	२७	बा	२४	३५	कौ	५६	५५	अमृत	९	२७	२६	१९				५	२६	६	३४	१७	११	०	२४	१८	७	५७	४८	-	६	३	३६
३२	५१	१३	शनि	२९	१४	दिन	५	८	चित्रा	५४	२	रात	३	३	सिद्धि	५६	२८	रात	४	१	तै	२९	१४	गर	६०	०	काण	१०	२८	२७	२०	तुला	२०	५३	५	२६	६	३४	१७	२७	०	२५	१५	५५	५७	४७	-	६	४	५
३२	५३	१४	रवि	३४	२४	रात	७	११	स्वाती	६०	०	स	म	स्त	व्यतिपात	५८	३	रात	४	३८	गर	१	४९	व	३४	२४	लुम्बक	११	२९	२८	२१				५	२५	६	३५	१७	४३	०	२६	१३	४२	५७	४६	-	६	४	३८
३२	५६	१५	सोम	३९	२८	रात	९	१२	स्वाती	०	४०	प्रात	५	४१	वरीयान	५९	४२	रात	५	१८	वि	६	५६	बव	३९	२८	छत्र	१२	३०	२९	२२	वृश्चिक	५०	२८	५	२५	६	३५	१७	५८	०	२७	११	२८	५७	४४	-	६	५	१५

वृषराशिः रात ४।४२ वादने। देवदामोदर तिथि (आसाम)। (क) यावत्। भौमे जया सिद्धयोगः ३६।४० (रा.८।१२) उ.।

चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। समश्रृंगम् समताकरम्। **श्री परशुराम जयन्ती ३।** छत्रपति शिवाजी जयन्ती २ (तिथि अनुसारेण)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३९।५६ (रा.९।३०)(क)

भद्रा ५८।४२ (रा.शे. ५।१) उ. (स्वर्ग)। **मु.जिल्काद ११ हिजरी सन् १४४६।अक्षय तृतीया ३।** अद्यदानेन अक्षय फलम्। त्रेतायुगादिः ३, कल्पादिः ३, **हयग्रीव जयन्ती ३।** (ख)

मिथुनराशिःदिवा ७।२९ वादने। भद्रा २६।१३ (दि.४।०) या.। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** रवियोगः ३३।२९ (सायं ६।५५) या.। गुरोपूर्णा सिद्धयोगः २६।१३ (दि.४।०)उ.।

आद्य-जगद् गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती ५। सूरदास जयन्ती ५। श्रीसोमनाथ प्रतिष्ठा दिवसः। सर्वार्थसिद्धियोगः ३१।२८ (सायं ६।६) उ.। रवियोगः ३१।२८ (सा.६।६) उ.।

कर्कराशिः दिवा ११।४४ वादने। **श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ६।** चन्दन षष्ठी ६ (बंगाल)। शुभा-शुभेत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः १८।५३ (दि.१।३) उ. ३०।१५ (दि.५।३६) या.। रवियोगः(ग)

भद्रा १६।४४ (दि.१२।११) उ. ४६।१६ (रा.११।५९) या. (मर्त्य)। **श्रीगंगा सप्तमी ७।** मध्याह्ने गंगोत्पत्तिः सर्वत्र गंगा पूजनम्। कमल सप्तमी ७। शर्करा ७। निम्ब सप्तमी ७। (घ)

सिंह राशिः दिवा ५।५८ वादने। **श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रतम्,** श्रीअन्नपूर्णाष्टी ८ व्रतम्। श्रीबंगलामुखी जयन्ती ८। रवियोगः ३१।१३ (दि.५।५८) उ.। (ग) ३०।१५ (दि.५।३६) यावत्।

सीता नवमी ९। वैष्णवमतानुसारेण मध्यान्हे जानकी जन्मोत्सवः। रवियोगः यावद्दिनम्। (घ) रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः ३०।९ (दिवा ५।३३) यावत्।

कन्याराशिः रात्रि २।५२ वादने। भद्रा ४९।४५ (रा.१।२२) उ. (पाताले)। रवियोगः ३७।१८ (रा.८।२३) यावत्। **रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती** (७ मई)।

भद्रा २१।३८ (दि.२।६) या.। **मोहिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः २१।३८ (दि.२।६) या.।

प्रदोष व्रतम् १२। मधु सूदन द्वादशी १२। रुक्मिणी द्वादशी १२। रवियोगः ४७।४४ (रा.१२।३२) उ.।

तुलाराशिः दिन १।४७ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।२ (रा.३।३) उ.। रवियोगः ५४।२ (रा.३।३) या.। शनि रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २९।१४ (दि.५।८) उ.।

भद्रा ३४।२४ (रा.७।११) (पाताले) उ.। प्रदोषे **श्री नृसिंह चतुर्दशी १४ व्रतम्।** सा सूर्यास्तकालव्यापिनी ग्राह्याः। (धर्मसिन्धु)। प्रदोषसायं काले नृसिंहावतारः। अवतारो नृसिंहस्य प्रदोष(ङ)

वृश्चिकराशिः रात्रि १।३६ वादने। भद्रा ६।५६ (दि.८।११) या.। **स्नान-दान-व्रतादौ पूर्णिमा पुण्यतमा १५। बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती १५। कूर्म जयन्ती १५।** अद्य जलपूर्ण(च)

(ख) श्री बद्री-केदार तीर्थयात्रा दिनम्। काश्यां त्रिलोचन यात्रा। **गौतमेश्वर महादेव** (काशी) जलधरी श्रृंगारारम्भः। गौरी ३। जलकुम्भ छत्र, शर्कराव्यंजनादि दानम्। चन्दनेन श्रीविष्णु पूजनम्। चन्दन श्रृंगार (वृन्दावन)। **वर्षीतप समापन** (जैन), मातंगी जयन्ती, सागरे-तीर्थे वा स्नानम् दानम् महत् फलम्। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। (ङ) समये द्विजा। ⊙**कृत्तिका नक्षत्रे रविः** २६।३० (दि.४।१)। रवियोगः २६।३० (दि.४।१) उ.। (च) कुम्भ तिल घृत सुवर्णदानम्। काश्यां-हरिद्वारे तथा च सर्वत्र गंगायाम् स्नानम्। गन्धेश्वरी पूजा (बंगाल)। पुष्करा देवी जयन्ती १५। मृत्युबाणः ५०।४० (रा.१।४१) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ०।४० (प्रा.५।४१) या.। रवियोगः ०।४० (प्रा. ५।४१) या.। वैशाख स्नान-यम-नियम संयम समाप्तिः।

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.२ भौमे–रात्रि ९।३० वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ९ लग्नं १० इष्टाः ५ प्र.व.वि.१० (सप्त भौम दा.) वा ल.११ इष्टाः ६ प्र.व.वि.३।। वा लग्नं ९ दिवा ल.१ इष्टाः ६ प्र.व.वि.११।। **ति.३ बुधे**–रोहिण्यां रेखा ९ दिवा ल.२ इष्टाः ६ प्र.व.वि.११।। वा लग्नं ४ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१५ वा ल.गोधूलि रात्रि ८।१६ वादने उपरान्त मृगशिरायां रेखा ९ लग्नं १० इष्टाः ५ प्र.व.वि.१० (सप्त भौमदान) वा ल.११ इ.६ प्र.व.वि.५।। रात्रिशेष ५।१ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः। **ति.४ गुरौ**–मृगशिरा रेखा ९ भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं ल.गोधूलि (सायं ६।५५ वादनम् यावत्)। **ति.८ सोमे**–सायं ५।५८ वादनात्परं मघायां रेखा ८ ल. गोधूलि वा लग्नं १० इष्टाः ५ प्र.व.वि.१० वा लग्नं ११ इष्टाः ६ प्र.व.वि.३।। (सप्त.चं.दा.)। **ति.९ भौमे**–मघायां रे.८ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ प्र.व.वि.११।। वा लग्नं ४ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१५ (भौ.दा.) वा लग्नं गोधूलि (सायं ६।५५ वादनम् यावत्)। **ति.१० बुधे**–रात्रि ८।२३ वादनात्परं उ.फा. रेखा ६ तत्परं भद्रा व्याप्तिः। **ति.११ गुरौ**–भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उ.फा. रेखा ६ लग्नं गोधूलि। रात्रि १०।१७ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं १० इ.५ प्र.व.वि.११ वा लग्नं ११ इष्टाः ६ प्र.व.वि.२३।। (चन्द्र दा.) वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः। **ति.१२ शुक्रे**–हस्त नक्षत्रे रेखा ७ दिवा लग्नं २ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१३ वा लग्नं ४ इष्टाः ५ प्र.व.वि.२३ वा लग्नं गोधूलि। **ति.१३ शनौ**–रात्रि ३।३ वादनात्परं स्वात्यां रेखा ७ लग्नं १२ पंचेष्टाभावः। **ति.१४ रवौ**–स्वात्यां रेखा ७ व्यतिपातः। भद्रा रात्रि ७।११ वादनात्पूर्वं आ.लग्नं गोधूलिः। **ति.१५ सोमे**–स्वात्यां भद्रा व्याप्तिः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ सो.	०	१६	३	३३	३	१०	५	५०	२७	०	११	१७	२६	५१	७५	४५	१	२६	२५	४२	११	५०	११	४	१०	५३	३०	२५	११	३	२०	२४	६	११	११	०	५७	८
२ मं.	१	०	३१	५५	३	१०	३२	३०	२७	४	११	१८	४२	३६	७८	२४	१	२६	३७	३२	११	५३	११	४	४१	१८	३१	३७	११	३	२६	३५	६	९	११	०	५३	५७
३ बु.	१	१४	४५	४८	३	१०	५९	४४	२७	६	११	१९	५	०	८१	१	१	२६	४९	२५	११	५८	११	५	१२	५५	३२	५१	११	३	३२	४४	६	८	११	०	५०	४६
४ गु.	१	२९	३१	३३	३	११	२७	०	२७	८	११	२०	३३	३६	८३	३४	१	२७	१	२३	१२	२	११	५	४५	२९	३४	३३	११	३	३८	४८	६	४	११	०	४७	३५
५ शु.	२	१३	१५	४२	३	११	५४	१०	२७	९	११	२२	४५	०	८६	३	१	२७	१३	२५	१२	७	११	६	२०	३	३५	४१	११	३	४४	५०	५	५८	११	०	४४	२४
६ श.	२	२६	४५	१७	३	१२	२१	१७	२७	१०	११	२३	१५	५०	८८	३०	१	२७	२५	३२	१२	११	११	६	५४	४३	३६	४०	११	३	५०	४८	५	५४	११	०	४१	१३
७ र.	३	१०	६	६	३	१२	४८	२७	२७	११	११	२४	४४	५१	९०	५१	१	२७	३७	४५	१२	१५	११	७	३०	४	३७	४३	११	३	५६	४२	५	४९	११	०	३८	३
८ सो	३	२३	४४	५	३	१३	१५	९	२७	१३	११	२६	१५	४३	९३	१	१	२७	५०	२	१२	१७	११	८	५	५	३८	४२	११	४	२	३२	५	४५	११	०	३४	५२
९ मं.	४	६	९	३७	३	१३	४२	७	२७	१६	११	२७	४८	६	९५	४	१	२८	२	२१	१२	२०	११	८	४१	४	३९	४२	११	४	८	१६	५	४१	११	०	३१	४१
१० बु.	४	१९	४४	५०	३	१४	९	२५	२७	१८	११	२९	२२	४९	९७	४	१	२८	१४	४१	१२	२१	११	९	१८	०	४०	४६	११	४	१३	५६	५	३८	११	०	२८	३०
११ गु.	५	२	१२	४४	३	१४	३६	५१	२७	२०	०	१	०	०	९९	१	१	२८	२७	५	१२	२३	११	९	५४	३२	४१	४५	११	४	१९	३१	५	३३	११	०	२५	१९
१२ शु.	५	१४	२८	२०	३	१५	४	१०	२७	२१	०	२	३९	५६	१००	५५	१	२८	३९	३१	१२	२४	११	१०	३२	८	४२	४३	११	४	२५	३	५	३०	११	०	२२	८
१३ श.	५	२६	३५	२४	३	१५	३१	३१	२७	२३	०	४	२१	३६	१०२	४८	१	२८	५२	०	१२	२५	११	११	१०	१	४३	४०	११	४	३०	३३	५	२६	११	०	१८	५७
१४ र.	६	८	३८	२२	३	१५	५८	५५	२७	२५	०	६	६	३	१०४	३३	१	२९	४	२५	१२	२६	११	११	४८	४	४४	३७	११	४	३५	५६	५	२२	११	०	१५	४६
१५ सो.	६	२०	४१	३७	३	१६	२६	२३	२७	२७	०	७	५३	५३	१०६	२६	१	२९	१६	५४	१२	२७	११	१२	२६	२०	४५	३३	११	४	४१	२३	५	१७	११	०	१२	३५

पं.५ वैशाख शुक्ल ८ सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७६५
अयनांशाः २४/११/४१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	३	११	१	११	११	११	५
२०	२३	१३	२७	२७	८	४	०	०
२६	१४	१६	६	५०	१०	२	३४	३४
३०	५	९	२	२	४५	३४	५२	५२
५७	७७१	२७	९०	१२	३९	५	३	३
५७	४१	३३	१५	२२	१७	४९	११	११

भौमादीनां चारः
भौमः-पुष्य नक्षत्रे कर्क राशौ १५ सोमतः श्लेषायां दिवा ८।५५ वादने। **बुधः**-मीनराशौ ९ भौमतः मेषराशौ रात्रि शेष ५।२० वादने। **गुरुः**-मृगशिरायां वृष राशौ। **शुक्रः**-मीनराशौ। **शनिः**-उ.भा.१ चरणे मीनराशौ। **राहुः**-पू.भा.४ चरणे। **केतुश्च**-उ.फा. २ चरणे।

वैशाख शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ सो. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ सो घं.	मि.
मेष	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८
वृष	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५
मिथुन	१०	३३	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८
कर्क	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६
सिंह	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०
कन्या	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९
वृश्चिक	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६
धनु	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१
मकर	१	४१	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६
कुम्भ	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१८
मीन	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४६

पं.६ वैशाख शुक्ल १५ सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७७२
अयनांशाः २४/११/४२

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	३	०	१	११	११	११	५
२७	१९	१६	८	२९	१३	४	०	०
११	३१	३६	१४	१७	६	४२	१२	१२
२८	४१	३३	११	४१	५०	२७	३५	३५
५७	७२५	२१	१०२	१२	४६	५	३	३
४४	५०	४०	३६	४६	२	२६	११	११

विविध मुहूर्ताः **तिथि १ सोमे**–भरण्यां शय्यासनाद्युपभोगं। **तिथि २ भौमे**–कृत्तिकायां लालवस्त्रप्रवाल रत्न धारणं इष्टिका दहनं। **तिथि ३ बुधे**–रोहिण्यां जातकर्म अन्नप्राशन (मृगभे), **उपनयनं ल. २ वा ३** वरवरणं कन्या वरणं **द्विरागमनं ल. २ वा ३** विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं, चूल्हीका स्थापनं सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वा पाककर्म वाहन क्रयः, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यस्थापनं पूर्व-दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ गुरौ**–रिक्ता भद्रा दिवा ४।० वादनात्परं मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं (सायं ६।५५ वादनात्पूर्व) जातकर्मः नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं**, अक्षरारम्भः-विद्यारम्भ (आर्द्रायां) आ. **उपनयनं ल. ६**, वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः **द्विरागमनं ल. ६**, विपणिव्यापारः, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं चूल्हीका स्थापनं (सायं), सेवारम्भः शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोगं, मुकदमाकार्यं (आर्द्रायां) आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म भूमिक्रयः सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वापाकर्म वाहन क्रयः दिवा ७।२९ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ५ शुक्रे**-आर्द्रायाम् -कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं, अक्षरारम्भः विद्यारम्भः चूल्हीकास्थापनं मुकदमाकार्य, सायं ६।६ वादनात्परं पुनर्वसौ नामकरण गवां क्रय-विक्रयः दीक्षाग्रहणं **द्विरागमनं ल.७** आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः सर्वदेवप्रतिष्ठा वाहनक्रयः, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ६ शनौ**-पुनर्वसौ-नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्र धारणं, इष्टिका निर्माणं उग्रकर्माचरणं दिवा ५।३६ वादनात्परं पुष्ये ल.गोधूलि सर्वदेवप्रतिष्ठा नूतनवध्वा पाककर्म दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ७ रवौ**-भद्रा दिवा १२।११ वादनात्पूर्व-पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः विद्यारम्भः आ. **उपनयनं ल. ४** (ति.दा.) विपणिव्यापारः, गवां क्रयविक्रयः दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र प्रवाल आदि विविध रत्न धारणं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म, नौका जलयान निर्माणं वाहनक्रयः पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ८सोमे**- श्लेषायां-धान्यच्छेदनं जलयंत्र सर्पपूजा... **तिथि ९ भौमे**-रिक्ता दिवा ११।५६ वादनात्परं मघायां उग्रकर्माचरणं सायं ६।५५ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूति स्नानं पूर्वदिग् यात्रा। **तिथि १० बुधे**-पूर्वाफाल्गुन्यां-विद्यारम्भः **उपनयनं ल. ३** वर वरणं कन्या वरणं दीक्षाग्रहणं जलयंत्र कर्म, मुकदमाकार्यं रात्रि ८।२३ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां **द्विरागमन गृहारम्भ-गृहप्रवेशः ल.८ वा ९** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशय वाटिकारम्भः सेवारम्भः नूतनबध्वापाककर्म, चूल्हीस्थापनं, * * नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं भद्रापूर्व गर्भाधान ल.९ पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११ गुरौ**-भद्रा दिवा २।६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां गर्भाधानं रात्रौ ल.९ वा.११ पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं **उपनयनं ल.५ वरवरणं-कन्यावरणं, वधू प्रवेश द्विरागमन ल.** गोधूलि (ति.दा.) विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं-बीजवपनं धान्यच्छेदन कणमर्दनं, चूल्हीस्थापनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्रलेखनं, इष्टिका निर्माणं, **गृहारम्भ गृहप्रवेश ल.५** गोधू. सर्वदेव प्रतिष्ठा, वाहनक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १२ शुक्रे**-हस्त नक्षत्रे-गर्भाधानं रात्रौ ल.९, आ.प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं (ति.दा.) कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं आ.**चौलमुण्डनं ल. ३** (ति.दा.) अक्षरारम्भः विद्यारम्भः **उपनयनं ल. ३ वा.५ वरणं, कन्या वरणं वधूप्रवेश द्विरागमनं** ३ ल.गोधूलि (त्रयोदश्यां) विपणि व्यापारः, नववस्त्राभूषण धारणं दीक्षाग्रहणं, आभूषण निर्माण धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, सेवारम्भ दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्रलेखनं, **गृहारम्भः गृहप्रवेशः ल.८** (भू.सु.) सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशय वाटिकारम्भः वाहनक्रयः औषधि निर्माण हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ शनौ**-चित्रायां- कृष्ण वस्त्र धारणं **गृहारम्भः-गृहप्रवेशः ल. २** वा ५ सर्वदेव प्रतिष्ठा, दक्षिण दिग् यात्रा दिवा १।४७ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १४ रवौ**-स्वात्यां रिक्ता। **तिथि १५ सोमे**-भद्रात्परं विशाखायां धान्यरोपणं आ. इष्टिकादहनं।

फलम्– यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के ३ सोमवार शुभ फलकारी है। वैशाख शुक्ल पक्ष वर्ष का बड़ा ही पुनीत पक्ष माना जाता है। मंगलवार वृष राशि का चन्द्र दर्शन दूध, दही, छेना आदि के दाम में तेजी लायेगा। रोगों में वृद्धि होगी एवं अग्निकाण्ड की सम्भावना होगी। **श्री परशुराम जयन्ती** प्रदोष-सन्ध्याकाल में तृतीया मिलने के कारण २९ अप्रैल मंगलवार को ही मनाई जायेगी। **अक्षय तृतीया** का अत्यन्त पवित्र एवं पुण्यफलकारी पर्व तृतीया तिथि ३० अप्रैल बुधवार को मनाया जायेगा। आज से ही श्रीबद्रीकेदारनाथ की तीर्थ यात्रा प्रारम्भ की जाती है। आज के दिन किसी भी प्रकार का सम्पत्ति का संचय करना अथवा खरीदना शुभ फलकारी एवं वृद्धिकारी माना जाता है। आज के दिन दिया गया किसी प्रकार का दान अक्षय फलकारी होता है। **आद्यजगद् गुरु शंकराचार्य** की जयन्ती २ मई शुक्रवार को परम्परा अनुसार धार्मिक समारोह के साथ मनाई जायेगी। **श्रीरामानुजाचार्य** की जयन्ती ३ मई शनिवार को मनाई जायेगी। **श्री गंगा सप्तमी** ४ मई रविवार को मनाई जायेगी। ऐसा माना गया है कि आज ही के दिन गंगा जी की उत्पत्ति हुई थी। इसमें मध्याह्न व्यापिनी सप्तमी तिथि ग्रहण की जाती है एवं मध्याह्न में ही इसका उत्सव मनाया जायेगा। **सीता नवमी** के लिए मध्याह्न समय नवमी तिथि मिलनी चाहिए इसलिए इसका मान ६ मई मंगलवार को होगा। वैष्णवमत के अनुसार इससे सम्बन्धित उत्सव मनाया जायेगा। **मोहिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए ८ मई गुरु. को होगा। प्रदोष का व्रत ९ मई शुक्रवार को होगा। **श्रीनृसिंह चतुर्दशी** के लिए सायं काल अथवा प्रदोष कालमें चतुर्दशी तिथि प्राप्त ■ होनी चाहिए। अतः श्रीनृसिंह अवतार की लीला उत्सव ११ मई को मनायी जायेगी। **स्नानदान एवं व्रत सहित पूर्णिमा** १२ मई सोम. को होगी। आज ही **बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती** के रूप में मनाई जायेगी। बौद्ध जगत का यह सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व है। आज ही कूर्म जयन्ती भी मनाई जायेगी। **कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य** ११ मई रविवार को दिन ४।१ बजे से आयेगा। विद्वानों एवं खदानों में काम करने वाले लोगों को किसी प्रकार से पीड़ा पहुँचेगी।

राशिफल

मेष-	स्थान हानिः
वृष-	द्रव्यनाशः
मिथुन-	वित्ताप्तिः
कर्क-	सौख्यं
सिंह-	पापबुद्धिः
कन्या-	रोग भयम्
तुला-	गमनम् हानिः
वृश्चिक-	रिपुनाशः
धनु-	दैन्यम्
मकर-	रोगं
कुम्भ-	श्रीप्राप्तिः
मीन-	हानिः भयम्

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः बसन्त ऋतुः। वृषार्कतः ग्रीष्म ऋतुः। दि. १३ – २७ मई सन् २०२५ ई.। (रा.वैशाख २३ – ज्येष्ठ ६)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३२	५९	१	मंगल	४४	१०	रात	११	४	विशाखा	७	५	दिन	८	१४	परिघ	६०	०	स	म	स्त	वा	११	४९	कौ	४४	१०	श्रीवत्स	१३	१	३०	२३				५	२४	६	३६	१८	१३	०	२८	९	१२	५७	४२	-	६	७	२२
३३	१	२	बुध	४८	५	रात	१२	३८	अनुराधा	१२	५६	दिन	१०	३४	परिघ	०	४९	प्रातः	५	४४	तै	१६	७	गर	४८	५	सौम्य	१४	२	३१	२४				५	२४	६	३६	१८	२८	०	२९	६	५४	५७	४०	-	६	८	१८
३३	४	३	गुरु.	५०	५४	रात	१	४५	ज्येष्ठा	१७	५५	दिन	१२	३३	शिव	१	१८	प्रातः	५	५४	व	१९	३३	वि	५०	५४	कालदण्ड	१५	३	१	२५	धनु	१७	५५	५	२३	६	३७	१८	४३	१	०	४	३४	५७	३८	-	६	९	१४
३३	७	४	शुक्र.	५२	३७	रात	२	२६	मूल	२१	४९	दिन	२	७	सिद्ध साध्य	० ५८	५६ ४२	प्रातः	५ ५	४५ १४	बव	२१	४५	बा	५२	३७	स्थिर	१६	४	२	२६				५	२३	६	३७	१८	५७	१	१	२	१२	५७	३७	-	६	१०	६
३३	९	५	शनि.	५२	५९	रात	२	३५	पू.षा.	२४	३२	दिन	३	१२	शुभ	५७	२०	रात	४	१९	कौ	२२	४८	तै	५२	५९	मातंग	१७	५	३	२७	मकर	३९	५३	५	२३	६	३७	१९	११	१	१	५९	४९	५७	३५	-	६	१०	५४
३३	१२	६	रवि.	५२	४	रात	२	१२	उ.षा.	२५	५७	दिन	३	४५	शुक्ल	५४	१	रात	२	५८	गर	२२	३२	व	५२	४	अमृत	१८	६	४	२८				५	२२	६	३८	१९	२४	१	२	५७	२३	५७	३३	-	६	११	३७
३३	१४	७	सोम.	४९	५५	रात	१	१९	श्रवण	२६	८	दिन	३	४८	ब्रह्म	४९	४२	रात	१	४	वि	२०	५९	बव	४९	५५	सिद्धि	१९	७	५	२९	कुंभ	५५	३८	५	२१	६	३९	१९	३८	१	३	५४	५६	५७	२२	-	६	१२	१६
३३	१६	८	मंगल	४६	४५	रात	१२	३	धनिष्ठा	२५	९	दिन	३	२५	ऐन्द्र	४४	३४	रात	११	११	बा	१८	२०	कौ	४६	४५	उत्पात	२०	८	६	३०				५	२१	६	३९	१९	५१	१	४	५२	२८	५७	३०	-	६	१२	५२
३३	१८	९	बुध.	४२	३८	रात	१०	२३	शतभिषा	२३	१८	दिन	२	३९	वैधृति	३८	४२	रात	८	४९	तै	१४	४१	गर	४२	३८	मानस	२१	९	७	३१				५	२०	६	४०	२०	३	१	५	४९	५८	५७	२९	-	६	१	२७
३३	२१	१०	गुरु.	३७	४१	रात	८	२४	पूर्वाभा.	२०	३४	दिन	१	३४	विष्कुंभ	३२	८	सायं	६	११	व	१०	१०	वि	३७	४१	मुद्गर	२२	१०	८	१	मीन	६	१५	५	२०	६	४०	२०	१५	१	६	४७	२७	५७	२७	-	६	२	१
३३	२३	११	शुक्र.	३२	८	सायं	६	१०	उत्तराभा.	१७	१०	दिन	१२	११	प्रीति	२५	३	दिन	३	२०	बव	४	५४	बा कौ	३२ ५९	८ ११	ध्वज	२३	११	९	२				५	१९	६	४१	२०	२७	१	७	४४	५४	५७	२६	-	५	२	३६
३३	२५	१२	शनि.	२६	१५	दिन	३	४९	रेवती	१३	१८	दिन	१०	३८	आयुष्यमान	१७	३९	दिन	१२	२३	तै	२६	१५	गर	५३	१२	धाता	२४	१२	१०	३	मेष	१३	१८	५	१९	६	४१	२०	३९	१	८	४२	२०	५७	२४	-	५	३	१५
३३	२७	१३	रवि	२०	९	दिन	१	२३	अश्विनी	९	१५	दिन	९	१	सौभाग्य	१०	५	दिन	९	२१	व	२०	९	वि	४७	४	आनन्द	२५	१३	११	४				५	१९	६	४१	२०	५०	१	९	३९	४४	५७	२३	-	५	३	५९
३३	२९	१४	सोम.	१३	५९	दिन	१०	५४	भरणी	५	४	दिन	७	२०	शोभन अतिगण्ड	१ ५२	२४ २९	प्रातः	६ ३	१६ १६	श	१३	५९	च	४१	१	चर	२६	१४	१२	५	वृष	१९	२	५	१८	६	४२	२१	१	१	१०	३७	७	५७	२१	-	५	४	५०
३३	३१	३०	मंगल	८	४	दिन	८	३२	कृत्तिका रोहिणी	१ ५६	२ २४	प्रात	५ ४	४४ १८	सुकर्मा	४७	४०	रात	१२	२२	ना	८	४	किं.	३५	६	गद	२७	१५	१३	६				५	१८	६	४२	२१	११	१	११	३४	२९	५७	२०	-	५	+	+

फसली ज्येष्ठमासारम्भः। ज्येष्ठ मासे पिष्टेन ब्रह्ममूर्ति स्थापयित्वा सावित्रि पूजनेन महत् फलम्। पूर्व दिशायाम बुधास्तः। मृत्युबाणः ५२।४ (रा.२।३१) या.। प्रथम ज्येष्ठ भौमः(क)
देवर्षि नारद जयन्ती २। वीणा वादनं।⊙सं. वृषराशौ रविः ५५।३० (रा.३।३६)। मुहूर्त १५ जघन्य महर्घतारकम् परा १६ घट्याः पुण्यकालः। गो, अन्न तिल दानम् गोदावार्याम्(ख)
धनुराशिः दिवा १२।३३ वादने। भद्रा १९।३३ (दि.१।१२) उ. ५०।५४ (रा.१।४५) या. (पाताले)। मृत्युबाणः ५८।२० (रा.४।४३) उ.। मध्याह्ने यावत् संक्रान्तिजन्यपुण्यकालः।(ग)
संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.१०।६) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। मृत्युबाणः यावद्दिनम्। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः २१।४९ (दि.२।७) उ. ५२।३७ (रा.२।२६) या.।
मकरराशिः रात्रि ९।२० वादने। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २४।३२ (दि.३।१२) उ. ५२।५९ (रा.२।३५) या.। मृत्युबाणः ०।२० (प्रातः ५।३१) या.। (क) (बड़का मंगल।)
भद्रा ५२।४ (रा.२।१२) उ. (पाताले)। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।५७ (दि.३।४५) या.। रवियोगः २५।५७ (दि.३।४५) उ.। (ग) सौर ज्येष्ठ मासारम्भः।
कुम्भराशिः रात्रि ३।३६ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा २०।५९ (दि.१।४५) या.। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो २६।८ (दि.३।४८) या.। रवियोगः २६।८ (दि.३।४८) या.।
श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम् पर्युषितान्नपानदिकमत्रविहितम्। श्रीत्रिलोकनाथाष्टमी ८ (बंगाल)। ज्येष्ठ भौमः (बड़का मंगल)। (घ) अगस्त्यास्तः दिवा १०।४० वादने।
☞ अमायां च तथा ज्येष्ठे वट मूले महासती। त्रिरात्रोपोषितानारीविधिनाऽनेन पूजयेत्। (च) ९।१५ (दि.९।१२) या.। (छ) (लोकमतानुसारेण)।
मीनराशिः दिवा ७।५० वादने। भद्रा १०।१० (दि.९।२४) उ. ३७।४१ (रा.८।२४) या. (मर्त्ये)। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ३७।४१ (रा.८।२४) या.। राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भः। पौराणिक(घ)
अचला (अपरा) एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। जलक्रीडा ११ (उड़ीसा)। अपरासेवनाद्राजनविपाप्मा भवति ध्रुवम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो १७।१० (दि.१२।११) उ.। (ङ)
मेषराशिः दिन १०।३५ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। शनि प्रदोष व्रतम् १२। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। वट सावित्रि व्रतारम्भः। (ङ) शुक्र-नन्दा सिद्धयोगः ३२।८ (सा.६।१०) या.।
भद्रा २०।९ (दि.१।२३) उ. ४७।४ (रा.१२।९) या. (स्वर्गे)। मासशिवरात्रि व्रतम् १३।⊙रोहिणी नक्षत्रे रविः २१।३० (दि.१।४५)। मृत्युबाणः २१।३० (दि.१।४५) उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः(च)
वृषराशिः दिवा १२।५५ वादने। वट सावित्री व्रतम् (बरगदाई) अमावस्या ३०। श्राद्धादौ अमा ३०। मृत्युबाणः ३१।३० (सा.५।५४) या.। नवतपा प्रारम्भः सायं ५।५४ वादनात्(छ)
स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। भौमवती अमावस्या। सर्वार्थसिद्धियोगः १।२ प्रातः (प्रातः ५।४४) या.। अमायाञ्च यदावारो भवेद् भूमि सुतस्यवै, गंगायाम यदि लभ्यते।(ज)

(ख) गंगायाम् च स्नानम्। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भः। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो १२।५६ (दि.१०।३४) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ४८।५ (रा.१२।३८) या.। (ज) कोटि सूर्य ग्रहे समा। पाप वारान्वितदर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ भौमे-दिवा ८।१४ वादनात्परं अनुराधायां मृत्युबाणः रात्रि २।३१ वादनात्परं रेखा ७ लग्नं १२ पंचेष्टाभावः। ति.२ बुधे- अनुराधायां रेखा ७ दिवा ल.१० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.९।। ति.३ गुरौ-भद्रा रात्रि १।४५ वादनात्परं मूले नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं ११ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा रात्रि ४।४३ वादनात्परं मृत्युबाणः। ति.४ शुक्रे-मूले मृत्युबाण व्याप्तिः। ति.५ शनौ-दिवा ३।१२ वादनात्परं उ.षा. रेखा ८ लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं ९ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१४ वा लग्नं १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१७। ति.६ रवौ-उत्तराषाढ़ायां रेखा ८ दिन लग्नं पंचेष्टलग्नाभावः। ति.१० गुरौ-भद्रा रात्रि ९।२४ वादनात्परं उ.भा. रेखा ८ लग्नं ११ इ.५ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा ल.२ इ.५ग्र.व.वि.१३। ति.११ शुक्रे-उत्तराभाद्रपदे रेखा ८ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ दिवा १२।११ वादनात्परं रेवत्यां केतुवेधः आ.रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३। ति.१२ शनौ-रेवत्यां केतुवेधः आ.रेखा ७ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ ततो पंचेष्टलग्नाभावः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

तिथि वार	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री क.	वि.	स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१ मं.	७	१	११	५४	३	२७	६	१	२९	४४	०	५	५६	४७	१०४	१०	१	२९	३०	२७	१२	४८	११	१३	२	१	४६	५६	११	४	४७	५३	५	१२	१०	०	९	३४
२ बु.	७	१३	४१	५४	३	२७	३५	५७	२९	५४	०	७	४१	५	१०७	४५	१	२९	४५	३३	१२	५५	११	१४	२९	५४	४७	१५	११	४	५१	३४	५	१५	१०	०	६	१३
३ गु.	७	२६	१	५	३	२८	५	४	२९	५५	०	९	५०	५०	१०९	२९	१	२९	५६	४	१२	५०	११	१५	५६	४५	५५	११	११	४	५५	१९	५	११	१०	०	३	२
४ शु.	८	८	३४	११	३	२८	३५	४५	२९	५९	०	११	५५	४३	११०	४४	२	०	०	५४	१२	५३	११	१७	२३	३१	५५	५६	११	४	५८	५६	४	५९	९	२९	५९	५२
५ श.	८	२१	३२	९	३	२९	५	४९	३०	४	०	१३	५८	४७	११२	२२	२	०	१०	१४	१२	५४	११	१८	५०	२४	५६	४२	११	५	२	४०	४	४५	९	२९	५६	४१
६ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	२९	३५	५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५३	३०
७ सो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५०	१९
८ मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४७	८
९ बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४३	५७
१० गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०	४६
११ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३७	३५
१२ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३४	२४
१३ र.	०	१०	५९	१७	३	२३	९	१७	३१	०	१	३	१३	५	१२८	४६	२	२	६	२१	१३	१५	११	२४	२	७	५४	४६	११	५	४७	१	४	२८	१०	२९	३१	१३
१४ सो.	०	२५	९	४३	३	२३	४०	१७	३१	८	१	५	२१	५१	१२९	३२	२	२	१९	३६	१३	१६	११	२४	५६	५३	५५	०	११	५	५१	२९	४	२४	१०	२९	२८	२
३० मं.	१	९	१७	५८	३	२४	११	२३	३१	२०	१	७	३१	२३	१२९	४७	२	२	३२	५२	१३	१८	११	२५	५१	५३	५५	४	११	५	५२	५३	४	२१	१०	२९	२४	५१

पं.७ ज्येष्ठ कृष्ण ८ भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७८०
अयनांशाः २४/११/४३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	३	०	२	११	११	१०	४
४	१	२०	२२	१	१९	५	२९	२९
५२	१४	३६	५५	०	३४	२३	४७	४७
२८	१६	१३	१४	४०	५९	४३	८	८
५७	८२६	३०	१२०	१३	५१	४	३	३
३०	४४	२२	४२	३	३६	४९	११	११

३ गु. | २ सू. | बु.१ | ४ मं. | श.१२ शु. | ५ के. | चं.११रा. | ६ | ८ | १० | ७ | ९

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१मं. घं.	मि.	२बु. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	३गु. घं.	मि.	४शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६र. घं.	मि.	७सो. घं.	मि.	८मं. घं.	मि.	९बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	१२श. घं.	मि.	१३र. घं.	मि.	१४सो. घं.	मि.	३०मं. घं.	मि.
मेष	५	२३	५	१९	वृष	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६
वृष	७	२१	७	१७	मिथुन	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९
मिथुन	९	३४	९	३१	कर्क	११	४४	११	४०	११	३६	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७
कर्क	११	५२	११	४८	सिंह	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११
सिंह	२	६	२	२	कन्या	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४
कन्या	४	१९	४	१५	तुला	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०
रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	६	३५	६	३१	वृश्चिक	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७
वृश्चिक	८	५२	८	४८	धनु	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२
धनु	१०	५७	१०	५३	मकर	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४४
मकर	१२	४२	१२	३९	कुम्भ	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२३	१	१९
कुम्भ	२	१४	२	१०	मीन	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४७
मीन	३	४२	३	३८	मेष	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	२३	४	२९	४	२५

पं.८ ज्येष्ठ कृष्ण ३० भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७८७
अयनांशाः २४/११/४४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	३	१	२	११	११	१०	४
११	९	२४	७	२	२५	५	२९	२९
३४	१७	११	३१	३२	५१	५५	२४	२४
२९	५८	२३	१३	५२	४३	५३	५१	५१
५७	८४८	३१	१२९	१३	५५	४	३	३
२०	२९	२०	४७	१८	४	२१	११	११

३ गु. | १ | ४ मं. | बु.सू.२ चं. | १२ श.शु. | ५ के. | ११ रा. | ६ | ८ | १० | ७ | ९

■ स्त्रियाँ इसे बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ करती हैं। **श्राद्ध के लिए अमावस्या** २६ मई सोमवार को होगी। स्नानदान के लिए अमावस्या का मान २७ मई मंगलवार को होगा। शनि भगवान की उत्पत्ति ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या को मानी गई है इसे हम **शनि जयन्ती** के रूप में शनि भगवान का विधिवत पूजन-अर्चन के साथ मनाते हैं। इसका मान २७ मई मंगलवार को होगा। शनि ग्रह की शान्ति से सम्बन्धित अनुष्ठान इत्यादि के लिए इस अमावस्या को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। २७ मई को **भौमवती अमावस्या** का संयोग बन रहा है। इसमें किया जाने वाला गंगा स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारी माना गया है। **वृष राशि की सूर्य संक्रान्ति** १४ मई बुधवार को रात ३।३६ बजे से आवेगी। दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुओं जैसे घी, दूध, छेना, पनीर का भाव बढ़ जायेगा। गुड़, खाद्य तेल में विशेष महँगाई दिखाई देगी। **रोहिणी नक्षत्र का सूर्य** २५मई रवि. को दिन१।४५ बजे से आवेगा। नवतपा की भयंकर गर्मी २६ मई से प्रारम्भ होगी।

फलम्– यह पक्ष १५ दिन का है। पक्ष के तीन मंगलवार कठिन संयोग जैसे अग्निकाण्ड आदि की परिस्थिति पैदा करेंगे। सूचना प्रौद्योगिकी के जनक एवं बिना किसी वाहन के पूरे ब्रह्माण्ड में भ्रमण करने वाले आदि **गुरु देवर्षि नारद** की जयन्ती विविध समारोह एवं वीणा वादन के साथ १४ मई बुधवार को मनाई जायेगी। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान १६ मई शुक्रवार को होगा। चन्द्रोदय रात १०।६ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। जेठ के महीने में पड़ने वाले प्रत्येक मंगलवार को '**बड़का मंगल**' के रूप में मानने एवं मनाने का लौकिक विधान है। इस प्रकार पहला बड़का मंगल १३ मई को पड़ेगा। **श्री शीतलाष्टमी** का व्रत का मान २० मई मंगलवार को होगा। इसे लोक भाषा में '**बसियउरा**' भी कहा जाता है। इसमें पूर्व रात्रि में की गई शीतलामाता की पूजा का बासी पकवान प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जाता है। **अचला** अथवा **अपरा एकादशी** का व्रत सबके लिए २३ मई शुक्रवार को किया जायेगा। शास्त्र में कहा गया है कि जो व्यक्ति सक्षम-सामर्थ्य रखते हुए भी गरीबों असहायों की सेवा अथवा मदद नहीं करता वह पाप का भागी होता है। इस एकादशी का व्रत रखने से इस प्रकार के पाप कटते हैं। पुत्र की कामना से किया जाने वाला **शनि प्रदोष व्रत** २४ मई को होगा। महानिशा में चतुर्दशी मिलने के कारण **मासशिवरात्रि** का व्रत २५ मई रविवार को होगा। **वट सावित्री व्रत** २६ मई सोम. को होगा। इसे **बरगदाई** भी कहा जाता है। ■

भौमादीनां चारः

भौमः-श्लेषायां कर्कराशौ। **बुधः**-मेष राशौ ११ शुक्रतः वृष राशौ सायं ५।४० वादने। **गुरुः**-मृग-शिरायां वृष राशौ ३ गुरुतः मिथुन राशौ रात्रि १।१०वादने। **शुक्रः**-मीन राशौ। **शनिः**-उ.भा. १ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-३ गुरुतः पू.भा. ३ चरणे कुम्भ राशौ। **केतुश्च**-उ.फा. १ चरणे सिंह राशौ।

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ भौमे-विशाखायां- इष्टिकादहनं उग्रकर्माचरणं दिवा ८।१४ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि २ बुधे**-अनुराधायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **उपनयन ल. ३**, वरवरणं कन्यावरणं **द्विरागमनं** (दिवा १०।३४ वादनात्पूर्व) विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं, कणमर्दनं नृत्यगीतवाद्यारम्भ, सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगः **गृहारम्भः ल. ३**, सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशय वाटिकारम्भः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं तत्परं ज्येष्ठायां **चौल मुण्डनं ल.४ वा ६** अक्षरारम्भः। **तिथि ३ गुरौ**-दिवा १२।३३ वादनात्पूर्व **ज्येष्ठायां चौलमुण्डनं**। **तिथि ४ शुक्रे**-मूले पूर्वाषाढ़ायाम् रिक्ता। **तिथि ५ शनौ**-पूर्वाषाढ़ायाम् इष्टिकादहनं दिवा ३।१२ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् सर्वदेव प्रतिष्ठा रात्रि ९।२० वादनम् यावत् उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ६ रवौ**-उत्तराषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं **वरवरणं कन्यावरणं** विपणि व्यापारः लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ शस्त्रधारणं आवेदनपत्रं लेखनं, इष्टिका निर्माणं दिवा ३।४५ वादनात्परं श्रवणे **कन्यावरणं**, शल्यकर्म, दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं (भद्रापूर्व)। **तिथि ७ सोमे**–भद्रा दिवा १।४५ वादनात्परं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं कन्यावरणं तत्पर धनिष्ठायां गर्भाधानं रात्रौ ल.९ आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं, कर्णवेध कन्या नासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डन ल.६** अक्षरारम्भः विद्यारम्भ **वधूप्रवेशः ल.६** क्रय-विक्रय आभूषण निर्माणं, धारणं च हलप्रवहणं, बीजवपनं धान्यच्छेदनं कणमर्दन नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः नूतनबध्वापककर्म वाहन क्रयः। **तिथि ८ भौमे**–धनिष्ठायां आ.प्रसूतिस्नानं (ति.दा.) लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं दिवा ३।२५ वादनात्परं शतभिषायां शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा यावद्दिनम्। **तिथि ९ बुधे**–रिक्ताव्याप्तिः। **तिथि १० गुरौ**–भद्रा दिवा ९।२४ वादनात्पूर्व पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं-सीमन्तः प्रसूतिस्नानं विद्यारम्भः **उपनयनं ल., वरवरणं** *

* **कन्यावरणं**, धान्यच्छेदनं भूमिक्रय, धान्यरोपणं, जलयंत्रकर्म, मुकदमाकार्यं। भद्रारात्रिः ८।२४ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे गर्भाधानं ल.९ **वधूप्रवेश वरवरणं, कन्यावरणं**, शय्यासनाद्युपभोग, **गृहप्रवेशः ल.९** सर्वदेवप्रतिष्ठा पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ शुक्रे**–उत्तराभाद्रपदे आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदनं (रेवत्यां) दिवा १२।११ वादनात्परं रेवत्यां **चौलमुण्डनं ल.५ वा.६** अक्षरारम्भः आ.**उपयनं ल.५ वा.६, वरवरणं कन्यावरण, वधूप्रवेशः** विपणिव्यापारः हलप्रवहण बीजवपनं चूल्हीस्थापनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवेदनपत्रं लेखनं भूमिक्रयः **गृहप्रवेशः ल.२ वा.५** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयावाटिकारम्भः वाहनक्रयः उत्तरदिग् यात्रा। **तिथि १२ शनौ**–रेवत्यां नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं दिवा १०।३८ वादनात्परं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग गमनं। **तिथि १३ रवौ**–अश्विन्यां दिवा ९।१ वादनात्पूर्व प्रसूतिस्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं तत्परं भरण्यां इष्टिका दहनं। **तिथि १४ सोमे**– रिक्तातत्परं **मासान्तः**।

राशिफल

मेष-	शत्रुभयं
वृष-	श्रीप्राप्तिः
मिथुन-	नेत्र कष्टं
कर्क-	पीड़ा भयम्
सिंह-	रोगं शोकं
कन्या-	लाभकरः
तुला-	सुखं शोकं
वृश्चिक-	रोगं सुखं
धनु-	भयं पापबुद्धि
मकर-	धनहानिः
कुम्भ-	सुखार्थ लाभ
मीन-	रोगं हानिः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः। दि. २८ मई - ११ जून सन् २०२५ ई.। (रा.ज्येष्ठ ७ - २१)

पश्चिमायां गुरु अस्तः ११ जून २०२५

दि.मा. घ.	प.	ज्येष्ठ शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३३	३३	१/२	बुध.	२/५४	२८/५७	प्रातः	६/४	१६/१५	मृगशिरा	५४	२२	रात	३	२	धृति	४०	५१	रात	९	३७	बव	२	२८	बा/कौ	२८/५४	३३/५७	अमृत	२८	१६	१४	७	मिथुन	२५	२२	५	१७	६	४३	२१	२१	१	१२	३१	४९	५७	१९	-	५	८	२३
३३	३५	३	गुरु.	५३	१४	रात	२	३५	आर्द्रा	५२	९	रात	२	९	शूल	३४	३९	रात	७	९	तै	२४	५	गर	५३	१४	काण	२९	१७	१५	८				५	१७	६	४३	२१	३१	१	१३	२९	८	५७	१७	-	५	९	२५
३३	३६	४	शुक्र.	४९	५४	रात	१	१५	पुनर्वसु	५०	४१	रात	१	३३	गण्ड	२९	९	दिन	४	५७	व	२१	३४	वि	४९	५४	लुम्बक	३०	१८	१६	९	कर्क	३६	३	५	१७	६	४३	२१	४०	१	१४	२६	२५	५७	१६	-	५	१०	१७
३३	३८	५	शनि.	४७	३९	रात	१२	२०	पुष्य	५०	२१	रात	१	२४	वृद्धि	२४	२८	दिन	३	३	बव	१८	४६	बा	४७	३९	मित्र	३१	१९	१७	१०				५	१६	६	४४	२१	४९	१	१५	२३	४१	५७	१५	-	५	११	२
३३	४०	६	रवि	४६	३६	रात	११	५४	श्लेषा	५१	१२	रात	१	४५	ध्रुव	२०	४१	दिन	१	३२	कौ	१७	७	तै	४६	३६	वज्र	१	२०	१८	११	सिंह	५१	१२	५	१६	६	४४	२१	५८	१	१६	२०	५६	५७	१४	-	५	११	३९
३३	४१	७	सोम.	४६	५०	रात	११	५९	मघा	५३	१७	रात	२	३४	व्याघात	१७	५५	दिन	१२	२५	गर	१६	४३	व	४६	५०	ध्वांक्ष	२	२१	१९	१२				५	१५	६	४५	२२	६	१	१७	१८	१०	५७	१३	-	५	१२	११
३३	४३	८	मंगल	४८	२७	रात	१२	३८	पूर्वाफा.	५६	४३	रात	३	५६	हर्षण	१६	९	दिन	११	४३	वि	१७	३८	बव	४८	२७	धूम्र	३	२२	२०	१३				५	१५	६	४५	२२	१४	१	१८	१५	२३	५७	११	-	४	१२	४१
३३	४४	९	बुध	५१	६	रात	१	४१	उत्तराफा.	६०	०	स	म	स्त	वज्र	१५	२५	दिन	११	२५	बा	१९	४७	कौ	५१	६	प्रवर्धमान	४	२३	२१	१४	कन्या	१२	५०	५	१५	६	४५	२२	२१	१	१९	१२	३४	५७	१०	-	४	१	९
३३	४५	१०	गुरु	५४	५५	रात	३	१३	उत्तराफा.	१	१३	प्रातः	५	४४	सिद्धि	१५	३५	दिन	११	२९	तै	२३	१	गर	५४	५५	मातंग	५	२४	२२	१५				५	१५	६	४५	२२	२८	१	२०	९	४४	५७	९	-	४	१	३८
३३	४७	११	शुक्र	५९	२८	रात	५	२	हस्त	६	४४	दिन	७	५७	व्यतिपात	१६	२९	दिन	११	५१	व	२७	११	वि	५९	२८	अमृत	६	२५	२३	१६	तुला	३९	५१	५	१५	६	४५	२२	३५	१	२१	६	५३	५७	८	-	४	२	७
३३	४८	१२	शनि	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	१२	५८	दिन	१०	२५	वरीयान	१७	५२	दिन	१२	३६	बव	३१	५८	बा	६०	०	काण	७	२६	२४	१७				५	१४	६	४६	२२	४१	१	२२	४	१	५७	७	-	३	२	३८
३३	४९	१२	रवि.	४	२८	दिन	७	१	स्वाती	१९	३०	दिन	१	२	परिघ	१९	३६	दिन	१	४	बा	४	२८	कौ	३७	०	लुम्बक	८	२७	२५	१८				५	१४	६	४६	२२	४७	१	२३	१	८	५७	६	-	३	३	१४
३३	५०	१३	सोम.	९	३३	दिन	९	३	विशाखा	२५	५७	दिन	३	३७	शिव	२१	११	दिन	१	४२	तै	९	३३	गर	४१	५५	मित्र	९	२८	२६	१९	वृश्चिक	९	२१	५	१४	६	४६	२२	५३	१	२३	५८	१५	५७	५	-	३	३	५४
३३	५१	१४	मंगल.	१४	१७	दिन	१०	५७	अनुराधा	३१	५६	सायं	६	०	सिद्ध	२२	२४	दिन	२	१२	व	१४	१७	वि	४६	१३	वज्र	१०	२९	२७	२०				५	१४	६	४६	२२	५८	१	२४	५५	२०	५७	४	-	३	४	३९
३३	५२	१५	बुध.	१८	९	दिन	१२	३०	ज्येष्ठा	३७	१०	रात	८	६	साध्य	२३	५	दिन	२	२८	बव	१८	९	बा	४९	३२	ध्वांक्ष	११	३०	२८	२१	धनु	३७	१०	५	१४	६	४६	२३	२	१	२५	५२	२५	५७	४	-	३	+	+

- मिथुनराशिः दिवा ३।२६ वादने। चन्द्र दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **करवीर १ व्रतम्।** काश्यां दशाश्वमेधे-हरिद्वारे अन्यत्र गंगा नद्यां तीर्थे वा नियमित(क)
- **मु.जिलहिज १२ हिजरी सन् १४४५।** रम्भातृतीया ३। **महाराणा प्रताप जयन्ती ३।** राजस्थाने विशेषतो प्रचलितं। मेला हल्दी घाटी (राजस्थान)। रवियोगः ५२।९ (रा.२।१९) उ.।
- **कर्कराशिः** रात्रि ७।४२ वादने। भद्रा २१।३४ (दि.१।५५) उ. ४९।५४ (रा.१।१५) या. (स्वर्ग-मर्त्य)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस ४।(ख)
- श्रुति पंचमी ५ (जैन)। महादेव विवाह (उड़ीसा)। दोषसंघ विनाशका रवियोगः ५०।२१ (रा.१।२४) उ.। (छ) उ.। **गुरु बृद्धत्वारम्भः सायं ६।४० वादने।**
- **सिंहराशिः** रात्रि १।४५ वादने। **स्कन्द षष्ठी ६ व्रतम्। अरण्य षष्ठी। शीतला षष्ठी** (उड़ीसा)। रवियोगः ५१।१२ (रा.१।४५) या.। यमघंट योगः ५१।१२ (रा.१।४५) या.।
- भद्रा ४६।५० (रा.११।५९) उ. (मर्त्ये)। (ग) भौम जया सिद्धयोगः ४८।२७ (रा.१२।३८) या.। मृत्युबाणः ४७।० (रा.१२।३) उ.। रवियोगः ५६।४३ (रा.३।५६) उ.।
- भद्रा १७।३८ (दि.१२।१८) या.। **श्री दुर्गाष्टमी ८ व्रतम्।** अष्टम्यां शुक्ला देव्याः पूजनम्। धूमावती जयन्ती ८। **मेलाक्षीर भवानी (कश्मीर)। ज्येष्ठ भौमः (बड़का मंगल)।** (ग)
- **कन्याराशिः** दिवा १०।२३ वादने। उमाब्रह्मणि पूजा व्रतम् च नवम्यां। **महेश नवमी (माहेश्वरी समाज)।** रवियोग यावद्दिनम्। मृत्युबाणः ५०।० (रा.१।१५) या.। **नवतपा समाप्तिः**(घ)
- **श्रीगंगा दशहरा १० व्रतम्** (हरतेदश पापानि)। वृष लग्ने श्रीगंगावतरणम्। **सेतुबन्ध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिनम्। गायत्री जयन्ती।** काश्यां दशाश्वमेधे हरिद्वारे वा सर्वत्र गंगायाम् स्नानम्(ङ)
- **तुलाराशिः** रात्रि ९।११ वादने। भद्रा २७।११ (दि.४।७) उ. ५९।२८ (रा.शे. ५।२) या. (पाताले)। **निर्जला एकादशी ११ व्रतम् स्मार्त्तनाम्। इयमेव भीमसेनी एकादशी।** शालिग्राम(च)
- **वैष्णवानामेकादशी व्रतम्।** चम्पक द्वादशी (उड़ीसा, बंगाल)। **मेला खाटू श्याम (राजस्थान)। सुपार्श्वनाथ जयन्ती १२।** शुभाशुभद्रयगुण्यकरः द्विपुष्कर योगः १२।५८ (दि.१०।२५) या.।
- **प्रदोष व्रतम् १२।** दक्षिणात्य वटसावित्री व्रतारम्भः दिनत्रयं यावत्। ⊙ मृगशिरा नक्षत्रे रविः २०।१० (दि.१।१८)। (मृगडाह) पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः। (घ) रात्रि१।१५ वादनात्।
- **वृश्चिकराशिः** दिवा२।५८ वादने। **वट सावित्री व्रतस्य द्वितीय दिनम्।** यमघंट योगः २५।५७ (दि.३।३७) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।५७ (दि.३।३७) उ.। रवियोगः२५।५७(दि.३।३७)(छ)
- भद्रा १४।१७ (दि.१०।५७) उ. ४६।१३ (रा.११।४३) या. (स्वर्गे)। **व्रताय पूर्णिमा १५। दक्षिणात्यवट सावित्री व्रतम् १५।** रवियोगः ३१।५६ (सा.६।०) या.।
- **धनुराशिः** रात्रि ८।६ वादने। **स्नानदानादौ पूर्णिमा १५। संत कबीर जयन्ती १५।** मन्वादिः १५। जलयात्रा १५। भगवान जगन्नाथ जलाभिषेक स्नानम् च। **देव स्नान पूर्णिमा१५(ज)**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	बु.	१	२३	१३	१९	३	२४	४२	४३	३१	२९	१	९	४१	१०	१३०	१८	२	२	४६	१०	१३	२१	११	२६	४६	५७	५५	३१	११	६	०	१४	४	१७	१०	२९	२१	४०
३	गु.	२	६	५९	४७	३	२५	१४	१२	३१	४०	१	११	५१	२८	१३०	३८	२	२	५९	३१	१३	२२	११	२७	४२	२८	५५	५७	११	६	४	३१	४	१२	१०	२९	१८	२९
४	शु.	२	२०	३७	५४	३	२५	४५	५२	३१	५१	१	१४	२	६	१३१	११	२	३	१२	५३	१३	२४	११	२८	३८	२५	५६	१६	११	६	८	४३	४	८	१०	२९	१५	१८
५	श.	३	५	१	११	३	२६	१७	४३	३२	०	१	१६	१३	१७	१३१	३५	२	३	२६	१७	१३	२५	११	२९	३४	४१	५६	४९	११	६	१२	५१	४	३	१०	२९	१२	७
६	र.	३	१९	११	५१	३	२६	४९	४३	३२	८	१	१८	२४	५२	१३१	५६	२	३	३९	४२	१३	२७	०	०	३१	३०	५७	२४	११	६	१६	५४	३	५८	१०	२९	८	५७
७	सो.	४	२	५७	३२	३	२७	२१	५१	३२	२०	१	२०	३६	४८	१३१	३०	२	३	५३	९	१३	२८	०	१	२८	५४	५७	५५	११	६	२०	५२	३	५४	१०	२९	५	४६
८	मं.	४	१५	३७	४०	३	२७	५४	११	३२	२८	१	२२	४८	१८	१३०	२५	२	४	६	३७	१३	३०	०	२	२६	४९	५८	२०	११	६	२४	४६	३	५०	१०	२९	२	३५
९	बु.	४	२८	३	५६	३	२८	२६	३९	३२	३७	१	२४	५८	४३	१२८	३७	२	४	२०	७	१३	३०	०	३	२५	९	५८	४५	११	६	२८	३६	३	४५	१०	२८	५९	२४
१०	गु.	५	१०	२९	२१	३	२८	५९	१६	३२	४३	१	२७	७	२०	१२७	४४	२	४	३३	३७	१३	३१	०	४	२३	५४	५९	९	११	६	३२	२१	३	४१	१०	२८	५६	१३
११	शु.	५	२५	१३	१६	३	२९	३१	५९	३२	४९	१	२९	१५	४	१२७	६	२	४	४७	८	१३	३३	०	५	२३	३	५९	३३	११	६	३६	२	३	३५	१०	२८	५३	२
१२	श.	६	११	१९	४७	४	०	४	४८	३२	५०	२	१	२२	१०	१२५	५३	२	५	०	४१	१३	३४	०	६	२२	३६	६०	८	११	६	३९	३७	३	३१	१०	२८	४९	५१
१२	र.	६	२४	२२	२०	४	०	३७	३८	३२	५५	२	३	२८	३	१२५	३७	२	५	१४	१५	१३	३४	०	७	२२	४४	६०	२९	११	६	४३	८	३	२६	१०	२८	४६	४०
१३	सो	६	२७	३०	८	४	१	१०	३३	३३	१	२	५	३३	४०	१२३	४८	२	५	२७	४९	१३	३६	०	८	२३	१३	६०	३५	११	६	४६	३४	३	२२	१०	२८	४३	२९
१४	मं.	७	९	३८	१७	४	१	४३	३४	३३	५	२	७	३७	२८	१२१	५५	२	५	४१	२५	१३	३६	०	९	२३	४८	६०	५३	११	६	४९	५६	३	१६	१०	२८	४०	१८
१५	बु.	७	२१	५८	५०	४	२	१६	३९	३३	११	२	९	३९	२३	१२०	४३	२	५	५५	१	१३	३६	०	१०	२४	४१	६१	१९	११	६	५३	१२	३	१०	१०	२८	३७	७

फलम्– द्वितीया तिथि का क्षय हो गया है और द्वादशी तिथि की वृद्धि हो गयी है। इस प्रकार यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। मृगशिरा नक्षत्र मिथुन राशि का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव सम चलेगा एवं सुभिक्ष कारक भी है। गंगा दशहरा से सम्बन्धित गंगा स्नान एवं गंगा स्त्रोत्र का पाठ ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा २८ मई बुधवार से प्रारम्भ हो जायेगा। इसको वृद्धि क्रम अर्थात् प्रतिदिन एक-एक पाठ बढ़ाते जाते हैं। क्षत्रिय कुल शिरोमणि एवं भारतीय इतिहास के गौरव **महाराणा प्रताप** की जयन्ती २९ मई गुरुवार को होगी। राजस्थान के हल्दी घाटी का मेला उत्सव सजेगा। **गंगा दशहरा** का परम पुनीत पर्व ५ जून गुरुवार को मनाया जायेगा। आज के दिन गंगा स्नान करने से विशेष पुण्यफल की प्राप्ति होती है एवं दस प्रकार के पाप (तीन कायिक, चार वाचिक एवं ३ मानसिक) सभी कट जाते हैं। इसी के साथ विगत १० दिनों से चला आ रहा गंगा स्नान एवं गंगा स्तोत्र का पाठ समाप्त हो जायेगा। काशी एवं हरिद्वार का गंगा स्नान विशेष पुण्यफलकारक माना गया है। आज ही के दिन भगवान राम ने भगवान शिव की स्थापना '**रामेश्वरम**' में की थी। **गायत्री जयन्ती** भी आज ही मनाई जायेगी। वर्ष भर की सबसे कठिन एकादशी मानी जाने वाली **निर्जला एकादशी** का व्रत ६ जून शुक्रवार को स्मार्त्त-गृहस्थों के लिए होगा। इसी को **भीमसेनी एकादशी** भी कहते हैं। आज के दिन काशी की प्रसिद्ध कलश यात्रा दशाश्वमेध घाट से निकलकर काशी विश्वेश्वर भोले बाबा के दरबार तक जायेगी और कलश में संचित देश भर की पवित्र नदियों के जल से बाबा का अभिषेक किया जायेगा। **वैष्णजन ७ जून** ●

पं.९ ज्येष्ठ शु. ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७९४ अयनांशाः २४/११/४५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	३	१	२	०	११	१०	४
१८	१५	२७	२२	४	२	६	२९	२९
१५	३७	५४	४८	६	२६	२४	२	२
२३	४०	११	१८	३७	४९	४६	३५	३५
५७	८५३	३२	१३०	३	५८	३	३	३
११	४०	२८	२५	३०	२०	५०	११	११

३ गु. | शु.१ | ४ मं. | २ सू. बु. | १२ श. | ५ के. चं. | रा.११ | ६ | ८ | १० | ७ | ९

भौमादीनां चारः

भौमः-श्लेषायां कर्कराशौ ११ शुक्रतः मघायां सिंह राशौ रात्रि १।१५ वादने। **बुधः**-वृषराशौ ११ शुक्रतः मिथुने दिवा १२।४५ वादने। **गुरुः**-मृगशिरायां मिथुन राशौ। **शुक्रः**-मीन राशौ ५ शनितः मेष राशौ दिवा ३।५५ वादने। **शनि**-उ.भा.१ चरणे १२ शनितः उ.भा.२ चरणे दि.१०।१५ वादने। **राहुः**-पूर्वा भाद्रपद ३ चरणे। **केतुश्च**-उ.फा. १ चरणे।

ज्येष्ठ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ सो घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	१५ बु. घं.	मि.
वृष	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७
मिथुन	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०
कर्क	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८
सिंह	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२
कन्या	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३३	२	२९	२	२५
तुला	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चिक	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८
धनु	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३
मकर	११	४३	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८
कुम्भ	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	२०
मीन	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४८
मेष	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १/२ बुधे–मृगशिरायां गर्भाधानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डन ल.३** विद्यारम्भः **उपनयनं ल.३ वा ६** वरवरणं, कन्यावरणं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वापाककर्मः पूर्वदिग्यात्रा दिवा ३।२६ वादनात्परं दक्षिणपश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ३ गुरौ**–आर्द्रायाम् पुंसवनं सीमन्तः कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं, अक्षरारम्भः विद्यारम्भः **उपनयनं ल.३ वा ६** चूल्हीस्थापनं मुकदमाकार्यं। **तिथि ४ शुक्रे**–पुनर्वसौ रिक्ताः भद्राव्याप्तिः। **तिथि ५ शनौ**–पुष्ये नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्रधारणं इष्टिका निर्माणं उग्रकर्माचरणं, पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ६ रवौ**–श्लेषायां धान्यच्छेदनं जलयंत्रकर्म मुकदमाकार्यं। **तिथि ७ सोमे**–मघायां **वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेश** कणमर्दनं जलयंत्रकर्म शय्यासनाद्युपभोग। **तिथि ८ भौमे**–भद्रा दिवा १२।१८ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूति स्नानं इष्टिकादहनं पूर्वदिग् यात्रा। **तिथि ९ बुधे**–उत्तराफाल्गुन्यां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० गुरौ**–उत्तराफाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे रात्रौ गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरण अन्नप्राशन **चौलमुण्डन ल.३** कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं अक्षरारम्भः विद्यारम्भः **उपनयनं ल.३ वा ५, वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः ल.३** विपणिव्यापार, हलप्वहणं बीजवपनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ, शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोग दत्तकपुत्रग्रहणं, आवेदनपत्रलेखन, इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयावाटिकारम्भः, नूतनवध्वापककर्म चूल्हीस्थापनं (प्रातरेव) वाहनक्रयः औषधिनिर्माणं सेवनं च हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्वदिग्गमनं। **तिथि ११ शुक्रे**–भद्रा दिवा ४।७ वादनात्पूर्व हस्तनक्षत्रे प्रसूतिस्नानं जातकर्मः नामकरणं **चौलमुण्डनं ल.३** अक्षरारम्भः विद्यारम्भ; **उपनयनं ल.३ वा.५ वरवरणं कन्यावररणं वधूप्रवेश ल.३** विपणि व्यापारः नववस्त्रधारण हलप्रवहणं, बीजवपनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ, सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोग, दत्तकपुत्रग्रहणं, आवेदनपत्रलेखनं, *

पं.१० ज्येष्ठ शु.१५ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८०२ अयनांशाः २४/११/४६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	४	२	२	०	११	१०	४
२५	२१	२	९	[illegible]	[illegible]	६	२८	२८
५२	५८	१६	३९	[illegible]	[illegible]	५३	३७	३७
२५	५०	३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	७	७
५७	७८२	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३	३
४	२७	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	११	११

३बु.गु. | शु.१ | ४ | २ सू. | १२ श. | ५ के. मं. | ११ रा. | ६ | ८ चं. | १० | ७ | ९

(क) १० दिनानि यावत् स्नानारम्भ। वृद्धिक्रमेण गंगा स्त्रोत्रस्य नित्य पाठारम्भः। **ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे प्राप्य प्रतिपदं तिथिं। दशाश्वमेधके स्नात्वा मुच्यते सर्व पातकैः।– काशीखण्डे।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।२२ (रा.३।२) या.। बुधे भद्रा सिद्धयोगः २।२८ (प्रातः ६।१६) उ.। **सोपपदा २ वेदारम्भानध्यायः। (ख)** उमा चतुर्थी ४ (बंगाल-उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ५०।४१ (रा.१।३३) या.। रवियोगः ५०।४१ (रा.१।३३) या.। **(ङ)** गंगा स्त्रोत्रस्य पाठ समाप्तिः। **काश्यां गौतमेश्वर जलधरी श्रृंगार समाप्तिः।** रवियोगः यावद्दिनम्। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ५४।५५ (रा.३।१३) या.। **(च)** पूजनोत्सवः। **काशी विश्वेश्वराय कलशयात्रा।** अद्य शर्करा युतं जल कुम्भ धेनुदानम्। **दानमन्त्र–देव देव हृषीकेश संसारार्णव तारकः। उदकुम्भ प्रदानेन यास्यामि हरि मन्दिरम्।** रुक्मिणी विवाह (उड़ीसा)। देवविवाहः। रवियोगः ६।४४ (दि.७।५७) या.। शुक्रे–नन्दा सिद्धयोगः ५९।२८ (रा.शे. ५।२) या.। **(ज)** (उड़ीसा)। विल्वात्रिरात्रारम्भः। **पश्चिम दिशायाम् गुरु अस्तः सायं ६।४० वादने।** यमघंटयोगः३७।१०(रा.८।६)उ.।

* **गृहप्रवेशः गृहारम्भ ल.२ वा ३** चित्रायां ल.५ सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः औषधि निर्माण सेवनं च वाहन क्रयः हस्तनक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ शनौ**–चित्राया कृष्णा वस्त्र धारणं **गृहारम्भ गृहप्रवेश ल.२ वा ३**, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ रवौ**–स्वात्यां प्रसूतिस्नानं विद्यारम्भः **वरवरण कन्यावरणं** लालवस्त्रधारणं, दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदनपत्रलेखनं, शल्यकर्म दक्षिण दिग्यात्रा विद्यारम्भः, **उपनयनं ल.३। तिथि १३ सोमे**–दिवा ९।३ वादनात्परं रिक्ताव्याप्तिः। **तिथि १४ भौमे**–रिक्ता भद्राव्याप्तिः। **तिथि १५ बुधे**–ज्येष्ठायां नामकरणं अक्षरारम्भ गवां क्रय-विक्रय कणमर्दनं नृत्यगीत वाद्य-कलारम्भः मुकदमाकार्य।

राशिफल

मेष-	भयम्
वृष-	स्थान हानिः
मिथुन-	द्रव्यनाशः
कर्क-	वित्ताप्तिः
सिंह-	सौख्यं
कन्या-	पापबुद्धिः
तुला-	रोगभयम्
वृश्चिक-	गमनम्
धनु-	रिपुनाशः
मकर-	दैन्यम्
कुम्भ-	रोगं हानिः
मीन-	सुखम् श्रीः

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१/२ बुधे-मृगशिरायां रेखा ६ दिवा लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (सप्त भौ.दा.) वा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (श.दा.)। **ति.६ रवौ**–रात्रि १।४५ वादनात्परं मघायां रेखा ६ लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं ४ रा ३ इष्टाः २ पंचेष्टाभावः। **ति.७ सोमे**-मघायां रेखा ६ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (सप्त भौ.दा.) वा लग्नं ११।५९ वादनात्परं भद्राव्याप्तिः। **ति.८ भौमे**-रात्रि ३।५६ वादनात्परं उत्तरा फाल्गुन्यां मृत्युबाण व्याप्तिः। **ति.९ बुधे**–मृत्युबाण रात्रि १।१५ वादनात्परं उ.फा. रेखा ६ लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं १ वा २ पंचेष्टाभावः। **ति.१० गुरौ**–प्रातः ५।४४ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे रेखा ८ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४ वा लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। ततो व्यतिपातः आ. लग्नं गोधूलि। **ति.११ शुक्रे**-हस्त नक्षत्रे व्यतिपातः पंचेष्टाभावः। **ति.१२ शनौ**–दिवा १०।२५ वादनात्परं स्वात्यां रेखा ८ दिवा लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ वा ल.गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० अष्ट.भौ.दान वा लग्नं १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। अष्ट चं.दा. व ल.१ वा ल.२ पंचेष्टाभावः। **ति.१२ रवौ**–स्वात्यां रेखा ८ दिवा लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ तत्परं **गुरु वृद्धत्वदोष।**

● शनिवार को निर्जला एकादशी व्रत का मान करेंगे। **प्रदोष का व्रत** ८ जून रविवार को किया जायेगा। **व्रत के लिए पूर्णिमा** का मान १० जून मंगलवार को होगा एवं **स्नान-दान की पूर्णिमा** एवं **सन्त कबीर** की जयन्ती ११ जून बुधवार को मनाई जायेगी। आज ही भगवान जगन्नाथ का जलाभिषेक भी कराया जायेगा। इसे देव स्नान पूर्णिमा भी कहते हैं। **मृगशिरा नक्षत्र** का सूर्य ८ जून रविवार को दिन १।१८ बजे से आवेगा। भीषण गर्मी पड़ेगी। ८ से ११ जून के आसन्न बूँदा-बाँदी एवं तेज हवा के साथ मानसून पूर्व बरसात होने की सम्भावना है।

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ आषाढ़ कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः। दि.१२ – २५ जून सन् २०२५ ई.। (रा. ज्येष्ठ २२ – आषाढ़ ४)

पक्षेऽस्मिन् गुरु अस्तः।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं.		चन्द्रोदय घं.	मि.
३३	५३	१	गुरु.	२०	५५	दिन	१	३५	मूल	४१	१४	दिन	९	४३	शुभ	२२	५२	दिन	२	२२	कौ	२०	५५	तै	५१	४	धूम	१२	१	२९	२२				५	१३	६	४७	२३	६	१	२६	४९	२९	५७	३	-	३	८	२
३३	५४	२	शुक्र.	२२	४०	दिन	२	१७	पूर्वाषाढ़ा	४४	१२	रात	१०	५४	शुक्ल	२१	४९	दिन	१	५७	गर	२२	४०	व	५२	५१	प्रवर्धमान	१३	२	३०	२३	मकर	५९	३७	५	१३	६	४७	२३	११	१	२७	४६	३२	५७	३	-	२	८	५२
३३	५४	३	शनि.	२३	२	दिन	२	२६	उत्तराषाढ़ा	४५	५२	रात	११	३४	ब्रह्म	१९	४२	दिन	१	६	वि	२३	२	बव	५२	३४	राक्षस	१४	३	३१	२४				५	१३	६	४७	२३	१४	१	२८	४३	३४	५७	१	-	२	९	३७
३३	५५	४	रवि.	२२	६	दिन	२	३	श्रवण	४६	१८	रात	११	४४	ऐन्द्र	१६	३६	दिन	११	५१	बा	२२	६	कौ	५१	२	गद	१५	४	३२	२५				५	१३	६	४७	२३	१७	१	२९	४०	३७	५७	०	-	२	१०	१६
३३	५५	५	सोम	१९	५८	दिन	१	१२	धनिष्ठा	४५	३५	रात	११	२७	वैधृति	१२	२९	दिन	१०	१३	तै	१९	५८	गर	४८	२३	शुभ	१६	५	१	२६	कुम्भ	१५	५६	५	१३	६	४७	२३	१९	२	०	३७	३५	५७	०	-	२	१०	५३
३३	५६	६	मंगल	१६	४८	दिन	११	५६	शतभिषा	४३	५०	रात	१०	४५	विष्कुभ	७	३१	दिन	८	१३	व	१६	४८	वि	४४	४५	मृत्यु	१७	६	२	२७				५	१३	६	४७	२३	२२	२	१	३४	३६	५६	५९	-	१	११	२७
३३	५६	७	बुध	१२	४२	दिन	१०	१८	पूर्वाभाद	४१	१६	रात	९	४३	प्रीति / आयुष्यमान	१ / ५३	४७ / ३२	प्रातः	५ / ३	५६ / २१	बव	१२	४२	बा	४०	१२	पद्म	१८	७	३	२८	मीन	२६	५५	५	१३	६	४७	२३	२३	२	२	३१	३५	५६	५९	-	१	१२	०
३३	५६	८	गुरु.	७	४२	दिन	८	१८	उत्तराभाद्र	३८	०	रात	८	२५	सौभाग्य	४८	२१	रात	१२	३३	कौ	७	४२	तै	३४	५६	छत्र	१९	८	४	२९				५	१३	६	४७	२३	२३	२	३	२८	३४	५६	५८	-	१	१२	३४
३३	५७	९ / १०	शुक्र.	२ / ५४	१० / ५	प्रातः	६ / ३	५ / ४३	रेवती	३४	१३	सायं	६	५४	शोभन	४१	२	रात	९	३८	गर	२	१०	व / वि	२८ / ५४	७ / ५	श्रीवत्स	२०	९	५	३०	मेष	३४	१३	५	१३	६	४७	२३	२६	२	४	२५	३२	५६	५७	-	१	१	१०
३३	५७	११	शनि.	५०	१०	रात	१	१७	अश्विनी	३०	७	दिन	५	१६	अतिगण्ड	३३	२८	सायं	६	३६	बव	२२	७	बा	५०	१०	सौम्य	२१	१०	६	३१				५	१३	६	४७	२३	२६	२	५	२२	२९	५६	५७	-	१	१	५१
३३	५७	१२	रवि	४३	५२	रात	१०	४६	भरणी	२५	५४	दिन	३	३५	सुकर्मा	२५	४९	दिन	३	३३	कौ	१७	१	तै	४३	५२	कालदण्ड	२२	११	७	१	वृष	३९	५२	५	१३	६	४७	२३	२६	२	६	१९	२६	५६	५७	-	०	२	३७
३३	५७	१३	सोम.	३७	५१	रात	८	२१	कृत्तिका	२१	५१	दिन	१	५७	धृति	१८	१९	दिन	१२	३३	गर	१०	५२	व	३७	५१	स्थिर	२३	१२	८	२				५	१३	६	४७	२३	२६	२	७	१६	२३	५६	५६	-	०	३	३२
३३	५७	१४	मंगल.	३२	१५	सायं	६	७	रोहिणी	१८	९	दिन	१२	२९	शूल	११	१	दिन	९	३७	वि	५	३	श / च	३२ / ५९	१५ / ४२	मातंग	२४	१३	९	३	मिथुन	४६	३१	५	१३	६	४७	२३	२५	२	८	१३	१९	५६	५६	-	०	४	३३
३३	५६	३०	बुध.	२७	८	दिन	४	४	मृगशिरा	१४	५४	दिन	११	११	गण्ड / वृद्धि	४ / ५३	८ / ४३	प्रातः	६ / ४	५२ / २१	ना	२७	८	किं	५४	५९	अमृत	२५	१४	१०	४				५	१३	६	४७	२३	२४	२	९	१०	१५	५६	५५	+	१	+	+

फसली आषाढ़ मासारम्भः। गुरु हर गोविन्द सिंह जयन्ती १। 'आषाढ़मासे प्रथमे च पक्षेनिरभ्रे दृष्टरवि मण्डले च। विद्युन्नगर्जत्यथनैवमेघोमासद्वयं तत्र न वर्षणं स्यात्।'

मकरराशिः रात्रि शेष ५।४ वादने। भद्रा ५१।५१ (रा.२।२१) उ. (पाताले)।

भद्रा २३।२ (दि.२।२६) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदये (रा.९।३७) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ४५।५२ (रा.११।३४) उ.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २३।२ (दि.२।२६) उ.।

⊙ **सं.मिथुन राशौ रविः** २०।३० (दि.१।२५) मु.३० समा समताकरम्। पूर्वा पराः १६ घट्यः पुण्याः। वस्त्र अन्नदानम्। मन्दाकिन्यां स्नानम्।

कुम्भराशिः दिवा ११।३५ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। **सौर आषाढ़ मासारम्भः।** याम्ये (मुद्दई) जयद् योगः १९।५८ (दि.१।१२) या.। रवियोगः ४५।३५ (रा.११।२७)उ.।

भद्रा १६।४८ (दि.११।५६) उ. ४४।४५ (रा.११।७) या. (मर्त्ये)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ४३।५० (रा.१०।४५) या.।

मीन राशिः दिवा ३।५९ वादने। बुध-भद्रा सिद्धयोगः १२।४२ (दि.१०।१८) या.।

श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम् पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम् (बसियउरा-बसौड़ा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।० (रा.८।२५) उ.। याम्ये (मुद्दई) जयद् योगः ७।४२ (दि.८।१८) उ.।

मेषराशिः दिवा ६।५४ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। सर्वार्थामृतसिद्धियोगो ३४।१३ सायं ६।५४) या. तदुपरि सर्वार्थसिद्धियोगः।

योगिनी एकादशी ११ व्रतम् स्मार्त्तानाम्। कुष्ठादिरोग निवृत्ति कामनया। याम्ये (मुद्दई) जयद् योगः ३०।७ (दि.५।१६) उ.।

वृषराशिः रात्रि ९।१० वादने। **वैष्णवानामेकादशी व्रतम्।** ⊙ **आर्द्रा नक्षत्रे रविः**२२।२० (दि.१।४५)। स्त्री-पु. चन्द-चन्द्र योगौ, मूषक वाहनं, चण्डा नाड़ी तदीशो शनिः वायुवेगेन सामान्य वृष्टियोगः। **राष्ट्रीय आषाढ़ मासारम्भः।**

भद्रा ३७।५१ (रा.८।२१) उ. (स्वर्गे)। **सोम प्रदोष व्रतम् १३।** पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। **मास शिवरात्रि व्रतम् १३।** सर्वार्थसिद्धियोगः २१।५१ (दि.१।५७) उ. याम्ये (मुद्दई) जयद् योगः २१।५१ (दि.१।५७) उ. ३७।५१ (रा.८।२१)या.।

मिथुनराशिः रात्रि ११।४९ वादने। भद्रा ५।३ (दिन ७।१४) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः १८।९ (दि.१२।२९) उ. ३२।१५ (सा.६।७) या.।

स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्। **आर्द्रा नक्षत्रे २ चरणे रविः** रात्रि १।३७ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः १४।५४ (दि.११।११) या.।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	गु.	८	४	३०	४२	४	२	४९	५०	३३	१५	२	११	४०	६	११७	३३	२	६	८	३७	१३	३७	०	११	२६	०	६१	३६	११	६	५६	२२	३	३	१०	२८	३३	५६
२	शु.	८	१७	१७	५२	४	३	२३	५	३३	२०	२	१३	३७	३९	११४	५०	२	६	२२	१४	१३	३९	०	१२	२७	३६	६१	५७	११	६	५९	२५	२	५२	१०	२८	३०	४६
३	श.	९	०	१५	२०	४	३	५६	२५	३३	२४	२	१५	३२	२९	११२	५६	२	६	३५	५३	१३	४०	०	१३	२९	३३	६२	१५	११	७	२	१७	२	४२	१०	२८	२७	३५
४	र.	९	१३	३१	१४	४	४	२९	४९	३३	२९	२	१७	२५	२५	११०	१६	२	६	४९	३३	१३	४०	०	१४	३१	४८	६२	३१	११	७	४	५९	२	३५	१०	२८	२४	२४
५	सो	९	२६	५९	२०	४	५	३	१८	३३	३०	२	१९	१५	४१	१०४	३४	२	७	३	१३	१३	४१	०	१५	३४	१९	६२	५६	११	७	७	३४	२	३०	१०	२८	२१	१३
६	मं.	१०	१०	२५	४१	४	५	३६	४८	३३	३३	२	२१	०	१५	१००	४५	२	७	१६	५४	१३	४१	०	१६	३७	१५	६३	७	११	७	१०	४	२	२६	१०	२८	१८	२
७	बु.	१०	२४	१५	१७	४	६	१०	२१	३३	३७	२	२२	४१	०	९७	२७	२	७	३०	३५	१३	४१	०	१७	४०	२२	६३	२४	११	७	१२	३०	२	२१	१०	२८	१४	५१
८	गु.	११	८	१४	३३	४	६	४३	५८	३३	४२	२	२४	१८	२७	९५	४१	२	७	४४	१६	१३	४१	०	१८	४३	४६	६३	३८	११	७	१४	५१	२	१५	१०	२८	११	४०
९	शु.	११	२२	२०	४७	४	७	१७	४०	३३	४७	२	२५	५४	८	९२	३६	२	७	५७	५७	१३	४१	०	१९	४७	२४	६३	५८	११	७	१७	६	२	१०	१०	२८	८	२९
११	श.	०	६	२९	३५	४	७	५१	२७	३३	५०	२	२७	२६	४४	९०	१९	२	८	११	३८	१३	४१	०	२०	५१	२२	६४	२	११	७	१९	१६	२	६	१०	२८	५	१८
१२	र.	२	२०	३७	१८	४	८	२५	१७	३३	५४	२	२८	५७	३	८८	३०	२	८	२५	१९	१३	४१	०	२१	५५	२४	६४	१३	११	७	२१	२२	२	३	१०	२८	२	७
१३	सो.	१	४	४५	१३	४	८	५९	११	३३	५७	३	०	२५	३३	८७	२६	२	८	३९	०	१३	४१	०	२२	५९	३७	६४	१३	११	७	२३	२५	१	५९	१०	२८	५८	५६
१४	मं.	१	१८	५३	५२	४	९	३३	८	३४	०	३	१	५२	५९	८५	१०	२	८	५२	४१	१३	४२	०	२४	३	५०	६४	२०	११	७	२५	२४	१	५७	१०	२७	५५	४५
३०	बु.	२	२	४९	१७	४	१०	७	८	३४	६	३	३	१८	९	८२	३२	२	९	६	२३	१३	४२	०	२५	८	१०	६४	३३	११	७	२७	२१	१	५३	१०	२७	५२	३४

फलम्– दशमी तिथि का क्षय हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। आषाढ़ के महीने के प्रथम पक्ष में ही बादलों का घेराव तथा विद्युत गर्जना हो जानी चाहिए अन्यथा आगे के दो महीने में वर्षा कम होती है, ऐसा शास्त्रों में माना गया है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान १४ जून शनिवार को होगा। चन्द्रोदय रात ९।३७ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **श्री शीतलाष्टमी का व्रत** (बसियउरा) १९ जून गुरुवार को किया जायेगा। इसमें बासी पकवान प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परम्परा है और इसी के साथ विगत ४ महीने से चला आ रहा यह व्रत पूजन इस वर्ष के लिए समाप्त हो जायेगा। **योगिनी एकादशी व्रत** का २१ जून शनिवार को स्मार्त्त-गृहस्थों के लिए होगा। **वैष्णवजन** २२ जून को रविवार को एकादशी का व्रत करेंगे। इस एकादशी का व्रत रखकर भगवान् पुण्डरीकाक्ष का विधिवत् पूजन कर उनके ऊपर चढ़ाये गये जल से शरीर का मार्जन कर लिया जाय तो कुष्ठादि जैसे असाध्य चर्म रोगों का भी शमन होता है। इसका उल्लेख मार्कण्डे ऋषि ने हेममाली कुबेर से सम्बन्धित कथा में बताया है। पुत्र की कामना से किया जाने वाला **सोम प्रदोष व्रत** २३ जून को होगा। **मास शिवरात्रि** का व्रत भी २३ जून सोमवार को होगा। **स्नान दान श्राद्ध** सहित अमावस्या ■

पं.११ आषाढ़ कृष्ण ८ गुरौ सर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८१०

अयनांशाः २४/११/४७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	४	२	२	०	११	१०	४
३	८	६	२४	७	१८	७	२८	२८
२८	१४	४३	१८	४४	४३	१४	११	११
३४	३३	५८	२७	१६	४६	५१	४०	४०
५६	८३२	३३	९५	१३	६३	२	३	३
५८	२०	४२	४१	४१	३८	१५	११	११

भौमादीनां चारः
भौमः-मघायां सिंह राशौ। **बुधः**-मिथुने१२ रवितः कर्क राशौ प्रातः ७।५ वादने। **गुरुः**-मृगशिरायां मिथुन राशौ ३ शनितः आर्द्रायाम् दिवा ४।२५ वादने। **शुक्रः**-मेष राशौ। **शनिः**-उ.भा. २ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-पू.भा.३ चरणे। **केतुश्च**-उ.फा. १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

आषाढ़ कृष्ण

लग्नांत ति.वा.	१गु. घं.	मि.	२शु. घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४र. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	५सो. घं.	मि.	६मं. घं.	मि.	७बु. घं.	मि.	८गु. घं.	मि.	९शु. घं.	मि.	११श. घं.	मि.	१२र. घं.	मि.	१३सो. घं.	मि.	१४मं. घं.	मि.	३०बु. घं.	मि.
वृष	५	२२	५	१८	५	१३	५	९	मिथुन	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५
मिथुन	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	कर्क	९	३८	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३
कर्क	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	सिंह	११	५२	११	४८	११	४४	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७
सिंह	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	कन्या	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३४	१	३०
कन्या	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	तुला	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६
तुला	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	वृश्चिक	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चिक	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	धनु	८	४३	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८
धनु	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	मकर	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३
मकर	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	कुम्भ	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५
कुम्भ	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	मीन	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५३
मीन	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	मेष	३	६	३	२	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१
मेष	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	वृष	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ गुरौ–मूले पुंसवनं सीमन्तः, नामकरणं विद्यारम्भः हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं जलयन्त्र कर्म, मुकदमा कार्य, भूमिक्रयः, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ शुक्रे–**पूर्वाषाढ़ायाम् आव. प्रसूति स्नानं विद्यारम्भ धान्यच्छेदनं, जलयन्त्रकर्म मुकदमाकार्य, भूमिक्रयः पूर्वदिग् यात्रा रात्रि १०।५४ वादनात्परं गर्भाधानं ल.११। **तिथि ३ शनौ–**रिक्ता भद्रा दिवा २।२६ वादनात्पूर्व उत्तराषाढ़ायाम् नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ रवौ–**रिक्ता दिवा २।३ वादनात्परं श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः विद्यारम्भ, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः क्रय-विक्रयः लालवस्त्र प्रवालरत्नधारणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं कणमर्दनं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म औषधिसेवनं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ५ सोमे–**धनिष्ठायां आ.प्रसूति स्नानं अन्नप्राशनं कन्यानासिकाच्छेदनं विद्यारम्भः नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं, आवेदन पत्र लेखनं, नूतनवध्वापाककर्म औषधिसेवनं वाहन क्रयः दिवा ११।३५ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ६ भौमे–**भद्रा दिवा ११।५६ वादनात्पूर्व शतभिषायां लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ७ बुधे–**पूर्वाभाद्रपदे विद्यारम्भः धान्यच्छेदनं धान्यरोपणं, जलयन्त्र कर्म मुकदमाकार्यं पशिम दिग् यात्रा। *

पं.१२ आषाढ़ कृष्ण ३० बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८१६

अयनांशाः २४/११/४८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	४	३	२	०	११	१०	४
९	२	१०	३	९	२५	७	२७	२७
१०	४९	७	१८	६	८	२७	५२	५२
१५	१७	८	९	२३	१०	२१	३४	३४
५६	८३६	३४	८२	१३	६४	१	३	३
५५	५१	६	३२	४२	३३	५३	११	११

■ २५ जून बुधवार को होगी। **मिथुन राशि** की सूर्य संक्रान्ति १५ जून रविवार को दिन १।२५ बजे से आयेगी। **आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य** का प्रवेश २२ जून रविवार को दिन १।४५ बजे से होगा। वायुवेग के साथ सामान्य वृष्टि होने की सम्भावना है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आर्द्रा से लेकर आगे की १० नक्षत्र वर्षा कारक होती है। अतः २२ जून से मानसून की वर्षा का प्रारम्भ हो जाना माना जाता है। रविवार की मिथुन संक्रान्ति से भीषण उमस भरी गर्मी पड़ेगी।

* **तिथि ८ गुरौ–**रिक्ता दिवा ८।१८ वादनात्पूर्व उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्राभूषण धारणं हलप्रवहणं, बीजवपनं धान्यच्छेदनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोग, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिकानिर्माणं नूतनवध्वापाककर्म उत्तर दिग् यात्रा रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ९/१० शुक्रे–**रिक्ता प्रातः ६।५ वादनात्परं रेवत्यां भद्रा दिवा ४।२८ वादनात्पूर्व आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं अक्षरारम्भ नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं भूमिक्रयः नूतनबध्वापाकर्मः वाहन क्रयः औषधिनिर्माण सेवनं च उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ११ शनौ–**अश्विन्यां नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ रवौः–**भरण्यां-कृत्तिकायां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १३ सोमे–**भद्रा रात्रि ८।२१ वादनात्पूर्व कृत्तिका दिवा १।५७ वादनात्परं रोहिण्यां आ.प्रसूति स्नानं विपणि व्यापारः आभूषण निर्माण धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं नूतनबध्वा पाककर्म वाहन क्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। **तत्परं रिक्ता मासान्तः।**

राशिफल

मेष- हानिः
वृष- शत्रुभयं
मिथुन- सुखं श्रीः
कर्क- हानिः नेत्रकष्टं
सिंह- पीड़ा भयम्
कन्या- रोगं शोकं
तुला- लाभकरः
वृश्चिक- शोकं
धनु- रोगं
मकर- पाप बुद्धिः
कुम्भ- धनहानि
मीन- सुखार्थ लाभः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ आषाढ़ शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः। दिनांक २६ जून – १० जुलाई सन् २०२५ ई.। (रा.आषाढ़ ५ - १९)

पूर्वदिशायाम् गुरुउदयः ७ जुलाई २०२५

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	आषाढ़ शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३३	५६	**१**	गुरु.	२२	५०	दिन	२	२१	आर्द्रा	१२	२५	दिन	१०	११	ध्रुव	५२	१३	रात	२	६	बव	२२	५०	बा	५१	७
३३	५६	**२**	शुक्र.	१९	२४	दिन	१२	५९	पुनर्वसु	१०	४६	दिन	९	३१	व्याघात	४७	२४	रात	१२	११	कौ	१९	२४	तै	४८	१३
३३	५५	**३**	शनि	१७	२	दिन	१२	२	पुष्य	१०	९	दिन	९	१७	हर्षण	४३	२९	रात	१०	३७	गर	१७	२	व	४६	२७
३३	५५	**४**	रवि	१५	५१	दिन	११	३३	श्लेषा	१०	४३	दिन	९	३०	वज्र	४०	३१	रात	९	२५	वि	१५	५१	बव	४५	५४
३३	५४	**५**	सोम	१५	५८	दिन	११	३६	मघा	१२	३२	दिन	१०	१४	सिद्धि	३८	३५	रात	८	३९	बा	१५	५८	कौ	४६	४२
३३	५३	**६**	मंगल	१७	२६	दिन	१२	११	पूर्वाफा.	१५	३७	दिन	११	२८	व्यतिपात	३७	४१	रात	८	१७	तै	१७	२६	गर	४८	४२
३३	५३	**७**	बुध.	१९	५८	दिन	१	१२	उत्तराफा.	१९	५०	दिन	१	९	वरीयान	३७	३९	रात	८	१७	व	१९	५८	वि	५१	४८
३३	५२	**८**	गुरु.	२३	३९	दिन	२	४२	हस्त	२५	७	दिन	३	१७	परिघ	३८	२५	रात	८	३६	बव	२३	३९	वा	५६	५२
३३	५१	**९**	शुक्र.	२८	६	दिन	४	२८	चित्रा	३१	१०	दिन	५	४२	शिव	३९	४१	रात	९	६	कौ	२८	६	तै	६०	०
३३	५०	**१०**	शनि.	३३	६	सायं	६	२८	स्वाती	३७	४०	रात	८	१८	सिद्ध	४१	२२	रात	९	४७	तै	०	३६	गर	३३	६
३३	४९	**११**	रवि.	३७	५०	रात	८	२२	विशाखा	४४	१०	रात	१०	५४	साध्य	४२	५९	रात	१०	२६	व	५	२८	वि	३७	५०
३३	४८	**१२**	सोम.	४२	४७	रात	१०	२१	अनुराधा	५०	१६	रात	१	२०	शुभ	४४	१७	रात	१०	५७	बव	१०	१८	बा	४२	४७
३३	४६	**१३**	मंगल	४६	४१	रात	११	५५	ज्येष्ठ	५५	४१	रात	३	३१	शुक्ल	४५	५	रात	११	१७	कौ	१४	४४	तै	४६	४१
३३	४५	**१४**	बुध.	४९	३३	रात	१	४	मूल	६०	०	स	म	स्त	ब्रह्म	४५	२	रात	११	१६	गर	१८	७	व	४९	३३
३३	४४	**१५**	गुरु.	५१	२४	रात	१	४९	मूल	०	२	प्रात	५	१६	ऐन्द्र	४४	९	रात	१०	५५	वि	२०	२८	बव	५१	२४

ति.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
१	काण	**२६**	१५	११	५	कर्क	५६	१०	५	१३	६	४७	२३	२३	२	१०	७	१०	५६	५५	+	१	८	४
२	लुम्बक	**२७**	१६	१२	६				५	१३	६	४७	२३	१९	२	११	४	५	५६	५५	+	१	८	५३
३	मित्र	**२८**	१७	१३	७				५	१३	६	४७	२३	१९	२	१२	१	०	५६	५५	+	२	९	३४
४	वज्र	**२९**	१८	१४	८	सिंह	१०	४३	५	१३	६	४७	२३	१६	२	१२	५७	५५	५६	५५	+	२	१०	९
५	ध्वांक्ष	**३०**	१९	१५	९				५	१३	६	४७	२३	१३	२	१३	५४	५०	५६	५४	+	२	१०	४०
६	धूम्र	**१**	२०	१६	१०	कन्या	३१	४०	५	१३	६	४७	२३	९	२	१४	५१	४४	५६	५४	+	२	११	१०
७	प्रवर्धमान	**२**	२१	१७	११				५	१३	६	४७	२३	५	२	१५	४८	३८	५६	५४	+	२	११	३८
८	राक्षस	**३**	२२	१८	१२	तुला	५८	९	५	१४	६	४६	२३	१	२	१६	४५	३२	५६	५४	+	२	१२	७
९	मुसल	**४**	२३	१९	१३				५	१४	६	४६	२२	५६	२	१७	४२	२६	५६	५४	+	३	१२	३८
१०	सिद्धि	**५**	२४	२०	१४				५	१४	६	४६	२२	५१	२	१८	३९	२०	५६	५४	+	३	१	१२
११	उत्पात	**६**	२५	२१	१५	वृश्चिक	२७	३३	५	१४	६	४६	२२	४५	२	१९	३६	१४	५६	५४	+	३	१	५०
१२	मानस	**७**	२६	२२	१६				५	१४	६	४६	२२	३९	२	२०	३३	८	५६	५४	+	३	२	३४
१३	मुद्गर	**८**	२७	२३	१७	धनु	५५	४१	५	१५	६	४५	२२	३३	२	२१	३०	२	५६	५५	+	३	३	२४
१४	ध्वज	**९**	२८	२४	१८				५	१५	६	४५	२२	२६	२	२२	२६	५७	५६	५५	+	३	४	१९
१५	धूम्र	**१०**	२९	२५	१९				५	१५	६	४५	२२	१९	२	२३	२२	५२	५६	५५	+	३	+	+

ति.	
१	कर्कराशिः रात्रि ३।४१ वादने। चन्द्र (दर्शनम् मु.४५ बृहती समर्घताकरम्। सौम्य शृंगम् सुभिक्षं। **गुप्तनवरात्रारम्भः।** सर्वार्थसिद्धियोगः १२।२५ (दि.१०।११) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १२।२५ (दि.१०।११) उ.(क)
२	**मु.मुहर्रम १ हिजरी सन् १४४७। रथयात्रा २।** श्रीराम (जगन्नाथ) कृष्ण बलराम-सुभद्रा रथोत्सवः सर्वत्र विशेषतो जगन्नाथपुर्याम्। काश्यां, श्रीधाम वृन्दावन तथा सर्वत्र रथारुण जगन्नाथ बलराम सुभद्रा पूजनम् रथाकर्षणम्(ख)
३	भद्रा ४६।२७ (रा.११।४८) उ. (मर्त्य)। रवियोगः १०।९ (दि.९।१७) उ.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः १७।२ (दि.१२।२) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १०।९ (दि.९।१७) उ. १७।२ (दि.१२।२) या.।
४	**सिंहराशिः** दिवा ९।३० वादने। भद्रा १५।५१ (दिन ११।३३) या.। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** रवियोगः १०।४३ (दि.९।३०) या.। यमघंट योगः १०।४३ (दि.९।३०) उ.। आर्द्रा नक्षत्रे ३ चरणे रविः दिवा २।३७वादने।
५	दोषसंघविनाशको रवियोगः १२।३२ (दि.१०।१४) उ.। **(ख)** महत् फलम्। उक्तं च-**'रथस्थं ये प्रपश्यन्ति न तेषां जायते विपत्।'** मनोरथ द्वितीया २ (बंगाल)। सर्वार्थसिद्धियोगः १०।४६ (दि.९।३१) या.।
६	**कन्याराशिः** सायं ५।५३ वादने। **श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्।** कार्तिकेय पूजनम्। **कर्दम षष्ठी ६** (बंगाल)। रवियोगः १५।३७ (दि.११।२८) उ.। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः १७।२६ (दि.१२।११) उ.।
७	भद्रा १९।५८ (दि.१।१२) उ. ५१।४८ (रा.१।५६) या. (पाताले)। विवस्वान्व्रत सप्तमी ७। सूर्य पूजनम्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः १९।५८ (दि.१।१२) या.। आर्द्रा नक्षत्रे चतुर्थचरणे रविः रात्रि ३।१३ वादने।
८	**तुलाराशिः** रात्रि ४।३० वादने। **महिषघ्नी व्रतं ८** (देवी भागवत)। रवियोगः २५।७ (दि.३।१७) उ.। **(क)** २२।५० (दि.२।२१) या.।
९	**कन्दर्प नवमी ९।** भड्ली नवमी ९। ऐन्द्री पूजन ९ (भविष्योत्तर पुराण)। रवियोगः यावद्दिनम्।
१०	**गिरिजा पूजा १०।** मन्वादिः १०। सांपपदा १० वेदारम्भणाध्यायः। **आशा दशमी १०। उल्टारथ-पुनर्यात्रा** (पुरी-उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३७।४० (रा.८।१८) या.। रवियोगः ३७।४० (रा.८।१८) या.।
११	**वृश्चिकराशिः** दिवा ४।१५ वादने। भद्रा ५।२८ (दि.७।२५) उ. ३७।५० (रा.८।२२) या. (पाताले-स्वर्गे)। **श्रीहरिशयनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** रात्रौ श्री विष्णु पूजनम् शयनोत्सवःच। **चातुर्मास्य व्रतारम्भः।(ग)**
१२	चातुर्मासयमनियम संयमारम्भः। **शाकं त्याग व्रतारम्भः।** वामन पूजा यज्ञ फल प्राप्ति हेतवः। **वासुदेव द्वादशी १२।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५०।१६ (रा.१।२०) या.। **पूर्व दिशायाम् गुरु उदयः** दिवा ३।० वादने।
१३	**धनुराशिः** रात्रि ३।३१ वादने। **भौम प्रदोष व्रतम् १३।** ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। भौम-जया सिद्धयोगः ४६।४१ (रा.११।५५) या.। रवियोगः ५५।४१ (रा.३।३१) उ.।
१४	भद्रा ४९।३३ (रा.१।४) उ. (पाताले)। **अम्बिका व्रत १४।** चौमासी १४ (जैन), **शिवशयन चतुर्दशी १४** (उड़ीसा)। रवियोगः यावद्दिनम्। यमघंट योगः यावद्दिनम्। **पुनर्वसु २ चरणे रविः** रात्रि शेष ४।५० वादने।
१५	भद्रा २०।२८ (दि.१।२६) या.। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। गुरु पूर्णिमा १५। व्यास पूर्णिमा १५। गुरु व्यासयोः पूजनम्। कोकिला व्रतम् १५।** कोकिला रुपी शिवायाः प्रत्यहं पूजनम्। नक्त भोजनद्यारम्भः।**(घ)**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	गु.	२	१७	२९	५१	४	१०	४१	१४	३४	११	३	४	४०	४१	८०	२८	२	९	२०	५	१३	४०	०	२६	१२	४३	६४	५२	११	७	२९	१४	१	४९	१०	२७	४९	२३
२	शु.	३	१	४९	१४	४	११	१५	२५	३४	१८	३	६	१	९	७६	३९	२	९	३३	४५	१३	४०	०	२७	१७	३५	६५	०	११	७	३१	३	१	४३	१०	२७	४६	१२
३	श.	३	१५	७	२१	४	११	४९	४३	३४	२५	३	७	१७	४८	७३	२५	२	९	४७	२५	१३	४०	०	२८	२२	२५	६५	८	११	७	३२	४६	१	३८	१०	२७	४३	१
४	र.	३	२८	२१	३४	४	१२	२४	८	३४	३१	३	८	३१	१३	७०	५३	२	१०	१	५	१३	३९	०	२९	२७	४३	६५	१४	११	७	३४	२४	१	२८	१०	२७	३९	५०
५	सो.	४	११	१९	६	४	१२	५८	३९	३४	३५	३	९	४२	६	६७	५४	२	१०	१४	४४	१३	३९	१	०	३२	५७	६५	२०	११	७	३५	५२	१	१६	१०	२७	३६	४०
६	मं.	४	२४	२	४८	४	१३	३३	१४	३४	४१	३	१०	५०	०	६५	४०	२	१०	२८	२३	१३	३९	१	१	३८	१७	६५	३३	११	७	३७	८	१	३	१०	२७	३३	२९
७	बु.	५	६	३२	५४	४	१४	७	५५	३४	४६	३	११	५५	४०	६३	१७	२	१०	४२	२	१३	३७	१	२	४३	५०	६५	४१	११	७	३८	११	०	५४	१०	२७	३०	१८
८	गु.	५	१८	५२	२७	४	१४	४२	४१	३४	५०	३	१२	५८	५७	६१	९	२	१०	५५	३९	१३	३७	१	३	४९	३१	६५	५०	११	७	३९	५	०	४४	१०	२७	२७	७
९	शु.	६	१	०	१९	४	१५	१७	३१	३४	५५	३	१४	०	६	५८	५०	२	११	९	१६	१३	३७	१	४	५५	२१	६६	१	११	७	३९	४९	०	३९	१०	२७	२३	५६
१०	श.	६	१३	२	८	४	१५	५२	२६	३५	१	३	१४	५८	५६	५५	४८	२	११	२२	५३	१३	३६	१	६	१	२२	६६	११	११	७	४०	२८	०	३५	१०	२७	२०	४५
११	र.	६	२५	४	३७	४	१६	२७	२७	३५	६	३	१५	५४	४४	५१	३२	२	११	३६	२९	१३	३६	१	७	७	३३	६६	२२	११	७	४१	३	०	३०	१०	२७	१७	३४
१२	सो.	७	७	१२	११	४	१७	२	३३	३५	१४	३	१६	४६	१६	४७	२०	२	११	५०	५	१३	३५	१	८	१३	५५	६६	३६	११	७	४१	३३	०	२६	१०	२७	१४	२३
१३	मं.	७	१९	२५	२९	४	१७	३७	४७	३५	१९	३	१७	३३	३६	४४	५२	२	१२	३	४०	१३	३५	१	९	२०	३१	६६	४९	११	७	४१	५९	०	२०	१०	२७	११	१२
१४	बु.	८	१	५३	१६	४	१८	१३	६	३५	२५	३	१८	१८	२८	४०	१२	२	१२	१७	१५	१३	३५	१	१०	२७	२०	६७	२	११	७	४२	१९	०	१५	१०	२७	८	१
१५	गु.	८	१४	२१	४७	४	१८	४८	३१	३५	३१	३	१८	५८	४०	३७	३१	२	१२	३०	५०	१३	३२	१	११	३४	२३	६७	१५	११	७	४२	३४	०	१०	१०	२७	४	५०

फलम्– यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन गुरुवार शुभ फलकारक हैं। पीतल, सूत, कपड़ा, चावल एवं शक्कर के दामों में मन्दी आयेगी। गुरुवार पुनर्वसु नक्षत्र मिथुन राशि का चन्द्रदर्शन मु.४५ बाजार भाव को नरम करेगा किन्तु फल सब्जी का भाव चढ़ा रहेगा। सृष्टि के पालनहार जगन्नाथ जी की उत्सव अराधना का परम पुनीत पर्व **रथयात्रा** २७ जून शुक्रवार को मनाया जायेगा। बीमारी के बाद स्वस्थ होकर भाई बलराम बहन सुभद्रा के साथ रथ पर सवार होकर भ्रमण पर निकलते हैं। इस पर्व में भगवान के दर्शन पूजन एवं रथ को खींचने पर तथा उसमें सहायता करने वाले पर कोई कष्ट नहीं आता। **श्री हरियशयनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए ६ जुलाई रविवार को होगा। सृष्टि के समस्त जीव-जगत के पालनकर्ता श्रीहरि विष्णु को विधिवत् पूजित कर शयन करा दिया जाता है। भगवान के शयन अवधि चातुर्मास में विवाहादि मांगलिक कार्य स्थगित हो जाते हैं। साधु-सन्त एक जगह स्थिर होकर भजन-कीर्तन प्रवचन इत्यादि धार्मिक कार्य करते हैं। ऋण से छुटकारा पाने के लिए किया जाने वाला **भौम प्रदोष व्रत** ८ जुलाई को होगा। **स्नान-** ■

पं.१३ आषाढ़ शुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८२४
अयनांशाः २४/११/५०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	४	३	२	१	११	१०	४
१६	१८	१४	१२	१०	३	७	२७	२७
४५	५२	४२	५८	५५	४९	३९	३७	२७
३२	२०	४१	५७	३९	३१	५	९	७
५६	७२८	३४	६१	१३	६५	०	३	३
५४	३५	५०	९	३७	५०	४४	११	११

भौमादीनां चारः

भौमः-मघायां सिंह राशौ ५ सोमतः पू.फा. रात्रि ९।५५ वादने। **बुधः**-कर्कराशौ। **गुरुः**-आर्द्रायाम् मिथुन राशौ। **शुक्रः**-मेषराशौ ४ रवितः वृष राशौ सायं ५।३० वादने। **शनिः**-उ.भा. २ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-पू.भा. ३ चरणे **केतुश्च**-उ.फा. १ चरणे।

आषाढ़ शुक्ल

दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ सो घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	१५ गु. घं.	मि.
मिथुन	६	४१	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६
कर्क	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४
सिंह	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८
कन्या	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३९	१२	३५	१२	३१
तुला	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७
वृश्चिक	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९
मकर	९	४९	९	४६	९	४८	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४
कुम्भ	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२६
मीन	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५४
मेष	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२
वृष	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ गुरौ**–आर्द्रायाम् पुंसवनं सीमन्तः अक्षरारम्भः मुकदमा कार्यं दिवा १०।११ वादनात्परं पुनर्वसौ नामकरणं अन्नप्राशनं गवां क्रयविक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं वाहनक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि २ शुक्रे**–दिवा ९।३१ वादनात्परं पुष्ये जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्राभूषण धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः जलयंन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं भूमिक्रयः सेवारम्भः वाहन क्रयः पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ३ शनौ**–पुष्ये नीलमादिरत्न कृष्णवस्त्र धारणं पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा ९।१७ वादनात्परं श्लेषायां शस्त्र निर्माण, उग्रकर्माचरणं। **तिथि ४ रवौ**–रिक्ता-भद्रा व्याप्तिः। रिक्ता दिवा ११।३३ वादनात्परं मघायां जलयन्त्र कर्म। **तिथि ५ सोमे**–मघायां जलयन्त्रकर्म शय्यासनाद्युपभोग दिवा १०।१४ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूति स्नानं धान्यच्छेदनं कणमर्दनं धान्यस्थापनं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ६ भोमे**–पूर्वाफाल्गुन्यां उग्रकर्माचरण इष्टिकादहनं दिवा ११।२८ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्त प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं। **तिथि ७ बुधे**–भद्रा दिवा १।१२ वादनात्पूर्व उत्तराफाल्गुन्यां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ गुरौ**–हस्त *

पं.१४ आषाढ़ शुक्ल१५ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८३१
अयनांशाः २४/११/५१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	४	३	२	१	११	१०	४
२३	१४	१८	१८	१२	११	७	२७	२७
२३	२१	४८	५८	३०	३४	४२	४	४
५२	४७	३१	४०	५०	२३	३४	५०	५०
५६	७३२	३५	३७	१३	६७	०	३	३
५५	३६	३१	३१	३२	१५	१०	११	११

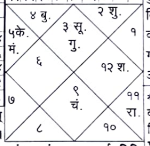

(ग) अत्र सोपवांसं निशिघटोपरि श्रीहेमवासुदेव पूजनम् पर दिने दानम् च ◉ **पुनर्वसु नक्षत्रे रविः** २६।१० (दि.३।३२)। स्त्री-नपुं, चन्द्र-सूर्य योगौ, अश्व वाहनं चण्डा नाड़ी तदीशो शनिः स्वल्प वृष्टियोगः। **मु. पर्व मुहर्रम (ताजिया)**। रवियोगः २६।१० (दि.३।३२) उ.। **(घ) आषाढ़ी पूर्णिमा १५**। सायं काले सर्व धान्यानाम् अधिवासनम्। वायुपरीक्षण। गो गोमयेन गृहगोठनम्। आषाढ़ी योगः। **बौद्धधर्म चक्र प्रवर्तन दिवसः** (सारनाथ-काशी)। **मन्वादिः**। कर्णघण्टा (काश्यां) कनखलयोः (हरिद्वारे) स्नानम्। फूल बंगला महोत्सवः समाप्ति (वृन्दावन)।

■ **दान** एवं व्रत के लिए पूर्णिमा १० जुलाई गुरुवार को होगी। **गुरु पूर्णिमा** का पर्व भी १० जुलाई गुरुवार को मनाया जायेगा। श्रद्धालु शिष्यजन अपने-अपने गुरुजनों को ब्रह्मा विष्णु महेश के सदृश मानते हुए अपनी श्रद्धा के अनुरूप उनकी पूजा करते है तथा उपहार आदि चढ़ाते हैं। पुराण सहित समस्त धार्मिक विद्या के प्राप्त साहित्य-सम्पदा के जनक के रूप में आदिगुरु व्यास मुनि की पूजा की जायेगी। काशी स्थित व्यास मन्दिर में विशेष रूप से दर्शन पूजन का विधान है। आज के दिन गाय के गोबर से अपने घर को गोंठ देने से सर्पों का भय नहीं रहता। **पुनर्वसु नक्षत्र** का सूर्य ६ जुलाई रविवार को दिन ३।३२ बजे से आवेगा। जल लग्न की राशि में नक्षत्र का प्रवेश अच्छी वृष्टि कराने की सम्भावना बना रहा है।

* नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शल्यकर्म वाहनक्रयः हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ शुक्रे**–चित्रायां--रोगविमुक्त स्नानं। **तिथि १० शनौ**–स्वात्यां नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्रधारणं। **तिथि ११ रवौ**–भद्रा दि. ७।२५ वादनात्पूर्व विशाखायां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं शस्त्रघटनं। **तिथि १२ सोमे**–अनुराधायां गर्भाधानं आ.प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं वाहन क्रयः दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि १३ भौमे**–ज्येष्ठायां शस्त्रघटनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि १४ बुधे**–मूले रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १५ गुरौ**–भद्रा दिवा १।२६ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य भूमिक्रयः पूर्वदिग् यात्रा।

राशिफल

मेष-	सुखम् श्रीः
वृष-	हानिः भयम्
मिथुन-	स्थान परिवर्तन
कर्क-	पीड़ा भयम्
सिंह-	वित्ताप्तिः
कन्या-	सौख्यं
तुला-	पापबुद्धिः
वृश्चिक-	रोगभयं
धनु-	गमनम् हानिः
मकर-	रिपुनाशः
कुम्भ-	अर्थनाशः
मीन-	रोगं, अपमानं

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ श्रावण कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्य गोलः ग्रीष्म ऋतुः। कर्कार्कतः याम्यायनं वर्षा ऋतुः।
दिनांक ११ - २४ जुलाई सन् २०२५ ई.। (रा. आषाढ़२० - श्रावण २)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	श्रावण कृ. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
३३	४३	१	शुक्र.	५१	४९	रात	१	५९	पूर्वाषाढ़ा	३	१६	दिन	६	३३	वैधृति	४२	१२	रात	१०	८	बा	२१	३६	कौ	५१	४९	प्रवर्धमान	११	१	२६	२०	मकर	१८	४५	५	१५	६	४५	२२	११	२	२४	२०	४७	५६	५५	+	३	७	३४	मकरराशिः दिवा १२।४५ वादने। फसली श्रावण मासारम्भः। 'श्रावणं वर्जयेच्छाकम्।' मासपर्यन्तम् श्रीकाशी विश्वनाथाय नित्य गंगाजल विल्व पत्रार्पणम् पार्थिवार्चनम् च। शुक्र–नन्दा सिद्धयोगः ५१।४९ (रा.१।५९) या.।
३३	४१	२	शनि.	५०	५८	रात	१	३९	उत्तराषा.	५	१३	दिन	७	२१	विष्कुम्भ	३९	१५	रात	८	५८	तै	२१	२३	गर	५०	५८	राक्षस	१२	२	२७	२१				५	१६	६	४४	२२	३	२	२५	१७	४२	५६	५६	+	३	८	१६	चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीयायाम् अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.८।१६) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। चातुर्मासे विधेयम्। श्रीलक्ष्मी युतं विष्णु पर्यंक पूजनादक्षयदाम्पत्य सुख प्राप्ति हेतवः। प्रार्थना मन्त्रः– "पत्नी भर्तृवियोगञ्च भवे(क)
३३	४०	३	रवि.	४८	५५	रात	१२	५०	श्रवण	५	५४	दिन	७	३८	प्रीति	३५	१९	रात	७	२४	व	१९	५६	वि	४८	५५	गद	१३	३	२८	२२	कुंभ	३५	३८	५	१६	६	४४	२१	५५	२	२६	१४	३८	५६	५६	+	४	८	५४	कुम्भराशिः रात्रि ७।३१ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। भद्रा १९।५६ (दि.१।१४) उ. ४८।५५ (रा.१२।५०) या. (पाताले-मर्त्ये)। पुनर्वसु ३ चरणे रविः दिवा ४।१४ वादने। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५।५४ (दि.७।२८)उ.
३३	३८	४	सोम	४५	४८	रात	११	३५	धनिष्ठा	५	२३	दिन	७	२५	आयुष्यमान	३०	३०	दिन	५	२८	बव	१७	२१	बा	४५	४८	शुभ	१४	४	२९	२३				५	१६	६	४४	२१	४६	२	२७	११	३४	५६	५६	+	४	९	२९	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.९।२९) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। श्रावण सोमवार व्रतम्। प्रदोष व्रत वदस्य विधिः। सायं उमामहेश्वर पूजनम्। (ख) ४८।५५ (रा.१२।५०) या.।
३३	३६	५	मंगल.	४१	४२	रात	९	५८	शतभि	३	४९	दिन	६	४९	सौभाग्य	२४	५३	दिन	३	१४	कौ	१३	४५	तै	४१	४२	मृत्यु	१५	५	३०	२४	मीन	४७	४	५	१७	६	४३	२१	३७	२	२८	८	३०	५६	५७	+	४	१०	२	मीनराशिः रात्रि १२।१७ वादने। नाग पंचमी (मरुस्थले)। भौम व्रतम्, दुर्गा यात्रा, हनुमद्दर्शनम्।
३३	३५	६	बुध	३६	४८	रात	८	०	पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद	१ ५६	२८ ५१	प्रातः	५ ४	५२ ३६	शोभन	१८	३४	दिन	१२	४३	गर	९	१५	व	३६	४८	पद्म	१६	६	३१	२५				५	१७	६	४३	२१	२८	२	२९	५	२७	५६	५७	+	४	१०	३५	भद्रा ३६।४८ (रा.८।०) उ. (मर्त्ये)। ⊙सं.पुनर्वसु ४ चरणे कर्क राशौ रविः ५७।५० (रा.४।२५)। मु.४५ वृहती समर्घताकरम्। परदिने पुण्यकालः। निरयण याम्यायनं (दक्षिणायणे सूर्यः) वर्षा ऋतु प्रारम्भः। वर्ष विश्वा १२, समताकरम्(ग)
३३	३३	७	गुरु.	३१	१६	दिन	५	४७	रेवती	५४	३८	रात	३	८	अतिगण्ड	११	४०	दिन	९	५७	वि	४	२	बव बा	३१ ५८	१६ ४८	मित्र	१७	७	१	२६	मेष	५४	३८	५	१७	६	४३	२१	१८	३	०	२	२४	५६	५८	+	४	११	१०	मेषराशिः रात्रि ३।८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ४।१२ (दि.६।५४) या.। शीतला सप्तमी ७। कालाष्टमी ८ रात्रौ पूजनम्। संक्रान्ति जन्य पुण्यकालः। मध्याह्नं यावत्। सौर श्रावण मासारम्भः। सर्वार्थसिद्धियोगः(घ)
३३	३१	८	शुक्र.	२५	२०	दिन	३	२६	अश्विनी	५०	३३	रात	१	३१	सुकर्मा धृति	४ ५२	२२ २९	प्रातः	७ ४	३ ३	कौ	२५	२०	तै	५२	१५	वज्र	१८	८	२	२७				५	१८	६	४२	२१	८	३	०	५९	२३	५६	५८	+	४	११	४८	मंगला गौरी पूजनम्। मन्वादिः ८। सर्वार्थसिद्धियोगः ५०।३३ (रा.१।३१) या.। (घ) यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३१।१६ (दि.५।४७) या.।
३३	२९	९	शनि.	१९	११	दिन	१२	५८	भरणी	४६	२२	रात	११	५१	शूल	४९	१२	रात	१२	५९	गर	१९	११	व	४६	२	ध्वांक्ष	१९	९	३	२८				५	१८	६	४२	२०	५८	३	१	५६	२१	५६	५९	+	४	१२	३१	भद्रा ४६।२ (रा.११।४३) उ. (स्वर्गे)। पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः। शनि रिक्ता समायोग सिद्धयोगः १९।११ (दि.१२।५८) या.। यायि (मुद्दई) जयद् (ङ) योगः ३८।२५ (रा.८।४१) या.।
३३	२७	१०	रवि.	१२	५६	दिन	१०	२९	कृत्तिका	४२	१६	रात	१०	१३	गण्ड	४१	३७	रात	९	५८	वि	१२	५६	बव	३९	५४	धूम्र	२०	१०	४	२९	वृष	०	२०	५	१९	६	४१	२०	४७	३	२	५३	२०	५७	०	+	४	१	२१	वृषराशिः प्रातः ५।२७ वादने। भद्रा १२।५६ (दि.१०।२९) या.। ⊙ पुष्य नक्षत्रे रविः १८।३० (दि.४।४३)। स्त्री-पु., चन्द्र-चन्द्र योगे, चातक वाहनं चण्डा नाड़ी तदीशो शनिः वायुवेगेन सामान्य वृष्टि योगः।
३३	२५	११	सोम.	६	५२	दिन	८	४	रोहिणी	३८	२५	रात	८	४१	वृद्धि	३४	१६	रात	७	१	बा	६	५२	कौ	३४	२	प्रवर्धमान	२१	११	५	३०				५	१९	६	४१	२०	३६	३	३	५०	२०	५७	०	+	४	२	१८	श्रावण सोमवार व्रतम्। प्रदोष व्रत वदस्य विधिः। सायं उमामहेश्वर पूजनम्। कामदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।२५ (रा.८।४१) या.। तदुपरि सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगः। यायि (मुद्दई) जयद्(ङ)
३३	२३	१२ १३	मंगल.	१ ५४	१२ ५०	प्रात	५ ३	४८ ४४	मृगशिरा	३५	३	रात	७	२०	ध्रुव	२७	१६	दिन	४	१३	तै	१	१२	गर व	२७ ५४	५६ ५०	राक्षस	२२	१२	६	३१	मिथुन	६	४४	५	१९	६	४१	२०	२४	३	४	४७	२०	५७	१	+	४	३	२२	मिथुनराशिः दिवा ८।१ वादने। भद्रा ५४।५० (रा.३।४४) उ. (स्वर्गे)। भौम प्रदोष व्रतम्। ऋणमोचणाय श्रेयस्करम्। भौमव्रतम्, दुर्गा यात्रा, हनुमद्दर्शनम्। भौम-जया सिद्धयोगः १।१२ (प्रातः ५।४८) उ. ५४।५० (रा.३।४४) या.।
३३	२१	१४	बुध.	५१	४२	रात	२	१	आर्द्रा	३२	२१	सायं	६	१६	व्याघात	२०	५०	दिन	१	४०	वि	२३	१६	श	५१	४२	मुसल	२३	१३	७	१				५	२०	६	४०	२०	१२	३	५	४४	२१	५७	२	+	४	४	२८	भद्रा २३।१६ (दि.२।३८) या.। मासशिवरात्रि व्रतम् १४। राष्ट्रीय श्रावण मासारम्भः। पुष्य २ चरणे रविः रात्रि शेष ५।० वादने। (च) तदुपरि गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगः।
३३	१९	३०	गुरु.	४८	१०	रात	१२	३६	पुनर्वसु	३०	२९	दिन	५	३२	हर्षण	१५	४	दिन	११	२२	च	१९	५६	ना	४८	१०	सिद्धि	२४	१४	८	२	कर्क	१५	५७	५	२०	६	४०	२०	०	३	६	४१	२३	५७	३	+	४	+	+	कर्कराशि दिवा ११।४३ वादने। स्नानदानश्राद्धादौ अमा पुण्यतमा ३०। हरियाली अमावस्या ३०। पिठोरा व्रतम् ३०। मन्वादिः ३०। स्वामी अखण्डानन्द जयन्ती ३०। सर्वार्थसिद्धियोगः ३०।२९ (दि.५।३२)या.।(च)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति (वक्री)		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	शु.	८	२७	४२	११	४	१९	२४	२	३५	३८	३	१९	३६	११	३१	२५	२	१२	४४	२२	१३	३०	१	१२	४१	३८	६७	२६	११	७	४२	४४	०	६	१०	२७	१	४०
२	श.	९	१०	३८	५४	४	१९	५९	४०	३५	४५	३	२०	७	३६	२५	४३	२	१२	५७	५२	१३	२७	१	१३	४९	४	६७	३६	११	७	४२	५०	०व	५	१०	२६	५८	२९
३	र.	९	२३	५०	१६	४	२०	३५	२५	३५	५१	३	२०	३३	१९	१९	२८	२	१३	११	१९	१३	२७	१	१४	५६	४०	६७	४२	११	७	४२	४५	०	११	१०	२६	५५	१८
४	सो.	१०	७	१६	३२	४	२१	११	१६	३५	५५	३	२०	५२	४७	१७	१३	२	१३	२४	४६	१३	२६	१	१६	४	२२	६७	४५	११	७	४२	३४	०	१६	१०	२६	५२	७
५	मं.	१०	२१	२	४५	४	२१	४७	११	३५	५९	३	२१	१०	०	१४	३५	२	१३	३८	१२	१३	२६	१	१७	१२	७	६७	५०	११	७	४१	१८	०	२२	१०	२६	४८	५६
६	बु.	११	४	५०	४	४	२२	२३	१०	३६	४	३	२१	२४	३५	८	४४	२	१३	५१	३८	१३	२४	१	१८	१९	५७	६७	५६	११	७	४०	५६	०	२६	१०	२६	४५	४५
७	गु.	११	१८	५२	३६	४	२२	५९	१४	३६	६	३	२१	३३	१९	५व	१५	२	१४	५	२	१३	२४	१	१९	२७	५३	६८	२	११	७	४०	३०	०	२९	१०	२६	४२	३४
८	शु.	०	२	१	१०	४	२३	३५	२०	३६	११	३	२१	२८	४	७	५५	२	१४	१८	२६	१३	२१	१	२०	३५	५५	६८	९	११	७	४०	१	०	३४	१०	२६	३९	२३
९	श.	०	१६	११	३४	४	२४	११	३१	३६	१५	३	२१	२०	९	८	२४	२	१४	३१	४७	१३	१७	१	२१	४४	४	६८	२०	११	७	३९	२७	०	३८	१०	२६	३६	१२
१०	र.	०	२९	४०	२२	४	२४	४७	४६	३६	२०	३	२१	११	४५	१०	१३	२	१४	४५	४	१३	१६	१	२२	५२	२४	६८	२८	११	७	३८	४९	०	४१	१०	२६	३३	१
११	सो	१	१३	४६	३९	४	२५	२४	६	३६	२३	३	२१	१	३२	१५	१०	२	१४	५८	२०	१३	१४	१	२४	०	५२	६८	३३	११	७	३८	८	०	४५	१०	२६	२९	५०
१२	मं.	१	२७	४६	५	४	२६	०	२९	३६	२७	३	२०	४६	२२	१८	३४	२	१५	११	३४	१३	१०	१	२५	९	२५	६८	४१	११	७	३७	२३	०	४८	१०	२६	२६	३९
१४	बु.	२	११	४५	३०	४	२६	३६	५६	३६	३०	३	२०	२७	४८	२१	२२	२	१५	२२	४४	१३	७	१	२६	१८	६	६८	४८	११	७	३६	३५	०	५१	१०	२६	२३	२८
३०	गु.	२	२५	२७	५१	४	२७	१३	२६	३६	३४	३	२०	६	२६	२५	४१	२	१५	३७	५१	१३	५	१	२७	२६	५४	६८	५४	११	७	३५	४४	०	५६	१०	२६	२०	१७

फलम्– त्रयोदशी तिथि का क्षय हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। सावन के महीने में प्रतिदिन भोले-शंकर भगवान को जल चढ़ाकर बेलपत्र अर्पण करने से उनकी विशेष अनुकम्पा प्राप्त होती है। सावन का प्रत्येक सोमवार शिवाराधना के लिए विशेष पुण्यफलदायक होता है। चातुर्मास प्रारम्भ होने के बाद यह पहला महीना आता है। इसमें चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया तिथि में **अशून्य शयन का व्रत** किया जाता है। शास्त्र में कहा गया है कि इस व्रत को करने से पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन अक्षुण अर्थात् लम्बी अवधि तक बना रहता है। इसका मान १२ जुलाई शनिवार को होगा। चन्द्रोदय रात ८।१६ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। सर्वविदित है कि सावन का महीना देवाधिदेव भगवान शिव का अत्यन्त प्रिय महीना है। इसकी व्याख्या विद्वान मनीषी साधुसन्त अनेक प्रकार से करते हैं। देश भर में विशेष कर उत्तर-भारत में काँवरियें गंगा स्नान कर कॉवर में लटकते पात्र में गंगा जल भरकर बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक करते हैं। काँवरियों के '**बोल बम्**' उद्घोष से वातावरण शिवमय हो जाता है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान १४ जुलाई सोमवार को होगा। चन्द्रोदय रात ९।२९ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। कृष्ण पक्ष की शीतला सप्तमी १७ जुलाई गुरुवार को पड़ेगी। **कामदा एकादशी व्रत** का मान सबके लिए २१ जुलाई सोमवारको होगा। ऋण से छुटकारा पाने की कामना से **भौम प्रदोष** का व्रत २२ जुलाई को किया जायेगा। सावन की **मास शिवरात्रि शिव पूजन** में विशेष महत्त्वपूर्ण □

पं.१५ श्रावण कृ.८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८३९
अयनांशाः २४/११/५२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	४	३	२	१	११	१०	४
०	२	२३	२१	१४	२०	७	२६	२६
५९	१	३५	२८	१८	३५	४०	३९	३९
२३	१०	२०	४	२६	५५	१	२३	२३
५६	८५०	३६	७ ५५	१३	६८	० ३४	३	३
५८	२५	११	व	२१	९	व	११	११

भौमादीनां चारः
भौमः-पू.फा. सिंहराशौ १४ बुधतः उ.फा. प्रातः ८।१५। **बुधः**-कर्क राशौ ७ गुरुतः वक्री। **गुरुः**-आर्द्रायाम् मिथुनराशौ। **शुक्रः**-वृष राशौ। **शनिः**-उ.भा. २ चरणे २ शनितः वक्री। **राहुः**-पू.भा. ३ चरणे **केतुश्च** उ.फा.१ चरणे७ गुरुतः। **राहु**-पू.भा. २ चरणे। **केतुश्च** पू.फा. ४ चरणे।

श्रावण कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१शु. घं.	मि.	२श. घं.	मि.	३र. घं.	मि.	४सो. घं.	मि.	५मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.
मिथुन	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३
कर्क	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४१
सिंह	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४
कन्या	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७
तुला	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३
वृश्चिक	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५
मकर	८	५०	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१
कुम्भ	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२
मीन	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०
मेष	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८
वृष	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५

लग्नांत ति.वा.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	९श. घं.	मि.	१०र. घं.	मि.	११सो घं.	मि.	१२मं. घं.	मि.	१४बु. घं.	मि.	३०गु. घं.	मि.
कर्क	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९
सिंह	९	५०	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३
कन्या	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	४०	११	३६
तुला	२	१९	२	१५	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२
वृश्चिक	४	३६	४	३२	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९
धनु	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मकर	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९
कुम्भ	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३१
मीन	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८
मेष	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७
वृष	३	१	२	५७	२	५३	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४
मिथुन	५	१७	५	१३	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५१	४	४७

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शुक्रे**–दिवा ६।३३ वादनात्परं उत्तराषा. गर्भाधान (रात्रौ) आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं (ति.दा.) विपणि व्यापार, नववस्त्रभूषणधारणं, आभूषण निर्माण धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं चूल्हीस्थापनं वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्र लेखनं, नूतनवध्वापाक मुहूर्त्त पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ शनौ**–उ.षा.-श्रवणे, इष्टिका निर्माणं, सर्वदेवप्रतिष्ठा ल.गोधूलि, नूतनवध्वा पाककर्म, नीलमादिरत्न, कृष्णवस्त्रधारणं श्रवणे दिग् शूल विहाय, सर्वदिग् गमनम्। **तिथि ३ रवौ**–श्रवणे पुंसवन सीमन्तः, गवां क्रयविक्रयः, दीक्षाग्रहणं, लालवस्त्र, प्रवाल रत्न धारणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, कर्णमर्दन, आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, शल्यकर्म, सर्वदेवप्रतिष्ठा, श्रवणे दिग्शूल विहाय सर्वदिग् गमनम्। दिवा ७।३८ वादनात् परं धनिष्ठायां गर्भाधानं, प्रसूति स्नानं, विद्यारम्भः, वाद्यारम्भः, गवां क्रयविक्रय, दीक्षा ग्रहणं, लालवस्त्र, प्रवालरत्न धारणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, नृत्यारम्भ, दत्तक पुत्र ग्रहणं, आवेदनपत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनम्। **तिथि ४ सोमे**–रिक्ता रात्रि ११।३५ वादनात्परं शतभिषायां गर्भाधान। **तिथि ५ भौमे**–सायं ६।४९ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं इष्टिका दहनं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ६ बुधे**–प्रातः ५।५२ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे जातकर्म नामकरणं विपणिव्यापारः नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं-बीजवपनं धान्यच्छेदनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ७ गुरौ**–भद्रा *

पं.१६ श्रावण कृ.३० गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८४५
अयनांशाः २४/११/५३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	४	३	२	१	११	१०	४
६	२५	२७	२०	१५	२७	७	२६	२६
४१	२७	१३	६	३७	२६	३५	२०	२०
२३	५१	२६	२६	५१	५४	४४	१७	१७
५७	८२२	३६	२५ ४१	१३	६८	०	३	३
३	५६	३४	व	५	५४	५६ व	११	११

(क) भार्या समुद्भवम्। नाप्नुवन्ति यथा दुःखं दाम्पत्यानि तथा कुरु।" सर्वार्थसिद्धियोगः ५।१३ (दि.७।२१)उ.। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः ५।१३ (दि.७।२१) या.। **(ग)** गंगायाम् मन्दाकिन्यां स्नानम्, गोघृत दानम्। दैत्यानाम् दिनम् देवानां च रात्रिः। **मनसा पूजा प्रारम्भः** (झारखण्ड-बंगाल), कर्क संक्रान्तिः विधेयम्। कर्के केश निकृन्तम् वर्ज्यम्। रवियोगः १।२८ (प्रातः ५।५२) उ.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ३६।४८ (रा.८।०)उ.।

□होती है, इसका मान २३ जुलाई बुधवार को होगा। स्नान दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या २४ जुलाई गुरुवार को है। सावन की अमावस्या को **हरियाली अमावस्या** भी कहते है। कर्क राशि की सूर्य संक्रान्ति १६ जुलाई बुधवार को रात ४।२५ बजे से आयेगी और इसी के साथ सूर्य दक्षिणाय हो जायेंगे। **पुष्य नक्षत्र का सूर्य** २० जुलाई रविवार को दिन ४।४३ बजे से आयेगा। इसमें सामान्य से अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना है।

* दिवा ६।५४ वादनात्परं रेवत्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं दीक्षाग्रहणं हलप्रहवणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्र धारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं भूमिक्रयः औषधिनिर्माणं सेवनं च वाहनक्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ८ शुक्रे**–अश्विन्यां विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणः आभूषण निर्माण धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं रिक्ता दिवा ३।२६ वादनात्पूर्व दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ शनौ**–भरण्यां रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं, इष्टिका दहनं दिवा १२।५८ वादनात्परं रिक्तोतरे उग्रकर्माचरणं। **तिथि १० रवौ**–भद्रा दिवा १०।२९ वादनात्परं कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि ११ सोमे**–रोहिण्यां मृगशिरायां रात्रौ गर्भाधानं आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशन, विपणिव्यापार, आभूषण निर्माण धारणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, कणमर्दनं धान्यरोपण, चूल्हीस्थापनं, वृक्षरोपण, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्र लेखनं, दीक्षाग्रहणं, **जीर्णादि गृहप्रवेश ल.६**, वाहनक्रय, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १२/१३ भौमे**–पुंसवन सीमन्तः, प्रसूति स्नानं, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, शल्यकर्म, दक्षिण दिग्यात्रा दिवा ८।१ वादनात् परं पश्चिम दिग्यात्रा। **तिथि १४ बुधे**–रिक्ता व्याप्तिः। तत्परं **मासान्तः दोषः**।

राशिफल

मेष-	धनप्राप्तिः
वृष-	सुखं शत्रुनाशः
मिथुन-	धनागमः
कर्क-	दुःखम्
सिंह-	धर्माचरणं
कन्या-	सुखलाभः
तुला-	विपत्तिः
वृश्चिक-	शोकः
धनु-	शत्रुपीड़ा
मकर-	पुत्रोन्नति
कुम्भ-	धनलाभः
मीन-	अर्थागमः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ श्रावण शुक्ल पक्षः

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। दिनांक २५ जुलाई - ९ अगस्त सन् २०२५ ई. (रा.श्रावण ३ - १८)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३३	१६	१	शुक्र	४५	४२	रात	११	३८	पुष्य	२९	३७	दिन	५	१२	वज्र	१०	३	दिन	९	२२	किं	१६	५६	बव	४५	४२
३३	१४	२	शनि	४४	२८	रात	११	८	श्लेषा	२९	५२	दिन	५	१८	सिद्धि	५	५२	दिन	७	४२	बा	१५	५	कौ	४४	२८
३३	१२	३	रवि	४४	३०	रात	११	१०	मघा	३१	२३	सायं	५	५५	व्यतिपात	२	४२	दिन	६	२७	तै	१४	२९	गर	४४	३०
३३	९	४	सोम	४५	५२	रात	११	४३	पूर्वाफा.	३४	१२	रात	७	३	वरीयान / परिघ	० / ५८	३२ / ५३	प्रातः	५ / ५	३५ / ८	व	१५	११	वि	४५	५२
३३	७	५	मंगल	४८	१८	रात	१२	४२	उत्तराफा.	३८	८	रात	८	३८	शिव	५९	७	रात	५	२	बव	१७	५	बा	४८	१८
३३	४	६	बुध.	५१	५७	रात	२	१०	हस्त	४३	१२	रात	१०	४०	सिद्ध	५९	४४	रात	५	१७	कौ	२०	८	तै	५१	५७
३३	२	७	गुरु.	५६	२३	रात	३	५७	चित्रा	४९	५	रात	१	२	साध्य	६०	०	स	म	स्त	गर	२४	१०	व	५६	२३
३२	५९	८	शुक्र.	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	५५	२९	रात	३	३६	साध्य	०	५३	प्रातः	५	४५	वि	२९	५२	बव	६०	०
३२	५६	८	शनि.	१	२१	दिन	५	५७	विशाखा	६०	०	स	म	स्त	शुभ	२	२६	दिन	६	२३	बव	१	२१	बा	३४	१
३२	५४	९	रवि.	६	४०	दिन	८	५	विशाखा	२	१	दिन	६	१३	शुक्ल	४	६	दिन	७	३	कौ	६	४०	तै	३८	५२
३२	५१	१०	सोम.	११	५	दिन	९	५२	अनुरा.	८	१४	दिन	८	४४	ब्रह्म	५	२७	दिन	७	३७	गर	११	५	व	४३	६
३२	४८	११	मंगल	१५	७	दिन	११	२९	ज्येष्ठा	१३	३५	दिन	१०	५२	ऐन्द्र	६	१८	दिन	७	५७	वि	१५	७	बव	४६	३७
३२	४५	१२	बुध.	१८	६	दिन	१२	४०	मूल	१८	२३	दिन	१२	४७	वैधृति	६	२५	दिन	८	०	बा	१८	६	कौ	४९	२
३२	४३	१३	गुरु.	१९	५९	दिन	१	२६	पूर्वाषाढ़ा	२१	५३	दिन	२	१२	विषकुम्भ	५	३९	दिन	७	४३	तै.	१९	५९	गर	५०	१६
३२	४०	१४	शुक्र.	२०	३३	दिन	१	४०	उत्तराषा.	२४	७	दिन	३	६	प्रीति	३	५३	दिन	७	०	व	२०	३३	वि	५०	१०
३२	३७	१५	शनि.	१९	४८	दिन	१	२३	श्रवण	२५	३	दिन	३	२९	आयुष्मान / सौभाग्य	१ / ५६	७ / १२	प्रातः	५ / ४	५५ / २४	बव	१९	४८	वा	४८	५०

ति.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
१	उत्पात	२५	१५	९	३				५	२१	६	३९	१९	४७	३	७	३८	२६	५७	३	+	४	७	२७
२	मानस	२६	१६	१०	४	सिंह	२९	५२	५	२१	६	३९	१९	३५	३	८	३५	३०	५७	४	+	४	८	५
३	मुद्गर	२७	१७	११	५				५	२२	६	३८	१९	२२	३	९	३२	३४	५७	५	+	४	८	३८
४	ध्वज	२८	१८	१२	६	कन्या	५०	१०	५	२२	६	३८	१९	८	३	१०	२९	३९	५७	६	+	४	९	९
५	धाता	२९	१९	१३	७				५	२३	६	३७	१८	५४	३	११	२६	४५	५७	७	+	४	९	३८
६	आनन्द	३०	२०	१४	८				५	२३	६	३७	१८	४०	३	१२	२३	५२	५७	८	+	४	१०	६
७	चर	३१	२१	१५	९	तुला	१६	८	५	२४	६	३६	१८	२५	३	१३	२१	०	५७	९	+	४	१०	३७
८	गद	१	२२	१६	१०				५	२४	६	३६	१८	११	३	१४	१८	९	५७	१०	+	४	११	९
८	शुभ	२	२३	१७	११	वृश्चिक	४५	२३	५	२५	६	३५	१७	५६	३	१५	१५	१९	५७	११	+	४	११	४६
९	उत्पात	३	२४	१८	१२				५	२५	६	३५	१७	४०	३	१६	१२	३०	५७	१२	+	४	१२	२७
१०	मानस	४	२५	१९	१३				५	२६	६	३४	१७	२५	३	१७	९	४२	५७	१३	+	४	१	१५
११	मुद्गर	५	२६	२०	१४	धनु	१३	३५	५	२६	६	३४	१७	१०	३	१८	६	५५	५७	१५	+	४	२	७
१२	ध्वज	६	२७	२१	१५				५	२६	६	३४	१६	५३	३	१९	४	१०	५७	१६	+	४	३	६
१३	धाता	७	२८	२२	१६	मकर	३७	२७	५	२७	६	३३	१६	३६	३	२०	१	२६	५७	१७	+	४	४	७
१४	आनन्द	८	२९	२३	१७				५	२७	६	३३	१६	१९	३	२०	५८	४३	५७	१८	+	४	५	१०
१५	स्थिर	९	३०	२४	१८	कुम्भ	५४	५५	५	२८	६	३२	१६	२	३	२१	५६	२	५७	२०	+	४	+	+

श्रीविष्णु शिवात्मिकाभिषेकारम्भः। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ४५।४२ (रा.११।३८) या.। **(क)** रवियोगः ३१।२३ (सा.५।५५) उ.। **पुष्य ३ चरणे रविः** सायं ५।२२ या.।

सिंहराशि दिवा ५।१८ वादने। **चन्द्र ◡ दर्शनम्** मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **धर्मसम्राट स्वामी करपात्रि जयन्ती २।** श्रृंगार व्रतम् २ (सिंधारा)। रोटक व्रतं। **(ख)** विधिः सायं उमामहेश्वर पूजनम्।

मु.सफर २ हिजरी सन् १४४७। मधुश्रवा तृतीया ३ (पश्चिमे प्रसिद्धः)। **हरियाली तीज ३। श्रावणी तीज ३। कजरी तीज ३।** स्वर्ण गौरी व्रतम् ३ ठकुराईन जयन्ती सुकृत व्रतम् ३। यमघंट योगः ३१।२३ (सा.५।५५)या.।**(क)**

कन्याराशिः रात्रि १।२६ वादने। भद्रा १५।११ (दि.११।२६) उ. ४५।५२ (रा.११।४३) या. (मर्त्ये)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** रवियोगः ३४।१२ (रा.७।३) या.। **श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य**(ख)**

श्रीनागपंचमी ५। "नागानामानन्दकरी"। भीत्यादौ लिखिता मृण्मयादि नागा पूज्याः। तक्षक पूजा ५। काश्यां नागकूप यात्रा शास्त्र चर्चा च। रवियोगः ३८।८ (रा.८।३८) या.। **भौमव्रतम् दुर्गा यात्रा**, हनुमद्दर्शनम्।

कल्कि जयन्ती ६। सायंकाले कल्कि अवतरणोत्सवः। सर्वार्थसिद्धियोगः ४३।१२ (रा.१०।४०) या.। रवियोगः ४३।१२ (रा.१०।४०) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ५१।५७ (रा.२।१०) उ.। **पुष्य ४ चरणे रविः** रात्रि शेष५।१०वादने।

तुलाराशिः दिवा ११।५१ वादने। भद्रा ५६।२३ (रा.३।५७) उ. (पाताले)। **शीतला सप्तमी ७।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४९।५ (रा.१।२) उ. ५६।२३ (रा.३।५७) या.। **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती७। मोक्ष सप्तमी**(जैन)।

भद्रा २९।५२ (सायं ५।२१) या.। **श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रतम्।** रवियोगः ५५।२९ (रा.३।३६) उ.। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः ५५।२९ (रा.३।३६) उ.। **(ग)** रवियोगः २।१ (दि.६।१३) या.।

वृश्चिकराशिः रात्रि ११।३४ वादने। रवियोगः यावद्दिनम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धः योगः १।२१ (दि.५।५७) उ.।

⊙ श्लेषा नक्षत्रे रविः २९।५० (सायं ५।२१)। स्त्री-नपुं-चन्द्र सूर्य योगे नाग वाहनं, चण्डा नाड़ी तदीशो शनिः स्वल्प वृष्टियोगः। **कौमारी व्रतम् ९।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः २।१ (दि.६।१३) उ. ६।४० (दि.८।५)या.।**(ग)**

भद्रा ४३।६ (रा.१०।४०) उ. (स्वर्ग-पाताले)। **श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः सायं उमामहेश्वर पूजनम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ८।१४ (दि.८।४४) या.। रवियोगः यावद्दिनम्।

धनुराशिः दिवा १०।५२ वादने। भद्रा १५।७ (दि.११।२९) या.। **पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** झूलनयात्रा प्रारम्भः। **भौमव्रतम् दुर्गा** यात्रा, हनुमद्दर्शनम्। रवियोगः १३।३५ (दि.१०।५२) या.।

प्रदोष व्रतम् १२। श्री विष्णुपवित्रारोपणम्। दधित्याग व्रतारम्भः न तु तत्कादीनाम् त्यागः। बुद्ध द्वादशी १२। शाकं दानम्। यमघंट योगः १८।२३ (दि.१२।४७) या.। **श्लेषा नक्षत्रे २ चरणे रविः** रात्रि शेष ५।१८ वादने।

मकरराशिः रात्रि १।२६ वादने। रात्रि व्यापिनी चतुर्दश्यां श्रीशिवपवित्रारोपणम्। रवियोगः २१।५३ (दि.२।१२) उ.। **(घ)** (दि.३।६) उ.। रवियोगः २४।७ (दि.३।६) या.।

भद्रा २०।३३ (दि.१।४०) उ. ५०।१० (रा.१।३१) या. (पाताले)। **व्रताय पूर्णिमा १५।** ह्यग्रीव जयन्ती १५। सायंकाले काश्यां भदैनी स्थित मन्दिरे पूजनम् दर्शनम् च। **पूर्व दिशायाम् बुधोदयः।** सर्वार्थसिद्धियोगः २४।७**(घ)**

कुम्भराशिः रात्रि ३।२६ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। **स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। रक्षाबन्धनम् यावद्दिनम्। श्रावणी उपाकर्मः। संस्कृत दिवसः।** सर्वदेव पवित्रारोपणम्। झूलन यात्रा समाप्तिः। अमरनाथ**(ङ)**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ शु.	३	८	५७	१२	४	२७	५०	०	३६	३६	३	११	४०	४५	२९	३३	२	१५	५०	५६	१३	२	१	२८	३४	४३	६९	११	११	७	३४	४८	१	१	१०	२६	१७	६
२ श.	३	२२	१५	२६	४	२८	२६	३६	३६	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२६	१३	५६
३ र.	४	६	१७	५१	४	२९	३	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२६	१०	४५
४ सो.	४	१९	३	७	४	२९	३९	५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२६	७	३४
५ मं.	५	२	३६	१४	५	०	१६	४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२६	४	२३
६ बु.	५	१४	५६	४६	५	०	५३	३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२६	१	१२
७ गु.	५	२७	६	१२	५	१	३०	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२५	५८	१
८ शु.	६	९	०	३३	५	२	७	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२५	५४	५०
८ श.	६	२०	४२	५२	५	२	४४	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२५	५१	३९
९ र.	७	२	१८	४५	५	३	२१	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२५	४८	२८
१० सो.	७	१४	५०	३४	५	३	५८	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	२५	४५	१७
११ मं.	७	२७	३६	१६	५	४	३५	१९	३७	९	३	११	४०	२६	३५	३६	२	१८	१२	२७	१२	२८	२	११	१९	५७	७०	२	११	७	१५	५१	२	२६	१०	२५	४२	६
१२ बु.	८	९	५८	२०	५	५	१२	२८	३७	१२	३	११	४	५०	३०	४४	२	१८	२५	५	१२	३५	२	१२	२९	५९	७०	९	११	७	१३	२६	२	३२	१०	२५	३८	५५
१३ गु.	८	२२	३६	५३	५	५	४९	४०	३७	१६	३	१०	३४	६	२०	१६	२	१८	३७	४०	१२	३२	२	१३	४०	८	७०	१४	११	७	१०	५४	२	३६	१०	२५	३५	४४
१४ शु.	९	५	३०	२९	५	६	२६	५६	३७	२०	३	१०	१३	५०	१४	४२	२	१८	५०	१२	१२	३०	२	१४	५०	२२	७०	२०	११	७	८	१८	२	४०	१०	२५	३२	३३
१५ श.	९	१८	३८	१६	५	७	४	१६	३७	२५	३	९	५९	८	६	३	२	१९	२	४२	१२	२५	२	१६	०	४२	७०	२५	११	७	५	३८	२	४२	१०	२५	२९	२२

फलम्– अष्टमी तिथि की वृद्धि हो जाने के कारण यह पक्ष १६ दिन का हो गया है। पक्ष के ३ शुक्रवार शुभफलकारक हैं। शनिवार मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव स्थिर रखेगा। सनातन धर्म-ध्वजा को ऊँचाई देने वाले एवं महान शास्त्रज्ञ हिन्दू धर्म के अप्रतिम पुरोधा **धर्म सम्राट स्वामी करपात्रि जी** की जयन्ती श्रावण शुक्ल द्वितीया तदनुसार २६ जुलाई शनिवार को मनाई जायेगी। काशी नगरी में सर्वत्र विशेषकर करपात्रि पीठ में विशेष आयोजन किये जायेंगे। **हरियाली तीज, कजरी तीज, श्रावणी तीज** एवं **मधुश्रवा तृतीय** तथा पश्चिमी प्रदेशों में विख्यात् **ठकुराईन तीज**, स्वर्ण गौरी व्रत २७ जुलाई रविवार को मनाया जायेगा। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत २८ जुलाई सोमवार को होगा। **नाग पंचमी** का प्रसिद्ध पर्व २९ जुलाई मंगलवार को मनाया जायेगा। नाग (सर्प) जाति के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान भाव प्रदर्शित करते हुए दूध-लावा चढ़ाकर इनकी पूजा की जाती है। सर्प जाति की भी पूजा करना एवं इनको महिमा मण्डित करते हुए देव तुल्य मानना केवल सनातन धर्म की उदात्त भाव परम्परा में ही सम्भव है। यह बल पौरुष-ज्ञान-तर्क शक्ति के परीक्षण का भी पर्व है। काशी के नाग कूप पर शास्त्रार्थ की गौरव शाली विद्वत् विमर्श ■

पं.१७ श्रावण शु.८ शुक्रे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८५३
अयनांशाः २४/११/५४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	५	३	२	२	११	१०	४
१४	९	२	१४	१७	६	७	२५	२५
१८	१०	७	४२	२१	४०	२४	५४	५४
९	३३	१५	१५	३६	४५	३८	५०	५०
५७	७२२	३६	५२ ४०	१२	६९	२ २	३	३
१०	५५	५७	व	४७	३८	व	११	११

भौमादीनां चारः
भौमः-उ.फा. सिंह राशौ ४ सोमतः कन्या राशौ दिवा ११।२९ वादने। **बुधः**-(वक्री) कर्कराशौ **गुरुः**-आर्द्रायाम् मिथुनराशौ। **शुक्र**-वृष राशौ २ शनितः मिथुन राशौ दि.९। ५५ वादने। **शनिः**-(वक्री) उ.भा.२ चरणे मीनराशौ। **राहुः**-पू.भा.२ चरणे **केतुश्च**-पू.फा. ४ चरणे।

श्रावण शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिवा.	१शु. घं.	मि.	२श. घं.	मि.	३र. घं.	मि.	४सो. घं.	मि.	५मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०सो. घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	१५श. घं.	मि.
कर्क	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६
सिंह	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०
कन्या	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४१	१०	३७	१०	३३
तुला	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९
वृश्चिक	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६
धनु	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मकर	७	५५	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६
कुम्भ	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३२	८	२८
मीन	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	१०	०	९	५६
मेष	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४
वृष	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१
मिथुन	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४५

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शुक्रे–**पुष्ये जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं (ति.दा.), विपणि व्यापारः, गवां क्रय-विक्रय, नववस्त्र धारणं, आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, चूल्ही स्थापनं, वृक्षारोपणं, नृत्यगीत, वाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः, जलयन्त्रकर्म, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तक पुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं, वाहनक्रयः, औषधि निर्माण सेवनं च, दिग शूल विहाय सर्वदिग् यात्रा। **तिथि २ शनौ–**श्लेषायां उग्रकर्माचरणं, शस्त्र घटनम्। **तिथि ३ रवौ–**मघायां शस्त्रघटनं, धान्यच्छेदनं सायं ५।५५ वादनात्परं पू.फा. प्रसूति स्नानं, जलयन्त्रकर्म, मुकदमा कार्यं, इष्टिका दहनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ४ सोमे–**रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ५ भौमे–**उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवन सीमन्त, प्रसूतिस्नान, लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, दक्षिण, पश्चिम दिग यात्रा। **तिथि ६ बुधे–**हस्ते जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापार, गवां क्रयविक्रय, नववस्त्र धारणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं (ति.दा.) धान्यच्छेदनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, **जीर्णादि गृहप्रवेशः, ल.६** वा गोधूलि, औषधि निर्माणसेवनं च, हस्ते दिग्शूल विहाय सर्व दिग् गमनम्। **तिथि ७ गुरौ–**चित्रायां जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, नृत्यगीत, वाद्यकलारम्भः, विपणिव्यापारः, क्रय-विक्रय, नववस्त्र धारणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापन, वृक्षारोपण, सेवारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्र ग्रहणम्, आवेदन पत्र लेखनं, वृक्षारोपणं, **जीर्णादिगृहप्रवेश** (भू.सु.) तुला चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा, वाहनक्रय, रात्रौ स्वात्यां गर्भाधानं। **तिथि ८ शुक्रे–**स्वात्यां भद्रा सायं ५।२१ वादनात् परं आ.प्रसूति स्नानं, नामकरणं, अन्नप्राशनं (ति.दा.), क्रय-विक्रय, नववस्त्रधारणं, आभूषण निर्माण धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापन,*

पं.१८ श्रावण शु.१५ शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८६१
अयनांशाः २४/११/५५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	५	३	२	२	११	१०	४
२१	१८	७	९	१९	१६	७	२५	२५
५६	३८	४	५९	२	०	५	२९	२९
१	१६	१६	८	४२	४२	३८	२२	२२
५७	७८८	३७	६ ३	१२	७०	२ ४२	३	३
२०	४२	२५	व	२५	२५	व	११	११

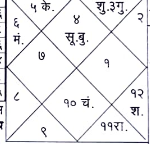

(ङ) यात्रा दर्शन पूजनञ्च। ऋषि तर्पणम्। ओणम् (केरल)। विभिन्न वैदिकानाम स्व परम्परानुसारेण उपाकर्मं विधेयम्। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।३ (दि.३।२९)या.। यायि (मुद्दई) जयद्योगः२५।३(दि.३।२९)उ.

■ का आयोजन सम्पन्न होगा। **कल्कि जयन्ती** ३० जुलाई बुधवार को मनाई जायेगी। शुक्ल पक्ष की **शीतला सप्तमी** एवं श्रावण शुक्ल सप्तमी **गोस्वामी तुलसीदास** की जयन्ती ३१ जुलाई गुरुवार को मनाई जायेगी। **पुत्रदा एकादशी व्रत** का मान सबके लिए ५ अगस्त मंगलवार को होगा। **प्रदोष का व्रत** ६ अगस्त बुधवार को किया जायेगा। व्रत के लिए **पूर्णिमा** का मान ८ अगस्त शुक्रवार को होगा। **रक्षा बन्धन** का परमपुनीत पर्व ९ अगस्त शनिवार को होगा। बहनें अपने भाइयों की कलाईमें राखी बाँधकर तथा भाई अपनी बहन को उपहार सम्मान देकर एक दूसरे को प्रति अपने परस्पर स्नेह भाव को प्रदर्शित करेंगे। विप्रजन अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बाँधकर उचित दक्षिणा प्राप्त करेंगे। **श्लेषा नक्षत्र** का सूर्य ३ अगस्त रविवार को सायं ५।२१ बजे से आयेगा। इसमें साधारण वृष्टि होने के ही योग प्राप्त हो रहे है। पुनः ८ अगस्त के आसन्न भी वर्षा होने की सम्भावना है।

* दत्तकपुत्रग्रहणं, वृक्षारोपणं, **गृहारम्भः-जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.६** (ति.दा.) वाटिकारम्भः, वाहनक्रय, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ शनौ–**विशाखायां प्रातः कृष्णवस्त्र धारणं, उग्रकर्माचरणं, नवम्यां रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ९ रवौ–**विशाखायां उग्रकर्माचरणं रिक्ता दिवा ८।५ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूतिस्नानं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, कणमर्दन, लालवस्त्रप्रवालरत्न-धारणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, शस्त्रधारणं, दत्तकपुत्रग्रहणं, आवेदनलेखनं, वृक्षारोपणं, शल्यकर्म, वाटिकारम्भः, वाहनक्रयः, अनुराधायां दिग्शुल विहाय सर्व दिग् गमनम्। **तिथि १० सोमे–**अनुराधायां दिवा ८।४४ वादनम् यावत आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, विपणिव्यापारः, नववस्त्र धारणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, कणमर्दन, धान्यस्थापन, वृक्षारोपण, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदन पत्र लेखनं, वाहनक्रयः, अनुराधायां औषधि निर्माणं दिग्शूल विहाय सर्वदिग गमनम्। **तिथि ११ भौमे–**ज्येष्ठायां उग्रकर्माचरणं, शस्त्र घटनम्। **तिथि १२ बुधे–**मूले हलप्रवहण, बीजवपनं, कणमर्दन, धान्यरोपण, दीक्षाग्रहणं, धान्यस्थापन, वृक्षारोपण, जलयन्त्रकर्म, मुकदमा कार्यं, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १३ गुरौ–**पू.षा.मे रिक्ता दिवा १।२६ वादनात्पूर्व पू.षाढ़ायाम् पुंसवन सीमन्तः, प्रसुति स्नानं, दीक्षाग्रहण, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापन, जलयन्त्रकर्म, मुकदमा कार्यं, भूमिक्रयः, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १४ शुक्रे–**रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १५ शनौ–**श्रवणे इष्टिका निर्माणं नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्र धाराणं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा ३।२९ वादनात्परं धनिष्ठायां **गृहारम्भः ल.९।**

राशिफल

मेष-	रोगं
वृष-	सुखम् श्रीः
मिथुन-	क्षतिः
कर्क-	स्थान हानिः
सिंह-	द्रव्यनाशः
कन्या-	वित्ताप्तिः
तुला-	सौख्यं
वृश्चिक-	पाप बुद्धिः
धनु-	रोगभयम्
मकर-	गमनम् हानिः
कुम्भ-	रिपुनाशः
मीन-	दैन्यम्

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ भाद्रपद कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। दि.१० - २३ अगस्त
सन् २०२५ ई. (रा.श्रावण १९ - भाद्रपद १)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३२	३४	१	रवि	१७	५२	दिन	१२	३८	धनिष्ठा	२४	४७	दिन	३	२४	शोभन	५२	३७	रात	२	३२	कौ	१७	५२	तै	४६	२२	मातंग	१०	१	२५	१९				५	२९	६	३१	१५	४५	३	२२	५३	२२	५७	२१	+	४	७	२९
३२	३१	२	सोम.	१४	५०	दिन	११	२५	शतभिषा	२३	२७	दिन	२	५२	अतिगण्ड	४७	६	रात	१२	१९	गर	१४	५०	व	४२	५१	अमृत	११	२	२६	२०				५	२९	६	३१	१५	२८	३	२३	५०	४३	५७	२३	+	४	८	३
३२	२८	३	मंगल	१०	५२	दिन	९	५१	पूर्वाभाद्र.	२१	१८	दिन	२	१	सुकर्मा	४०	५३	सायं	९	५१	वि	१०	५२	बव	३८	२९	काण	१२	३	२७	२१	मीन	६	५१	५	३०	६	३०	१५	१०	३	२४	४८	६	५७	२४	+	४	८	३७
३२	२५	४	बुध	६	६	दिन	७	५६	उत्तराभाद्र	१८	१४	दिन	१२	४८	धृति	३४	४	रात	७	८	बा	६	६	कौ	३३	२०	लुम्बक	१३	४	२८	२२				५	३०	६	३०	१४	५२	३	२५	४५	०	५७	२५	+	४	९	११
३२	२१	५/६	गुरु.	०/५४	३४/८	प्रातः	५/३	४५/२४	रेवती	१४	३९	दिन	११	२३	शूल	२६	४७	दिन	४	१४	तै	०	३४	गर/व	२७/५४	२१/८	मित्र	१४	५	२९	२३	मेष	१४	३९	५	३१	६	२९	१४	३४	३	२६	४२	५५	५७	२७	+	३	९	४९
३२	१८	७	शुक्र.	४८	३५	रात	१२	५८	अश्विनी	१०	३९	दिन	९	४८	गण्ड	१९	१५	दिन	१	१४	वि	२१	२१	बव	४८	३५	वज्र	१५	६	३०	२४				५	३२	६	२८	१४	१५	३	२७	४०	२२	५७	२८	+	३	१०	२९
३२	१५	८	शनि.	४२	२३	रात	१०	३०	भरणी	६	२७	दिन	८	८	वृद्धि	११	३४	दिन	१०	११	बा	१५	२९	कौ	४२	२३	ध्वांक्ष	१६	७	३१	२५	वृष	२०	२५	५	३३	६	२७	१३	५७	३	२८	३७	५०	५७	३०	+	२	११	१७
३२	१२	९	रवि.	३७	२	रात	८	२२	कृत्तिका/रोहिणी	२/५६	५८/४	प्रातः	६/४	५८/५४	ध्रुव/व्याघात	३/५२	५८/३२	प्रातः	७/४	८/९	तै	९	४३	गर	३७	२	धूम्र	१७	८	३२	२६				५	३३	६	२७	१३	३८	३	२९	३५	२०	५७	३२	+	२	१२	१०
३२	९	१०	सोम.	३०	४७	सायं	५	५३	मृगशिरा	५४	५०	रात	३	३०	हर्षण	४९	२२	रात	१	१९	व	३	५४	वि/बव	३०/५८	४७/९	आनन्द	१८	९	१	२७	मिथुन	२५	२७	५	३४	६	२६	१३	१९	४	०	३२	५२	५७	३३	+	२	१	११
३२	६	११	मंगल	२५	३०	दिन	३	४७	आर्द्रा	५१	३७	रात	२	१४	वज्र	४४	४४	रात	११	२९	बा	२५	३०	कौ	५३	१८	चर	१९	१०	२	२८				५	३५	६	२५	१२	५९	४	१	३०	२५	५७	३५	+	२	२	१५
३२	३	१२	बुध.	२१	५	दिन	२	१	पुनर्वसु	४९	५५	रात	१	३३	सिद्धि	३६	४४	रात	८	१७	तै	२१	५	गर	४९	१८	गद	२०	११	३	२९	कर्क	३५	२१	५	३५	६	२५	१२	४०	४	२	२८	०	५७	३६	+	१	३	२१
३१	५९	१३	गुरु.	१७	३१	दिन	१२	३६	पुष्य	४८	४५	रात	१	६	व्यतिपात	३१	३०	सायं	६	१२	व	१७	३१	वि	४६	१६	शुभ	२१	१२	४	३०				५	३६	६	२४	१२	२०	४	३	२५	३६	५७	३८	+	१	४	२४
३१	५६	१४	शुक्र.	१५	१	दिन	११	३७	श्लेषा	४८	४३	रात	१	६	वरीयान	२७	३	दिन	४	२६	श	१५	१	च	४४	२३	मृत्यु	२२	१३	५	३१	सिंह	४८	४३	५	३७	६	२३	१२	०	४	४	२३	१४	५७	४०	+	१	५	२५
३१	५३	३०	शनि.	१३	४४	दिन	११	७	मघा	४९	५१	रात	१	३३	परिघ	२३	३७	दिन	३	४	ना	१३	४४	किं	४३	४२	पद्म	२३	१४	६	१				५	३७	६	२३	११	४०	४	५	२०	५४	५७	४२	+	१	+	+

फसली भाद्रपद मासारम्भ। 'भाद्रपदे दधि त्यजेत् न तु तक्रदीनाम् त्यागः।' चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीयायां **अशून्यशयन व्रतम् २। चन्द्रोदये** (रा.७।२९) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १७।५२ (दि.१२।३८) या। **(क)**

भद्रा ४२।५१ (रा.१०।३७) उ. (मर्त्य)। **भीमचण्डी विन्ध्याचली देव्योर्जयन्ती २।** कज्जली निमित्तकं रात्रि जागरणम् (रतजगा)। **(ग)** यावद्दिनम्। रवियोगः १४।३९ (दि.११।२३) उ.।

मीनराशिः दिवा ८।१४ वादने। भद्रा १०।५२ (दि.९।५१) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.८।३७) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। **बहुला चतुर्थी ४ व्रत। कज्जली ३** (कजरी)। गो पूजा ३। तीजड़ी (सिन्धी)।**(ख)**

रक्षा पंचमी ५ (उड़ीसा)। भ्रातृ पंचमी ५। **श्लेषा ४ चरणे रविः** रात्रि शेष ५।० वादने। **(ङ)** यांगो मेष वाहनं वाता नाड़ी तदैशो सूर्यः सुवृष्टि योगः। मनसा देवी पूजा समाप्तिः। (बंगाल-झारखण्ड)।

मेषराशिः दिवा ११।२३ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ५४।८ (रा.३।२४) उ. (स्वर्ग)। **चन्द्र षष्ठी ६ व्रतम्** चन्द्रोदय (रा.९।४९) वादने। **चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। हलषष्ठी (ललही छठ) ६ व्रतम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः**(ग)**

भद्रा २१।२१ (दि.२।४) या.। **शीतला सप्तमी ७। भारतीय स्वतन्त्रता दिवसः।** राजधानी, दिल्ली सहित सम्पूर्ण भारत वर्ष ध्वजारोहणम् विविध आयोजनम् राष्ट्रगानं च। सर्वार्थसिद्धियोगः १०।३९ (दि.९।४८) या.। रवियोगः**(घ)**

वृषराशिः दिवा १।४३ वादने। **श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतम् सर्वेषाम्। कृष्णावतारः ८।** चन्द्रोदय (रा.११।१७) वादने। दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्ति चेद्रोहिणी कला रात्रि युक्तां प्रकुर्वीत विशेषेणन्दु संयुतम्।

रोहिणी मतावलम्बिनां श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतम्। (ॐ) मघा नक्षत्रे सिंह राशौ रविः २६।१० (दि.४।१) मु.४५ वृहती समर्घताकरम्। पूर्वा पारः १६ घटयः पुण्याः। छत्र सुवर्ण दानम्। गंगायाम् स्नानम्। स्त्री-पुं. चं.सू.**(ङ)**

मिथुनराशिः दिवा ३।४५ वादने। भद्रा ३।५४ (दि.७।८) उ. ३०।४७ (सा.५।५३) या. (स्वर्ग)। **सौर भाद्रपद मासारम्भः।** सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ५४।५० (रा.३।३०) या.। **(घ)** १०।३९ (दि.९।४८) या.।

जया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। "अजति नाम्ना विख्याता सर्वपाप प्रणाशिनी।" **पर्युषण पर्वारम्भः** (जैन)। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ५१।३७ (रा.२।१४) उ.। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंट योगः ५१।३७(रा.२।१४)या.।

कर्कराशिः रात्रि ७।४३ वादने। **प्रदोष व्रतम् १२। गोवत्स द्वादशी १२। (बछवारस)। अघोर द्वादशी १२। मघा नक्षत्रे २ चरणे रविः** रात्रि ३।४० वादने।

भद्रा १७।३१ (दि.१२।३६) उ. ४६।१६ (रा.१२।१६) या.। **मासशिवरात्रि व्रतम् १३।** गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृतासिद्धियोगौ ४८।४५ (रा.१।६) या.।

सिंहराशिः रात्रि १।६ वादने। **अघोर चतुर्दशी १४। अघोराचार्य अवतरणोत्सवः।** 'अघः पापात्रक्षति इति अघोरः।' **श्राद्धादौ अमा ३०।** स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ४८।४३ (रा.१।६) उ.।

स्नानदानादौ अमावस्या ३० पुण्यतमा। शनि अमावस्या ३०। **कुशोत्पाटिनी अमावस्या ३०। ॐ हूँ फट्कार** इति मन्त्रेण कुशाग्रहणम्। **अत्र कुशानयन विधिः**-शुचिर्भूत्वा शुचादेशे स्थित्वा पूर्वोत्तर मुखः। ओंकारेणैवमन्त्रेण**(च)**

(क) द्विपुष्करयोगः १७।५२ (दि.१२।३८) उ. २४।४७ (दि.३।२४) या.। **श्लेषा नक्षत्रे ३ चरणे रविः** सायं ५।५ वादने। **(ख)** विशालाक्षी यात्रा ३। तीज व्रतः (जैन)। **बहुलायाः**-या पालयन्त्यनाथाश्च परपुत्रान् स्वपुत्रवत्। ता धन्यास्ताः कृतार्थाश्च तास्त्रियोः लोकमातरः इति मंत्रेण गो पूजनम्। सर्वार्थसिद्धियोगः २१।१८ (दि.२।१) उ.। भौमे-जया सिद्धयोगः १०।५२ (दि.९।५१) या.। **(च)** कुशान् स्पृष्ट्वा द्विजोतमः।' **कुशोत्पाटन मन्त्रः** ओं कुशाग्रे वसते रुद्रकुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेदिनी।' इति। **राष्ट्रीय भाद्रपद मासारम्भः।** पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	र.	१०	२	१८	५१	५	७	४१	४३	३७	२९	३	९	५३	५	२मा	३३	२	१९	१५	७	१२	२३	२	१७	११	१६	७०	२९	११	७	२	५६	३	४५	१०	२५	२६	११
२	सो.	१०	१५	३७	४४	५	७	५	५४	३७	३०	३	९	५५	३८	०	९	२	१९	३७	५३	१२	२३	२	१८	२२	५८	७०	२७	११	७	२	४८	३	४३	१०	२५	२३	०
३	मं.	१०	२८	५३	१२	५	८	५६	४५	३७	३८	३	१०	३	२१	१५	२४	२	१९	३९	५०	१२	१६	२	१९	३२	९	७०	३३	११	७	२	४०	३	५०	१०	२५	१९	५०
४	बु.	११	१२	४९	३६	५	९	३४	३३	३७	३९	३	१०	१०	४५	२१	४४	२	१९	५२	६	१२	१०	२	२०	४१	५२	७०	४५	११	७	२	३१	३	५४	१०	२५	१६	३९
५	गु.	११	२६	५२	३०	५	१०	१२	१२	३७	४५	३	१०	२२	४	३०	३६	२	२०	४	१९	१२	१३	२	२१	५३	३३	७०	४५	११	७	२	२१	३	५८	१०	२५	१३	२८
७	शु.	०	११	०	५४	५	१०	४९	४९	३७	५३	३	११	७	१	३०	२६	२	२०	२६	२९	१२	५	२	२३	४	२३	७०	५६	११	७	२	११	४	१	१०	२५	१०	१७
८	श.	०	२५	०	३५	५	११	२७	३७	३७	५३	३	११	३७	३०	३३	३१	२	२०	४५	३०	१२	५	२	२४	१४	२२	७१	०	११	७	२	०	४	३	१०	२५	७	६
९	र.	०	३९	१	१२	५	११	४५	५२	३७	५३	३	१२	११	४५	३५	२२	२	२०	४८	४	११	५९	२	२५	२४	९	७१	४	११	६	५९	५०	४	७	१०	२५	३	५५
१०	सो.	१	२३	१६	५२	५	१२	४३	२९	३८	०	३	१२	४६	५०	३७	३३	२	२०	५३	४३	११	५९	२	२६	३३	२२	७१	७	११	६	५९	३८	४	९	१०	२५	०	४४
११	मं.	१	७	१४	४८	५	१३	२२	३४	३८	३	३	१३	२२	२२	३९	५२	२	२१	२	३२	११	५१	२	२७	४३	९	७१	९	११	६	५९	२६	४	१२	९	२४	५७	३३
१२	बु.	२	२०	५४	५	५	१३	५९	४३	३८	३	३	१३	५९	३४	४०	३०	२	२१	९	१	११	४५	२	२८	५२	४४	७१	१२	११	६	५९	१३	४	१६	९	२४	५४	२२
१३	गु.	३	५	४	५५	५	१४	३७	५	३८	५	३	१४	३७	५६	४१	५२	२	२१	२०	१३	११	३७	३	०	२	३७	७१	१६	११	६	५९	०	४	१९	९	२४	५१	११
१४	शु.	३	१८	४८	१७	५	१५	१६	१८	३८	२७	३	१६	१८	३२	७६	२७	२	२१	४०	१३	११	४०	३	१	२२	१८	७१	२६	११	६	२५	५८	३	३४	१०	२४	४८	०
३०	श.	४	२	५६	४६	५	१५	५४	४५	३८	३१	३	१७	३४	५९	८४	१४	२	२१	५१	५३	११	३३	३	२	३३	४४	७१	२९	११	६	२२	२४	३	३७	१०	२४	४४	४९

फलम्– षष्ठी तिथि का क्षय हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। ऐसा माना जाता है कि भादों के महीने में सजाव दही नहीं खाना चाहिए किन्तु मट्ठे का सेवन कया जा सकता है। चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया तिथि में **अशून्य शयन** का व्रत १० अगस्त रविवार को होगा। भीमचण्डी विन्ध्याचली देवी की जयन्ती एवं **कजरी का रतजग्गा** ११ अगस्त सोमवार को मनाया जायेगा। **कज्जली** का प्रसिद्ध त्यौहार १२ अगस्त मंगलवार को मनाया जायेगा। मीरजापुर जनपद एवं समीपस्थ स्थानों में कजरी गायन, दंगल अपने पारम्परिक स्वरूप में मनाया जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (बहुला) का मान भी १२ अगस्त मंगलवार को है, चन्द्रोदय रात ८।३७ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। बहुला चतुर्थी में आज के दिन गाय के दूध एवं उससे निर्मित खाद्य सामग्री का सेवन नहीं करना चाहिए। पुत्र की दीर्घायु की कामना से **हलषष्ठी** (ललही छठ) का व्रत पूजन १४ अगस्त गुरुवार को किया जायेगा। **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** में इस वर्ष तिथि की (उदयकालिक) प्रधानता को मानते हुए १६ अगस्त शनिवार को ही सबके लिये व्रत पर्व का मान हो जायेगा क्योंकि रोहिणी नक्षत्र का संयोग अर्धरात्रि में नहीं मिल रहा है। **जया एकादशी व्रत** का मान सबके लिये १९ अगस्त मंगलवार को होगा। **गोवत्स द्वादशी** (बछवारस) २० अगस्त बुधवार को मनाई जायेगी। **प्रदोष का व्रत** भी २० अगस्त बुधवार को होगा। **मास शिवरात्रि व्रत** का मान २१ अगस्त गुरु. को होगा। ●

पं.१९ भाद्रपद कृष्ण ८ शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८६८
अयनांशाः २४/११/५६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	५	३	२	२	११	१०	४
२८	२५	११	११	२०	२४	६	२५	२५
३७	१०	२७	३७	२८	१५	४५	७	७
५०	३४	३७	३०	३७	१९	४१	६	६
५७	८५०	३७	३३/५२	१२	७१	३/५	३	३
३०	१०	५३	मा	५	०	व	११	११

भौमादीनां चारः
भौमः–उ.फा.कन्या राशौ ४ बुधतः हस्त नक्षत्रे रात्रि १०।४५ वादने। **बुधः**-ति.१ रवितः मार्गी कर्क राशौ। **गुरुः**-आर्द्रायाम् मिथुने ४ बुधतः पुनर्वसौ सायं ६।१५ वादने। **शुक्रः**-मिथुने १२ बुधतः कर्क राशौ प्रातः ६।१०वादने। **शनि**-वक्री उ.भा.२ चरणे ९ रवितः वक्रगत्या उ.भा.१ चरणे रात्रि ११।१० वादने। **राहुः**-पू.भा.२ चरणे **केतुश्च**-पू.फा. ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

भाद्रपद कृष्ण

लग्नांत ति.वा.	१र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	१०सो. घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	३०श. घं.	मि.
कर्क	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	सिंह	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५
सिंह	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	कन्या	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४२	९	३८
कन्या	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	तुला	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४
तुला	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१८	वृश्चिक	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११
वृश्चिक	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३५	धनु	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६
धनु	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४८	४	४४	४	४०	मकर	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मकर	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	कुम्भ	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३३
कुम्भ	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	मीन	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	१
मीन	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	मेष	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९
मेष	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	११	११	७	११	३	वृष	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६
वृष	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	मिथुन	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	५०
मिथुन	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	कर्क	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ रवौ**–धनिष्ठायां-प्रसूति स्नानं, गवां क्रयविक्रय, नववस्त्रधारणं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, धान्यच्छेदन, धान्यस्थापनं,नृत्यगीत, वाद्य कलारम्भः, दत्तक पुत्र ग्रहणम्, आवेदन पत्र लेखन, नौका जलयान घटनं, वाहनक्रय, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि २ सोमे**–शतभिषयां अन्नप्राशनं, आभूषण निर्माण-धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यरोपणं, धान्यस्थापनं, वृक्षारोपणं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, जलयन्त्रकर्म, आवेदनपत्र लेखनं, गवां क्रयविक्रय, जलाशय वाटिकारम्भः, नूतनबध्वा पाक मुहूर्त्तः दक्षिण दिग् यात्रा, वाहनक्रयः, **गृहारम्भः** ल.८। **तिथि ३ भौमे**–पू.भाद्रपदे भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ४ बुधे**–रिक्ता दिवा ७।५६ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे रेवत्यां जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, नववस्त्र धारणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, धान्यच्छेदन, वृक्षारोपणं, नृत्यगीत, वाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोग लतावृक्षादि रोपणं,सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः, नूतनवध्वापाक मुहूर्त्तः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ५/६ गुरौ**–रेवत्यां--पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, जातकर्म अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, क्रयविक्रयः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं, भूमिक्रयः नूतनबध्वा पाककर्म उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ शुक्रे**–भद्रा दिवा २।४ वादनात्परं भरण्यां मुकदमा कार्यं। **तिथि ८ शनौ**–भरण्यां कृत्तिकायां शस्त्रघटनं उग्रकर्मा चरणं। **तिथि९ रवौ**-कृत्तिकायां रोहिण्यां रोग विमुक्त स्नानं।*

पं.२० भाद्रपद कृ. ३० शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८७५
अयनांशाः २४/११/५७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	२	३	११	१०	४
५	२	१५	१७	२१	२	६	२४	२४
२०	५६	५४	३४	५१	३३	२२	४४	४४
५४	४६	४५	५९	५३	४४	२४	४९	४९
५७	७८७	३८	८४	११	७१	३/३७	३	३
४२	१९	३१	१४	३३	२९	व	११	११

●**सन्त अघोराचार्य** का अवतरणोत्सव २२ अगस्त शुक्रवार को मनाया जायेगा। काशी के क्रीं कुण्ड एवं पड़ाव तथा सबसे बढ़कर सन्त कीनाराम की जन्मस्थली चन्दौली (वाराणसी) जनपद के **रामगढ़** नामक गाँव में विशेष समारोह मनाया जायेगा। **श्राद्ध के लिये अमावस्या** का मान २२ अगस्त शुक्रवार को होगा; जबकि स्नानदान के लिए अमावस्या तथा **कुशोत्पाटिनी अमावस्या** २३ अगस्त शनिवार को होगी। '**ॐ हूँ फट्कर**' मन्त्रोच्चार के साथ उखाड़ा गया कुशा पूजनादि कार्य में वर्ष भर प्रयोग में लाया जायेगा। **मघा नक्षत्र सिंह राशि** की सूर्य संक्रान्ति १७ अगस्त रविवार को दिन ४।१ बजे से आयेगी। इससे अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना बन रही है। शनिवार की अमावस्या भारी पड़ेगी। दैवी-प्राकृतिक घटनाएँ घट सकती हैं।

* **तिथि १० सोमे**–भद्रा दिवा ७।८ वादनात्पूर्व मृगशिरायां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः, हलप्रवहणं वृक्षरोपणं बीजवपनं सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, नूतनबध्वापाककर्म, वाहन क्रयः, भद्रा सायं ५।५३ वादनात्परं गर्भाधानं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ भौमे**–आर्द्रायाम् - शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १२ बुधे**–पुनर्वसौ अन्नप्राशनं गवां क्रय विक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं शय्यासनाद्युपभोगं, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ गुरौ**–भद्रा दिवा १२।३६ वादनात्पूर्व पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः जलयन्त्रकर्म शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म, पुखराज रत्नधारणं, भूमिक्रयः शल्यकर्म, वाहनक्रयः पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १४ शुक्रे**–रिक्ता व्याप्तिः तदुपरि **मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	सुखार्थ लाभः
वृष-	रोगं हानिः
मिथुन-	शत्रुभयं
कर्क-	सुखं श्रीप्राप्तिः
सिंह-	नेत्रकष्टं
कन्या-	पीड़ा भयम्
तुला-	रोगं
वृश्चिक-	लाभः
धनु-	शोकं
मकर-	रोगं
कुम्भ-	पाप बुद्धिः
मीन-	दौर्बल्यं

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ भाद्रपद शुक्लपक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाॠतुः। दि.२४ अगस्त - ७ सितम्बर
सन् २०२५ ई.। (राष्ट्रीय भाद्रपद २ - १६)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	भाद्रपद शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३१	४९	**१**	रवि.	१३	४१	दिन	११	६	पूर्वाफा.	५२	२०	रात	२	२४	शिव	२१	११	दिन	२	६	बव	१३	४१	बा	४४	२१	छत्र	**२४**	१५	७	२				५	३८	६	२२	११	२०	४	६	१८	३७	५७	४३	+	१	७	९
३१	४६	**२**	सोम.	१५	०	दिन	११	३९	उत्तराफा.	५६	३	रात	४	४	सिद्ध	१९	४७	दिन	१	३४	कौ	१५	०	तै	४६	१४	श्रीवत्स	**२५**	१६	८	३	कन्या	८	१६	५	३९	६	२१	१०	५८	४	७	१६	२०	५७	४५	+	१	७	३९
३१	४२	**३**	मंगल	१७	२८	दिन	१२	३९	हस्त	६०	०	स	म	स्त	साध्य	१९	१५	दिन	१	२२	गर	१७	२८	व	४९	१७	सौम्य	**२६**	१७	९	४				५	४०	६	२०	१०	३७	४	८	१४	५	५७	४७	+	०	८	६
३१	३९	**४**	बुध	२१	६	दिन	२	६	हस्त	०	५१	प्रातः	६	०	शुभ	१९	३७	दिन	१	३१	वि	२१	६	बव	५३	१८	आनन्द	**२७**	१८	१०	५	तुला	३३	४०	५	४०	६	१९	१०	१५	४	९	११	५२	५७	४९	-	०	८	३६
३१	३६	**५**	गुरु	२५	३१	दिन	३	५३	चित्रा	६	३१	दिन	८	१७	शुक्ल	२०	३७	दिन	१	५६	बा	२५	३१	कौ	५७	३१	चर	**२८**	१९	११	६				५	४१	६	१८	९	५४	४	१०	९	४१	५७	५१	-	०	९	५
३१	३२	**६**	शुक्र	३०	३०	सायं	५	५४	स्वाती	१२	४८	दिन	१०	४९	ब्रह्म	२२	२	दिन	२	३१	तै	३०	३०	गर	६०	०	गद	**२९**	२०	१२	७				५	४२	६	१७	९	३२	४	११	७	३१	५७	५३	-	०	९	४२
३१	२९	**७**	शनि.	३५	२८	रात	७	५३	विशाखा	१९	१९	दिन	१	२६	ऐन्द्र	२३	३७	दिन	३	९	गर	२	५९	व	३५	२८	शुभ	**३०**	२१	१३	८	वृश्चिक	२	४२	५	४२	६	१६	९	१०	४	१२	५	२३	५७	५५	-	०	१०	२१
३१	२५	**८**	रवि.	४०	२६	रात	९	५३	अनुराधा	२५	३९	दिन	३	५९	वैधृति	२४	५९	दिन	३	४३	वि	७	५८	बव	४०	२६	मृत्यु	**३१**	२२	१४	९				५	४३	६	१५	८	४८	४	१३	३	१६	५७	५७	-	०	११	३
३१	२२	**९**	सोम.	४४	३३	रात	११	३३	ज्येष्ठा	३१	२१	सायं	६	१६	विष्कुम्भ	२५	५५	दिन	४	६	बा	१६	३६	कौ	४४	३३	पद्म	**१**	२३	१५	१०	धनु	३१	२१	५	४४	६	१४	८	२६	४	१४	१	१०	५७	५८	-	१	११	५६
३१	१८	**१०**	मंगल	४७	३९	रात	१२	४८	मूल	३६	१२	रात	८	१३	प्रीति	२६	९	दिन	४	१२	तै	१६	१	गर	४७	३९	छत्र	**२**	२४	१६	११				५	४४	६	१३	८	४	४	१४	५९	५	५८	०	-	१	१२	५१
३१	१५	**११**	बुध.	४९	४१	रात	१	३७	पूर्वाषा.	३९	५८	रात	९	४४	आयुष्मान	२५	३१	दिन	३	५७	व	१८	४०	वि	४९	४१	श्रीवत्स	**३**	२५	१७	१२	मकर	५५	३६	५	४५	६	१२	७	४१	४	१५	५७	०	५८	१	-	२	१	५१
३१	११	**१२**	गुरु	५०	२२	रात	१	५५	उत्तराषा.	४२	२९	रात	१०	४६	सौभाग्य	२३	५६	दिन	३	२१	बव	२०	१	बा	५०	३२	सौम्य	**४**	२६	१८	१३				५	४६	६	११	७	१९	४	१६	५५	१८	५८	४	-	३	२	५३
३१	८	**१३**	शुक्र.	४९	४५	रात	१	४०	श्रवण	४३	४२	रात	११	१५	शोभन	२१	२१	दिन	२	१८	कौ	२०	४	तै	४९	४५	धूम्र	**५**	२७	१९	१४				५	४६	६	१४	७	४	४	१७	५३	२३	५८	७	-	३	३	५५
३१	४	**१४**	शनि.	४७	५६	रात	१२	५७	धनिष्ठा	४३	४५	रात	११	१७	अतिगण्ड	१७	४४	दिन	१२	५३	गर	१८	५०	व	४७	५६	प्रवर्धमान	**६**	२८	२०	१५	कुम्भ	१३	४३	५	४७	६	१३	६	४१	४	१८	५१	३०	५८	९	-	४	४	५८
३१	०	**१५**	रवि.	४४	५९	रात	११	४८	शतभिषा	४२	३७	रात	१०	५१	सुकर्मा	१३	१२	दिन	११	५	वि	१६	२८	बव	४४	५९	राक्षस	**७**	२९	२१	१६				५	४८	६	१२	६	१८	४	१९	४९	३८	५८	११	-	४	+	+

१. चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्ष। महत्तमाख्य शिवव्रतम् १। महावीर जन्म वांचन १। सर्वार्थसिद्धियोगः ५२।२० (रा.२।२४) उ.। शुभाशुभ त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ५२।२० (रा.२।२४) उ.।**(क)**

२. कन्याराशिः दिवा ८।५७ वादने। **मु.रवि-उल-अव्वल ३ हिजरी सन् १४४७। श्रीशंकरदेव तिथि २** (आसाम)। वाराहवतारः ३ (अपराह्ने)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १५।० (दि.११।३९) उ.। रवियोगः ५६।३ (रा.४।४)उ.।

३. भद्रा ४१।१७ (रा.१।२३) उ. (पाताल)। **हरितालिका व्रतम् (तीज)** स्त्रीणां नित्यंकाम्यश्च। बृहद्गौरी व्रतम् ३। गौरी तृतीया ३ (उड़ीसा)। 'आलिर्भिहरितायस्मात् तस्यात् सा हरितालिका।' चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थ्यां **ढेलहिया(ख)**

४. तुलाराशिः रात्रि ७।८ वादने। भद्रा २१।६ (दि.२।६) या.। वैनायकी **वरद् श्रीगणेश** चतुर्थी ४ **व्रतम्**। गणेशोत्सव प्रारम्भः। कपर्दीश्वर ४। **जैन संवत्सरी** (चतुर्थी पक्ष)। सरस्वती पूजा (उड़ीसा)। सौभाग्य चतुर्थी (बंगाल)।**(ग)**

५. **श्री ऋषि पञ्चमी ५ व्रतम्।** मध्याह्ने सप्तर्षिपूजनम् विविधप्रतिमा सप्तर्षीणि सम्पूज्य ब्राह्मणाय निवेदयेत्। सांवत्सरी पञ्चमी (जैन) विविध महोत्सवः। रक्षा पञ्चमी (बंगाल)। गुरु पञ्चमी (उड़ीसा)। अद्य कर्षण**(घ)**

६. **लोलार्क षष्ठी ६ व्रतम्।** पुत्रार्थिनाम काश्यां भदैनी स्थित लोलार्क कुण्डे स्नानम् विधेयम्। स्वामी कार्तिकेयदर्शनेन (अद्य) ब्रह्महत्यादि पापैस्तुमुच्यते। सूर्याय अर्घ्यम्। ललिता षष्ठी (गुर्जरे प्रसिद्धम्)। स्कन्द षष्ठी ६। रवियोगः**(ङ)**

७. वृश्चिकराशिः प्रातः ६।४७ वादने। भद्रा ३५।२८ (रा.७।५३) उ. (स्वर्ग)। **मुक्ता भरण सप्तमी ७।** सन्तान पूजा ७। अपराजिता पूजा ७। फल सप्तमी ७। ललिता सप्तमी (बंगाल-उड़ीसा)। दूबड़ी सप्तमी ७। महालक्ष्मी**(च)**

८. भद्रा ७।५८ (दि.८।५५) या.। **श्रीराधाष्टमी ८ व्रतम्** राधारानी महाभिषेकं (वृन्दावन)। काश्यां लक्ष्मी कुण्डे स्नानम् **महालक्ष्मी व्रत पूजन** काश्यां सोरहिया मेला च प्रारम्भः। षोडष (१६) दिनानि यावत्। अनुराधायां ज्येष्ठा**(छ)**

९. धनुराशिः सायं ६।१६ वादने। **श्रीदेवी नवमी ९** श्रीचन्द्र जयन्ती। नन्दा नवमी ९। अदुःख नवमी ९। तल नवमी (बंगाल-उड़ीसा)। ज्येष्ठायां ज्येष्ठा देव्याः पूजनम्। रवियोगः ३१।२१ (सा.६।१६) उ.। **पूर्व दिशायाम् बुधास्तः।**

१०. दशावतार **१० व्रतम्। मूले ज्येष्ठा देवी विसर्जनम्।** रवियोगः यावद्दिनम्। (झ) श्रीशिवपरिवर्तनोत्सवः। कदली व्रतम् १४। **गणपति विसर्जनम्।** काश्यां रामनगर रामलीला प्रारम्भः। रवियोगः ४३।४५ (रा.११।१७)या.।

११. मकरराशिः रात्रि ३।५९ वादने। भद्रा १८।४० (दि.१।१३) उ. ४९।४१ (रा.१।३७) या. (पाताल)। **पद्माएकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। कर्मा एकादशी ११** (बिहार-झारखण्ड)। **डोलग्यारस** (म.प्र.) आणम् केरल। जलझूलनी११।**(ज)**

१२. **पारणा एकादशी व्रतस्य प्रातरेव। वामनद्वादशी।** वामन जयन्ती १२ मध्याह्ने वामनावतारः। शक्र ध्वजोत्थापनम्। दुग्ध त्याग व्रतारम्भः दधि दानम्।

१३. **प्रदोष व्रतम् १३।** सर्वार्थसिद्धियोगः ४३।४२ (रा.११।१५) या.। रवियोगः ४३।४२ (रा.११।१५) उ.। **मु. पर्व वारावफात।** **(ज) पूर्वाफाल्गुन्यां २ चरणे रविः** रात्रि ११।४५ वादने। रवियोगः ३९।५८ (रा.९।४४)या.।

१४. कुम्भराशि दिवा ११।१६ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ४७।५६ (रा.१२।५७) उ. (मर्त्य)। **अनन्त चतुर्दशी १४ व्रतम्।** मध्यान्हे अनन्त भगवान पूजनम् कथा श्रवणम् अनन्त धारणम् च। अद्य मृदु भोजन कार्यम्।**(झ)**

१५. भद्रा १६।२८ (दि.१२।२३) या.। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा।** सन्ध्या पूजा १५। लोकपाल पूजनम्। **महालयारम्भः। नान्दी मातामह श्राद्धम्। खग्रास चन्द्रग्रहणम्। पूर्वाफाल्गुनी ३ चरणे रविः** दिवा१०।१२वादने।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	र.	४	१५	४६	२६	५	१६	३३	२६	३८	३४	३	१८	५९	१३	९०	४२	२	२२	३	२६	११	२५	३	३	४५	१३	७१	३३	११	६	१८	४७	३	४०	१०	२४	४१	३८
२	सो.	४	२८	२४	१२	५	१७	१२	०	३८	३८	३	२०	२९	५५	९५	३०	२	२२	१४	५१	११	२०	३	४	५६	४६	७१	३५	११	६	१५	७	३	४५	१०	२४	३८	२८
३	मं.	५	१०	४६	३२	५	१७	५०	३८	३८	४३	३	२२	५	२५	१०१	२४	२	२२	२६	११	११	१४	३	६	८	२१	७१	३८	११	६	११	२२	३	४८	१०	२४	३५	१७
४	बु.	५	२३	८	५४	५	१८	२९	२१	३८	४७	३	२३	४६	५९	१०३	४२	२	२२	३७	२५	११	७	३	७	१९	५९	७१	४४	११	६	७	३४	३	५२	१०	२४	३२	६
५	गु.	६	५	२०	३९	५	१९	८	८	३८	५०	३	२५	३०	३१	१०६	५३	२	२२	४८	३२	११	१	३	८	३१	४३	७१	४९	११	६	३	४२	३	५७	१०	२४	२८	५५
६	शु.	६	१७	२५	२५	५	१९	४६	५८	३८	५५	३	२७	१७	२४	१०८	४७	२	२२	५९	३३	१०	५५	३	९	४३	३२	७१	५५	११	५	५९	४५	४	०	१०	२४	२५	४४
७	श.	६	२९	२७	४१	५	२०	२५	५३	३८	५९	३	२९	६	११	१०९	२६	२	२३	१०	२८	१०	५०	३	१०	५५	२७	७२	०	११	५	५५	४५	४	४	१०	२४	२२	३३
८	र.	७	११	३१	३२	५	२१	४	५२	३९	३	४	०	५५	३७	१११	५०	२	२३	२१	१८	१०	४४	३	१२	७	२७	७२	४	११	५	५१	४१	४	९	१०	२४	१९	२२
९	सो.	७	२३	३५	४३	५	२१	४३	५५	३९	६	४	२	४७	२७	११३	३६	२	२३	३२	२	१०	४०	३	१३	१९	३१	७२	६	११	५	४७	३२	४	१३	१०	२४	१६	११
१०	मं.	८	५	५३	१४	५	२२	२३	१	३९	१०	४	४	४१	३	११३	५७	२	२३	४२	४२	१०	३५	३	१४	३१	३७	७२	९	११	५	४२	१९	४	१६	१०	२४	१३	०
११	बु.	८	१८	२७	३१	५	२३	२	११	३९	१५	४	६	३५	०	११४	२३	२	२३	५३	१७	१०	३१	३	१५	४३	४६	७२	१०	११	५	३८	३	४	२०	१०	२४	९	४९
१२	गु.	९	१	१७	२०	५	२३	४१	२६	३९	१९	४	८	२९	२३	११४	४९	२	२४	३	४८	१०	२५	३	१६	५५	५६	७२	१३	११	५	३३	४३	४	२३	१०	२४	६	३८
१३	शु.	९	१४	२७	३३	५	२४	२०	४५	३९	२२	४	१०	२४	१२	११५	५	२	२४	१४	१३	१०	१९	३	१८	८	९	७२	१५	११	५	२९	२०	४	२५	१०	२४	३	२७
१४	श.	९	२७	४७	५४	५	२५	०	७	३९	२५	४	१२	१९	१७	११५	३६	२	२४	२४	३२	१०	१२	३	१९	२०	२४	७२	१९	११	५	२४	५५	४	२६	१०	२४	०	१६
१५	र.	१०	११	२१	१६	५	२५	३९	३२	३९	२६	४	१४	१४	५३	११५	५५	२	२४	३४	४४	१०	६	३	२०	३२	४३	७२	२०	११	५	२०	२९	४	२८	१०	२३	५७	५

पं.२१ भाद्रपद शु.८ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८८३
अयनांशाः २४/११/५८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	४	२	३	११	१०	४
१३	११	२१	०	२३	१२	५	२४	२४
३	३१	४	५५	२१	७	५१	१९	१९
२०	३२	५२	३७	१८	२७	४१	२२	२२
५७	७४०	३९	१११	१०	७२	४ ९	३	३
५७	४३	३	५०	४४	४	व	११	११

भौमादीनां चारः

भौमः-हस्त नक्षत्रे कन्या राशौ ११ बुधतः चित्रायां दिवा ४।२०। **बुधः**-कर्क राशौ ७ शनितः सिंह राशौ दिवा ४।४५ वादने। **गुरुः**-पुनर्वसौ मिथुने। **शुक्रः**-कर्कराशौ। **शनिः**-(वक्री) उत्तराभाद्रपद १ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-पूर्वाभाद्रपद २ चरणे **केतुश्च**-पूर्वाफाल्गुनी ४ चरणे।

फलम्– रविवार पू.फा. नक्षत्र सिंह राशि का दर्शन मु.३० बाजार भाव खड़ा। किराना की वस्तुओं में तेजी का रुख बनेगा। यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन रविवार पीड़ादायक है और किसी महामारी को बढ़ावा देंगे। आभूषणों के दाम में वृद्धि आयेगी और युद्ध जैसी परिस्थितियाँ बनेंगी। स्त्री वर्ग का वर्ष भर का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध व्रत पर्व **हरितालिका तीज** २६ अगस्त मंगलवार को होगा। सौभाग्यवती महिलाएँ अपने सौभाग्य को अक्षुण बनाये रखने तथा कन्यायें भावी जीवन के सुखी दाम्पत्य जीवन को प्राप्त करने के लिए इस व्रत पर्व को तपस्या की तरह निर्जल निराहार रहकर पूर्ण करती हैं। **ढेलहिया चौथ** एवं चन्द्रपूजा का मान भी आज ही चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी तिथि में हो जायेगा। आज के दिन न चाहने पर भी अनजाने में चन्द्रमा को देख लेने से दोष लग जाता है एवं कोई न कोई अपयश कलंक अनावश्यक रूप से लग जाता है। इसकी शान्ति के लिए ''सिंह प्रसेन...'' मन्त्र का जप कर श्रीमद्भागवत् से स्यमन्तक मणि की कथा सुनकर दोष शान्ति कर लेनी चाहिए। **वैनायकी वरद् श्रीगणेश चतुर्थी** का मान २७ अगस्त बुधवार को होगा। देशव्यापी गणेश उत्सव प्रारम्भ हो जायेगा। **श्री ऋषिपंचमी व्रत** पर्व २८ अगस्त गुरुवार को मनाया जायेगा। सप्त ऋषियों की स्वर्ण आदि प्रतिमा का पूजन कर सुयोग्य ब्राह्मण को दान कर देने का पुण्यफलदायक विधान है। सन्तान प्राप्ति की कामना से किया जाने वाला लोलार्क षष्ठी का व्रत एवं पूजन तथा काशी के लोलार्ककुण्ड का स्नान २९अग. शुक्रवार को सम्पन्न होगा। आज के दिन स्वामी कार्तिकेय का दर्शन करने से ब्रह्म हत्या जैसे☐ पापों से मुक्ति मिलती है। **महालक्ष्मी व्रत** का पूजन अनुष्ठान चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी तिथि में ३० अगस्त शनिवार से प्रारम्भ हो जायेगा। **महारविवार** का व्रत ३१ अगस्त को किया जायेगा। **पद्मा एकादशी व्रत** का मान सबके लिए ३ सितम्बर बुधवार को होगा। जिसे बिहार झारखण्ड में पद्मा एकादशी डोलग्यारस कहा जाता है। **वामन जयन्ती**, वामन द्वादशी का मान ४ सितम्बर गुरुवार को होगा। **प्रदोष का व्रत** ५ सितम्बर शुक्रवार को होगा। **अनन्त चतुर्दशी व्रत** एवं पूजन का मान ६ सितम्बर शनिवार को होगा। इसमें मीठा प्रसाद भगवान को नैवेद्य के रूप में अर्पित कर अनन्त व्रत की कथा सुनना पुण्यफलकारी होता है। भगवान को चढ़ाया हुआ मीठा प्रसाद पक्वान प्रसाद स्वरूप ग्रहण करना चाहिए। **स्नान-दान** एवं व्रत सहित पूर्णिमा का मान ७ सित. रविवार को होगा। **पू.फा. नक्षत्र** का सूर्य ३१ अगस्त रवि. के दिन १२।५५ बजे से आवेगा इसमें सामान्य वृष्टि होने की सम्भावना है। ७ सित. रवि.भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को **खग्रास चन्द्रग्रहण** लगेगा। यह ग्रहण पूरे भारतवर्ष में दिखायी देगा।

भाद्रपद शु. दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	९ सो घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	१५ र. घं.	मि.
सिंह	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६
कन्या	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४७	८	४३	८	३९
तुला	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५
वृश्चिक	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२
धनु	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७
मकर	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कुम्भ	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३८	६	३४
मीन	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	२
मेष	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०
वृष	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७
मिथुन	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५१
कर्क	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ रवौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां- प्रसूतिस्नानं, धान्यच्छेदनं कणमर्दनं जलयन्त्र कर्मः मुकदमा कार्य इष्टिकादहनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ सोमे**–उत्तराफाल्गुन्यां - गर्भाधानं (रात्रौ) आ. प्रसूति स्नान जातकर्मः नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रहवणं बीजवपनं, धान्यच्छेदन, कणमर्दन, धान्यरोपण, धान्यस्थापन, चूल्हीस्थापन, वृक्षारोपण, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः आवेदनपत्र लेखनं, वाटिकारम्भः, नूतनवध्वा पाकमुहूर्त्तः, दिवा ८।५७ वादनात्परं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ३ भौमे**–हस्ते- पुंसवन सीमन्तः, प्रसूति स्नानं, नववस्त्र धारणं, लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, कन्याचन्द्रे पूर्व एवं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ बुधे**–हस्ते रोग विमुक्त स्नानं रिक्तोत्तरे दिवा २।६ वादनात्परं चित्रायां जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, वाद्यारम्भः, विपणिव्यापार, क्रय-विक्रय, नववस्त्र धारणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, धान्यच्छेदन, धान्यस्थापन, वृक्षारोपण, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, सेवारम्भः (नौकरी), शिल्पविद्यारम्भः, वाटिकारम्भः, कन्याचन्द्रे पूर्व एवं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ५ गुरौ**–चित्रा-स्वात्यां प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापार, क्रय-विक्रय, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापनं वृक्षारोपणं (चित्रायां) सेवारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदनपत्र लेखनं, नौकाजलयान घटन, शिल्प विद्यारम्भः, वाटिकारम्भः, तुला चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा, औषधि सेवनं, वाहनक्रय। **तिथि ६ शुक्रे**–स्वात्यां क्रय-विक्रय, नववस्त्र धारणं, आभूषण घटन, आभूषण निर्माण, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापनं, नामकरणं, अन्नप्राशनं विपणि व्यापार, दत्तक पुत्र ग्रहणं (ति.दा.), आवेदन पत्र लेखनं, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ शनौ**–विशाखायां इष्टिका दहनं, शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं दिवा १।२६ वादनात्परं अनुराधायां नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ८ रवौ**–भद्रा दिवा ८।५५ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूति स्नानं (ति.दा.) विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं, दत्तक पुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म, वाहनक्रयः अनुराधायां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ सोमे**–ज्येष्ठायां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० भौमे**–मूले पुंसवन सीमन्तः उग्रकर्माचरणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११ बुधे**–भद्रा दिवा १।१३ वादनात्पूर्व पूर्वाषाढ़ायाम् जलयन्त्रकर्म मुकदमाकार्य पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १२ गुरौ**–उ.षाढ़ायां रात्रौ गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्तः, प्रसूति स्नानं, *

पं.२२ भाद्रपद शु.१५ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८९०
अयनांशाः २४/११/५९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	२	३	११	१०	४
१९	११	२५	१४	२४	२०	५	२३	२३
४९	२१	३९	१४	३४	३२	२०	५७	५७
३८	१६	३२	५३	४४	४३	२९	५	५
५८	७९८	३९	११५	१०	७२	४ २८	३	३
११	१०	२६	५५	६	२०	व	११	११

(क) मघा नक्षत्रे ३ चरणे रविः दिवा ३।२ वादने। **(ख) चौथ** ४ अद्य चन्द्रदर्शन निषिद्धम् चन्द्रास्त (रा.८।६) वादने। **चन्द्र पूजा** (बिहार)। चन्द्रदृष्टे सति स्मयन्तकमणेः कथा श्रवणम्। "सिंह प्रसेनबधीत्सिंहो जाम्बवताहतः। सुकुमारक मारोदित्सव ह्येषु स्मयन्तकः" दोष शान्त्यर्थं इति मंत्र जपनीया। मन्वादिः ३। रवियोगः यावद्दिनम्। भौमे-जया सिद्धयोगः १७।२८ (दि.१२।३९) या.। **(ग)** सर्वार्थसिद्धियोगः-रवियोगश्च ०।५१ (प्रातः ६।०) या.। **मघा नक्षत्रे ४ चरणे रविः** रात्रि १।४० वादने। **(घ)** रहित भूमि जन्य शाकाहारं भुञ्जते। रवियोगः ६।३१ (दि.८।१७) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ६।३१ (दि.८।१७) उ. २५।३१ (दि.३।५३) या.। **(ङ)** १२।४८ (दि.१०।४१) या.। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ३०।३० (सा.५।५४) या.। **(च)** व्रत-पूजन-स्थापना आरम्भः (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टम्यां)। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः १९।१९ (दि.१।२६) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १९।१९ (दि.१।२६) उ. ३५।२८ (रा.७।५३) या.। **(छ)** देव्यां आवाहनम्। **महारविवार व्रतम्। दूर्वाष्टमी ८ व्रतम्।⊙ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे रविः** दि.१८।० (दि.१२।५५)। स्त्री-नपुं, सू-सू योगौ महिष वाहनं चण्डा नाड़ी तदीशो शनिः स्वल्प वृष्टियोगः।

* जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, चूल्ही स्थापनं, वृक्षारोपणं, नृत्य-गीत-वाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः, शस्त्रधारणं, इष्टिकानिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः, सेवारम्भः, पूर्व दिग् यात्रा, **गृहारम्भः ल.८। तिथि १३ शुक्रे**–श्रवणे गर्भाधानं, अन्नप्राशनं, नृत्यगीत, वाद्यकलारम्भः, क्रय-विक्रय, आभूषण निर्माण घटनं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदन, कणमर्दन, धान्यस्थापन शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदन पत्र लेखनं, नौका जलयान घटन, वाटिकारम्भः, नूतनवध्वापाक मुहूर्त्तः, श्रवणे दिग्शूल विहाय सर्व दिग् गमनम्। **तिथि १४ शनौ**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १५ रवौ**–शतभिषायां भद्रा दिवा १२।२३ वादनात्परं, आभूषण निर्माणं, विपणि व्यापारः, वृक्षारोपणं, शिल्पविद्यारम्भः, नौका जलयानं घटनं दक्षिण दिग् यात्रा।

राशिफल

मेष-	दैन्यम्
वृष-	रोगं
मिथुन-	सुखम्
कर्क-	क्षतिः
सिंह-	स्थान हानिः
कन्या-	पीड़ा भयम्
तुला-	वित्ताप्ति
वृश्चिक-	सौख्यं
धनु-	पाप बुद्धिः
मकर-	रोग भयम्
कुम्भ-	गमनम् हानिः
मीन-	रिपुनाशः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ आश्विन कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षा ऋतुः कन्यार्कतः शरद् ऋतुः।
दि.८ - २१ सितम्बर सन् २०२५ ई. (रा.भाद्रपद १७ - ३०)

दि.मा. घ.	प.	आश्विन कृ. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३०	५७	१	सोम.	४१	६	रात	१०	१५	पूर्वाभाद्रपद	४०	३७	रात	१०	४	धृति	७	४७	दिन	८	५६	बा	१२	५९	कौ	४१	६	मुसल	८	१	२२	१७	मीन	२६	७	५	४९	६	११	५	५६	४	२०	४७	४९	५८	१३	-	४	६	३५
३०	५३	२	मंगल	३६	२४	रात	८	२३	उत्तराभाद्र	३७	४७	रात	८	५६	शूल/गण्ड	१/५३	४२/१६	प्रातः	६/३	३०/४८	तै	८	४५	गर	३६	२४	सिद्धि	९	२	२३	१८				५	४९	६	११	५	३३	४	२१	४६	२	५८	१५	-	५	७	१०
३०	५०	३	बुध.	३१	३	सायं	६	१५	रेवती	३४	१५	रात	७	३२	वृद्धि	४७	४१	रात	१२	५४	व	३	४४	वि/बव	३१/५८	३/८	उत्पात	१०	३	२४	१९	मेष	३४	१५	५	५०	६	१०	५	११	४	२२	४४	१७	५८	१७	-	५	७	४७
३०	४६	४	गुरु.	२५	१४	दिन	३	५७	अश्विनी	३०	१८	सायं	५	५८	ध्रुव	४०	१०	रात	९	५५	बा	२५	१४	कौ	५२	११	मानस	११	४	२५	२०				५	५१	६	९	४	४८	४	२३	४२	३३	५८	१९	-	५	८	२७
३०	४२	५	शुक्र.	१९	८	दिन	१	३०	भरणी	२६	९	दिन	४	१९	व्याघात	३२	२८	सायं	६	५०	तै	१९	८	गर	४६	५	मुद्गर	१२	५	२६	२१	वृष	४०	६	५	५१	६	९	४	२५	४	२४	४०	५२	५८	२१	-	६	९	१४
३०	३९	६	शनि.	१३	२	दिन	११	५	कृत्तिका	२१	५६	दिन	२	३८	हर्षण	२४	४६	दिन	३	४६	व	१३	२	वि	४०	१	ध्वज	१३	६	२७	२२				५	५२	६	८	४	२	४	२५	३९	१३	५८	२४	-	६	१०	६
३०	१५	७	रवि.	७	०	दिन	८	४१	रोहिणी	१७	५३	दिन	१	२	वज्र	१७	७	दिन	१२	४४	बव	७	०	बा	३४	११	धाता	१४	७	२८	२३	मिथुन	४६	३	५	५३	६	७	३	३९	४	२६	३७	३७	५८	२६	-	६	११	५
३०	३२	८/९	सोम	१/५४	२२/५३	प्रातः	६/४	२७/२४	मृगशिरा	१४	१४	दिन	११	३६	सिद्धि	९	४८	दिन	९	४९	कौ	१	२२	तै/गर	२८/५४	७/५३	आनन्द	१५	८	२९	२४				५	५४	६	६	३	१६	४	२७	३६	३	५८	२८	-	७	१२	८
३०	२८	१०	मंगल	५१	५२	रात	२	३९	आर्द्रा	११	१०	दिन	१०	२२	व्यतिपात/वरीयान	२/५३	५६/४८	प्रातः	७/४	४/३५	व	२३	२२	वि	५१	५२	चर	१६	९	३०	२५	कर्क	५४	३०	५	५४	६	६	२	५३	४	२८	३४	३१	५८	३०	-	७	१	१२
३०	२४	११	बुध.	४८	२१	रात	१	१५	पुनर्वसु	८	५६	दिन	९	२४	परिघ	५१	११	रात	२	२३	बव	१९	३४	बा	४८	२१	गद	१७	१०	३१	२६				५	५५	६	५	२	३०	४	२९	३३	१	५८	३२	-	७	२	१५
३०	२१	१२	गुरु.	४५	५०	रात	१२	१६	पुष्य	७	२९	दिन	८	५६	शिव	४६	३१	रात	१२	३२	कौ	१७	६	तै	४५	५०	शुभ	१८	११	१	२७				५	५६	६	४	२	७	५	०	३१	३३	५८	३५	-	८	३	१६
३०	१७	१३	शुक्र.	४४	३४	रात	११	४७	श्लेषा	७	९	दिन	८	४९	सिद्ध	४२	४४	रात	११	३	गर	१५	१२	व	४४	३४	मृत्यु	१९	१२	२	२८	सिंह	७	९	५	५७	६	३	१	४३	५	१	३०	८	५८	३७	-	८	४	१३
३०	१३	१४	शनि	४४	३१	रात	११	४५	मघा	८	२	दिन	९	१०	साध्य	४०	०	रात	९	५७	वि	१४	३३	श	४४	३१	पद्म	२०	१३	३	२९				५	५७	६	३	१	२०	५	२	२८	४५	५८	३९	-	८	५	८
३०	१०	३०	रवि	४५	५०	रात	१२	१८	पूर्वाफा.	१०	८	दिन	१०	१	शुभ	३८	१४	रात	९	१६	च	१५	११	ना	४५	५०	छत्र	२१	१४	४	३०	कन्या	२६	२	५	५८	६	२	०	५७	५	३	२७	२४	५८	४१	-	९	+	+

मीनराशिः दिवा ४।१६ वादने। फसली आश्विनमासारम्भः। फसली नववर्ष १४३३ प्रारम्भः। पितृपक्षारम्भः। प्रतिपद श्राद्धम्। क्षमा वाणी (जैन)। दुग्धमाश्विन्यां त्यजेत्। पितृपक्षे विशेषः-आयुः पुत्रान् यशः(क)

द्वितीया श्राद्धम्। अशून्यशयन व्रतम् २। चन्द्रोदय (रा.७।१०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३७।४७ (रा.८।५६) या.। भौमे-जया सिद्धयोगः ३६।२४ (रा.८।२३) उ.।

मेषराशिः रात्रि ७।३२ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ३।४४ (दि.७।२०) उ. ३१।३ (सा.६।१५) या. (मर्त्य)। तृतीया श्राद्धम्। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.७।४७) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।(ख)

चतुर्थी श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३०।१८ (सा.५।५८) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३०।१८ (सा.५।५८) उ.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः २५।१४ (दि.३।५७) उ.। (ग) अर्घ्यम्। रवियोगः २६।९ (दि.४।१९) उ.।

वृषराशिः रात्रि ९।५३ वादने। पञ्चमी श्राद्धम्। भरणी श्राद्धम्। भरणी पितृपक्षेतु महती परिकीर्तिता। अस्यां श्राद्धं कृते येन स गया श्राद्धकृतभवेत। चन्द्रषष्ठी ६ व्रतं (चन्द्रोदय व्यापिन्यां) चन्द्रोदय (रा.९।१४) वादने चन्द्राय(ग)

भद्रा १३।२ (दि.११।५) उ. ४०।१ (रा.९।५२) या. (स्वर्ग)। षष्ठी श्राद्धम् - सप्तमी श्राद्धमऽपि अद्यैव। रवियोगः २१।५६ (दि.२।३८) या.। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो २१।५६ (दि.२।३८) उ.। शुभाशुभेत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः(घ)

मिथुनराशिः रात्रि १२।१८ वादने। जीवत्पुत्रिका व्रतम् ८। जीमूतवाहन पूजनम्। अष्टमी श्राद्धम्। गया मध्याष्टमी श्राद्धम्। अन्वष्टका श्राद्धम्। महालक्ष्मी पूजन व्रत-अनुष्ठान, काश्यां लक्ष्मी कुण्डे स्नानं(ङ)

पारणा जीवत्पुत्रिका व्रतस्य प्रातः ६।२७ वादनात्परं। मातृनवमी श्राद्धम् ९। सौभाग्यवती स्त्रीणामऽपि अद्यैव श्राद्धम्। सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगौ १४।१४ (दि.११।३६) या.। (च) शरद् ऋतु प्रारम्भ।

कर्कराशिः रात्रि ३।४२ वादने। भद्रा २३।२२ (दि.४।१५) उ. ५१।५२ (रा.२।३९) या. (स्वर्ग)। दशमी श्राद्धम्। यमघंट योगः ११।१० (दि.१०।२३) या.। (घ) १३।२ (दि.११।५) उ. २१।५६ (दि.२।३८) या.।

इन्दिरा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। एकादशी श्राद्धम्। विश्वकर्मा पूजा। ⊙सं.कन्या राशौ, उ.फा. २ चरणे रविः २७।४० (दि.४।५९)। मु.३० समा समताकरम्। पूर्वा पराः १६ घट्यः पुण्याः। गृहवस्त्र दानम् गोदावर्याम् स्नानम्। (च)

द्वादशी श्राद्धम्। साधुयति वैष्णवानामऽपि अद्यैव श्राद्धम्। सौर आश्विन मासारम्भः। गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ७।२९ (दि.८।५६) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४५।५० (रा.१२।१६) उ.।

सिंहराशिः दिवा ८।४९ वादने। भद्रा ४४।३४ (रा.११।४७) उ. (मर्त्य)। प्रदोष व्रतम् १३। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। त्रयोदशी श्राद्धम्। मघा श्राद्धम्। गजच्छाया योगः ७।९ (दि.८।४९) उ.।

भद्रा १४।३३ (दि.११।४६) या.। चतुर्दशी श्राद्धम्। शस्त्रादिहतानाम् श्राद्धम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ४४।३१ (रा.११।४५) या.। उ.फा. ३ चरणे रविः रात्रि २।४० वादने।

कन्याराशिः दिवा ४।२३ वादने। स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। सर्वपैतृ अमावस्या ३०। महालया ३०। अज्ञाततिथिनामऽपि अद्यैव श्राद्धम्। श्रीमहाविष्णु प्रीत्यर्थ ब्राह्मण भोजनम्। पितृविसर्जनम्३०।(छ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	सो.	१०	२५	५	९	५	२६	१८	५८	३९	२८	४	१६	१०	४८	११६	५	२	२४	४४	५०	१०	२	३	२१	४५	३	७२	२५	११	५	१६	१	४	२९	१०	२३	५३	५५
२	मं.	११	८	५९	१७	५	२६	५८	२६	३९	२८	४	१८	६	५३	११६	३९	२	२४	५७	५२	९	५५	३	२२	५७	२८	७२	३१	११	५	११	३२	४	३१	१०	२३	५०	४४
३	बु.	११	२३	१	५२	५	२७	३७	५४	३९	३१	४	२०	३	३२	११८	१९	२	२५	४	४७	९	४७	३	२४	९	५९	७२	३५	११	५	७	१	४	३१	१०	२३	४७	३३
४	गु.	०	७	९	२४	५	२८	१७	२५	३९	३३	४	२२	१	५१	११८	४२	२	२५	१४	३४	९	४०	३	२५	२२	३४	७२	४०	११	५	२	३०	४	३३	१०	२३	४४	२२
५	शु.	०	२१	१९	१५	५	२८	५६	५८	३९	३६	४	२४	०	३३	१२०	२५	२	२५	२४	१४	९	३२	३	२६	३५	१४	७२	४४	११	४	५७	५७	४	३३	१०	२३	४१	११
६	श.	१	५	२७	२९	५	२९	३६	२४	३९	३८	४	२६	०	५८	११५	३२	२	२५	३३	४६	९	२५	३	२७	४७	५८	७२	५०	११	४	५३	२४	४	३५	१०	२३	३८	०
७	र.	१	१९	३५	४५	६	०	१६	१२	३९	४१	४	२७	५६	३०	११२	४३	२	२५	४३	११	९	१९	४	२९	०	४८	७२	५७	११	४	४८	४९	४	३५	१०	२३	३४	४९
८	सो.	२	३	३७	११	६	०	५५	५३	३९	४५	४	२९	४९	१३	११०	२०	२	२५	५२	३०	९	१६	४	०	१३	४५	७३	१	११	४	४४	१४	४	३६	१०	२३	३१	३८
१०	मं.	२	१७	३३	४८	६	१	३५	३८	३९	४७	५	१	३९	३३	१०८	३५	२	२६	१	४६	९	९	४	१	२६	४६	७३	४	११	४	३९	३८	४	३६	१०	२३	२८	२७
११	बु.	३	१	१७	४२	६	२	१५	२५	३९	५०	५	३	२८	८	१०८	११	२	२६	१०	५५	९	१	४	२	३९	५०	७३	८	११	४	३५	२	४	३६	१०	२३	२५	१६
१२	गु.	३	१४	५४	२०	६	२	५५	१५	३९	५२	५	५	१६	१९	१०७	३०	२	२६	१९	५६	८	५५	४	३	५२	५८	७३	१३	११	४	३०	२६	४	३७	१०	२३	२२	५
१३	शु.	३	२८	१८	३६	६	३	३५	७	३९	५३	५	७	३	४९	१०६	९	२	२६	२८	५१	८	४७	४	५	६	११	७३	१७	११	४	२५	४९	४	३७	१०	२३	१८	५४
१४	श.	४	११	२७	२०	६	४	१५	०	३९	५५	५	८	४९	५८	१०५	४२	२	२६	३७	३८	८	४०	४	६	१९	२८	७३	२०	११	४	२१	१२	४	३७	१०	२३	१५	४३
३०	र.	४	२४	२२	३८	६	४	५४	५५	३९	५६	५	१०	३५	४०	१०४	३७	२	२६	४६	१८	८	२८	४	७	३२	४८	७३	२४	११	४	१६	३५	४	३७	१०	२३	१२	३३

पं.२३ आश्विन कृ.८ सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८९८
अयनांशाः २४/१२/१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	६	४	२	४	११	१०	४
२७	३	०	२९	२५	०	४	२३	२३
३६	३७	५५	४९	५२	१३	४४	३१	३१
३	११	५३	१३	३०	४५	१४	३८	३८
५८	८४०	३९	११८	९	७३	४/३६	३	३
२८	३३	४५	२०	१६	१	व	११	११

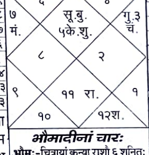

भौमादीनां चारः
भौमः-चित्रायां कन्या राशौ ६ शनितः तुला राशौ रात्रि ७।५० वादने। **बुधः**-सिंह राशौ ८ सोमतः कन्या राशौ दिवा ७।४५ वादने। **गुरुः**-पुनर्वसौ मिथुने। **शुक्रः**-कर्क राशौ ७ रवितः सिंह रात्रि ३।२० वादने। **शनिः**-(वक्री) उ.भा.१ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-१२ गुरुतः पू.भा. १ चरणे। **केतुश्च**-पू.फा.३चरणे।

शुद्ध आश्विन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि.वा.	१सो घं.	मि.	२मं. घं.	मि.	३बु. घं.	मि.	४गु. घं.	मि.	५शु. घं.	मि.	६श. घं.	मि.	७र. घं.	मि.	८सो घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	लग्नांत तिथि.वा.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	३०र. घं.	मि.
सिंह	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	कन्या	७	५५	७	५१	७	४८	७	४४
कन्या	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	तुला	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०
तुला	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२४	१०	२०	१०	१६	वृश्चिक	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७
वृश्चिक	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४१	१२	३७	१२	३३	धनु	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२
धनु	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	मकर	४	१९	४	१५	४	११	४	७
मकर	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	कुम्भ	५	५०	५	४६	५	४२	५	३९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.	
कुम्भ	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	मीन	७	१८	७	१४	७	१०	७	७
मीन	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	मेष	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५
मेष	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	वृष	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२
वृष	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	२	१०	५८	मिथुन	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५
मिथुन	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	कर्क	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३
कर्क	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	सिंह	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७

विविध मुहूर्ताः तिथि १ सोमे—पूर्वाभाद्रपदे- आ.प्रसूति स्नानं, धान्यच्छेदन धान्यस्थापनं जलयन्त्र कर्म पश्चिम दिग् यात्रा रात्रि १०।१५ वादनात्परं गर्भाधानं। **तिथि २ भौमे**—उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ३ बुधे**—भद्रा दिवा ७।२० वादनात्पूर्व रेवत्यां जातकर्म अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः गवां क्रय-विक्रयः हलप्रवहणं, बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं पश्चिम दिग् यात्रा रात्रि ७।३२ वादनात्परं अश्विन्यांदिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ४ गुरौ**—अश्विन्यां-रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ शुक्रेः**—भरण्यां शय्यासनाद्युपभोगं मुकदमाकार्य। **तिथि ६ शनौ**—भद्रा दिवा ११।५ वादनात्पूर्व कृत्तिकायां शस्त्रघटनं इष्टिका दहनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि ७ रवौ**—रोहिण्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं कणमर्दनं शस्त्रधारणं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिकानिर्माणं वाहनक्रयः शल्यकर्म पूर्व दिग् यात्रा रात्रि १२।१८ वादनात्परं मृगशिरायां पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८/९ सोमे**—मृगशिरायां रिक्ता प्रातः ६।२७ वादनात्पूर्व जातकर्म नामकरण, विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः आभूषण धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १० भौमे**—भद्रा दिवा ४।१५ वादनात्पूर्व आर्द्रायाम् उग्रकर्माचरणं, शस्त्र घटनं दिवा १०।२२ वादनात्परं पुनर्वसौ पुंसवनं सीमन्तः लालवस्त्र धारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ बुधे**—पुनर्वसौ-पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं* * हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं औषधिनिर्माणं सेवनं च पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् यात्रा। **तिथि १२ गुरौ**—पुष्ये पुंसवनं सीमन्त जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं पुखराज रत्नधारणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भ जलयन्त्र कर्म शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिकानिर्माणं भूमिक्रयः शल्यकर्म वाहन क्रयः पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ शुक्रे**—श्लेषायां मघायां धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य भूमिक्रयः। **तिथि १४ शनौ**—रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तत्परं मासान्तः।**

पं.२४ आश्विन कृ.३० रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९०४
अयनांशाः २४/१२/२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	६	५	२	४	११	१०	४
३	२४	४	१०	२६	७	४	२३	२३
२७	२२	५४	३५	४६	३२	१६	१२	१२
२४	३८	५५	४०	१८	४८	३५	३३	३३
५८	७७५	३९	१०४	८	७३	४/३७	३	३
४१	३५	५६	३७	२८	२४	व	११	११

(क) स्वर्गं कीर्तिं पुष्टि बलं श्रियम्। पशून सौख्यं धन धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्। **पौराणिक अगस्त्योदयः** दिवा ११।० वादने। **(ख) पूर्वाफाल्गुनी ४ चरणे रविः** रात्रि ८।१४ वादने। **(ङ) दर्शन पूजनं, सोरहिया मेला समाप्तिः।** लक्ष्मी व्रतं चाभ्युदिते शशांके। चन्द्रोदय (रा.११।५) वादने।⊙ **उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे रविः** ३।० (दि.७।५)। स्त्री-पु., सू. सू. योगौ जम्बूक वाहनं वाता नाड़ी तदीशो सूर्यः सामान्य वृष्टि योगः। **भानु सप्तमी पर्वः** सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ७।० (दि.८।४१) या.। **(छ)** सर्वार्थसिद्धियोगः १०।८ (दि.१०।१) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४५।५० (रा.१२।१८) उ.। पाप वारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।

फलम्— आश्विन का पूरा महीना ही धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों के लिये प्रसिद्ध है जिसमें प्रथम कृष्णपक्ष पितरों के लिये अत्यन्त पवित्र माना जाता है जिसे हम **पितृपक्ष** कहते हैं। यह ८ सितम्बर सोमवार से प्रारम्भ होगा। इस पक्ष में पितरों का श्राद्ध एवं तर्पण करना हम सनातन धर्मियों के लिये प्रथम ही अनिवार्य है। श्राद्ध तर्पण के मन्त्रों से हम अपने पितरों को तो तृप्त करते ही हैं इसके साथ ही समस्त गतात्मा जीव-जगत को भी तृप्त करते हैं। पितृपक्ष में श्राद्ध तो अपने स्वर्गीय पिता की मृत्यु-तिथि को अथवा तिथि ज्ञात न होने पर अमावस्या तिथि को करना चाहिये किन्तु देव-ऋषि-मनुष्य तर्पण पूरे पक्षभर करना चाहिये। **देव कार्यादपिसदापितृकार्यविशिष्यते।** अर्थात् देव कार्य से भी महत्त्वपूर्ण पितृकार्य को माना गया है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान १० सितम्बर बुधवार को होगा। चन्द्रोदय रात ७।४७ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी में चन्द्रोदय मिलने के कारण विगत १६ दिनों से चला आ रहा **महालक्ष्मी व्रत** का पूजन-अनुष्ठान १४ सितम्बर रविवार को सम्पन्न हो जायेगा, **जीवत्पुत्रिका व्रत** मातायें अपने पुत्र की दीर्घायु की कामना से १४ सितम्बर रविवार को करेंगी। **जीवत्पुत्रिका व्रत** का पारण १५ सितम्बर सोमवार को प्रातः ६।२७ बजे के बाद किया जायेगा। सौभाग्यवती मृतका माताओं का श्राद्ध क्षयवती नवमी तिथि में १५ सित. सोम. को होगा। इसे ही हम **मातृ-नवमी** कहते हैं। **विश्वकर्मा पूजा** १७ सित.बुधवार □को आद्य शिल्पी भगवान विश्वकर्मा की पूजा के साथ मनायेंगे। **प्रदोष का व्रत** एवं **मास शिवरात्रि** का व्रत १९ सितम्बर शुक्रवार को किया जायेगा। **स्नान-दान एवं श्राद्ध** सहित **सर्वपैतृ अमावस्या पितृ विसर्जन महालया** २१ सितम्बर रविवार को होगा। ब्राह्मणों को चतुर्भुज श्री महाविष्णु का स्वरूप मानते हुए उनको भोजन कराना एवं श्रद्धा पूर्वक दान-दक्षिणा देकर उनको संतुष्ट करना परिवार में सुख-शान्ति प्रदान करता है तथा वंशवृद्धि होती है। हर सनातन धर्मी को इस पुनीत कार्य को अवश्य ही करना चाहिये। **उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र** का सूर्य १४ सितम्बर रविवार को दिन ७।५ बजे से आवेगा इसमें सामान्य से अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना बन रही है। **कन्या राशि** की सूर्य संक्रान्ति १७ सितम्बर बुधवार को दिन (सायं) ४।५९ बजे से आयेगी। कृष्ण पक्ष में तिथि का घटना शुभफलकारी होता है किन्तु रविवार की अमावस्या भारी पड़ेगी।

राशिफल

मेष-	हानिः
वृष-	सुखार्थ लाभः
मिथुन-	हानिः
कर्क-	शत्रुभयं
सिंह-	सुखं श्रीः
कन्या-	नेत्र कष्टं
तुला-	पीड़ा भयम्
वृश्चिक-	शोकं
धनु-	सुख प्राप्तिः
मकर-	शोकं
कुम्भ-	रोगं
मीन-	पाप बुद्धिः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ आश्विन शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः शरद् ऋतुः दि. २२ सितम्बर - ७ अक्टूबर सन् २०२५ ई. (रा.भाद्रपद ३१ - आश्विन १५)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३०	६	१	सोम	४८	२०	रात	१	१९	उत्तराफा.	१३	३४	दिन	११	२५	शुक्ल	३७	२७	रात	८	५८	किं	१७	२५	बव	४८	२०	श्रीवत्स	२२	१५	५	३१				५	५९	६	१	०	३४	५	४	२६	५	५८	४४	-	९	६	३८
३०	२	२	मंगल	५१	५९	रात	२	४८	हस्त	१८	५	दिन	१	१४	ब्रह्म	३७	३२	रात	९	१	बा	२०	१०	कौ	५१	५९	सौम्य	२३	१६	६	१	तुला	५०	५०	६	०	६	०	०	१०	५	५	२४	४९	५८	४६	-	१०	६	३६
२९	५९	३	बुध.	५६	३२	रात	४	३७	चित्रा	२३	३५	दिन	३	२६	ऐन्द्र	३८	२१	रात	९	२०	तै	२४	१५	गर	५६	३२	कालदण्ड	२४	१७	७	२				६	०	६	०	द०	१२	५	६	२३	३५	५८	४८	-	१०	७	७
२९	५५	४	गुरु.	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	२९	४४	सायं	५	५५	वैधृति	३९	३४	रात	९	५१	व	२९	३	वि	६०	०	स्थिर	२५	१८	८	३				६	१	५	५९	०	३६	५	७	२२	२३	५८	५१	-	१०	७	४१
२९	५१	४	शुक्र.	१	३४	दिन	६	४०	विशाखा	३६	१५	रात	८	३२	विष्कुम्भ	४१	६	रात	१०	२८	वि	१	३४	बव	३३	४३	मातंग	२६	१९	९	४	वृश्चिक	१९	३८	६	२	५	५८	०	५९	५	८	२१	१४	५८	५३	-	१०	८	१८
२९	४८	५	शनि	६	५२	दिन	८	४७	अनुराधा	४२	३९	रात	११	६	प्रीति	४२	२८	रात	११	१	बा	६	५२	कौ	३९	१६	अमृत	२७	२०	१०	५				६	२	५	५८	१	२२	५	९	२०	७	५८	५५	-	११	९	०
२९	४४	६	रवि.	११	४०	दिन	१०	४३	ज्येष्ठा	४८	३३	रात	१	२८	आयुष्यमान	४३	२८	रात	११	२६	तै	११	४०	गर	४३	४७	काण	२८	२१	११	६	धनु	४८	३३	६	३	५	५७	१	४६	५	१०	१९	२	५८	५८	-	११	९	४७
२९	४०	७	सोम.	१५	५५	दिन	१२	२६	मूल	५३	४२	रात	३	२३	सौभाग्य	४३	५०	रात	११	३६	व	१५	५५	वि	४७	३२	लुम्बक	२९	२२	१२	७				६	४	५	५६	२	९	५	११	१८	०	५९	०	-	१२	१०	३९
२९	३६	८	मंगल.	१९	९	दिन	१	४५	पूर्वाषाढ़ा	५७	४०	रात	५	९	शोभन	४३	२०	रात	११	२५	बव	१९	९	बा	५०	३३	मित्र	३०	२३	१३	८				६	५	५	५५	२	३३	५	१२	१७	०	५९	२	-	१२	११	३७
२९	३३	९	बुध.	२१	१६	दिन	२	३५	उत्तराषा.	६०	०	स	म	स्त	अतिगण्ड	४१	५९	रात	१०	५३	कौ	२१	१६	तै	५२	१	वज्र	१	२४	१४	९	मकर	१३	२२	६	५	५	५५	२	५६	५	१३	१६	२	५९	५	-	१३	१२	३६
२९	२९	१०	गुरु.	२२	६	दिन	२	५६	उत्तराषा.	०	३०	दिन	६	१८	सुकर्मा	३९	३५	रात	९	५६	गर	२२	६	व	५१	५१	सौम्य	२	२५	१५	१०				६	६	५	५४	३	१९	५	१४	१५	७	५९	७	-	१३	१	३७
२९	२५	११	शुक्र.	२१	३५	दिन	२	४४	श्रवण	२	५	दिन	६	५६	धृति	३६	११	रात	८	३४	वि	२१	३५	बव	५०	४३	धूम्र	३	२६	१६	११	कुम्भ	३२	१५	६	६	५	५४	३	४२	५	१५	१४	१४	५९	९	-	१३	२	३८
२९	२२	१२	शनि.	१९	५१	दिन	२	३	धनिष्ठा	२	२६	दिन	७	५	शूल	३१	४८	रात	६	५०	बा	१९	५१	कौ	४८	२५	प्रवर्धमान	४	२७	१७	१२				६	७	५	५३	४	६	५	१६	१३	२३	५९	१२	-	१४	३	४०
२९	१८	१३	रवि.	१६	५९	दिन	१२	५६	शतभिषा पूर्वाभाद्रपद	१ ५८	[illegible]	प्रातः	६ ६	४६ २	गण्ड	२६	३४	दिन	४	४६	तै	१६	५९	गर	४५	५	राक्षस	५	२८	१८	१३	मीन	४४	२	६	८	५	५२	४	२९	५	१७	१२	३५	५९	१४	-	१४	४	४३
२९	१४	१४	सोम	१३	११	दिन	११	२४	उत्तराभाद्र	५७	६	रात	४	५८	वृद्धि	२०	३५	दिन	२	२२	व	१३	११	वि	४०	५१	गद	६	२९	१९	१४				६	८	५	५२	४	५२	५	१८	११	४९	५९	१६	-	१४	५	४७
२९	११	१५	मंगल	८	३१	दिन	९	३३	रेवती	५३	४५	रात	३	३९	ध्रुव	१३	५६	दिन	११	४३	बव	८	३१	बा	३५	३३	शुभ	७	३०	२०	१५	मेष	५३	४५	६	९	५	५१	५	१५	५	१९	११	५	५९	१९	-	१४	+	+

शारदीय नवरात्रारम्भः, प्रथमं शैलपुत्री दर्शनम्। कलशस्थापनं यावद्दिनम्। दुर्गा सप्तशती पाठारम्भः, ध्वजारोपणम्। केश संस्कार द्रव्याणि प्रदद्याप्रतिपद्दिने। महाराजा अग्रसेन जयन्ती १। दौहित्र कर्तृक(क)

तुलाराशिः रात्रि २।२० वादने। चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्यश्रृंगम् सुभिक्षं। द्वितीयं ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनम्। 'पट्टोदरं द्वितीयायांकेशसंयम हेतवे।' राष्ट्रीय आश्विन मासारम्भः। शुभाशुभ द्वयगुण्यकरः(ख)

मु.रवि-उस्सानी ४ हिजरी सन् १४४७। तृतीयं चन्द्रघण्टा देवी दर्शनम्। 'दर्पणञ्च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा।' सिन्दूर तृतीया ३। रवियोगः २३।३५ (दि.३।२६) उ.। उ.फा. ४ चरणे रविः दिवा १२।२४ वादने।

भद्रा २९।३ (सायं ५।३८) उ. (पाताले)। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चतुर्थकं कूष्माण्डा देवी दर्शनम्। 'मधुपर्कं चतुर्थ्यान्तुतिलकं नेत्र मण्डनम्।' रथोत्सव चतुर्थी ४। रवियोगः २९।४४ (सा.५।५५) या.।

वृश्चिक राशिः दिवा १।५२ वादने। भद्रा १।३४ (प्रातः ६।४०) या.। उपांग ललिता व्रतम् ५। महाराष्ट्रे प्रसिद्धिम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३६।१५ (रा.८।३२) उ.। रवियोग ३६।१५ (रा.८।३२) उ.।

पंचम स्कन्दमातादर्शनम्। 'पञ्चम्यामङ्गरागञ्च शक्त्यालंकरणानि च।' ☉हस्त नक्षत्रे रविः ४०।३० (रा.१०।१४)। स्त्री-नपुं., सूर्य-सूर्य योगो, चातक वाहनं चण्डा नाड़ी तदीशो शनिः अल्प वृष्टि योगः। रवियोग ४०।३०(रा.१०।१४)या.।

धनुराशिः रात्रि १।२८ वादने। षष्ठी तिथि ज्येष्ठा नक्षत्र योगे प्रातः १०।४३ वादनम् यावत् विल्वाभित्रणम्। षष्ठं कात्यायनी देवी दर्शनम्। 'षष्ठ्यांबिल्वतरोबोधं सायं सन्ध्यासुकारयेत्।' सायं देवी बोधनं, आमंत्रणं अधिवासनं(ग)

भद्रा १५।५५ (दि.१२।२६) उ. ४७।३२ (रा.१।५) या. (पाताले)। सप्तमं कालरात्रि दर्शनम्। 'सप्तम्यां प्रातरानीया गृहमध्ये प्रपूजयेत्।' मूलस्याद्य पादे देवी आवाहनं (प्रातरेव)। मूल नक्षत्र युता सप्तम्यां पत्रिका प्रवेशनम्(घ)

महाष्टमी ८ व्रतम्। अष्टमं महागौरी दर्शनम्। उपोषणमथाष्टम्यामात्मशक्त्याथपूजनम्। अन्नपूर्णा परिक्रमा १९।९ (दि.१।४५) या.। पूजा पण्डाले सन्धि पूजा मध्यान्ह १।२१ वादनात्परं २।९ वादनम् यावत्।

मकरराशिः दिवा ११।२६ वादने। महानवमी व्रतम् ९। नवम्यामुग्रचण्डायाः पूजां कुर्याद बलिं तथा। यावन्नवमी होमादिकञ्च दिवा २।३५ वादनम् यावत्। तदुपरान्त दशम्यां पूर्ण नवरात्र व्रतस्यपारणा। दशम्यामेव नवरात्र(ङ)

भद्रा ५१।५१ (रा.२।५०) उ. (पाताले)। विजया दशमी १०। श्रवण नक्षत्र युता दशमी प्रशस्ता। शमी पूजनम् १०। अपराजिता पूजा १०। जयन्ती ग्रहणम्। नीलकंठदर्शनम् सीमोलंघनम् विजय यात्रा। श्रवणे सरस्वती (च)

कुम्भराशिः रात्रि ७।० वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा २१।३५ (दि.२।४४) या.। पापांकुशा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। काश्यां नाटी ईमली नामक स्थाने भरतमिलापः। सर्वार्थसिद्धियोगः २।५ (दि.६।५६)या.।

पद्मनाभ द्वादशी १२। द्वादश्यामेवदुग्धदानम् द्विदलत्याग व्रतारम्भः। शनि प्रदोष व्रतम् १२। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। हस्त नक्षत्रे ३ चरणे रविः दिवा ४।५५ वादने।

मीनराशिः रात्रि ११।४५ वादने। (छ) लक्ष्मी पूजा लखी पूजा (बंगाल)। निशीथे वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै वित्तं प्रदास्यामि अक्षैः क्रीडां करोतियः।

भद्रा १३।११ (दि.११।२४) उ. ४०।५१ (रा.१०।२८) या. (मर्त्ये)। व्रताय पूर्णिमा १५। शरद् पूर्णिमा-कोजागरी पूर्णिमा १५। अद्य रात्रौ लक्ष्मी कुबेरादि पूजनम्। अहोरात्रि घृतदीप प्रज्वलितम्। धन ऐश्वर्य प्राप्ति हेतवः।(छ)

मेषराशिः रात्रि ३।३९ वादने। पंचक (पचखा) समाप्ति। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। महर्षि बाल्मीकि जयन्ती १५। पराशर जयन्ती १५। कौमुदी महोत्सवः, रास पूर्णिमा (ब्रजभूमि)। नवपद ओली(ज)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	सा	५	७	१	१२	६	५	३४	५१	४०	०	५	१२	२०	१७	१०३	१०	२	२६	५४	४६	८	१९	४	८	४६	१२	७३	२७	११	४	११	५८	४	३९	१०	२३	९	२२
२	मं.	५	१९	२७	३७	६	६	१४	५१	४०	५	५	१४	३	२७	१०२	२२	२	२७	३	५	८	१२	४	९	५९	३९	७३	३१	११	४	७	१९	४	३७	१०	२३	६	११
३	बु.	६	२	५	४२	६	६	५६	५६	४०	११	५	१५	४५	४९	१०१	५४	२	२७	११	१७	८	४	४	११	१३	१०	७३	३६	११	४	२	४२	४	३७	१०	२३	३	०
४	गु.	६	१४	११	५३	६	७	३५	७	४०	१८	५	१७	२७	४३	१०१	१५	२	२७	१९	२१	७	५६	४	१२	२६	४६	७३	४१	११	३	५८	५	४	३५	१०	२२	५९	५०
४	शु.	६	२६	१३	४	६	८	१५	२५	४०	२४	५	१९	८	५८	१००	४४	२	२७	२७	१७	७	४८	४	१३	४०	२७	७३	४५	११	३	५३	३०	४	३५	१०	२२	५६	३९
५	श.	७	८	१६	१९	६	८	५५	४९	४०	३१	५	२०	४९	४२	९९	१६	२	२७	३५	५	७	४१	४	१४	५४	१२	७३	४७	११	३	४८	५५	४	३४	१०	२२	५३	२८
६	र.	७	२०	२५	५०	६	९	३६	२०	४०	४०	५	२२	२८	५८	९७	३४	२	२७	४२	४६	७	३५	४	१६	७	५९	७३	५०	११	३	४४	२१	४	३४	१०	२२	५०	१७
७	सो.	८	२	४३	२१	६	१०	१७	०	४०	४८	५	२४	६	३२	९६	२२	२	२७	५०	२१	७	३०	४	१७	२१	४९	७३	५२	११	३	३९	४७	४	३२	१०	२२	४७	६
८	मं.	८	१५	१५	२९	६	१०	५७	४८	४०	५३	५	२५	४२	५४	९५	३३	२	२७	५७	५१	७	२२	४	१८	३५	४१	७३	५५	११	३	३५	१५	४	२९	१०	२२	४३	५५
९	बु.	८	२८	१	१७	६	११	३८	४१	४०	५९	५	२७	१८	२७	९४	४८	२	२८	५	१३	७	१५	४	१९	४९	३६	७३	५८	११	३	३०	४६	४	२७	१०	२२	४०	४४
१०	गु.	९	१०	४७	४४	६	१२	१९	४०	४१	३	५	२८	५३	१५	९३	१६	२	२८	१२	२८	७	६	४	२१	३	३४	७४	०	११	३	२६	१९	४	२७	१०	२२	३७	३३
११	शु.	१०	२३	५०	११	६	१३	०	४३	४१	८	६	०	२६	३१	९२	२७	२	२८	१९	३४	६	५७	४	२२	१७	३४	७४	३	११	३	२१	५२	४	२६	१०	२२	३४	२२
१२	श.	१०	६	४२	३५	६	१३	४१	५१	४१	१२	६	१	५८	५८	९१	५५	२	२८	२६	३१	६	४९	४	२३	३१	३७	७४	६	११	३	१७	२६	४	२३	१०	२२	३१	११
१३	र.	११	२०	१६	१२	६	१४	२३	३	४१	१५	६	३	३०	५३	९१	१०	२	२८	३३	२०	६	४२	४	२४	४५	४३	७४	१०	११	३	१३	३	४	२३	१०	२२	२८	०
१४	सो.	११	४	६	१८	६	१५	४	१८	४१	२०	६	५	२	३	९०	३५	२	२८	४०	२	६	३३	४	२५	५९	५३	७४	१५	११	३	८	४०	४	२२	१०	२२	२४	४९
१५	मं.	११	१८	६	५६	६	१५	४५	३८	४१	२४	६	६	३२	३८	८९	२३	२	२८	४६	३५	६	२५	४	२७	१४	८	७४	१८	११	३	४	१८	४	२२	१०	२२	२१	३८

पं.२५ आश्विन शु.८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९१३ अयनांशाः २४/१२/३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	६	५	२	४	११	१०	४
१२	१५	१०	२५	२७	१८	३	२२	२२
१७	१५	५७	४२	५७	३५	३५	४३	४३
०	२९	४८	५४	५१	४१	१५	५५	५५
५९	८३२	४०	९५	७	७३	४	३	३
२	१८	५३	३३	२२	५५	२९	११	११

आश्विन कृष्ण — दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत	१सो		२मं.		३बु.		४गु.		४शु.		५श.		६र.		७सो.		८मं.		९बु.		१०गु.		११शु.		१२श.		१३र.		१४सो		१५मं.	
ति.वा.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
कन्या	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०
तुला	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६
वृश्चिक	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३
धनु	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८
मकर	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३
कुम्भ	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५
	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मीन	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३
मेष	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१
वृष	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८
मिथुन	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२
कर्क	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९
सिंह	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१

पं.२६ आश्विन शु.१५ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९२० अयनांशाः २४/१२/४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	६	६	२	४	११	१०	४
१९	१८	१५	६	२८	२७	३	२२	२२
११	६	४५	३२	४६	१४	४	२१	२१
५	५६	३८	३८	३५	८	१८	३८	३८
५९	८७४	४१	९	६	७४	४	३	३
१९	१०	२४	२३	२५	१८	२२	११	११

(क) मातामह (नानी) श्राद्धम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४८।२० (रा.१।१९) या.। (ख) द्विपुष्करयोगः १८।५ (दि.१।१४) उ. ५१।५९ (रा.२।४८) या.। (ग) च।रवियोगः ४८।३३ (रा.१।२८) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।३३ (रा.१।२८) उ.। (घ) (सरस्वत्या आवाहनं), दुर्गापूजा पण्डाले देवी स्थापना। गजारूढा देवी (हाथी पर) आगमनं फलं वृष्टिकारकं। महानिशापूजा (अष्टम्यां)। अन्नपूर्णा परिक्रमा १५।५५ (दि.१२।२६) उ. ओली प्रारम्भ (जैन)। (ङ) व्रतोनाम् पारणा। मन्वादिः ९। रवियोगः यावद्दिनम्। हस्त नक्षत्रे २ चरणे रविः दिवा ७।४५ वादने। (च) दुर्गाप्रतिमा विसर्जनम्। सम्मुख प्रेषणं कुर्यादेशान्यं शाबरोत्सवे। राज्ञो पट्टाभिषेकं। दोलायां नरवाहनः (डोली) वाहन देवी गमनं फलं शुभ सौख्य कारी। बौद्धावतारः १०। जगद्गुरु माधवाचार्य जयन्ती १०। खत्री दिवसः। रवियोगः यावद्दिनम्। गुरो-पूर्णा सिद्धयोगः २२।६ (दि.२।५६) या.। गान्धी-शास्त्री जयन्ती २ अक्टूबर। (ज) समाप्ति (जैन)। हस्त नक्षत्रे ४ चरणे रविः रात्रि १।४९ वादने। भौमाश्विनी सर्वार्थामृत सिद्धियोगौ ५३।४५ (रा.३।३९) उ.। कार्तिक यम नियम संयमारम्भः।

□ अक्टूबर बुधवार को होगा एवं आज ही नवमी तिथि पर्यन्त दिन में २।३५ बजे तक पूर्ण नवरात्र के पूजन-अनुष्ठान की समाप्ति का हवन कर लिया जायेगा। इसके उपरान्त दशमी तिथि में पूर्ण नवरात्र व्रत का पारण भी आज ही कर लिया जायेगा। विजया दशमी का परम पवित्र पर्व २ अक्टूबर गुरुवार को श्रवण नक्षत्र युक्त उदयकालिक एवं अपराह्न व्यापिनी दशमी तिथि में मनाया जायेगा। सरस्वती विसर्जन के साथ दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन किया जायेगा। पापांकुशा एकादशी व्रत के मान सबके लिये ३ अक्टूबर शुक्रवार को होगा। आज काशी में नाटी इमली के प्रसिद्ध भरत-मिलाप की रामलीला काशीराज की गौरवपूर्ण उपस्थिति एवं काशी के यादव बन्धुओं की परम्परागत सहभागिता के साथ भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होगी। अस्ताचलगामी सूर्य की सुनहरी किरणों से आलोकित चारों भाइयों के भावपूर्ण मिलन के नयनाभिराम दृश्य को देखकर काशीवासी निहाल हो जायेंगे। पुत्र की कामना से शनिप्रदोष का व्रत ४ अक्टूबर को किया जायेगा। व्रत के लिये पूर्णिमा एवं शरद् पूर्णिमा तथा कोजागरी पूर्णिमा ६ अक्टूबर सोमवार को होगी। [illegible] स्नान-दान की पूर्णिमा एवं महर्षि वाल्मीकि जयन्ती ७ अक्टूबर मंगलवार को मनायी जायेगी। हस्त नक्षत्र का सूर्य २७ सितम्बर शनिवार की रात ११।४९ बजे से आयेगा। इसमें हल्की वर्षा की सम्भावना है।

[illegible]

राशिफल

मेष-	पुत्रानन्द
वृष-	धनागमः
मिथुन-	अर्थागमः
कर्क-	धनप्राप्तिः
सिंह-	सुखं
कन्या-	अर्थलाभः
तुला-	धनागमः
वृश्चिक-	धर्माचरणं
धनु-	सुख लाभः
मकर-	कष्टकरं
कुम्भ-	अतिभयं
मीन-	शत्रुपीड़ा

फलम्- यह पक्ष १६ दिन का है क्योंकि चतुर्थी तिथि की वृद्धि हो गई है। नवरात्र में तिथि की वृद्धि शुभफल कारक होती है। चित्रा नक्षत्र कन्या राशि का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। आश्विन शुक्ल पक्ष आदि शक्ति भगवती दुर्गा एवं मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के द्वारा रावण पर विजय प्राप्त करने के वर्णन को दर्शाने एवं उनकी पूजा आराधना का पर्व है। शारदीय नवरात्र में माता भगवती की पूजा अनुष्ठान करने से सम्बन्धित कलश स्थापन २२ सितम्बर सोमवार को सुबह से सायं कालतक किसी भी समय किया जा सकता है। नवरात्र में दुर्गा सप्तसती का पाठ स्वयं करना अथवा ब्राह्मण पुरोहित द्वारा संकल्प लेकर कराना परम पुण्यफलकारी होता है। घर परिवार में सुख शान्ति बनी रहती है। रावण पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से भगवान राम द्वारा की गई विधिविधान से शक्ति पूजा पर आधारित सप्तमी तिथि में पूजा पण्डालों में देवी प्रतिमाओं की स्थापना मूल नक्षत्र से युक्त सप्तमी तिथि में २९ सितम्बर सोमवार दिन में १२।२६ बजे के पूर्व ही कर लेनी चाहिए। इस बार **देवी का आगमन हाथी** पर होगा जिसका फल वृष्टि कारक होता है। **महानिशा अष्टमी** तिथि में पूजा करने वाले श्रद्धालु २९ सितम्बर की अपनी परम्परा के अनुसार पूजनादि कार्य करेंगे। **महाष्टमी** का व्रत ३० सितम्बर मंगलवार को किया जायेगा। पूजा पण्डालों में की जाने वाली **सन्धि पूजा** ३० सित. को मध्याह्न १।२१ बजे से लेकर २।९ बजे तक की जायेगी। **महानवमी** का मान १०

भौमादीनां चारः

भौमः-तुला राशौ २ भौमतः स्वात्यां रात्रि १।१५ वादने। बुधः-कन्या राशौ १० गुरुतः तुलाराशौ प्रातः ७।१० वादने। गुरुः-पुनर्वसौ मिथुनराशौ। शुक्रः-सिंह राशौ। शनिः-(वक्री) उ.भा.१ चरणे मीनराशौ ११ शुक्रतः वक्रगत्या पू.भा.४ चरणे दिवा १०।३० वादने राहुः-पू.भा.१ चरणे। केतुः पू.फा. ३ चरणे।

विविध मुहूर्तः

तिथि १ सोमे-उ.फा.-पुंसवन सीमन्त, प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं, विपणि व्यापार, आभूषण निर्माण घटनं, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं। कलारम्भः, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदन पत्र लेखनं, लतावृक्षादि रोपणं, वाटिकारम्भः, नूतनवस्त्राभूषणधारणं, दक्षिण दिग्यात्रा। [illegible] तिथि २ भौमे-हस्तनक्षत्रे पुंसवन सीमन्तं, प्रसूति स्नानं, [illegible] तिथि ३ बुधे- [illegible] तिथि ४ गुरौ- [illegible] तिथि ४ शुक्रे- [illegible] तिथि ५ शनौ- [illegible] तिथि ६ रवौ- [illegible] तिथि ७ सोमे- [illegible] तिथि ८ भौमे- [illegible] तिथि ९ बुधे- [illegible] तिथि १० गुरौ- [illegible] तिथि ११ शुक्रे- [illegible] तिथि १३ रवौ- [illegible] तिथि १४ सोमे- [illegible] तिथि १५ भौमे- [illegible]

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ कार्तिक कृष्ण पक्ष:।

याम्यायनं सौम्यगोल: तुलार्कत याम्यगोल:। शरद् ऋतु:।
दि.८ - २१ अक्टूबर सन् २०२५ ई.। (रा.आश्विन १६ - २९)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द. अं.	क.	स्पष्ट सूर्य: रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
२९	७	१/२	बुध.	३/५४	१६/१६	प्रात:	७/५	२८/१०	अश्विनी	४९	५२	रात	२	७	व्याघात/हर्षण	६/५२	४५/३०	प्रात:	८/५	५२/५२	कौ	३	१६	तै/गर	२८/५४	४६/१६	मृत्यु	८	१	२१	१६				६	१०	५	५०	५	३८	५	२०	१०	१३	५९	२१	-	१४	६	२१
२९	३	३	गुरु.	५१	३६	रात	२	४९	भरणी	४५	४६	रात	१२	२९	वज्र	५१	२७	रात	२	४६	व	२३	५६	वि	५१	३६	पद्म	९	२	२२	१७	वृष	५९	४२	६	११	५	४९	६	१	५	२१	९	४४	५९	२३	-	१५	७	६
२९	०	४	शुक्र.	४५	३०	रात	१२	२४	कृत्तिका	४१	३२	रात	१०	४९	सिद्धि	४३	३६	रात	११	३८	बव	१८	३३	बा	४५	३०	छत्र	१०	३	२३	१८				६	१२	५	४८	६	२४	५	२२	९	७	५९	२६	-	१५	७	५८
२८	५६	५	शनि.	३९	३५	रात	१०	३	रोहिणी	३७	२७	रात	९	१२	व्यतिपात	३५	५१	रात	८	३३	कौ	१२	३२	तै	३९	३५	श्रीवत्स	११	४	२४	१९				६	१३	५	४७	६	४७	५	२३	८	३३	५९	२८	-	१५	८	५६
२८	५२	६	रवि.	३३	५८	रात	७	४८	मृगशिरा	३३	४३	रात	७	४२	वरीयान	२८	२३	सायं	५	३४	गर	६	४६	व	३३	५८	सौम्य	१२	५	२५	२०	मिथुन	५	३५	६	१३	५	४७	७	९	५	२४	८	१	५९	३०	-	१५	१०	०
२८	४९	७	सोम	२८	५६	सायं	५	४८	आर्द्रा	३०	३१	सायं	६	२६	परिघ	२१	१४	दिन	२	४४	वि	०	५७	बव/बा	२८/५६	५६/४७	कालदण्ड	१३	६	२६	२१				६	१४	५	४६	७	३२	५	२५	७	२१	५९	३२	-	१६	११	५
२८	४५	८	मंगल.	२४	३८	दिन	४	६	पुनर्वसु	२८	२	सायं	५	२८	शिव	१४	४८	दिन	१२	१०	कौ	२४	३८	तै	५२	५४	स्थिर	१४	७	२७	२२	कर्क	१३	४०	६	१५	५	४५	७	५४	५	२६	७	३	५९	३५	-	१६	१२	९
२८	४२	९	बुध.	२१	१०	दिन	२	४४	पुष्य	२६	२३	दिन	४	४९	सिद्ध	९	०	दिन	९	५२	गर	२१	०	व	४९	५७	मातंग	१५	८	२८	२३				६	१६	५	४४	८	१७	५	२७	६	३७	५९	३७	-	१७	१	१०
२८	३८	१०	गुरु.	१८	४५	दिन	१	४६	श्लेषा	२५	४७	दिन	४	३५	साध्य/शुभ	४/५५	१/५३	प्रात:	७/६	५२/१३	वि	१८	४५	बव	४८	१०	अमृत	१६	९	२९	२४	सिंह	२५	४७	६	१६	५	४४	८	३९	५	२८	६	१४	५९	३९	-	१७	२	८
२८	३४	११	शुक्र.	१७	३४	दिन	१	१९	मघा	२६	२५	दिन	४	५१	शुक्ल	५६	४६	रात	४	५९	बा	१७	३४	कौ	४७	३५	काण	१७	१०	३०	२५				६	१७	५	४३	९	१	५	२९	५	५३	५९	४२	-	१७	३	३
२८	३१	१२	शनि.	१७	३६	दिन	१	२०	पूर्वाफा.	२८	१६	सायं	५	३६	ब्रह्म	५४	३९	रात	४	१०	तै	१७	३६	गर	४८	१७	लुम्बक	१८	११	१	२६	कन्या	४४	३	६	१८	५	४२	९	२३	६	०	५	३५	५९	४४	-	१८	३	५५
२८	२७	१३	रवि.	१८	५८	दिन	१	५४	उत्तराफा.	३१	२३	रात	६	५२	ऐन्द्र	५३	३२	रात	३	४४	व	१८	५८	वि	४९	३९	मित्र	१९	१२	२	२७				६	१९	५	४१	९	४४	६	१	५	१९	५९	४६	-	१८	४	४७
२८	२४	१४	सोम	२०	३३	दिन	२	३२	हस्त	३५	३७	रात	८	३४	वैधृति	५३	१८	रात	३	३८	श	२०	३३	च	५२	५२	वज्र	२०	१३	३	२८				६	१९	५	४१	१०	७	६	२	५	५	५९	४८	-	१८	५	३९
२८	२०	३०	मंगल	२५	१५	दिन	४	२६	चित्रा	४१	१	रात	१०	४४	विष्कुंभ	५३	५२	रात	३	५३	ना	२५	१५	किं	५७	३३	ध्वांक्ष	२१	१४	४	२९	तुला	८	१९	६	२०	५	४०	१०	२८	६	३	४	५३	५९	५१	-	१८	+	+

फसली कार्तिक मासारम्भ:। आकाशदीपारम्भ:। धर्मशास्त्रायुर्वेद मतेन द्विदल (दाल) तक्रश्च (मट्ठा) कार्तिकेत्यजेत्। अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.६।२१) वादन चन्द्राय अर्घ्यम्। अर्घ्य मन्त्र-"गगनांगण संदीप(क)
वृषराशि: रात्रि शेष ५।४२ वादने। भद्रा २३।५६ (दि.३।४५) उ. ५१।३६ (रा.२।४९) या. (स्वर्ग)। यायि जयद् योग: ४५।४६ (रा.१२।२९) यावत.। यमघंटयोग: ४५।४६ (रा.१२।२९) उ.। (ख) योग: ४१।३२ (रा.१०।४९)उ.।
संकष्टी श्रीगणेश करक चतुर्थी (करवा चौथ) ४ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.७।५८) वादने। चन्द्राय अर्घ्यम्। ललिता चतुर्थी ४ व्रतम्। दशरथ पूजा ४। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योग: ४१।३२ (रा.१०।४९) या.। यमघंट(ख)
सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ३७।२७ (रा.९।१२) या.। ⊙ चित्रा नक्षत्रे रवि:११।३५(दि.१०।५१)। स्त्री-पु.-सूर्य-सूर्य योगौ नाग वाहनं वातानाड़ी तदीशो सूर्य: सामान्य वृष्टियोग:। यायि (मुद्दई) जयद् योग: ३७।२७(रा.९।१२)या.।(ग)
मिथुन राशि: दिवा ०।२८ वादने। भद्रा ३३।५८ (रा.७।४८) उ. (स्वर्ग)। रवियोग: ३३।४३ (रा.७।४२) उ.। (क) क्षीराब्धिमथनोद्भव। भाभासितदिगाभोगरमानुजनमोऽस्तुते।"
भद्रा ०।५७ (प्रात: ६।३७) या.। अहोई अष्टमी ८। चन्द्रोदय (रा.११।१५) वादने। (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टम्यां)। रवियोग: ३०।३१ (सा.६।२६) या.। (ग) पश्चिम दिशायाम् बुधोदय:।
कर्कराशि: दिवा ११।४३ वादने। राधाष्टमी ८ व्रतम्। राधा जयन्ती। अरुणोदये मथुरायाम् राधाकुण्डे स्नानम्। करास्टमी ८। महाराष्ट्रे प्रसिद्ध:। भौम-जया सिद्धयोग: २४।३८ (दि.४।६) या.।
भद्रा ४९।५७ (रा.२।१५) उ. (मर्त्य)। (छ) शेष रात्रौ दरिद्र निस्सारणम्। गोत्रिरात्रि समाप्ति:। तुला संस्थे सहस्त्रांशौ प्रदोषे भूत दर्शयो:। उल्का हस्ता नरा कुर्यु: पितृणा मार्गदर्शनम्।
सिंहराशि: दिवा ४।३५ वादने। भद्रा १८।४५ (दि.१।४६) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योग: १८।४५ (दि. १।४६) उ. २५।४७ (दि.४।३५) या.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोग: १८।४५ (दि.१।४६) या.।
रम्भा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। रमा ११। गोवत्स द्वादशी १२। (सा प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या)। सवत्सा पयस्विनीगांपूजयेत्। प्रदोषे-सायं काले गोवत्स क्रीडनम् अलंकरणञ्च। 'गोक्षीर गोघृतं दधि तक्रं च वर्जयेत्।'(घ)
कन्याराशि: रात्रि ११।५५ वादने। शनि प्रदोष व्रतम् १२ पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। धनत्रयोदशी (धनतेरस) १३। धन्वन्तरि जयन्ती १३। प्रदोषे अपमृत्यु निवारणार्थं गृहात् बहि: तिल तैलस्य दक्षिणाभिमुख यमाय दीपदानम्।(ङ)
भद्रा १८।५८ (दि.१।५४) उ. ४९।३९ (रा.२।११) या. (पाताल)। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। नरक चतुर्दशी १४। हनुमज्जयन्ती १४। सायंकाले मेष लग्ने हनुमज्जन्म। सायं नरकोद्देशेन चतुर्वर्ति युक्तं दीपदानम् यम(च)
प्रातरेव हनुमद्दर्शनम्। प्रदोष-रात्रि व्यापिनी अमावस्यां दीपावली ३०। सायं शिवादीनां भवनेषु मठेषु देवतनादौ दीपदानम्। प्रदोषे लक्ष्मी गणेश कुबेरादि पूजनम्। निशीथे महानिशा पूजा, महाकाली पूजा (बंगाल)(छ)
तुलाराशि: दिवा ९।५२ वादने। स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। भौमवती ३० अमावस्या। महावीर स्वामी निर्वाण दिवस: ३०। अमायांच यदावारा भवेद् भूमि सुतस्य वै। गंगायाम् यदि लभ्यते कोटि(झ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ बु.	०	२	१३	३५	६	१६	२७	२	४१	२९	६	८	२	१	८८	४६	२	२८	५३	०	६	१४	४	२८	२८	२६	७४	२२	११	२	५९	५६	४	२०	१०	२२	१८	२७
३ गु.	०	१५	५८	११	६	१७	८	३१	४१	३३	६	९	३०	४७	८७	१९	२	२८	५९	१४	६	४	४	२९	४२	४८	७४	२७	११	२	५५	३६	४	१७	१०	२२	१५	१६
४ शु.	१	०	१९	४४	६	१७	५०	४	४१	३६	६	१०	५८	६	८६	३	२	२९	५	१८	५	५२	५	०	५७	१५	७४	३१	११	२	५१	१९	४	१५	१०	२२	१२	६
५ श.	१	१४	२८	३८	६	१८	३१	४०	४१	३८	६	१२	२४	९	८५	५०	२	२९	११	१०	५	३७	५	२	११	४६	७४	३५	११	२	४७	४	४	१२	१०	२२	८	५५
६ र.	१	२८	३३	१७	६	१९	१३	१८	४१	४२	६	१३	४९	५९	८५	२२	२	२९	१६	४७	५	२८	५	३	२६	२१	७४	३८	११	२	४२	५२	४	९	१०	२२	५	४४
७ सो.	२	१२	३१	५८	६	१९	५५	०	४१	४५	६	१५	१५	२१	८४	४५	२	२९	२२	१५	५	२०	५	४	४०	५९	७४	४०	११	२	३८	४३	४	५	१०	२२	२	३३
८ मं.	२	२६	२१	१६	६	२०	३६	४५	४१	४९	६	१६	४०	६	८३	३३	२	२९	२७	३५	५	११	५	५	५५	३९	७४	४२	११	२	३४	३८	४	१	१०	२१	५९	२२
९ बु.	३	१०	१	४९	६	२१	१८	३४	४१	५२	६	१८	३	३९	८२	१४	२	२९	३२	४६	५	१	५	७	१०	२१	७४	४३	११	२	३०	३७	३	५८	१०	२१	५६	११
१० गु.	३	२३	२८	५	६	२२	०	२६	४१	५६	६	१९	२५	५३	८१	२३	२	२९	३७	४७	४	४९	५	८	२५	४	७४	४३	११	२	२६	३९	३	५५	१०	२१	५३	०
११ शु.	४	६	१२	३७	६	२२	४२	२२	४१	५९	६	२०	४७	१६	८०	१८	२	२९	४२	३६	४	३८	५	९	३९	४७	७४	४५	११	२	२२	४४	३	५२	१०	२१	४९	४९
१२ श.	४	२०	१०	५७	६	२३	२४	२१	४२	३	६	२२	७	३४	७९	४२	२	२९	४७	१४	४	२९	५	१०	५४	३२	७४	४५	११	२	१८	५२	३	४८	१०	२१	४६	३८
१३ र.	५	२	५३	१९	६	२४	६	२४	४२	६	६	२३	२७	१६	७८	५१	२	२९	५१	४३	४	२१	५	१२	९	१७	७४	४५	११	२	१५	४	३	४२	१०	२१	४३	२७
१४ सो.	५	१५	२१	२८	६	२४	४८	३०	४२	७	६	२४	४६	७	७८	९	२	२९	५६	४	४	१५	५	१३	२४	२	७४	४६	११	२	११	२२	३	३९	१०	२१	४०	१६
३० मं.	५	२८	३५	४६	६	२५	३०	३७	४२	१०	६	२६	४	१६	७६	३४	३	०	०	१९	४	६	५	१४	३८	४८	७४	४६	११	२	७	४३	३	३६	१०	२१	३७	५

पं.२७ कार्तिक कृ.८ भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहा: अहर्गण: ३९२७
अयनांशा: २४/१२/५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	६	६	२	५	११	१०	४
२६	२६	२०	१६	२९	५	२	२१	२१
७	२१	३६	४०	२७	५५	३४	५९	५९
३	१६	४५	६	३५	३९	३८	२२	२२
५९	८२०	४१	८३	५	७४	४	३	३
३५	२५	४९	३३	११	४२	१	११	११

भौमादीनां चार:-
भौम:-स्वात्यां तुलाराशौ ७ सोमत: विशाखायां दिवा ८।१५वादने। **बुध:**-तुला राशौ। **गुरु:**-पुनर्वसौ मिथुने १४ सोमत: कर्क राशौ रात्रि ४।१५ वादने। **शुक्र:**-सिंह राशौ ३ गुरुत: कन्या राशौ दि.१२।१० वादने। **शनि:**-(वक्री) पूर्वाभाद्रपद ४ चरणे मीन राशौ। **राहु:**-पू.भा.१ चरणे। **केतुश्च**-पू.फा.३ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१बु. घं.	मि.	३गु. घं.	मि.	४शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६र. घं.	मि.	७सो. घं.	मि.	८मं. घं.	मि.	९बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	१२श. घं.	मि.	१३र. घं.	मि.	१४सो. घं.	मि.	३०मं. घं.	मि.
कन्या	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	तुला	८	१४	८	१०	८	६	८	२
तुला	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२	८	१८	वृश्चिक	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९
वृश्चिक	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४३	१०	३९	१०	३५	धनु	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४
धनु	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	मकर	२	२१	२	१७	२	१३	२	९
मकर	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	कुम्भ	३	५२	३	४८	३	४४	३	४१
कुम्भ	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	मीन	५	२०	५	१६	५	१२	५	९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.	
मीन	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	मेष	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७
मेष	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	वृष	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४
वृष	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	४	९	०	मिथुन	११	९	११	५	११	१	१०	५८
मिथुन	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	कर्क	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५
कर्क	२	६	२	२	१	५८	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	सिंह	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९
सिंह	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	कन्या	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२

पं.२८ कार्तिक कृ.३० भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहा: अहर्गण: ३९३४
अयनांशा: २४/१२/६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	६	३	५	११	१०	४
३	२८	२५	२६	०	१४	२	२१	२१
४	३५	३०	४	०	३८	७	३७	३७
५३	४६	३७	१६	१९	४८	४३	५	५
५९	७३६	४२	७६	४	७४	३ ३६ व	३	३
५१	१५	१०	३४	६	४६		११	११

(घ) ⊙ सं.तुला राशौ रवि: ५४।१५ (रा.३।५९)। मु.३० समा समता करम्। परा: १६ घट्य: पुण्या:। **परदिने मध्यान्हं यावत् पुण्यकाल:**। दीप, तिल गोऽन्नदानं गोदावर्याम् स्नानम्। **याम्यगोल:**। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोग: १७।३४ (दि.१।१९) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योग: १७।३४ (दि.१।१९) उ.। **(ङ) काश्यां गौतमेश्वर जयन्ती १३। गोत्रिरात्रियमपंचकारम्भ:**। कामेश्वरी जयन्ती १३। **सौर कार्तिक मासारम्भ:**। यायि (मुद्दई) जयद् योग: २८।१६ (सा.५।३६) उ.। **(च)** तर्पणम्। प्रात: (रात्रिशेषे) साभ्यङ्ग स्नानम्। माष पत्रस्य शाकभोजनम्। चन्द्रोदये तिल तैलेन स्नानम् रोगहरम्। सर्वार्थसिद्धियोग: ३१।२३ (रा.६।५२) या. तदुपरि रवि-हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ। यायि (मुद्दई) जयद् योग: १८।५८ (दि.१।५४) या.। **(झ)** सूर्य ग्रहे समा। पापावारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।

विविध मुहूर्त्ता: **तिथि १/२ बुधे**–अश्विन्यां जातकर्म अन्नप्राशनं विपणि व्यापार:, गवांक्रयविक्रय:, नववस्त्र धारणं दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजवपनं सेवारम्भ: शय्यासनाद्युपभोगं वाहनक्रय: दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ गुरौ**–भद्रा दिवा ३।४५ वादनात्पूर्व भरण्यां शय्यासनाद्युभोगं, मुकदमा कार्य, धान्यच्छेदनं। **तिथि ४ शुक्रे**–रिक्ता व्याप्ति:। **तिथि ५ शनौ**–रोहिण्यां नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ६ रवौ**–मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्त: प्रसूतिस्नानं (ति.दा.) विपणिव्यापार: दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शिल्पविद्यारम्भ: वाहनक्रय: दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ सोमे**–प्रात: ६।३७ भद्रात्परं आर्द्रायाम् धान्यच्छेदनं, पुंसवन सीमन्तं, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ भौमे**–पुनर्वसौ पुंसवनं सीमन्त:, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, हलप्रवहण, कर्कचन्द्रे दिवा ११।४३ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ९ बुधे**–पुष्ये रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं, रित्ता दिवा २।४४ वादनात्परं **जीर्णादिगृहप्रवेश: ल.१२** सायं४।५९ वादनात्परं श्लेषायां धान्यच्छेदनं मुहूर्त:। **तिथि१० गुरौ**–श्लेषायां धान्यच्छेदनं, मुकदमाकार्यम् दिवा १।४६ भद्रात्परं भूमिक्रय:, नौकाजलयानघटनं, पश्चिम दिग यात्रा सायं ४।३५ वादनात्परं सिंह चन्द्रे पूर्व दिग्यात्रा। **तिथि ११ शुक्रे**–मघायां कर्णमर्दन, जलयन्त्रकर्म, शय्यासनाद्युपभोग:, भूमिक्रय: सिंह चन्द्रे पूर्व एवं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १२ शनौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां इष्टिका दहनं शस्त्र घटनं, उग्रकर्माचरणं सायं ५।३६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां नीलमादि रत्नकृष्णवस्त्र धारणं, इष्टिका निर्माणं **जीर्णादि गृहप्रवेश: लग्नं गोधूलि वा २। तिथि १३ रवौ**–भद्रा दिवा १।५४ वादनात्पूर्व उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्त: प्रसूति स्नानं, विपणिव्यापार:, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं कणमर्दनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ: शस्त्रधारणं, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १४ सोमे**–रिक्ता व्याप्ति: तदुपरि **मासान्त:**।

फलम्– पक्षारम्भ में ही ८ अक्टूबर बुधवार को द्वितीया तिथि का क्षय हो गया है। जिसके कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। **अशून्यशयन का व्रत** ८ अक्टूबर बुधवार को क्षयवती एवं चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया तिथि में किया जायेगा। चन्द्रोदय रात ६।२१ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा और इसी के साथ चातुर्मास में किये जाने वाले इस व्रत का समापन भी हो जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत** एवं सौभाग्यकांक्षणी स्त्रियों में अत्यन्त लोकप्रिय **करवा चौथ** का व्रत १० अक्टूबर शुक्रवार को किया जायेगा। चन्द्रोदय के गणितागत समय ७।५८ बजे के बाद चन्द्रमा के दर्शन हो जाने पर परम्परागत तरीके से अर्घ्य देकर तथा करवा चतुर्थी से सम्बन्धित पूजन कर इसे विधिवत सम्पन्न किया जायेगा। आज ही काशी के अत्यन्त प्रसिद्ध चेतगंज की नक्कटैया की रामलीला चमत्कारपूर्ण विभिन्न लागों के निकालने के प्रदर्शन के साथ सम्पन्न होगी। **अहोई अष्टमी** का व्रतपर्व १३ अक्टूबर सोमवार को चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी तिथि में किया जायेगा। **राधाष्टमी** एवं राधा जयन्ती १४ अक्टूबर मंगलवार को मनाई जायेगी। आज मथुरा के राधाकुण्ड में अरुणोदय समय स्नान किया जायेगा। **रम्भा एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १७ अक्टूबर शुक्रवार को होगा एवं आज ही प्रदोष काल में द्वादशी तिथि मिलने के कारण गोवत्स द्वादशी का मान भी आज ही हो जायेगा। आज के दिन गाय के दूध से बनी किसी खाद्य सामग्री का उपयोग नहीं करना चाहिये। पुत्र की कामना से **शनि प्रदोष का व्रत** १८ अक्टू. को मनाया जायेगा।*

* **धन त्रयोदशी (धनतेरस)** का प्रसिद्ध पर्व प्रदोष काल में त्रयोदशी मिलने के कारण १८ अक्टूबर शनिवार को किया जायेगा एवं आज ही धन्वन्तरि जयन्ती भी मनाई जायेगी। धन ऐश्वर्य में वृद्धि की कामना से विधिवत् महालक्ष्मी का पूजन किया जायेगा। इसके लिए सर्वोत्तम प्रदोषकाल में स्थिर **वृष लग्न ६।५९ से ८।५६** बजे के मध्य प्राप्त हो रही है। **मास शिवरात्रि व्रत** सहित **नरक चतुर्दशी हनुमज्जयन्ती** १९ अक्टूबर रविवार को मनाई जायेगी सायं मेष लग्न में श्रीहनुमान जी का जन्मोत्सव मनाया जायेगा। दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व ही हनुमान जी का दर्शन-पूजन कर लेना चाहिए। **प्रदोष** एवं रात्रि **व्यापिनी अमावस्या** तिथि में २० अक्टूबर सोमवार को सनातन धर्म का विश्व प्रसिद्ध पर्व **दीपावली** हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। दीपावली पूजन के लिए तीन मुहूर्त्त निर्धारित किये जा रहे है। दिन में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए स्थिर **कुम्भ लग्न २।१३ से ३।४४ बजे तक, २. सर्वोत्तम प्रदोष काल में स्थिर वृष लग्न ६।५१से ८।४८** एवं ३. महानिशा में तांत्रिक पूजा मंत्र सिद्धि के लिए स्थिर **सिंह लग्न १।१९ से ३।३३** बजे तक। शेष रात्रि (भोर में) सूप बजाकर दरिद्र का निस्सारण एवं लक्ष्मी का पदार्पण कराया जायेगा। **स्नानदान एवं श्राद्ध के लिए अमावस्या** २१ अक्टूबर मंगलवार को **भौमवती अमावस्या** के पवित्र संयोग के साथ मनाई जायेगी। **चित्रा नक्षत्र का सूर्य** ११ अक्टूबर शनिवार को दिन १०।५१ बजे से आवेगा। इसमें हल्की वृष्टि होने की सम्भावना है। **तुला राशि की सूर्य संक्रान्ति** १७ अक्टू. शुक्रवार को रात ३।५९ वजे से आयेगी। सोमवार की दीपावली शुभफलकारक एवं धन-ऐश्वर्य में बृद्धिकारक है।

राशिफल
मेष- पीड़ा
वृष- अलाभकर:
मिथुन- रोगं शोकं
कर्क- धनादि प्राप्ति:
सिंह- शत्रुता
कन्या- धनलाभ:
तुला- बन्धन भयम्
वृश्चिक- शोक:
धनु- अर्थागम:
मकर- सुखोपभोगं
कुम्भ- रोगं हानि:
मीन- धनादि लाभ:

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ कार्तिक शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः शरद् ऋतुः। दि.२२ अक्टूबर – ५ नवम्बर
सन् २०२५ ई. (रा.आश्विन ३० - कार्तिक १४)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	कार्तिक शु. ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द.- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
२८	१७	१	बुध.	२९	५२	सायं	६	१८	स्वाती	४६	५२	रात	१	६	प्रीति	५४	५६	रात	४	१९	बव	२९	५२	वा	६०	०	धूम्र	२२	१५	५	३०				६	२१	५	३९	१०	४९	६	४	४	४४	५९	५३	-	१८		
२८	१३	२	गुरु.	३५	२	रात	८	२३	विशाखा	५३	०	रात	३	३४	आयुष्मान	५६	२०	रात	४	५४	वा	२	७	कौ	३५	२	प्रवर्धमान	२३	१६	६	१	वृश्चिक	३६	२८	६	२२	५	३८	११	११	६	५	४	३७	५९	५५	-	१८	६	१७
२८	१०	३	शुक्र.	४०	२०	रात	१०	३१	अनुराधा	५९	५२	रात	६	२०	सौभाग्य	५७	४४	रात	५	२९	तै	७	४१	गर	४०	२०	राक्षस	२४	१७	७	२				६	२३	५	३७	११	३२	६	६	४	३२	५९	५७	-	१८	६	५७
२८	६	४	शनि.	४५	१९	रात	१२	३२	ज्येष्ठा	६०	०	स	म	स्त	शोभन	५८	४४	रात	५	५४	व	१२	५०	वि	४५	१९	मुसल	२५	१८	८	३				६	२४	५	३६	११	५३	६	७	४	२९	६०	०	-	१८	७	४३
२८	३	५	रवि.	४९	३९	रात	२	१६	ज्येष्ठा	५	५४	दिन	८	४६	अतिगण्ड	५९	१६	रात	६	६	बव	१७	२९	बा	४९	३९	काण	२६	१९	९	४	धनु	५	५४	६	२४	५	३६	१२	१३	६	८	४	२९	६०	२	-	१८	८	३३
२७	५९	६	सोम	५२	५७	रात	३	३६	मूल	११	१३	दिन	१०	५४	सुकर्मा	५९	०	रात	६	१	कौ	२१	१८	तै	५२	५७	लुम्बक	२७	२०	१०	५				६	२५	५	३५	१२	३४	६	९	४	३१	६०	४	-	१८	९	२७
२७	५६	७	मंगल	५५	१०	रात	४	२९	पूर्वाषाढ़ा	१५	२९	दिन	१२	३७	धृति	५७	५१	रात	५	३३	गर	२४	३	व	५५	१०	मित्र	२८	२१	११	६	मकर	३१	१६	६	२५	५	३५	१२	५४	६	१०	४	३५	६०	६	-	१८	१०	२४
२७	५३	८	बुध.	५६	३	रात	४	५०	उत्तराषाढ़ा	१८	३७	दिन	१	५२	शूल	५५	४२	रात	४	४२	वि	२५	३६	बव	५६	३	वज्र	२९	२२	१२	७				६	२५	५	३५	१३	१४	६	११	४	४१	६०	८	-	१८	११	२३
२७	४९	९	गुरु.	५५	३७	रात	४	४१	श्रवण	२०	३०	दिन	२	३८	गण्ड	५२	३०	रात	३	२६	बा	२५	५०	कौ	५५	३७	ध्वांक्ष	३०	२३	१३	८	कुंभ	५०	४८	६	२६	५	३४	१३	३४	६	१२	४	४९	६०	१०	-	१८	१२	२२
२७	४६	१०	शुक्र.	५३	५८	रात	४	२	धनिष्ठा	२१	७	दिन	२	५४	वृद्धि	४८	२२	रात	२	४८	तै	२४	४७	गर	५३	५८	धाता	३१	२४	१४	९				६	२७	५	३३	१३	५४	६	१३	४	५९	६०	१२	-	१८	१	२२
२७	४३	११	शनि.	५१	१२	रात	२	५७	शतभिषा	२०	३२	दिन	२	४१	ध्रुव	४३	१९	रात	११	४८	व	२२	३५	वि	५१	१२	आनन्द	१	२५	१५	१०				६	२८	५	३२	१४	१३	६	१४	५	११	६०	१४	-	१८	२	२२
२७	४०	१२	रवि.	४७	२५	रात	१	२६	पूर्वाभाद्र	१८	५५	दिन	२	२	व्याघात	३७	३०	रात	९	२८	बव	१९	१८	बा	४७	२५	चर	२	२६	१६	११	मीन	४	२०	६	२८	५	३२	१४	३३	६	१५	५	२५	६०	१६	-	१८	३	२५
२७	३६	१३	सोम	४२	५१	रात	११	३७	उत्तराभाद्र	१६	२९	दिन	१	५	हर्षण	३०	५७	रात	६	५२	कौ	१५	८	तै	४२	५१	गद	३	२७	१७	१२				६	२९	५	३१	१४	५२	६	१६	५	४१	६०	१८	-	१८	४	२९
२७	३३	१४	मंगल	३७	३९	रात	९	३३	रेवती	१३	१८	दिन	११	४८	वज्र	२३	४८	दिन	४	०	गर	१०	१५	व	३७	३९	शुभ	४	२८	१८	१३	मेष	१३	१८	६	२९	५	३१	१५	११	६	१७	५	५९	६०	२०	-	१८	५	३८
२७	३०	१५	बुध.	३१	५४	रात	७	१६	अश्विनी	९	३३	दिन	१०	१९	सिद्धि	१६	१६	दिन	१	०	वि	४	४६	बव बा	३१ ५८	५४ ५७	मृत्यु	५	२९	१९	१४				६	३०	५	३०	१५	२९	६	१८	६	२०	६०	२२	-	१८	+	+

अन्नकूट १। काशीतोऽन्यत्र गोवर्धन पूजा। मार्गपाली बन्धनम् सायं गोक्रीडनम् यत्याकर्षणम् साभ्यङ्गस्नानम्। द्यूत क्रीड़ा। प्रार्तनारी कर्तृक नीराजनम् सायं मंगल मालिका। **गुर्जर (गुजराती) नूतन नववर्ष २०८२ आरम्भः।**(क)

वृश्चिकराशिः रात्रि ८।५७ वादने। **चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.४५** बृहती समर्घताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **काश्यां गोबर्धनपूजा, भ्रातृ द्वितीया (भइया दूज) २।** भ्रातृस्य भगिनी गृहे, भोजनम् तस्य द्रव्यवस्त्रादिर्भिसम्मानम्(ख)

मु.जमादि-उल-अव्वल ५ हिजरी सन् १४४७। ⊙स्वाती नक्षत्रे रविः ३५।२८ (रात्रि ८।३४)। स्त्री-नपुं. सूर्य-सूर्य योगौ मंडूक वाहनं चण्डा नाड़ी तदीशो शनिः खण्ड वृष्टि योगः। रवियोगः ३५।२८ (रा.८।३४)या.।(ग)

भद्रा १२।५० (दि.११।३२) उ. ४५।१९ (रा.१२।३२) या. (स्वर्ग)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। नाग नथैय्या** श्रीकृष्ण लीला (तुलसीघाट-काशी)। **सूर्य षष्ठी व्रतारम्भः** दिन त्रयं यावत्। तत्रैकभुक्तेनभवितव्यम्।(घ)

धनुराशिः दिवा ८।४६ वादने। सूर्य षष्ठी व्रतस्य द्वितीय दिनम्। ज्ञान पंचमी ५ (जैन)। सौभाग्य ५, लाभ ५, पाण्डव पंचमी ५। रवियोगः ५।५४ (दि.८।४६) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५।५४ (दि.८।४६) उ.।

सूर्य षष्ठी (डाला छठ)। प्रतिहार षष्ठी ६। स्कन्द षष्ठी ६। सायंकालीन सूर्यार्घ्यदानम्, अरुणोदये द्वितीयार्घ्यम्। **सूर्यार्घ्य मन्त्रः**-"नमोऽस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे। त्वमेव चार्घ्यं प्रतिगृह्ण,(ङ)

मकरराशिः रात्रि ६।५५ वादने। भद्रा ५५।१० (रा.४।२९) उ. (पाताले)। **पारणा सूर्यषष्ठीव्रतस्य प्रातरेव। सहस्त्रार्जुन (सहस्त्रबाहु) जयन्ती ७** (जायसवाल समाज)। कल्पादिः ७। शुभाशुभेत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्कर(च)

भद्रा २५।३६ (दि.४।३९) या.। **गोपाष्टमी ८।** गवामलंकरणम् पूजनम् तत्प्रदक्षिणा च। अयोध्या-मथुरा परिक्रमा ५६।३ (रा.४।५०) उ.। **बुधाष्टमी पर्व-सूर्यग्रहण** सन्निभम् स्नानदानाय।

कुम्भ राशिः रात्रि २।४५ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। **अक्षय नवमी ९ व्रतम्।** रत्न गर्भ कुष्माण्डादिदानम्। धात्री (आँवला) मूले सपरिवार भोजनम्। **कृतयुगादिः ९।** श्री विष्णु त्रिरात्रि आरम्भः। जगद्धात्री पूजा (बंगाल)(छ)

रवियोगः यावद्दिनम्। शुक्रे नन्दा सिद्धयोगः ५३।५८ (रा.४।२) उ.। (छ) अयोध्या-मथुरा परिक्रमा ५५।३७ (रा.४।४१) या.। रवियोगः २०।३० (दि.२।३८) उ.।

भद्रा २२।३५ (दि.३।३०) उ. ५१।१२ (रा.२।५७) या. (मर्त्य)। **श्रीहरिप्रबोधिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** देवोत्थापनम् प्रबोधनोत्सवः। **दिठवन एकादशी ११।** भद्रा दिवा ३।३० वादनात्पूर्वं इक्षुरसपानम्। **तुलसी(ज)**

मीनराशिः दिवा ८।१२ वादने। **चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः।** मन्वादिः १२। द्विदलदानम्। सर्वार्थसिद्धियोगः १८।५५ (दि.२।२) उ.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ४७।२५ (रा.१।२६) उ.।

सोम प्रदोष व्रतम् १३। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। रवियोगः १६।२९ (दि.१।५) उ.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ४२।५१ (रा.११।३७) या.। (च) योगः १५।२९ (दि.१२।३७) उ.। रवियोगः १५।२९ (दि.१२।३७) या.।

मेषराशिः दिवा ११।४८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ३७।३९ (रा.९।३३) उ. (स्वर्ग)। **श्रीबैकुण्ठ चतुर्दशी १४।** रात्रौ श्रीमहाविष्णुपूजनम्। अरुणोदये काश्यां मणिकर्णिका स्नानम्। **श्री विश्वेश्वर पूजनम्। नर्मदेश्वराय(झ)**

भद्रा ४।४६ (दि.८।२४) या.। **स्नानदान व्रतादौ कार्तिक पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। गुरुनानक जयन्ती १५।** मन्वादिः १५। सर्वत्रगंगा स्नानम्। **काश्यां देव दीपावली महोत्सवः।** प्रदोषे त्रिपुरोत्सवः। देवालये दीपदानम्(ञ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	बु.	६	१०	४५	२१	६	२६	१२	४७	४२	१४	६	२७	२०	५०	७५	४२	३	०	४	२५	३	५३	५	१५	५३	३४	७४	४८	११	२	४	७	३	३२	१०	२१	३३	५५
२	गु.	६	२३	४	३४	६	२६	५५	१	४२	१७	६	२८	३६	३२	७३	३३	३	०	८	१८	३	४५	५	१७	८	२२	७४	४९	११	२	०	३५	३	२७	१०	२१	३०	४४
३	शु.	७	५	२	१८	६	२७	३७	१८	४२	२१	६	२९	५०	५	७२	२२	३	०	१२	३	३	३०	५	१८	२३	११	७४	५१	११	१	५७	८	३	२३	१०	२१	२७	३३
४	श.	७	१७	१०	४५	६	२८	१९	३९	४२	२४	७	१	२	२७	७०	४५	३	०	१५	३३	३	१८	५	१९	३८	२	७४	५१	११	१	५३	४५	३	१८	१०	२१	२४	२२
५	र.	७	२९	१८	३०	६	२९	२	३	४२	२७	७	२	१३	१२	६७	५२	३	०	१८	५१	३	५	५	२०	५२	५३	७४	५४	११	१	५०	२७	३	१२	१०	२१	२१	११
६	सो.	८	११	३४	१२	६	२९	४४	३०	४२	२७	७	३	२१	४	६६	९	३	०	२१	५६	२	५४	५	२२	७	४७	७४	५९	११	१	४७	१५	३	६	१०	२१	१८	०
७	मं.	८	२४	३	४६	७	०	२६	५७	४२	२८	७	४	२७	१३	६४	४८	३	०	२४	५०	२	४५	५	२३	२२	४६	७४	५९	११	१	४४	९	३	१	१०	२१	१४	५०
८	बु.	९	६	५६	८	७	१	९	२५	४२	३१	७	५	३२	१	६१	३१	३	०	२७	३५	२	३४	५	२४	३७	४५	७५	२	११	१	४१	८	२	५६	१०	२१	११	३९
९	गु.	९	१९	४३	१६	७	१	५१	५६	४२	३५	७	६	३३	३२	५९	३८	३	०	३०	९	२	२०	५	२५	५२	४७	७५	३	११	१	३८	१२	२	५२	१०	२१	८	२८
१०	शु.	१०	२	५७	४७	७	२	३४	३१	४२	३८	७	७	३३	१०	५६	४४	३	०	३२	२९	२	९	५	२७	७	५०	७५	३	११	१	३५	२०	२	४६	१०	२१	५	१७
११	श.	१०	१६	२३	२७	७	३	१७	९	४२	४०	७	८	२९	५४	५४	२०	३	०	३४	३८	१	५५	५	२८	२२	५३	७५	५	११	१	३२	३४	२	४१	१०	२१	२	६
१२	र.	१०	२९	११	१३	७	३	५९	४९	४२	४३	७	९	२४	१४	५०	५३	३	०	३६	३३	१	४५	५	२९	३७	५८	७५	८	११	१	२९	५३	२	३५	१०	२०	५८	५५
१३	सो	११	१३	०	४१	७	४	४२	३२	४२	४५	७	१०	१५	७	४८	२८	३	०	३८	१८	१	३८	६	०	५३	६	७५	१०	११	१	२७	१८	२	२८	१०	२०	५५	४४
१४	मं.	११	२६	५८	१८	७	५	२५	१७	४२	४९	७	११	३	३५	४५	२१	३	०	३९	५६	१	३०	६	२	८	१६	७५	१०	११	१	२४	५०	२	२०	१०	२०	५२	३३
१५	बु.	०	११	३	४०	७	६	८	६	४२	५१	७	११	४८	५६	४१	३५	३	०	४१	२६	१	२१	६	३	२३	२६	७५	११	११	१	२२	३०	२	१३	१०	२०	४९	२२

फलम्– यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन बुधवार शुभफलकारक है। रुई-चाँदी में तेजी का रुख बनेगा। चन्द्रदर्शन के फल में सुख-सुविधा के साधनों में वृद्धि होगी। **अन्नकूट** का प्रसिद्ध पर्व देव मन्दिरों में विविधप्रकार के व्यंजनों के नैवेद्यार्पण (भोग) के साथ सम्पन्न होगा तथा काशी से अन्यत्र गोवर्धन पूजा भी २२ अक्टूबर को सम्पन्न होगी। **काशी में गोवर्धनपूजा सहित भ्रातृ द्वितीया (भइयादूज) चित्रगुप्त पूजा, कलम दवात पूजा** २३ अक्टूबर गुरुवार को मनाई जायेगी। आज के दिन भाइयों को अपनी बहनों के घर जाकर भोजन करना चाहिए तथा वस्त्र द्रव्यादि का उपहार देकर उनको सम्मान देना चाहिए। इससे भाइयों के आयुष्य में वृद्धि होती है। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी** एवं काशी के तुलसीघाट की विश्व प्रसिद्ध **'नाग नथैय्या'** की कृष्ण लीला २५ अक्टूबर शनिवार को सम्पन्न होगी। तीन दिन तक चलने वाला सूर्य षष्ठी व्रत का अनुष्ठान २५ अक्टूबर शनिवार से प्रारम्भ हो जायेगा। वर्ष भर का सबसे लोकप्रिय पर्व **डाला (छठ पूजा)** २७ अक्टूबर सोमवार को अस्ताचल गामी सूर्य को अर्घ्य देकर तथा रात भर की कठिन तपपूर्ण प्रतीक्षा के बाद पुनः दूसरे दिन उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देकर २८ अक्टूबर मंगलवार को पारण कर पूर्ण कर लिया जायेगा। यह एक ऐसा व्रत पर्व है जिसमें कोई शास्त्रीय विधान तथा कर्मकाण्डी विधि नहीं अपनाई जाती वरन् लोकरीति कुल परम्परा एवं अपार श्रद्धा के समावेशी स्वरूप के साथ इसको सम्पन्न किया जाता है। **गोपाष्टमी** का पर्व २९ अक्टूबर बुधवार को मनाया जायेगा। अयोध्या मथुरा की परिक्रमा २९।३० की रात ४।५० बजे प्रारम्भ होकर अक्षय नवमी पर्यन्त ३० अक्टूबर गुरुवार को रात ४।४१ बजे तक चलेगी। **अक्षय नवमी** का पुण्य पवित्र पर्व ३० अक्टूबर गुरुवार को मनाया जायेगा। आज के दिन आँवला वृक्ष के नीचे स्वादिष्ट पक्वान्न बनाकर ब्राह्मणों को खिलाने तथा भोजन दक्षिणा देकर सपरिवार प्रसाद स्वरूप भोजन ग्रहण करने का पुण्यफलदायक विधान है। **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १ नवम्बर शनिवार को होगा। आज के दिन अखिल सृष्टि के पालनहार श्रीहरि विष्णु का●

पं.२९ कार्तिक शुक्ल ८ बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९४२
अयनांशाः २४/१२/७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	७	७	३	५	११	१०	४
११	६	१	५	०	२४	१	२१	२१
४	५६	९	३२	२७	३७	४१	११	११
४१	८	२५	१	३५	४५	८	३९	३९
६०	७७७	४२	६१	२	७५	२ ५६ व	३	३
८	२८	३१	३१	३४	२		११	११

भौमादीनां चारः
भौमः-विशाखायां तुलाराशौ ६ सोमतः वृश्चिक राशौ दिवा ३।३५ वादने। ११ शनितः अनुराधायां दि.७।५५ वादने। **बुधः**-३ शुक्रतः वृश्चिक राशौ दिवा ९।३५ वादने। **गुरुः**-पुनर्वसौ कर्क राशौ। **शुक्रः**-कन्याराशौ १२ रवितः तुला राशौ दिवा १।२० वादने। **शनिः**-(वक्री) पू.भा. ४ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-पू.भा. १ चरणे **केतुश्च**-पू.फा. ३ चरणे।

कार्तिक शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ सो घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	८ बु. घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	१५ बु. घं.	मि.
तुला	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३
वृश्चिक	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०
धनु	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५
मकर	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०
कुम्भ	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४२
मीन	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१४	४	१०
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मेष	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८
वृष	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५
मिथुन	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५९
कर्क	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६
सिंह	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०
कन्या	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ बुधे**–स्वात्यां गर्भाधानं (रात्रौ), नामकरणं अन्नप्राशनं क्रय-विक्रयः, नववस्त्रधारणं दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं, बीजवपनं धान्यच्छेदन पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि २ गुरौ**–विशाखायां गवां क्रयविक्रयः हलप्रवहणं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं, शस्त्रधारणं दत्तक पुत्र ग्रहणं भूमिक्रयः, नूतनबध्वा पाककर्म। **तिथि ३ शुक्रे**–अनुराधायां गर्भाधानं (रात्रौ) आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः, नववस्त्र धारणं दीक्षाग्रहणं हलप्रहवणं बीजवपनं वृक्षारोपणं शय्यासनाद्युपभोगं दत्तक पुत्र ग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं भूमिक्रयः, वाहनं क्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ४ शनौ**–ज्येष्ठायां रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तिथि ५ रवौ**–ज्येष्ठायां-मूले च कणमर्दनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः जलयंत्र कर्म शास्त्रधारणं मुकदमाकार्य इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म नौकाजलयान घटनं शस्त्र घटनं उत्तर दिग् यात्रा दिवा ८।४६ वादनात्परं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ सोमे**–मूले-नामकरणं, कणमर्दन, धान्यरोपण, धान्यस्थापनं वृक्षारोपणं, जलयन्त्रकर्म (ति.दा.) उत्तर दिग् यात्रा दिवा १०।५४ वादनात्परं पू.षाढ़ा नक्षत्रे दीक्षाग्रहणं, धान्यच्छेदन जलयन्त्रकर्म (ति.दा.), वाटिकारम्भः। **तिथि ७ भौमे**–पू.षाढ़ायां पुंसवन सीमन्त, प्रसूति स्नानं, पू. दिग् यात्रा। **तिथि ८ बुधे**–भद्रा दिवा ४।३९ वादनात्परं श्रवणे जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (ति.दा.), विपणिव्यापारः, नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः औषधि निर्माणं सेवनं च, पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा रात्रौ गर्भाधानं। **तिथि ९ गुरौ**–श्रवणे रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० शुक्रे**–धनिष्ठायां आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं, अन्नप्राशनं नववस्त्र धारणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं दिवा २।५४ वादनात्परं शतभिषायां **जीर्णादि गृहप्रवेशः ल.१२** वा गोधूलि गर्भाधान (रात्रौ) नूतनबध्वा पाककर्म, औषधि सेवनं वाहनक्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ११ शनौ**–शतभिषायां कृष्ण वस्त्र धारणं पश्चिम दिग् यात्रा दिवा ३।३० वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १२ रवौ**–पूर्वाभाद्रपदे पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं दीक्षाग्रहणं जलयन्त्र कर्म इष्टिका दहनं दिवा २।२ वादनात्परं उत्तरभाद्रपदे विपणि व्यापारः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं धान्यच्छेदनं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं आवेदन पत्र *

पं.३० कार्तिक शु.१५ बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९४९
अयनांशाः २४/१२/८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	७	७	३	६	११	१०	४
१८	११	६	११	०	३	१	२०	२०
६	३	८	४८	४१	२३	२२	४९	४९
२०	४०	६	५६	२६	२६	३०	२२	२२
६०	८२९	४२	४१	१	७५	२ १३ व	३	३
२२	२५	५१	३५	२१	११		११	११

(क) बुधे-भद्रा सिद्धयोगः २९।५२ (सा.६।१८) उ.। **(ख)** स्नेह वर्धनम्। **चित्रगुप्त पूजा** लेखन्यादि पूजा (दवात पूजा) यमुना स्नानम् यम तर्पणम्, यम पञ्चक निवृत्तिः। **राष्ट्रीय कार्तिक मासारम्भः।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५३।० (रा.३।३४) उ.। रवियोगः-यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५३।० (रा.३।३४) उ.। **(ग)** सर्वार्थसिद्धियोगः ५९।५२ (रा.शे.६।२०) या.। **(घ)** रवियोगः यावद्दिनम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ४५।१९ (रा.१२।३२) या.। **(ङ)** गृहाण देवाधिदेवायनमोनमस्ते।" इत्यादिः। रवियोगः ११।१३ (दि.१०।५४) उ.। **(ज) विवाहोत्सवः** पूर्णिमान्तं यावत्। श्रीविष्णुत्रिरात्रि निवृत्तिः। भीष्म पंचकारम्भः। एकादश्यां अयोध्या अन्तर्गृही परिक्रमा। रवियोगः २०।३२ (दि.२।४१) या.। शुभाशुभे त्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ५१।१२ (रा.२।५७) उ.। **(झ) तुलसी समपर्णम्। उक्तं च**-विनाहरि पूजां तु कुर्यादुरुद्रस्यचार्चनम्। वृथातस्य भवेत्पूजासत्यमेतद्वचोमम्। **श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिनम् १४। चैमासी चौदस** (जैन)। भौमाश्विनी-सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगौ १३।१८ (दि.११।४८) उ.। **(ञ)** तद्दर्शनम् च। सायं क्षीरसागरादिदानम्। **रासयात्रा १५।** सायं मत्स्यावतारः१५। कार्तिकेय दर्शनम्। हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला पुष्कर स्नानम् मेलोत्सवः। भीष्म पञ्चक समाप्तिः। **श्रीमहावीर रथोत्सवः** (जैन)। कार्तिक स्नान-दान-यम-नियम संयम समाप्तिः।

● विधिवत् पूजन कर उनको योग निद्रा से जगाया जायेगा। भद्रा दिन ३।३० बजे के पूर्व ही गन्ने का पूजन कर उसका सेवन किया जायेगा। **तुलसी-शालिग्राम** का विवाहोत्सव परम्परागत तरीके से मनाया जायेगा तथा इसका क्रम पूर्णिमान्त तक चलता रहेगा। एकादशी तिथि में अयोध्या की अन्तर्गृही परिक्रमा भी की जायेगी। पुत्र की कामना से **सोमप्रदोष का व्रत** ३ नवम्बर को किया जायेगा। **वैकुण्ठ चतुर्दशी** ४ नवम्बर मंगलवार को मनाई जायेगी। अरुणोदय समय काशी के मणिकर्णिका कुण्ड का स्नान अन्त्यन्त पुण्यफलकारी माना जाता है। आज ही के दिन श्रीकाशी विश्वनाथ का प्रतिष्ठा दिवस भी उत्सव पूजा श्रृङ्गार के साथ मनाया जायेगा। पर्व भर में केवल आज ही के दिन बाबा विश्वनाथ को तुलसीदल समर्पित किया जाता है। यह हर एवं हरि के एकाकार होने का पर्व है। स्नानदान एवं व्रत सहित कार्तिक पूर्णिमा ५ नवम्बर बुधवार को मनाई जायेगी। आज के दिन गंगा का स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारी माना जाता है। त्रिपुरोत्सव मनाया जायेगा। काशी का विश्वविख्यात् हो चुका **देव-दीपावली** का भव्य पर्व काशी के गंगा घाटों सहित सम्पूर्ण काशी नगरी में स्थित देवालयों सरोवरों पर असंख्य दीप जलाकर एक अलौकिक दृश्य पैदा कर दिया जाता है, जिसकी एक झलक पाने के लिये विश्वभर के सैलानी-पर्यटक काशी में उमड़ पड़ते है। **गुरुनानक देव** की जयन्ती परम्परा एवं रीति-रिवाज के साथ मनाई जायेगी। **स्वाती नक्षत्र का सूर्य** २४ अक्टूबर शुक्रवार को रात्रि ८।३४ बजे से आवेगा। किराना की वस्तुओं में तेजी आयेगी।

* लेखनं इष्टिका निर्माणं दिवा ८।१२ वादनात्परं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १३ सोमे**–उ.भा.-पुंसवनं सीमन्तः आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं (रेवत्यां) विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं दिवा १।५ वादनात्परं रेवत्यां **जीर्णादिग्रहणप्रवेश ल.११ वा १२**, वाहनक्रयः औषधि निर्माणं सेवनं च पश्चिम उत्तर दिग् यात्रा यावद्दिनम्। **ति.१४ भौमे**–रेवत्यां रिक्ता-भद्रा व्याप्तिः। **ति.१५ बुधे**–भद्रा दिवा ८।२४ वादनातपरं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। दिवा १०।४९ वादनात्परं भरण्यां मुकदमाकार्य, धान्यच्छेदनं शय्यासनाद्युपभोगं।

राशिफल

मेष-	गमनम्
वृष-	रिपुनाशः
मिथुन-	दैन्यम्
कर्क-	अपमानं
सिंह-	सुखम्
कन्या-	भयम्
तुला-	स्थान हानिः
वृश्चिक-	द्रव्यनाशः
धनु-	वित्ताप्तिः
मकर-	सौख्यं
कुम्भ-	पापबुद्धिः
मीन-	रोगं

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः शरद् ऋतुः। वृश्चिकार्कतः हेमन्त ऋतुः।
दि.६ - २० नवम्बर सन् २०२५ ई. (रा.कार्तिक १५ - २९)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
२७	२७	१	गुरु.	२६	१	दिन	४	५५	भरणी	५	२७	दिन	८	४२	व्यतिपात	८	२८	दिन	९	५४	कौ	२६	१	तै	५३	१
२७	२४	२	शुक्र.	२०	२	दिन	२	३८	कृत्तिका / रोहिणी	१ / ५५	५५ / ५९	प्रातः	७ / ५	१ / २१	वरीयान / परिघ	० / ५२	३२ / १३	प्रातः	६ / ३	४४ / ३७	गर	२०	२	व	४७	७
२७	२१	३	शनि.	१४	१२	दिन	१२	१३	मृगशिरा	५३	१४	रात	३	५०	शिव	४५	६	रात	१२	३४	वि	१४	१२	बव	४१	२७
२७	१८	४	रवि.	८	४१	दिन	१०	०	आर्द्रा	४९	५२	रात	२	१९	सिद्ध	३७	५०	रात	९	४०	बा	८	४१	कौ	३६	१२
२७	१५	५ / ६	सोम.	३ / ५५	४३ / ४९	प्रातः	८ / ६	२ / २२	पुनर्वसु	४७	१०	रात	१	२५	साध्य	३१	७	रात	७	०	तै	३	४३	गर / ब	२५ / ५५	४६ / ४९
२७	१२	७	मंगल	५६	१०	रात	५	२	पुष्य	४५	१८	रात	१२	४१	शुभ	२५	३	दिन	४	३५	वि	२५	५९	बव	५६	१०
२७	९	८	बुध	५३	५२	रात	४	७	श्लेषा	४४	२६	रात	१२	२०	शुक्ल	१९	४५	दिन	२	२८	बा	२५	१	कौ	५३	५२
२७	६	९	गुरु.	५२	४८	रात	३	४२	मघा	४४	४३	रात	१२	२८	ब्रह्म	१५	१६	दिन	१२	४१	तै	२३	२०	गर	५२	४८
२७	३	१०	शुक्र.	५२	५८	रात	३	४६	पूर्वाफाल्गु.	४६	१४	रात	१	५	ऐन्द्र	११	४८	दिन	११	१८	व	२२	५३	वि	५२	५८
२७	०	११	शनि	५४	२८	रात	४	२३	उत्तराफा.	४९	१	रात	२	१२	वैधृति	९	१९	दिन	१०	२०	बव	२३	४३	बा	५४	२८
२६	५८	१२	रवि	५७	१०	रात	५	२८	हस्त	५३	०	रात	३	४९	विष्कुंभ	७	५३	दिन	९	४५	कौ	२५	४९	तै	५७	१०
२६	५५	१३	सोम	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	५८	२	रात	५	१०	प्रीति	७	१७	दिन	९	३२	गर	२९	५	व	६०	०
२६	५२	१३	मंगल	०	५९	दिन	७	२	स्वाती	६०	०	स	म	स्त	आयुष्मान	७	३२	दिन	९	३९	व	०	५९	वि	३३	२१
२६	५०	१४	बुध.	५	४२	दिन	८	५५	स्वाती	३	५५	दिन	८	१२	सौभाग्य	८	२६	दिन	१०	०	श	५	४२	च.	३८	१६
२६	४७	३०	गुरु.	१०	५१	दिन	१०	५९	विशाखा	१०	१८	दिन	१०	४६	शोभन	९	४३	दिन	१०	३२	ना	१०	५१	किं	४३	३४

ति.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द. - अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
१	पद्म	६	१	२०	१५	वृष	१९	२४	६	३१	५	२९	१५	४७	६	१९	६	४२	६०	२४	-	१८	५	४३
२	छत्र	७	२	२१	१६				६	३१	५	२९	१६	५	६	२०	७	७	६०	२६	-	१८	६	४०
३	वज्र	८	३	२२	१७	मिथुन	२४	३२	६	३२	५	२८	१६	२३	६	२१	७	३३	६०	२८	-	१८	७	४५
४	ध्वांक्ष	९	४	२३	१८				६	३२	५	२८	१६	४०	६	२२	८	१	६०	३०	-	१८	८	५२
५ / ६	धूम्र	१०	५	२४	१९	कर्क	३२	५०	६	३३	५	२७	१६	५८	६	२३	८	३१	६०	३२	-	१८	९	५९
७	प्रवर्धमान	११	६	२५	२०				६	३४	५	२६	१७	१५	६	२४	९	४	६०	३४	-	१८	११	३
८	राक्षस	१२	७	२६	२१	सिंह	४४	२६	६	३४	५	२६	१७	३१	६	२५	९	३८	६०	३६	-	१८	१२	३
९	मुसल	१३	८	२७	२२				६	३५	५	२५	१७	४८	६	२६	१०	१४	६०	३७	-	१८	१२	५९
१०	सिद्धि	१४	९	२८	२३				६	३५	५	२५	१८	३	६	२७	१०	५१	६०	३९	-	१७	१	५२
११	उत्पात	१५	१०	२९	२४	कन्या	१	५६	६	३६	५	२४	१८	१९	६	२८	११	३०	६०	४१	-	१७	२	४३
१२	मानस	१६	११	३०	२५				६	३६	५	२४	१८	३४	६	२९	१२	११	६०	४३	-	१७	३	३५
१३	मुद्गर	१७	१२	१	२६	तुला	२५	३१	६	३७	५	२३	१८	५०	७	०	१२	५४	६०	४४	-	१७	४	२७
१३	ध्वज	१८	१३	२	२७				६	३८	५	२२	१९	४	७	१	१३	३८	६०	४६	-	१७	५	२१
१४	धूम्र	१९	१४	३	२८	वृश्चिक	५३	४३	६	३८	५	२२	१९	१९	७	२	१४	२४	६०	४८	-	१७	६	१५
३०	प्रवर्धमान	२०	१५	४	२९				६	३९	५	२१	१९	३३	७	३	१५	१२	६०	४९	-	१६	+	+

वृषराशिः दिवा २।१७ वादने। फसली मार्गशीर्ष मासारम्भः। पारणा कार्तिक व्रतस्य। धनधान्य व्रतारम्भः। १ धन प्राप्ति हेतवः वर्षपर्यन्तम् (वाराहपुराणानुसारेण) ⊙ विशाखा (क)
भद्रा ४७।७ (रा.१।२२) उ. (स्वर्ग)। यमघंटयोगः १।१५ (प्रातः ७।१) उ. ५५।५० (रा.श.५।२१) या।   (ख) रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः १४।१२ (दि.१२।१३) उ।
मिथुनराशिः दिवा ४।२१ वादने। भद्रा १४।१२ (दि.१२।१३) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.७।४५) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सौभाग्य सुन्दरी व्रतम् ३। शनि(ख)
यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४१।५२ (रा.२।१९) उ.। (क) नक्षत्र रवि ५।३० (रा.३।४३)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५।२७ (दि.८।४२) या.। यमघंट योगः ५।२७ (दि.८।४२) उ.।
कर्कराशिः रात्रि ७।४१ वादने। भद्रा ५५।४९ (रा.श.६।२२) उ. (मर्त्ये)। काश्यां माता अन्नपूर्णेश्वरी (काशी अन्नपूर्णा) निमित्त षोडश (१६) दिनानि यावत् दर्शन पूजन आरम्भः(ग)
भद्रा २५।५९ (सायं ४।५८) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ४५।१८ (रा.१२।४१) उ.।   (ङ) गुणयकरः द्विपुष्करयोगः ५३।० (रा.३।४९) उ. ५७।० (रा.५।२८) या.।
सिंहराशि रात्रि १२।२० वादने। श्रीकालभैरवाष्टमी ८ व्रतम्। अद्य श्री भैरव उत्पत्तिः। कालाष्टमी ८। काश्यां काल भैरव–बटुक भैरव–अष्ट भैरव मन्दिरेषु तथा अन्यत्र कालभैरव(घ)
गुरौ–पूर्णा सिद्धयोगः ५२।४८ (रा.३।४२) उ.।   (ग) परम्परानुसारेण। सर्वार्थसिद्धियोगः ४७।१० (रा.१।२५) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३।४३ (प्रातः ८।२) या.। काश्यां रामेश्वर तीर्थे लोटा-भण्टा मलोत्सवः (परम्परानुसारेण)।
भद्रा २२।५३ (दि.३।४४) उ. ५२।५८ (रा.३।४६) या. (मर्त्ये)। जवाहर लाल नेहरु जयन्ती (१४ नवम्बर) बाल दिवसः। शुक्र नन्दा सिद्धयोगः ५२।५८ (रा.३।४६) उ.।
कन्याराशिः दिवा ७।२२ वादने। उत्पन्ना एकादशी व्रतम् सर्वषाम् ११। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५४।२८ (रा.४।२३) या.। यमघण्ट योगः ४९।१ (रा.२।१२) उ.।
सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगौ ५३।० (रा.३।४९) या.। ⊙ सं.वृश्चिक राशौ रविः ४७।० (रा.१।२४)। मु.३० समा समताकरम्। पूर्वाः पराः १६ घट्यः पुण्याः दीपवस्त्र गोऽन्नदानं नर्मदा स्नानम्। हेमन्त ऋतु प्रारम्भः। शुभाशुभेद्वय(ङ)
तुलाराशिः दिवा ४।४९ वादने। सोम प्रदोष व्रतम् १३ पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। सौर मार्गशीर्ष मासारम्भः। मृत्युबाणः ४८।५५ (रा.२।११) उ.।
भद्रा ०।५९ (प्रातः ७।२) उ. ३३।२१ (रा.७।५८) या. (पाताल)। मास शिवरात्रि व्रतम् १३। भौम जया सिद्धयोगः ०।५९ (दि.७।२) या.। मृत्युबाणः ४६।० (रा.१।२) या.।
वृश्चिकराशिः रात्रि ४।७ वादने। श्राद्धादौ अमावस्या ३०।   (घ) मन्दिरे दर्शनम् पूजनञ्च कुर्यात्। मनघा व्रतम् ८। बुधाष्टमी पर्वः सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय।
स्नानदानादौ अमा ३० पुण्यतमा। ⊙ अनुराधा नक्षत्रे रविः ४।४० (दि.८।३१)। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१३ भौमे–मृत्युबाण रात्रि १२ वादनात्पर स्वात्यां रेखा ८ लग्नं ६ इष्टाः ७ प्र.व.वि.१८। वा लग्न ७ इष्टा: ५ प्र.व.वि.१०।
तिथि १४ बुधे–दिवा ८।१२ वादनम् यावत् स्वात्यां रेखा ८ दिवा लग्नं ८ पंचेष्टाभावः।
तत्परं मासान्तः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ गु.	०	२५	१२	४५	७	६	५०	५७	४२	५५	७	१२	३०	३१	९२	५८	३	०	४२	४७	०	१०	६	४	३८	३७	७५	१३	११	१	२०	१७	७	०	१०	२०	४६	११
२ शु.	१	९	१८	३७	७	७	३३	५२	४२	५८	७	१२	५५	४९	७४	०	३	०	४३	५७	०	५९	६	५	५३	५०	७५	१४	११	१	१८	०	१	०	१०	२०	४३	०
३ श.	१	२३	२६	१९	७	८	१६	५५	४३	०	७	१३	१३	२९	६	५३	३	०	४४	५६	०	४७	६	७	९	४	७५	१५	११	१	१६	४	१	०	१०	२०	३९	५०
४ र.	२	७	२६	३४	७	८	५९	५५	४३	०	७	१३	४८	५०	७४	४६	३	०	४५	४३	०	३२	६	८	२४	१८	७५	१६	११	१	१४	६	१	०	१०	२०	३६	३९
५ सो	२	२१	१८	२०	७	९	४३	२	४३	११	७	१४	११	२	१६	३२	३	०	४६	१५	०	२६	६	९	३९	३४	७५	१६	११	१	१२	८	१	०	१०	२०	३३	३८
७ मं.	३	१९	३१	२९	७	१०	२६	६	४३	०	७	१४	२३	३८	७२	३०	३	०	४६	२०	०	२६	६	१०	५४	५०	७५	१६	११	१	१०	९	१	०	१०	२०	३०	१७
८ बु.	३	३	३१	२९	७	११	९	४२	४३	३०	७	१२	२७	३९	३०	३९	३	०	४६	२०	०	२१	६	१२	१०	७	७५	१९	११	१	८	५	१	३	१०	२०	२७	६
९ गु.	४	३	४८	५६	७	११	५३	२	४३	३६	७	१५	५०	७	४१	२७	३	०	४५	५९	०	३०	६	१३	२५	३०	७५	१९	११	१	७	२८	१	३	१०	२०	२३	५५
१० शु.	४	१६	५०	१९	७	१२	३६	४९	४३	३०	७	१६	८	२४	७	५	३	०	४५	२५	०	४२	६	१४	४०	५१	७५	२१	११	१	५	०	१	०	१०	२०	२०	४४
११ श.	४	२९	४०	४७	७	१३	२०	२९	४३	३०	७	१६	२४	३१	७५	४७	३	०	४४	४७	०	५०	६	१५	५६	१२	७५	२२	११	१	३	३३	१	२	१०	२०	१७	३३
१२ र.	५	१२	२९	३६	७	१४	४	१४	४३	४२	७	१६	३९	९	६४	११	३	०	४३	५७	१	१	६	१७	११	३६	७५	२४	११	१	२	९	१	२	१०	२०	१४	२२
१३ सो.	५	२४	३९	३०	७	१४	४८	२	४३	५२	७	१६	५३	३	६९	३८	३	०	४२	५६	१	१३	६	१८	२७	१	७५	२५	११	१	१	८	१	०	१०	२०	११	११
१३ मं.	६	६	४१	५३	७	१५	३१	५४	४३	५५	७	७	१३	१५	७३	२४	३	०	४१	४३	१	२५	६	१९	४२	२५	७५	२५	११	१	०	३५	१	२	१०	२०	८	०
१४ बु.	६	१८	२५	२२	७	१६	१५	४९	४३	५७	७	५	५९	५१	७५	४२	३	०	४०	१८	१	४०	६	२०	५७	५०	७५	२६	११	०	५९	२३	०	५१	१०	२०	४	४९
३० गु.	७	१	२	१३	७	१६	५९	४६	४४	०	७	४	४४	९	८१	२०	३	०	३८	३८	१	५६	६	२२	१३	१६	७५	२६	११	०	५८	३२	०	४१	१०	२०	१	३८

फलम्– षष्ठी तिथि का क्षय हो गया है एवं त्रयोदशी तिथि की वृद्धि हो गई है, इस प्रकार पक्ष १५ दिन का है। पक्ष के तीन गुरुवार समान्यतया शुभफल कारक हैं। सोना, पीतल, सूत, कपड़ा, चावल, शक्कर के भाव में मन्दी चलेगी। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान ८ नवम्बर शनिवार को होगा; चन्द्रोदय रात्रि ७।४५ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चमी तदनुसार १० नवम्बर सोमवार से काशी **अन्नपूर्णेश्वरी माता** के निमित्त १६ दिन तक चलने वाला व्रत पूजन शृङ्गार का अनुष्ठान प्रारम्भ हो जायेगा। इसमें काशी के समीपस्थ गाँवों के किसान धान के फसल की पहली कटाई से धान की बालियों को लाकर माता को समर्पित करते हैं एवं प्रसाद स्वरूप उन्हीं बालियों को वितरित किया जाता है, जिसे कृषक आगामी फसल में उन्नत पैदावार की कामना से श्रद्धा स्वरूप ग्रहण कर धान के बीज के लिए संचित करते हैं। मार्गशीर्ष षष्ठी (क्षयवती) १० नवम्बर सोमवार को काशी के समीप प्रसिद्ध रामेश्वर तीर्थ का **लोटा-भण्टा** मेला लगेगा एवं भगवान राम द्वारा पूजित-स्थापित **रामेश्वर महादेव** के मन्दिर में विधिवत् पूजन कर बाटी-चोखा बनाकर श्रद्धा स्वरूप ग्रहण करने की पुण्यफल- ▯ दायक परम्परा का निर्वहन करते है। **श्रीकालभैरवाष्टमी** का प्रसिद्ध व्रत पर्व १२ नवम्बर बुधवार को मनाया जायेगा। आज के दिन श्रीकाल भैरव की जयन्ती मानी गई है। देशभर में सर्वत्र एवं काशी के कोतवाल तथा सुरक्षाधिकारी **श्रीकालभैरव** मन्दिर एवं कमच्छा स्थित बटुक भैरव मन्दिर सहित काशी के आठो भैरव मन्दिरों में कालाष्टमी कालभैरव जयन्ती मनाई जायेगी। रात्रि जागरण कर पूजन शृङ्गार के विशेष अनुष्ठान किये जायेंगे। शास्त्र में कहा गया है कि यदि कोई पाप जीवन में किया गया है तो वह आज के दिन दर्शन मात्र से समाप्त हो जाता है। **मनघा व्रत** का मान भी आज ही होगा। **उत्पन्ना एकादशी व्रत** का मान सबके लिये १५ नवम्बर शनिवार को होगा। पुत्र की कामना से **सोमप्रदोष** का व्रत १७ नवम्बर को किया जायेगा **मास शिवरात्रि व्रत** १८ नवम्बर मंगलवार को होगा। श्राद्ध के लिए अमावस्या १९ नवम्बर बुधवार को होगी, जबकि स्नानदान की अमावस्या २० नवम्बर गुरुवार को मनाई जायेगी। **वृश्चिक राशि की सूर्य संक्रान्ति** १६ नवम्बर रविवार को रात १।२४ बजे से आयेगी। **अनुराधा नक्षत्र** का सूर्य पक्षान्त २० नवम्बर गुरुवार को दिन ८।३१ बजे से आयेगा। खाद्यान्नों में गेहूँ का भाव चढ़ जायेगा।

पं.३१ मार्गशीर्ष कृष्ण ८ बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९५६
अयनांशाः २४/१२/९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	७	७	३	६	११	१०	४
२५	१९	११	१२	०	१२	१	२०	२०
९	३१	९	२७	४६	१०	९	२७	२७
३८	२९	४२	३९	३०	११	५	६	६
६०	८०४	४३	३०	०	७५	१	३	३
३६	३६	३०	३९ व	२१ व	१९	३७ व	११	११

भौमादीनां चारः
भौमः-अनुराधायां वृश्चिकराशौ १४ बुधतः ज्येष्ठायां रात्रि ७।२० वादने। बुधः- वृश्चिक राशौ ४ रवितः वक्री। गुरुः- पुनर्वसौ कर्क राशौ ७ भौमतः वक्री। शुक्रः-तुलाराशौ। शनिः-(वक्री) पू.भा. ४ चरणे मीनराशौ। राहुः-पू.भा.१ चरणे केतुश्च-पू.फा. ३ चरणे३० गुरुतः राहुः शतभिषा ४ चरणे केतुश्च-पू.फा.२ चरणे।

मार्गशीर्ष कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१गु. घं.	मि.	२शु. घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४र. घं.	मि.	५सो घं.	मि.	७मं. घं.	मि.	८बु. घं.	मि.	९गु. घं.	मि.	१०शु. घं.	मि.	११श. घं.	मि.	१२र. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	१३सो. घं.	मि.	१३मं. घं.	मि.	१४बु. घं.	मि.	३०गु. घं.	मि.
तुला	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	वृश्चिक	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१
वृश्चिक	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	धनु	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६
धनु	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	मकर	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	१२
मकर	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	कुम्भ	१	५४	१	५०	१	४७	१	४३
कुम्भ	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	मीन	३	२२	३	१८	३	१५	३	११
मीन	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	मेष	५	१	४	५७	४	५३	४	४९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.	
मेष	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	वृष	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६
वृष	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	१०	७	६	७	२	मिथुन	९	११	९	७	९	४	९	०
मिथुन	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	कर्क	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७
कर्क	१२	१२	१२	८	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३४	सिंह	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१
सिंह	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	कन्या	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४
कन्या	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	४	०	तुला	६	१२	६	८	६	४	६	०

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ गुरौ**–भरण्यां कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं शय्यासनाद्युपभोगं मुकदमा कार्यं। **तिथि २ शुक्रे**–प्रातः ७।१ वादनात्परं रोहिण्यां गर्भाधानं (रात्रौ) आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं स्थापनं च चूल्ही स्थापनं, वृक्षरोपणं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवदेनपत्र लेखनं, नूतनवध्वा पाककर्म; वाहनक्रयः औषधि निर्माणं सेवनं च पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ शनौ**–भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ रवौ**–रिक्ता दिवा १०।० वादनात्परं आर्द्रायाम् रोग विमुक्त स्नानं, विद्यारम्भः, मुकदमाकार्यं, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ५/६ सोमे**–पुनर्वसौ पुंसवन सीमन्त, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विद्यारम्भः, गवां क्रयविक्रय, दीक्षाग्रहणं, आभूषणनिर्माण घटनं, हलप्रवहण, बीजवपनं, शय्यासनाद्युपभोगः, लतावृक्षादि रोपणं, पश्चिम दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ भौमे**–पुष्ये-भद्रा सायं ४।५८ वादनात्परं पुंसवन सीमन्तः, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं हलप्रवहण, दत्तकपुत्रग्रहणं, दिग्शूल, विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ८ बुधे**–श्लेषायां धान्यच्छेदनं, मुकदमा कार्य, पश्चिम दिग्यात्रा। **तिथि ९ गुरौ**–मघायां-रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० शुक्रे**–पूर्वाफाल्गुन्यां-विद्यारम्भः, विक्रय, दीक्षा ग्रहणं, धान्यच्छेदनं, कणमर्दन, धान्यस्थापन, जलयन्त्रकर्म, मुकदमा कार्यम, भूमिक्रयः, नौका जलयान घटनं, दिवा ३।४४ उपरान्त भद्रा व्याप्तिः। सिंह चन्द्रे पूर्व एवं उत्तर दिग्यात्रा। **तिथि ११ शनौ**–उ.फा. विपणि व्यापार, नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं, दिवा ७।२२ वादनात्परं कन्या*

पं.३२मार्गशीर्ष कृष्ण ३० गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९६४
अयनांशाः २४/१२/१०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	७	३	६	११	१०	४
३	१	१६	४	०	२२	०	२०	२०
१५	२	५९	४४	३८	१३	५८	१	१
१२	१३	४६	९	३८	१६	३२	३८	३८
६०	७२८	४४	८१	१	७५	०	३	३
४९	२३	०	२० व	५६ व	२६	४१ व	११	११

* चन्द्रे दक्षिण दिग् यात्रा। **जीर्णादि गृहप्रवेश ल.९। तिथि १२ रवौ**–हस्ते-पुंसवन सीमन्त, विपणिव्यापारः, विक्रय, गवां क्रय विक्रय, दीक्षाग्रहणं, लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं नृत्यगीत वाद्य कलारम्भः, नौका जलयानघटनं, वाटिकारम्भः, नवान्न-भक्षण, कन्या चन्द्रे पूरब, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १३ सोमे**–चित्रायां नामकरणं, अन्नप्राशनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, विपणिव्यापार, क्रय, हलप्रवहण, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापन, वृक्षारोपण, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदपत्र लेखनं, लता वृक्षादि रोपणं, **जीर्णादि गृहप्रवेश ल.९** वाटिकारम्भः, नवान्न भक्षण, औषधि निर्माणं, वाहनक्रय, कन्याचन्द्रे दक्षिण दिग् यात्रा सायं ४।४९ वादनात्परं तुला चन्द्रे पश्चिम, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १३ भौमे**–स्वात्यां रिक्ता दिवा ७।२ वादनात्पूर्व प्रसूति स्नानं, दत्तक पुत्र ग्रहणं, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, पश्चिम दिग् यात्रा ततो रिक्तायां शल्य कर्म, रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १४ बुधे**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं, **तत्परम् मासान्तः।**

राशिफल

मेष- कुचेष्टा
वृष- हानिः
मिथुन-सुखार्थ
कर्क- रोगं हानिः
सिंह- शत्रुभयं
कन्या-सुखं श्रीः
तुला- धनहानिः
वृश्चिक-पीड़ा भयम्
धनु-रोगं शोकं।
मकर-सुख लाभः
कुम्भ-सुखम्
मीन-रोगं

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। दि.२१ नवम्बर - ४ दिसम्बर सन् २०२५ ई. (रा. कार्तिक ३० - मार्गशीर्ष १३)

दि.मा.		मार्गशीर्ष शु. तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रा. द. -		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रास्त	
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२६	४५	१	शुक्र.	१६	१७	दिन	१	१०	अनुराधा	१६	४९	दिन	१	२३	अतिगण्ड	११	६	दिन	११	५	बव	१६	१७	बा	४८	४७	राक्षस	२१	१६	५	३०				६	३९	५	२१	१९	४६	७	४	१६	१	६०	५१	-	१६	५	४०
२६	४२	२	शनि.	२१	१८	दिन	३	११	ज्येष्ठा	२३	०	दिन	३	५२	सुकर्मा	१२	१३	दिन	११	३३	कौ	२१	१८	तै	५३	३०	मुशल	२२	१७	६	१	धनु	२३	०	६	४०	५	२०	२०	०	७	५	१६	५२	६०	५२	-	१६	६	२९
२६	४०	३	रवि.	२५	४२	दिन	४	५७	मूल	२८	३४	सायं	६	६	धृति	१२	५३	दिन	११	४९	गर	२५	४२	व	५७	२२	सिद्धि	२३	१८	७	२				६	४०	५	२०	२०	१२	७	६	१७	४४	६०	५४	-	१६	७	३२
२६	३८	४	सोम.	२९	१	रात	६	१६	पूर्वाषाढ़ा	३३	७	रात	७	५५	शूल	१२	५१	दिन	११	४८	वि	२९	१	बव	६०	०	उत्पात	२४	१९	८	३	मकर	४८	५९	६	४०	५	२०	२०	२५	७	७	१८	३८	६०	५५	-	१६	८	१८
२६	३५	५	मंगल.	३१	१७	रात	७	१२	उत्तराषाढ़ा	३६	३५	रात	९	१९	गण्ड	११	५३	दिन	११	२७	बव	०	९	बा	३१	१७	मानस	२५	२०	९	४				६	४१	५	१९	२०	२७	७	८	१९	३३	६०	५७	-	१५	९	१६
२६	३३	६	बुध.	३२	११	रात	७	३३	श्रवण	३८	४५	रात	१०	११	वृद्धि	१०	१	दिन	१०	४१	कौ	१	४४	तै	३२	११	छत्र	२६	२१	१०	५				६	४१	५	१९	२०	४९	७	९	२०	३०	६०	५८	-	१५	१०	१३
२६	३१	७	गुरु.	३१	४५	रात	७	२४	धनिष्ठा	३९	३९	रात	१०	३४	ध्रुव	७	८	दिन	९	३३	गर	१	५८	व	३१	४५	श्रीवत्स	२७	२२	११	६	कुंभ	९	१२	६	४२	५	१८	२१	१	७	१०	२१	२८	६०	५९	-	१५	११	११
२६	२९	८	शुक्र.	३०	७	रात	६	४५	शतभिषा	३९	३२	रात	१०	२७	व्याघात हर्षण	३ ५५	१३ १२	प्रातः	८ ६	० ४	वि	०	५६	बव बा	३० ५९	७ ४४	सौम्य	२८	२३	१२	७				६	४२	५	१८	२१	१२	७	११	२२	२७	६१	१	-	१४	१२	९
२६	२७	९	शनि	२७	२२	सायं	५	४०	पूर्वाभाद्र	३७	५९	रात	९	५५	वज्र	५२	४४	रात	३	४९	कौ	२७	२२	तै	५५	३०	कालदण्ड	२९	२४	१३	८	मीन	२३	२०	६	४३	५	१७	२१	२२	७	१२	२३	२८	६१	२	-	१४	१	८
२६	२५	१०	रवि	२३	३९	दिन	४	११	उत्तराभा	३५	४६	रात	९	१	सिद्धि	४६	२३	रात	१	१७	गर	२३	३९	व	५१	२१	स्थिर	३०	२५	१४	९				६	४३	५	१७	२१	३३	७	१३	२४	३०	६१	३	-	१४	२	८
२६	२३	११	सोम	१९	४	दिन	२	२१	रेवती	३२	४२	रात	७	४८	व्यतिपात	३९	२४	रात	१०	२९	वि	१९	४	बव	४६	२८	मातंग	१	२६	१५	१०	मेष	३२	४२	६	४३	५	१७	२१	४२	७	१४	२५	३३	६१	५	-	१३	३	१३
२६	२२	१२	मंगल	१३	५२	दिन	१२	१७	अश्विनी	२९	६	रात	६	२२	वरीयान	३१	५६	रात	७	३०	बा	१३	५२	कौ	४१	४	अमृत	२	२७	१६	११				६	४४	५	१६	२१	५२	७	१५	२६	३९	६१	६	-	१३	४	२१
२६	२०	१३	बुध	८	१५	दिन	१०	२	भरणी	२५	४	दिन	४	४६	परिघ	२४	१०	सायं	४	२४	तै	८	१५	गर	३५	१८	काण	३	२८	१७	१२	वृष	३९	१	६	४४	५	१६	२२	०	७	१६	२७	४५	६१	७	-	१३	५	३४
२६	१८	१४ १५	गुरु.	२ ५४	२१ ३	प्रातः	७ ५	४० १७	कृतिका	२०	५२	दिन	३	५	शिव	१६	१७	दिन	१	१५	व	२	२१	वि बव	२८ ५४	७ ३	लुम्बक	४	२९	१८	१३				६	४४	५	१६	२२	९	७	१७	२८	५२	६१	८	-	१३	६	+

चन्द्र ८ दर्शनम् मु.१५ जघन्य महधतारकम्। सौम्य शृंगम् सुभिक्षं। रुद्रव्रतम् (पीड़िया) इति लोके प्रसिद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः १६।४९ (दि.१।२३) या.। शुक्र-नन्दा सिद्धयोगः(क)

धनुराशिः दिवा ३।५२ वादने। मु.जमादि-उस्सानी ६ हिजरी सन् १४४७। राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मासारम्भः। (क) २६।१७ (दि.१।१०) या.।

भद्रा ५७।२२ (रा.शे.५।३७) उ. (पाताले)। सर्वार्थसिद्धियोगः २८।३४ (सा.६।६) या.। रवियोगः २८।३४ (सा.६।६) उ.। (ख) भद्रासिद्धयोगः ३२।११ (रा.७।३३) उ.।

मकरराशिः रात्रि २।१६ वादने। भद्रा २९।१ (रा.६।१६) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। रवियोगः ३३।७ (रा.७।५५) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३३।७ (रा.७।५५) उ.।

श्रीराम विवाहमहोत्सवः। विवाह पंचमी ५। भविष्योत्तरोक्तं श्रीपञ्चमी ५ व्रतम्। द्वितीया नाग पञ्चमी ५ स्नानेदंवेहफलम्। रवियोगः ३६।३५ (रात ९।१९) उ.। पूर्व दिशायाम् बुधोदयः।

स्कन्दषष्ठी ६। चम्पा षष्ठी ६। महाराष्ट्रे प्रसिद्धि। माँ अन्नपूर्णेश्वरी व्रत पूजन श्रृंगार समाप्तिः। मृत्युवाणः ३९।५ (रा.१०।११) उ.। रवियोगः ३८।४५ (रा.१०।११) या.। बुधे-(ख)

कुम्भराशिः दिवा १०।२३ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ३१।४५ (रा.७।२४) उ. (मर्त्ये)। विष्णु सप्तमी ७। मित्र सप्तमी ७। मृत्युबाणः ३८।५ (रा.९।५६) या.।

भद्रा ०।५६ (प्रातः ७।४) या.। रवियोगः ३९।२२ (रा.१०।२७) उ.।

मीनराशिः दिवा ४।३ वादने। कल्पादिः ९। नन्दा नवमी ९। देवी पूजनेन विष्णुलोक प्राप्तिः। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २७।२२ (सा.५।४०) या.।

भद्रा ५१।२१ (रा.३।९) उ. (मर्त्ये)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।४६ (रा.९।१) उ.। रवियोगः ३५।४६ (रा.९।१) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २३।३९ (दि.४।११) उ.।

मेषराशिः रात्रि ७।४८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा १९।४ (दि.२।२१) या.। **मोक्षदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। गीता जयन्ती ११। मौन एकादशी** (जैन)। अखिल(ग)

भौम प्रदोष व्रतम् १२। ऋणापकर्णाय प्रशस्तम्। व्यञ्जन द्वादशी १२। बहुविध पक्वान्नं विष्णु अर्पयत्। जनार्दन पूजा १२। अखण्ड १२। दान १२ (उड़ीसा)। भौमाश्विनी सर्वार्थामृतसिद्धियोगी(घ)

वृषराशिः रात्रि १०।२० वादने। **अनंग त्रयोदशी १३ व्रतम्। काश्यां अन्तगृही परिक्रमा** ८।१५ (दि.१०।२) उ.। काश्यां पिशाचमोचन यात्रा दर्शनम्। पिशाचत्व मुक्तये श्राद्धं तर्पणं(ङ)

भद्रा २।२१ (प्रातः ७।४०) उ. २८।७ (सा.५।५९) या. (स्वर्गे)। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा।** काश्यां अन्तर्गृही परिक्रमा २।२१ (प्रातः ७।४०) या.। नगर परिक्रमा।(च)

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.१ शुक्रे–दिवा १।२३ वादनम् यावत् अनुराधायां रेखा ७ दिवा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१२।। **तिथि २ शनौ**–दिवा ३।५२ वादनात्परं मूल नक्षत्रे रेखा ९ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। (सप्त चं.दा.) वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ६ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.९ वा लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। **तिथि ३ रवौ**–मूल नक्षत्रे रेखा ९ दिवा लग्नं ११ (सायं ६।६ वादनम् यावत्)। **तिथि ४ सोमे**–रात्रि ७।५५ वादनात्परं उत्तराषाढायाम् रेखा ७ लग्नं ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। (सप्त चं.दा.) वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ६ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.९ वा लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०। **तिथि ५ भौमे**–उत्तराषाढायाम् रेखा ७ दिवा लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (सप्त चं.दा.) (रात्रि ९।१९ वादनम् यावत्)। **तिथि ९ शनौ**–रात्रि ९।५५ वादनात्परं उ.भा. रेखा ७ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०। **तिथि १० रवौ**–उ.भा. रेखा ७ दिवा लग्नं १० इष्टाः ७ ग्र.व.वि.२७ (गु.दा.) वा लग्नं गोधूलि वा लग्नं३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। रेवत्यां रेखा १० लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। रात्रि ३।१५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः। **तिथि ११ सोमे**–भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां व्यतिपातः रेखा १० आ.लग्नं गोधूलिः। रात्रि ७।४८ वादनम् यावत्। **तिथि १४।१५ गुरौ**–भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ८ लग्नं गोधूलिः वा रात्रो लग्नं ६ इष्टाः६ ग्र.व.वि.१३।। (सप्त श.दा.) वा लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	शु.	७	१३	४	५३	७	१७	४३	४६	४४	२	७	३	२२	४९	७८	४८	३	०	३६	४२	२	८	६	२३	२८	४२	७५	२८	११	०	५७	५१	०	३४	१०	१९	५८	२७
२	श.	७	२५	१०	२१	७	१८	२७	४८	४४	५	७	२	४	१	७३	४८	३	०	३४	३४	२	१७	६	२४	४४	१०	७५	२८	११	०	५७	१७	०	२८	१०	१९	५५	१७
३	र.	८	७	२४	४४	७	१९	११	५३	४४	६	७	०	५०	१३	७०	३४	३	०	३२	१७	२	२६	६	२५	५९	३८	७५	२९	११	०	५६	४९	०	२३	१०	१९	५२	६
४	सो.	८	१९	५६	१२	७	१९	५५	५९	४४	८	६	२९	३९	३९	६६	२१	३	०	२९	५१	२	३५	६	२७	१५	७	७५	२९	११	०	५६	२६	०	१९	१०	१९	४८	५५
५	मं.	९	२	३४	२७	७	२०	४०	७	४४	११	६	२८	३३	१८	५०	३६	३	०	२७	१६	२	४५	६	२८	३०	३६	७५	२९	११	०	५६	७	०	१४	१०	१९	४५	४४
६	बु.	९	१५	२८	३९	७	२१	२४	१८	४४	१३	६	२७	४२	४२	४०	४५	३	०	२४	३१	२	५७	६	२९	४६	५	७५	३०	११	०	५५	५३	०	८	१०	१९	४२	३३
७	गु.	९	२८	३७	१२	७	२२	८	३१	४४	१४	६	२७	१	५७	२९	१७	३	०	२१	३४	३	८	७	१	१	३५	७५	३०	११	०	५५	४५	०मा	५	१०	१९	३९	२२
८	शु.	१०	११	५९	४	७	२२	५२	४५	४४	१७	६	२६	३२	४०	१३	४२	३	०	१८	२६	३	२०	७	२	१७	५	७५	३०	११	०	५५	५०	०	१२	१०	१९	३६	११
९	श.	१०	२५	४७	५६	७	२३	३७	२	४४	२१	६	२६	१८	५८	६मा	२४	३	०	१५	६	३	२१	७	३	३२	३५	७५	३१	११	०	५६	२	०	२१	१०	१९	३३	०
१०	र.	११	९	३३	३१	७	२४	२१	२३	४४	२६	६	२६	२५	२२	१०	४५	३	०	११	३५	३	४३	७	४	४८	६	७५	३२	११	०	५६	२३	०	२८	१०	१९	२९	४९
११	सो.	११	२३	२९	१०	७	२५	५	४९	४४	३२	६	२६	३६	७	१९	१२	३	०	७	५२	३	५०	७	६	३	३८	७५	३२	११	०	५६	५१	०	३३	१०	१९	२६	३८
१२	मं.	०	७	३३	३५	७	२५	५०	२१	४४	३७	६	२६	५५	१९	२८	४४	३	०	४	२	३	५९	७	७	१९	१०	७५	३२	११	०	५७	२४	०	३७	१०	१९	२३	२७
१३	बु.	०	२१	४१	१४	७	२६	३४	५८	४४	४१	६	२७	२४	३	३५	५	३	०	०	३	४	९	७	८	३४	४२	७५	३२	११	०	५८	१	०	४०	१०	१९	२०	१६
१४	गु.	१	५	५१	२५	७	२७	१९	३९	४४	४४	६	२७	५९	८	४२	४६	२	२९	५५	५४	४	२०	७	९	५०	१४	७५	३२	११	०	५८	४१	०	४५	१०	१९	१७	५

फलम्– पक्षान्त में पूर्णिमा तिथि का क्षय हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। ज्येष्ठा नक्षत्र वृश्चिक राशि का चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त १५ दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुओं जैसे दूध, छेना, पर्नीर, मिष्ठान्न इत्यादि के भाव चढ़ जायेंगे। शुक्ल पक्ष में तिथि का घटना अच्छा नहीं माना जाता। **पीड़िया नाम** से प्रचलित रुद्रव्रत २१ नवम्बर शुक्रवार को किया जायेगा। **विवाह पंचमी** के नाम से प्रचलित श्रीराम एवं माता जानकी का विवाहोत्सव २५ नवम्बर मंगलवार को मनाया जायेगा। मिथिलांचल में इसे हर्ष उल्लास एवं अपनी परम्परा के अनुसार विशेष रूप से पर्व रूप में मनाया जाता है। साथ ही पूरे देश मे इसको मनाया जाता है। **चम्पा षष्ठी-स्कन्द षष्ठी** २६ नवम्बर बुधवार को होगी। पश्चिमी प्रदेशों विशेषकर महाराष्ट्र में इसका विशेष महात्म्य है। पौराणिक मान्यता के अनुसार आज के ही दिन स्वामी कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था और आज ही उनका राज्याभिषेक भी हुआ था। **विष्णु सप्तमी** एवं **मित्र सप्तमी** २७ नवम्बर गुरुवार को होगी। **मोक्षदा एकादशी व्रत** का मान सबके लिये १ दिसम्बर सोमवार को होगा। आज ही जैन जगत की **मौन एकादशी** तथा सुप्रसिद्ध **गीता जयन्ती** भी मनाई जायेगी। ३६ भाषाओं में अनुवादित तथा सन्तो महापुरुषों के विशिष्ट टीका-व्याख्यान-विवेचन से परिष्कृत एवं महिमा मण्डित-विस्तरित गीता का ज्ञान सम्पूर्ण विश्व में भारतीय मनीषा की गौरव पूर्ण गाथा को मुखरित करेगा। श्रीमद्भागवत गीता मात्र एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं, अपितु अपार ज्ञानकोष है तथा हम **सनातन धर्मियों की आचार संहिता** एवं जीवन के आधार-भूत मूल्यों का मार्गदर्शक है। ऋण से छुटकारा पाने के लिए **भौम प्रदोषका व्रत** २ दिसम्बर मंगलवार को किया जायेगा। **अनंग त्रयोदशी** ३ दिसम्बर बुधवार को होगी। काशी के पिशाच मोचन में अतृप्त आत्माओं की शान्ति के लिए श्राद्ध कर्म ३ दिसम्बर बुधवार को किया जायेगा। काशी की अन्तर्गृही परिक्रमा की जायगी। स्नान-दान एवं व्रत सहित **छयवती** ○

पं.३३ मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९७२ अयनांशाः २४/१२/११

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	६	३	७	११	१०	४
११	११	२२	२६	०	२	०	१९	१९
२२	५९	५२	३२	१८	१७	५५	३६	३६
२७	४	४५	४०	२६	५	५०	११	११
६१	८०२	४४	१३ ४२	३ २०	७५	० १२	३	३
१	५३	१७	व	व	३०	मा	११	११

भौमादीनां चारः
भौमः-ज्येष्ठायांवृश्चिकराशौ। बुधः-(वक्री) वृश्चिके वक्रगत्या ३ रवितः तुलायां ९ शनितः मार्गी। गुरुः-(वक्री) पुनर्वसौ कर्क राशिः १३ ध्रुवतःवक्रगत्या मिथुने दिवा १०।३० वादने। शुक्रः-तुला राशौ ६ बुधतः वृश्चिकराशौ दिवा १०।१५ वादने। शनिः-(वक्री) पू.भा.४ चरणे मीन ७गुरुतः मार्गी। राहुः-शतभिषा ४ चरणे केतुश्च-पू.फा. २ चरणे।

मार्गशीर्ष शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि-वा	१ शु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ सो. घं.	मि.	५ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ सो. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.
वृश्चिक	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६
धनु	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१
मकर	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६
कुम्भ	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४८
मीन	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१६
मेष	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृष	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१
मिथुन	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	५
कर्क	११	१३	११	९	११	५	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२
सिंह	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६
कन्या	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	१	२	५७	२	५३	२	४९
तुला	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शुक्रे**–अनुराधायां दिवा १।२३ वादनम् यावत् प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरणं, विपणि व्यापार, विक्रय, नववस्त्र धारणं, कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं, **वरवरणं कन्या-वराणं वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.९** दीक्षाग्रहणं, हलप्रहवणं बीजवपनं वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ; शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं भूमिक्रयः नवान्न भक्षणं वाहन क्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ शनौ**–ज्येष्ठायां उग्रकर्माचरणं दिवा ३।५२ वादनात्परं मूले शस्त्रघटनं। **तिथि ३ रवौ**–मूले पुंसवनं सीमन्तः **वरवरणं कन्यावरणं**, दीक्षाग्रहणं जलयंत्र कर्म मुकदमा कार्यं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ४ सोमे**–रिक्ता-भद्रा रात ६।१६ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं गर्भाधानं **वरवरणं कन्या** वरणं वधू **प्रवेश-द्विरागमनं ल.३** विपणिव्यापार दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च चूल्हीस्थापनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोग, आवेदनपत्र लेखनं, नूतन-वध्वापाककर्म। **तिथि ५ भौमे**–उ.षाढ़ायां-पुंसवन सीमन्त, प्रसूति स्नानं, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, हलप्रवहण, पूरव दिग् यात्रा। **तिथि ६ बुधे**–श्रवणे कर्णवेधः, कन्यानासिका छेदनं, **कन्यावरणं**, क्रय, दीक्षाग्रहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, कणमर्दनं, धान्यस्थापन, शिल्पविद्यारम्भः, नूतनवध्वा-पाकारम्भः, औषधि सेवन, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं, रात्रि १०।११ वादनात्परं धनिष्ठायां गर्भाधानं, **द्विरागमनं, जीर्णादि गृहप्रवेशः** रात्रि शेषे ल.८। **तिथि ७ गुरौ**– धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **कन्यावरणं वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.१२** नववस्त्र धारणं दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजवपनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं, **गृहारम्भः जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.१२**, नूतन बध्वा पाककर्म नवान्न भक्षणं वाहन क्रयः कुम्भ चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ शुक्रे**–भद्रा प्रातः ७।४ वादनात्परं शतभिषायां अन्नप्राशनं **द्विरागमनं** ■

पं.३४ मार्गशीर्ष शु.१४ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९७८ अयनांशाः २४/१२/१२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	७	६	२	७	११	१०	४
१७	५	२७	२७	२९	९	०	१९	१९
२८	५१	१९	५९	५५	५०	५८	१७	१७
५२	२५	३९	८	५४	१४	४१	५	५
६१	८८	४४	४२ ४६	४ २०	७५	० ४५	३	३
८	२१	४४	मा	मा	३२	मा	११	११

(ग) भूमण्डले गीता ज्ञान महोत्सवः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिस्मृतां। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १९।४ (दि.२।२१) या.। (घ) २९।६ (रा.६।२२) या.। रवियोगः २९।६ (रा.६।२२) उ.। स्थायी (मुद्दई) जयद् योगः १३।५२ (दि.१२।१७) या.। भौमे जया सिद्धयोगः १३।५२ (दि.१२।१७) उ.। (ङ) च १४। पार्वण श्राद्धम् १४। कपर्दीश्वर दर्शनम् ⊙ **ज्येष्ठा नक्षत्रे रविः** १२।० (दि.११।३२) सर्वार्थसिद्धियोगः २५।४ (दि.४।४६) उ.। (च) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती १५। प्रदोषे दत्तात्रेय अवतार १५। रवियोगः २०।५२ (दि.३।५) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २०।५२ (दि.३।३) उ.।

○ **पूर्णिमा** का मान ४ दिसम्बर गुरुवार को होगा। आज श्री दत्त जयन्ती दत्तात्रेय भगवान का अवतरणोत्सव मनाया जायेगा एवं नगर परिक्रमा की जायेगी। **ज्येष्ठा नक्षत्र का सूर्य** ३ दिसम्बर बुधवार को दिन ११।३२ बजे से आवेगा। सोना-चाँदी, खाद्यान्नों, सरसों, ऊनी वस्त्र एवं मादक द्रव्यों में तेजी चलेगी। २५ नवम्बर के आसन्न मौसम करवट ले सकता है। बूँदा-बाँदी एवं वर्षा होने की सम्भावना रहेगी। ठंड पड़नी प्रारम्भ हो जायेगी।

■ **ल.१२**, क्रयविक्रयः, आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः जलयन्त्र कर्म आवेदनपत्र लेखनं नूतन बध्वा पाककर्म, नवान्न भक्षणं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ शनौ**–पूर्वाभाद्रपदे रोगविमुक्त स्नानं रात्रि ९।५५ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे नीलमादि रत्नकृष्णा वस्त्र धारणं **गृहारम्भः जीर्णादि गृहप्रवेशः ल.६** वा रात्रि शेष ल.७ उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १० रवौ**–उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, **वरवरणं-कन्यावरणं**, विपणिव्यापार दीक्षाग्रहणं लालवस्त्रधारणं प्रवाल रत्न धारणं शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिकानिर्माण उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ११ सोमे**–भद्रा दिवा २।२१ वादनात्परं रेवत्यां आ.प्रसुति स्नानं जातकर्मः अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **वरवरणं-कन्या वरणं वधूप्रवेशः** अत्यावश्यके **द्विरागमनं** (ति.दा.) लग्नं गोधूलिः विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं **गृहारम्भः जीर्णादिगृहप्रवेशः लग्नं** गोधूलिः नूतन बध्वा पाककर्म औषधि निर्माणं सेवनं च नवान्न भक्षणं वाहन क्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १२ भौमे**-अश्विन्यां प्रसूति स्नानं (त्रयोदश्यां) लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं दत्तक पुत्र ग्रहणं शल्यकर्म अश्विन्यांदिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ बुधे**–रिक्तापूर्व भरण्यां धान्यच्छेदनं मुकदमाकार्यं रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १४/१५ गुरौ**–भद्रा सायं ५।५९ वादनात्परं रोहिण्यां प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं **वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.३** विपणिव्यापारःदीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं चूल्ही स्थापनं, सेवारम्भःशस्त्र-धारणं शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं **गृहारम्भः ल.३**, नूतनवध्वा पाककर्म पूर्व दिग् यात्रा।

राशिफल

मेष-	कष्टं
वृष-	गमनम्
मिथुन-	रिपुनाशः
कर्क-	दैन्यम्
सिंह-	रोगं
कन्या-	श्रीप्राप्तिः
तुला-	हानिः भयम्
वृश्चिक-	स्थान हानिः
धनु-	द्रव्यनाशः
मकर-	वित्ताप्तिः
कुम्भ-	सौख्यं
मीन-	पापबुद्धिः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ पौष कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। दि.५ - १९ दिसम्बर २०२५ ई. (राष्ट्रीय मार्गशीर्ष १४ - २८)

पूर्व दिशायाम् शुक्रास्तः ११ दिसम्बर २०२५

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
२६	१७	१	शुक्र.	५०	३९	रात	३	१	रोहिणी	१६	४२	दिन	१	२६	सिद्ध	८	२३	दिन	१०	६	बा	२२	२१	कौ	५०	३९
२६	१५	२	शनि.	४५	१७	रात	१२	५२	मृगशिरा	१२	४४	दिन	११	५१	साध्य / शुभ	५२ / ०	३५ / ३५	प्रातः	७ / ४	१ / २	तै	१८	५८	गर	४५	१७
२६	१४	३	रवि	४०	२५	रात	१०	५५	आर्द्रा	९	१३	दिन	१०	२६	शुक्ल	४६	१६	रात	१	१५	व	१२	५१	वि	४०	२५
२६	१३	४	सोम	३६	२२	रात	९	१८	पुनर्वसु	६	२०	दिन	९	१७	ब्रह्म	३९	५७	रात	१०	४५	बव	८	२३	बा	३६	२२
२६	११	५	मंगल	३३	९	रात	८	२	पुष्य	४	१९	दिन	८	३०	ऐन्द्र	३४	२१	रात	८	३०	कौ	४	४५	तै	३३	९
२६	१०	६	बुध.	३१	०	रात	७	१०	श्लेषा	३	१०	दिन	८	२	वैधृति	२९	३३	सायं	६	३५	गर	२	४	व	३१	०
२६	९	७	गुरु.	३०	५	रात	६	४८	मघा	३	१२	दिन	८	३	विष्कुम्भ	२५	४२	सायं	५	३	वि	०	३७	बव	३०	५
२६	८	८	शुक्र.	३०	२७	रात	६	५७	पूर्वाफा.	४	२०	दिन	८	३०	प्रीति	२२	५२	दिन	३	५५	बा	०	१६	कौ	३०	२७
२६	७	९	शनि.	३२	१०	रात	७	३९	उत्तराफा.	६	५०	दिन	९	३१	आयुष्मान	२१	२	दिन	३	१२	तै	१	१९	गर	३२	१०
२६	७	१०	रवि	३४	५८	रात	८	४६	हस्त	१०	३२	दिन	११	०	सौभाग्य	२०	७	दिन	२	५०	व	३	३४	वि	३४	५८
२६	६	११	सोम	३९	०	रात	१०	२३	चित्रा	१५	२२	दिन	१२	५६	शोभन	२०	५	दिन	२	४९	बव	६	५९	बा	३९	०
२६	५	१२	मंगल	४३	४८	रात	१२	१८	स्वाती	२१	५	दिन	३	१३	अतिगण्ड	२०	४६	दिन	३	५	कौ	११	२४	तै	४३	४८
२६	५	१३	बुध.	४९	८	रात	२	२६	विशाखा	२७	२५	सायं	५	४५	सुकर्मा	२१	५५	दिन	३	३३	गर	१६	२८	व	४९	८
२६	४	१४	गुरु.	५४	३३	रात	४	३६	अनुराधा	३३	५९	रात	८	२३	धृति	२३	१४	दिन	४	५	वि	२१	५०	श	५४	३३
२६	७	३०	शुक्र.	५९	३५	रात	६	३७	ज्येष्ठा	४०	२१	रात	१०	५५	शूल	२४	२९	दिन	४	३५	च	२७	४	ना	५९	३५

औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. द. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं.		चन्द्रोदय घं.	मि.
मित्र	५	१	१९	१४	मिथुन	४४	४१	६	४५	५	१५	२२	१७	७	१८	३०	०	६१	९	-	१२	५	२२
वज्र	६	२	२०	१५				६	४५	५	१५	२२	२५	७	१९	३१	९	६१	१०	-	१२	६	२९
ध्वांक्ष	७	३	२१	१६	कर्क	५२	४	६	४५	५	१५	२२	३३	७	२०	३२	१९	६१	११	-	११	७	४०
धूम्र	८	४	२२	१७				६	४५	५	१५	२२	३९	७	२१	३३	३०	६१	१२	-	११	८	४८
प्रवर्धमान	९	५	२३	१८				६	४६	५	१४	२२	४५	७	२२	३४	४२	६१	१३	-	११	९	५२
राक्षस	१०	६	२४	१९	सिंह	३	१०	६	४६	५	१४	२२	५१	७	२३	३५	५५	६१	१४	-	१०	१०	५०
मुशल	११	७	२५	२०				६	४६	५	१४	२२	५७	७	२४	३७	९	६१	१५	-	१०	११	४६
सिद्धि	१२	८	२६	२१	कन्या	१९	५७	६	४६	५	१४	२३	२	७	२५	३८	२४	६१	१६	-	९	१२	३९
उत्पात	१३	९	२७	२२				६	४७	५	१३	२३	६	७	२६	३९	४०	६१	१७	-	८	१	३१
मानस	१४	१०	२८	२३	तुला	४२	५७	६	४७	५	१३	२३	१०	७	२७	४०	५७	६१	१८	-	८	२	२२
मुद्गर	१५	११	२९	२४				६	४७	५	१३	२३	१४	७	२८	४२	१४	६१	१८	-	७	३	१६
ध्वज	१६	१२	३०	२५				६	४७	५	१३	२३	१७	७	२९	४३	३२	६१	१९	-	७	४	१०
धाता	१७	१३	१	२६	वृश्चिक	१०	५०	६	४७	५	१३	२३	२०	८	०	४४	५१	६१	१९	-	७	५	५
आनन्द	१८	१४	२	२७				६	४७	५	१३	२३	२२	८	१	४६	१०	६१	२०	-	६	६	०
चर	१९	१५	३	२८	धनु	४०	२१	६	४७	५	१३	२३	२४	८	२	४७	३०	६१	२०	-	५	+	+

फसली पौष मासारम्भः। मृत्युबाणः ३०।० (रा.६।४५) उ.। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंटयोगः १६।४२ (दि.१।२६)या.। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ५०।३९ (रा.३।१) या.।

मृत्युबाण २८।५१ (रा.६।१७) या.। शुभाशुभेद्वयगुण्यकरः द्विपुष्करयोगः १२।४४ (दि.११।५१) या.।

कर्कराशिः रात्रि ३।३५ वादने। भद्रा १२।५१ (दि.११।५३) उ. ४०।२५ (रा.१०।५५) या. (स्वर्गे)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ९।१३ (दि.१०।२६) उ. ४०।२५ (रा.१०।५५) या.।

संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदये (रा.८।४८) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। **शुक्र वृद्धत्वारम्भः** रात्रि १२।० वादनात्। सर्वार्थसिद्धियोगः ६।२० (दि.९।१७) उ.।

सर्वार्थसिद्धियोगः ४।१९ (दि.८।३०) उ.। **(ख)** च पूजयेदित्युक्तेः।' मार्गशीर्ष पौष माघे प्रोष्ठे च फाल्गुन कृष्ण पक्षे पूर्वव्यसुन्वष्टकं तवाष्टका। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ४।२० (दि.८।३०)या.।

सिंहराशिः दिवा ८।२ वादने। भद्रा ३१।० (रा.७।१०) उ. (मर्त्ये)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ३।१० (दि.८।२) उ.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ३१।० (रा.७।१०) उ.।

भद्रा ०।३७ (प्रातः ७।१) या.। **पूर्व दिशायाम् शुक्रास्तः** रात्रि १२।० वादने। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ३।१२ (दि.८।३) या.।

कन्याराशिः रात्रि २।४५ वादने। **अष्टका श्राद्धम् ८।** पार्वण वदस्य विधिः। म.म.म.मो.**मालवीय जयन्ती ८** (तिथिमतानुसारेण), **रुक्मिणी अष्टमी ८।** 'तत्र कृष्ण रुक्मिणी प्रद्युम्न**(ख)**

अन्वष्टका श्राद्धम् ९। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३२।१० (रा.७।३९) या.। शनौ-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ३२।१० (रा.७।३९) या.। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंट योगः ६।५० (दि.९।३१) उ.।

तुलाराशिः रात्रि ११।५८ वादने। भद्रा ३।३४ (दि.८।१३) उ. ३४।५८ (रा.८।४६) उ. (पाताले)। रवि-हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो १०।३२ (दि.११।०) या.। **श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक।**

सफला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १५।२२ (दि.१२।५६) उ. ३९।१० (रा.१०।२३) या.।

⊙ **सं.मूल नक्षत्रे धनुराशौ रविः** १६।२० (दि.१।२४)। मु.१५ जघन्या फलम् महर्घता करम्। पूर्वा-पराः १६ घट्यः पुण्याः। वस्त्रादिदानम् गोदावर्याम् स्नानम्। **खरमासारम्भः।** शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः २१।५(दि.३।१३)**(ग)**

वृश्चिकराशिः दिवा ११।७ वादने। भद्रा ४९।८ (रा.२।२६) उ. (स्वर्गे)। **प्रदोष व्रतम् १३। सौर पौष मासारम्भः।** सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो २७।२५ (सा.५।४५) उ.।

भद्रा २१।५० (दि.३।३१) या.। **मास शिवरात्रि व्रतम् १४।** सर्वार्थसिद्धियोगः ३३।५९ (रा.८।२३) या.। **(ग)** उ. ४३।४८ (रा.१२।१८) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः २१।५ (दि.३।१३) उ. ४३।४८ (रा.१२।१८)या.।

धनुराशिः रात्रि १०।५५ वादने। **स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा।** स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ४०।२१ (रा.१०।५५) या.। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ शुक्रे–रोहिण्यां रेखा ८ दिवा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५। दिवा १।२६ वादनात्परं मृगशिरायां रेखा ६ लग्नं गोधूलिः सायं ६।४५ वादनात्परं मृत्युबाणव्याप्तिः।

तिथि २ शनौ–मृगशिरायां मृत्युबाणः।

तत्परं परं शुक्रवृद्धत्व शुक्रास्तः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	शु.	१	१९	२९	५७	७	२८	४	२३	४४	४८	६	२८	४१	५४	४९	३३	२	२९	५१	३४	४	३४	७	११	५	४६	७५	३२	११	०	५९	२६	०	५१	१०	१९	१३	५५
२	श.	२	४	३७	१५	७	२८	४९	११	४४	५१	६	२९	३१	२७	५३	२५	२	२९	४७	०	४	४७	७	१२	२१	१८	७५	३२	११	१	०	१७	०	५५	१०	१९	१०	४४
३	र.	२	१८	३९	४१	७	२९	३४	२	४४	५३	७	०	२४	५२	५६	४९	२	२९	४२	१३	४	५८	७	१३	३६	५०	७५	३२	११	१	१	१२	०	५७	१०	१९	७	३३
४	सो	३	२	३६	१७	८	०	१८	५५	४४	५६	७	१	२१	४१	६०	१५	२	२९	३७	१५	५	७	७	१४	५२	२२	७५	३४	११	१	२	९	१	१	१०	१९	४	२२
५	मं.	३	१६	२०	४८	८	१	३	५१	४४	५८	७	२	२१	५६	६५	२८	२	२९	३२	८	५	१६	७	१६	७	५६	७५	३४	११	१	३	१०	१	६	१०	१९	१	११
६	बु.	३	२९	१४	५	८	१	४८	४९	४५	१	७	३	२७	२४	७०	१२	२	२९	२६	५२	५	२६	७	१७	२३	३०	७५	३४	११	१	४	१६	१	१०	१०	१८	५८	०
७	गु.	४	१२	३४	३४	८	२	३३	५०	४५	३	७	४	३६	३६	७२	३१	२	२९	२१	२६	५	३७	७	१८	३९	४	७५	३४	११	१	५	२६	१	१६	१०	१८	५४	४९
८	शु.	४	२५	४१	१८	८	३	१८	५३	४५	६	७	५	५०	७	७५	५३	२	२९	१५	४९	५	४७	७	१९	५४	३८	७५	३४	११	१	६	४२	१	२२	१०	१८	५१	३८
९	श.	५	७	३१	४०	८	४	३	५९	४५	७	७	७	६	०	७६	३९	२	२९	१०	२	५	५८	७	२१	१०	१२	७५	३४	११	१	८	४	१	३०	१०	१८	४८	२७
१०	र.	५	२०	७	३३	८	४	४९	६	४५	१०	७	८	२२	३९	७८	२६	२	२९	४	४	६	५	७	२२	२५	४६	७५	३४	११	१	९	३४	१	३७	१०	१८	४५	१६
११	सो.	६	२	२५	१८	८	५	३४	१६	४५	१२	७	९	४१	५	८०	४७	२	२८	५७	५९	६	१४	७	२३	४१	२०	७५	३४	११	१	११	११	१	४५	१०	१८	४२	५
१२	मं.	६	१४	३६	३९	८	६	१९	२८	४५	१६	७	११	१	५२	८१	५५	२	२८	५१	४५	६	२२	७	२४	५६	५४	७५	३४	११	१	१२	५६	१	५१	१०	१८	३८	५४
१३	बु.	६	२७	४०	१२	८	७	४	४४	४५	१९	७	१२	२३	४७	८३	८	२	२८	४५	२३	६	३१	७	२६	१२	२८	७५	३४	११	१	१४	४७	१	५९	१०	१८	३५	४३
१४	गु.	७	९	४६	५५	८	७	५०	३	४५	२०	७	१३	४६	५५	८४	३६	२	२८	३८	५२	६	३९	७	२७	२८	२	७५	३४	११	१	१६	४६	२	५	१०	१८	३२	३२
३०	शु.	७	२१	५०	१७	८	८	३५	२३	४५	२४	७	१५	११	३१	८५	२३	२	२८	३२	१३	६	४८	७	२८	४३	३६	७५	३४	११	१	१८	५१	२	१०	१०	१८	२९	२१

फलम्– यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन शुक्रवार शुभ फलकारक हैं। चावल, चीनी का भण्डार भरेगा। सर्दी अपना रंग दिखाना शुरु कर देगी। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान ८ दिसम्बर सोमवार को होगा। चन्द्रोदय रात ८।४८ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **रुक्मिणी अष्टमी** का मान १२ दिसम्बर शुक्रवार को होगा। इसमें रुक्मिणी एवं भगवान प्रद्युम्न की प्रतिमा को षोडषोपचार विधि से पूजित कर कम से कम ८ सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन कराकर वस्त्रादि से सम्मानित करना सौभाग्यप्रद माना जाता है। जैन जगत का **पार्श्वनाथ जन्म** कल्याणक १४ दिसम्बर रविवार को मनाया जायेगा। **सफला एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १५ दिसम्बर सोमवार को होगा। इस एकादशी में भगवान को नैवेद्य में बेल, बिजौर, जंबीरी, नारियल, अनार का भोग अर्पित कर पूजा करने से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। **प्रदोष का व्रत** १७ दिस. बुध. को किया जायेगा। **स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित** ☐

पं.३५ पौष कृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९८६ अयनांशाः २४/१२/१३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	८	७	२	७	११	१०	४
२५	२५	३	५	२९	१९	१	१८	१८
३८	४१	१८	५०	१५	५४	६	५१	५१
२४	१८	५३	७	४९	३८	४२	३८	३८
६१ १६	७७० ४५	४५ ६	७५ ५३ मा	५ ४७ व	७५ ३४	१ २२ मा	३ ११	३ ११

भौमादीनां चारः
भौमः-ज्येष्ठायां वृश्चिके ३ रवितः मूल नक्षत्रे धनुराशौ सायं ६।२०वादने। **बुधः**-(मार्गी) २ शनितः वृश्चिक राशौ रात्रि ७।१५ वादने। **गुरुः**-(वक्री) पुनर्वसौ मिथुन राशौ। **शुक्रः**-वृश्चिक राशौ। **शनिः**-(मार्गी) पू.भा.४चरणे मीन राशौ। **राहुः**-शतभिषा ४चरणे **केतुश्च** पू.फा. २ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

पौष कृष्ण

लग्नांत ति.वा.	१शु. घं.	मि.	२श. घं.	मि.	३र. घं.	मि.	४सो. घं.	मि.	५मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	९श. घं.	मि.	१०र. घं.	मि.	११सो घं.	मि.	१२मं. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	१३बु. घं.	मि.	१४गु. घं.	मि.	३०शु. घं.	मि.
वृश्चिक	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	धनु	८	४०	८	३६	८	३२
धनु	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	मकर	१०	२५	१०	२१	१०	१७
मकर	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	कुम्भ	११	५६	११	५३	११	४९
कुम्भ	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	मीन	१	२४	१	२१	१	१७
मीन	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	मेष	३	३	२	५९	२	५५
मेष	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	वृष	५	०	४	५६	४	५२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.	
वृष	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१६	५	१२	५	८	५	४	मिथुन	७	१३	७	१०	७	६
मिथुन	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	कर्क	९	३१	९	२७	९	२३
कर्क	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	सिंह	११	४५	११	४१	११	३७
सिंह	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	कन्या	१	५८	१	५४	१	५०
कन्या	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	२	तुला	४	१४	४	१०	४	६
तुला	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	वृश्चिक	६	३१	६	२७	६	२३

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शुक्रे**–रोहिण्यां मृगशिरायां च आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म, नामकरणं अन्नप्राशनं **वरवरणं-कन्यावरणं वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.१२**, विपणि व्यापारः, आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं चूल्हीस्थापनं, वृक्षारोपणं, सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, भूमिक्रयः वाहनक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ शनौ**–मृगशिरायां नीलमादिरत्न कृष्ण वस्त्र धारणं पश्चिम दिग् यात्रा आर्द्रायाम् शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ३ रवौ**–भद्रा दिवा ११।५३ वादनात्पूर्व आर्द्रायाम् शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं ततो भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ सोमे**–रिक्ता रात्रि ९।१८ वादनात्परं पुष्ये **वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.६** दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ भौमे**–पुष्ये लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं पुंसवनं सीमन्तः शल्यकर्म, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा ८।३० वादनात्परं श्लेषायां शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ६ बुधे**–श्लेषायां-मघायां धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं मुकदमा कार्य। **तिथि ७ गुरौ**–दिवा ८।३ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां-प्रसूति स्नानं, धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य भूमिक्रय पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ शुक्रे**–दिवा ८।३० वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः आ.प्रसूति स्नानं *

पं.३६ पौष कृष्ण ३० शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९९३ अयनांशाः २४/१२/१४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	८	७	२	७	११	१०	४
२	२१	८	१५	२८	२८	१	१८	१८
४७	५०	३५	११	३२	४३	१८	२९	२९
३०	१७	२३	३१	१३	३६	५१	२१	२१
६१ २०	७२४ ५८	४५ २४	८५ २३	६ ४८ व	७५ ३४	२ १० मा	३ ११	३ ११

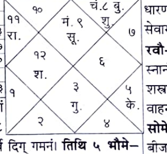

☐ **अमावस्या** १९ दिसम्बर शुक्रवार को होगी। इस पक्ष में ११ दिसम्बर गुरुवार को पूर्व दिशा में **शुक्रास्त** हो जायेगा। अतः वृद्धत्वदोष के कारण ८ दिसम्बर से ही विवाहादि शुभ कार्य स्थगित हो जायेंगे। **मूल नक्षत्र एवं धनु राशि** की सूर्य संक्रान्ति १६ दिसम्बर, मंगलवार को दिन १।२४ बजे से आयेगी और इसी के साथ **खरमास** प्रारम्भ हो जायेगा। ११ दिस. के आसन्न मौसम एकाएक करवट लेगा तथा वर्षा होने की सम्भावना है। पहाड़ों पर हिमपात भी शुरु हो जायेगा। सर्दी जमकर पड़ना प्रारम्भ कर देगी।

* जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (ति.दा.) विपणि व्यापारः नववस्त्र धारणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यास्थापन वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भः औषधिनिर्माणं सेवनं च, पूर्वदिग् यात्रा। **तिथि ९ शनौ**–रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० रवौ**–भद्रा दिवा ८।१३ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विपणिव्यापारः लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माण शल्यकर्म वाहन क्रयः हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ सोमे**–चित्रायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, वाहन क्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। रात्रौ स्वात्यां गर्भाधानं। **तिथि १२ भौमे**–स्वात्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं दत्तकपुत्रग्रहणं शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ बुधे**–विशाखायां हलप्रवहणं, वृक्षारोपणं। **तिथि १४ गुरौ**–अनुराधयां भद्रा-रिक्ता व्याप्तिः **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	दैन्यम्
वृष-	शोकः
मिथुन-	शत्रुपीड़ा
कर्क-	पुत्रोन्नति
सिंह-	धनागमः
कन्या-	अर्थागमः
तुला-	धनप्राप्तिः
वृश्चिक-	सुखं शत्रुनाशः
धनु-	धनप्राप्तिः
मकर-	अर्थागमः
कुम्भ-	धर्माचरणं
मीन-	सुख लाभः

श्रीशुभ संवत्२०८२ शाके१९४७ पौष शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। दि.२० दिसम्बर २०२५ - ३ जनवरी २०२६ ई. (राष्ट्रीय मार्गशीर्ष २९ - पौष १३)

दि.मा. घ.	प.	तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा.द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२६	४	१	शनि.	६०	०	स	म	स्त	मूल	४६	५	रात	१	१३	गण्ड	२५	१८	सायं	४	४५	किं	३१	४५	बव	६०	०	गद	२०	१६	४	२९				६	४७	५	१३	२३	२५	८	३	४८	५०	६१	२१	-	५			तिथिवृद्धिः। (क) (दि.९।४०) उ. ५४।४३ (रा.४।४०) या। (ख) (दि.१०।३३) उ. ५७।१४ (रा.शे.५।४१) या.।
२६	४	१	रवि.	३	५५	दिन	८	२१	पूर्वाषाढ़ा	५०	५६	रात	३	९	वृद्धि	२५	२९	सायं	४	५९	बव	३	५५	बा	३५	५४	शुभ	२१	१७	५	३०				६	४७	५	१३	२३	२६	८	४	५०	११	६१	२१	-	४	६	१३	**चन्द्र ◡ दर्शनम्** मु.३० समा समताकरम्। **सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५०।५६ (रा.३।९) उ.। शुभाशुभेत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ५०।५६ (रा.३।९) उ.।
२६	३	२	सोम	७	१३	दिन	९	४०	उत्तराषाढ़ा	५४	४३	रात	४	४०	ध्रुव	२४	४७	सायं	४	४२	कौ	७	१३	तै	४०	३२	मृत्यु	२२	१८	६	१	मकर	६	५३	६	४७	५	१३	२३	२६	८	५	५१	३२	६१	२२	-	४	७	११	**मकरराशिः** दिवा ९।३२ वादने। **मु.रज्जब ७ हिजरी सन् १४४७। राष्ट्रीय पौष मासारम्भः।** सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ५४।४३ (रा.४।४०) उ.। रवियोगः ५४।४३ (रा.४।४०) उ.। यायि (मुद्दई) जयद्योगः ७।१३**(क)**
२६	३	३	मंगल	९	२६	दिन	१०	३३	श्रवण	५७	१४	रात	५	४१	व्याघात	२३	१८	सायं	४	६	गर	९	२६	व	३९	५०	लुम्बक	२३	१९	७	२				६	४७	५	१३	२३	२६	८	६	५२	५५	६१	२२	-	३	८	९	भद्रा ३९।५० (रा.१०।४३) उ. (पाताले)। **अंगारकी वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** रवियोगः ५७।१४ (रा.शे.५।४१) या.। भौमे-जया सिद्धयोगः ९।२६ (दि.१०।३३) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद्योगः ९।२६**(ख)**
२६	३	४	बुध	१०	१४	दिन	१०	५३	धनिष्ठा	५८	२७	रात	६	१०	हर्षण	२०	४१	दिन	३	३	वि	१०	१४	बव	४०	०	मित्र	२४	२०	८	३	कुंभ	२७	५०	६	४७	५	१३	२३	२६	८	७	५४	१७	६१	२३	-	३	९	६	**कुम्भराशिः** सायं ५।५५ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा १०।१४ (दि.१०।५३) या.। रवियोगः ५८।२७ (रा.शे.६।१०) उ.।
२६	४	५	गुरु.	९	४६	दिन	१०	४१	शतभिषा	५८	३०	रात	६	११	वज्र	१७	९	दिन	१	३१	बा	९	४६	कौ	३८	५४	वज्र	२५	२१	९	४				६	४७	५	१३	२३	२५	८	८	५५	४०	६१	२३	-	२	१०	३	**क्रिमस डे (ईसाई) ज्येष्ठ दिनम् (बड़ा दिन)।** म.म.पं.मदन मोहन मालवीय-अटल बिहारी वाजपेयी जयन्ती (अंग्रेजी दिनांकानुसारेण)। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः ९।४६ (दि.१०।४१) या.। रवियोगः ५८।३० (रा.शे.६।११)या.।
२६	४	६	शुक्र.	८	३	दिन	१०	०	पूर्वाभाद्र	५७	२२	रात	५	४४	सिद्धि	१२	३५	दिन	११	४९	तै	८	३	गर	३६	३९	ध्वांक्ष	२६	२२	१०	५	मीन	४२	३९	६	४७	५	१३	२३	२३	८	९	५७	३	६१	२३	-	२	११	०	**मीनराशिः** रात्रि ११।५१ वादने। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ८।३ (दि.१०।०) या.। (ग) योगः ५२।३४ (रा.३।४९) उ.। (घ) जयद् योगः ४६।४ (रा.१।१३) उ.। **पूर्व दिशायाम बुधास्तः।**
२६	४	७	शनि.	५	१६	दिन	८	५३	उत्तराभाद्र	५५	२३	रात	४	५६	व्यतिपात	७	१३	दिन	९	४१	व	५	१६	वि	३३	२५	धूम्र	२७	२३	११	६				६	४७	५	१३	२३	२१	८	१०	५८	२६	६१	२३	-	१	११	५८	भद्रा ५।१६ (दि.८।५३) उ. ३३।२५ (रा.८।९) या. (मर्त्ये)। **गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन–तिथिमत)।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५।१६ (दि.८।५३) या.। रवियोगः ५५।२३ (रा.४।५६) उ.।
२६	५	८/९	रवि.	१/५५	३४/११	प्रातः	७/५	२५/२९	रेवती	५२	३४	रात	३	४९	वरीयान/परिघ	१/५३	५/१३	प्रातः	७/४	१३/३९	बव	१	३४	बा/कौ	२८/५५	३२/११	प्रवर्धमान	२८	२४	१२	७	मेष	५२	३४	६	४७	५	१३	२३	१९	८	११	५९	४९	६१	२३	-	१	१२	५८	**मेषराशिः** रात्रि ३।४९ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। **शाकम्भरी देवी (पीठ)** पूजन यात्रा नवरात्रश्च प्रारम्भः। रवियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १।३४ (प्रातः ७।२५) उ. ५२।३४ (रा.३।४९) या.। सर्वार्थसिद्धि**(ग)**
२६	५	१०	सोम	५१	४१	रात	३	२७	अश्विनी	४९	३	रात	२	२४	शिव	४६	५९	रात	१	३५	तै	२३	२६	गर	५१	४१	राक्षस	२९	२५	१३	८				६	४७	५	१३	२३	१६	८	१३	१	१२	६१	२३	-	०	२	२	**साम्ब दशमी १०।** सूर्य पूजा १० (उड़ीसा)। ⊙ **पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रे रविः** १८।४८ (दि.२।१५)। रवियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५१।४१ (रा.३।२७) उ.।
२६	६	११	मंगल	४६	४	रात	१	१३	भरणी	४५	९	रात	१२	५१	सिद्ध	३९	२०	रात	१०	३१	व	१८	५३	वि	४६	४	मुशल	३०	२६	१४	९	वृष	५९	७	६	४७	५	१३	२३	१२	८	१४	२	३६	६१	२४	-	०	३	१०	**वृषराशिः** रात्रि शेष ६।२६ वादने। भद्रा १८।५३ (दि.२।२०) उ. ४६।४(रा.१।१३) या. (स्वर्गे)। **पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** मन्वादिः ११। सोपपदा ११। सर्वार्थसिद्धियोगः ४५।९ (रा.१२।५१) उ.। स्थायी (मुद्दालेह)**(घ)**
२६	७	१२	बुध.	४०	११	रात	१०	५१	कृत्तिका	४१	०	रात	११	११	साध्य	३१	२९	रात	७	२३	बव	१३	७	बा	४०	११	सिद्धि	३१	२७	१५	१०				६	४७	५	१३	२३	८	८	१५	४	०	६१	२४	-	०	४	२१	**कूर्म द्वादशी १२।** सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ४०।११ (रा.१०।५१) या.। (ङ) २९।१३ (सा.६।२७) उ.।
२६	७	१३	गुरु.	३४	१७	रात	८	२९	रोहिणी	३६	५०	रात	९	३०	शुभ	२३	३३	रात	४	११	कौ	७	१४	तै	३४	१७	उत्पात	१	२८	१६	११				६	४६	५	१४	२३	३	८	१६	५	२४	६१	२४	+	०	५	३२	**प्रदोष व्रतम् १३। ईसाई नववर्ष २०२६ प्रारम्भः।** सर्वत्र शुभकामना संदेशः हर्षोल्लासः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३४।१७ (रा.८।२९) या.। रवियोगः ३६।५० (रा.९।३०) उ.।
२६	८	१४	शुक्र.	२८	३४	रात	६	१२	मृगशिरा	३२	५०	रात	७	५४	शुक्ल	१५	४५	रात	१	४	गर	१	२५	व/वि	२८/५५	३४/५४	मानस	२	२९	१७	१२	मिथुन	४	५०	६	४६	५	१४	२२	५८	८	१७	६	४८	६१	२४	+	१	६	३८	**मिथुनराशिः** दिवा ८।४२ वादने। भद्रा २८।३४ (रा.६।१२) उ. ५५।५४ (रा.शे.५।८) या. (स्वर्गे)। **व्रताय पूर्णिमा १५।** रवियोगः ३२।५० (रा.७।५४) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः २८।३४ (रा.६।१२) या.।
२६	९	१५	शनि.	२३	१३	रात	४	३	आर्द्रा	२९	१३	सायं	६	२७	ब्रह्म	८	१२	रात	१०	३	बव	२३	१३	बा	५०	४९	मुद्गर	३	३०	१८	१३				६	४६	५	१४	२५	५३	८	१८	८	१२	६१	२४	+	२	+	+	**स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। पौषी पूर्णिमा १५। शाकम्भरी जयन्ती १५। शाकम्भरी नवरात्र समाप्तिः।** प्रयागे माघ मेला, कल्पवास-माघ स्नान, यम नियम संयमारम्भः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः**(ङ)**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	श.	८	४	१	३४	८	९	२०	४७	४५	२९	७	१६	३६	५४	८५	५६	२	२८	२५	२५	६	५४	७	२९	५९	१०	७५	३४	११	१	२१	१	२	१६	१०	१८	२६	११
१	र.	८	१६	२१	१२	८	१०	६	१६	४५	३५	७	१८	२	५०	८६	३७	२	२८	१८	३१	७	०	८	१	१४	४४	७५	३४	११	१	२३	१७	२	२३	१०	१८	२३	०
२	सो.	८	२५	५५	४४	८	१०	५१	५१	४५	४०	७	१९	२९	२७	८७	१४	२	२८	११	३१	७	६	८	२	३०	१८	७५	३४	११	१	२५	४०	२	३०	१०	१८	१९	४९
३	मं.	९	११	५१	१७	८	११	३७	३१	४५	४४	७	२०	५६	४१	८७	४९	२	२८	४	२५	७	१३	८	३	४५	५२	७५	३४	११	१	२८	१०	२	३६	१०	१८	१६	३८
४	बु.	९	२४	५७	२०	८	१२	२३	१५	४५	५०	७	२२	२४	३०	८८	३०	२	२७	५७	१२	७	२१	८	५	१	२६	७५	३४	११	१	३०	४६	२	४४	१०	१८	१३	२७
५	गु.	१०	८	१७	३८	८	१३	९	५	४५	५४	७	२३	५३	०	८८	५५	२	२७	४९	५१	७	३०	८	६	१७	०	७५	३४	११	१	३३	३०	२	५०	१०	१८	१०	१६
६	शु.	१०	२१	५०	१९	८	१३	५४	५९	४५	५६	७	२५	२१	५५	८९	१७	२	२७	४२	२१	७	३८	८	७	३२	३४	७५	३४	११	१	३६	२०	२	५९	१०	१८	७	५
७	श.	११	४	३४	४२	८	१४	४०	५५	४५	५७	७	२६	५१	१२	८९	४९	२	२७	३४	४३	७	४३	८	८	४८	८	७५	३४	११	१	३९	१९	३	८	१०	१८	३	५५
८	र.	११	१८	२८	५६	८	१५	२६	५२	४६	१	७	२८	२१	१	९०	३	२	२७	२७	०	७	४८	८	१०	३	४२	७५	३४	११	१	४२	२७	३	१६	१०	१८	०	४४
१०	सो.	०	२	३०	८	८	१६	१२	५३	४६	३	७	२९	५१	४	९०	५६	२	२७	१९	१२	७	५०	८	११	१९	१६	७५	३३	११	१	४५	४३	३	२१	१०	१७	५७	३३
११	मं.	०	१६	३८	४१	८	१६	५८	५६	४६	४	८	१	२२	०	९१	१२	२	२७	११	२२	७	५३	८	१२	३४	४९	७५	३३	११	१	४९	४	३	३०	१०	१७	५४	२२
१२	बु.	१	०	४७	२०	८	१७	४५	०	४६	६	८	२	५३	१२	९१	५०	२	२७	३	२९	७	५५	८	१३	५०	२२	७५	३३	११	१	५२	३४	३	३७	१०	१७	५१	११
१३	गु.	१	१४	५७	५४	८	१८	३१	६	४६	९	८	४	२५	२	९२	२२	२	२६	५५	३४	७	५७	८	१५	५	५५	७५	३३	११	१	५६	११	३	४५	१०	१७	४८	०
१४	शु.	१	२९	५	४७	८	१९	१७	१५	४६	११	८	५	५७	२४	९२	३८	२	२६	४७	३७	७	५७	८	१६	२१	२८	७५	३३	११	१	५९	५६	३	५१	१०	१७	४४	४९
१५	श.	२	१३	७	३५	८	२०	३	२६	४६	१४	८	७	३०	२	९२	५३	२	२६	३९	४०	८	०	८	१७	३७	१	७५	३३	११	२	३	४७	३	५५	१०	१७	४१	३८

फलम्– प्रतिपदा तिथि की वृद्धि एवं नवमी तिथि का क्षय भी हो गया है, इस प्रकार पक्ष पूरे १५ दिन का ही है। पौष का महीना कोहरा-तुषार पात दोनों का आपस में गहरा सम्बन्ध है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र धनु राशि का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुओं फल दूध तरकारी खोवा, छेना, पनीर का भाव सस्ता चलेगा। पूरा उत्तर भारत भयंकर सर्दी की चपेट में आने लगेगा। २५ दिसम्बर को **क्रिसमस डे (बड़ा दिन)** तो मनाया ही जायेगा साथ ही **महामना पं. मदन मोहन मालवीय तथा अटल बिहारी वाजपेयी** की जयन्ती भी अंग्रेजी दिनांक के अनुसार मनाई जायेगी। प्राचीन मत के अनुसार **गुरु गोविन्द सिंह जी की जयन्ती** २७ दिसम्बर शनिवार को मनाई जायेगी। **पुत्रदा एकादशी व्रत** का मान सबके लिए ३० दिस. मंगलवार को होगा। **प्रदोष का व्रत** १ जनवरी गुरुवार को किया जायेगा। व्रत के लिए **पूर्णिमा** का मान २ जनवरी शुक्रवार को होगा एवं स्नान दान के लिए पूर्णिमा तथा **शाकम्भरी जयन्ती** ३ जन. शनिवार को होगी। आज के दिन शाकम्भरी पीठ में भगवती का विशेष पूजन-अर्चन-अनुष्ठान■

पं.३७ पौष शुक्ल ८ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४००२
अयनांशाः २४/१२/१५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	८	७	२	८	११	१०	४
११	१८	१५	२८	२७	१०	१	१८	१८
५९	२८	२६	२१	२७	३	४२	०	०
४९	५६	५२	१	०	४२	२७	४४	४४
६१	८३४	४६	९०	७	७५	३	३	३
२३	४४	१	३	४८ व	३४	१६	११	११

१०
११ रा.
सू.९ मं.शु.
बु.८
७
श. १२चं.
६
१
३ गु.
५ के.
२
४

भौमादीनां चारः

भौमः-मूले धनुषि ५ गुरुतः पू.षा. दिवा १२।१० वादने। **बुधः**-वृश्चिके राशौ १० सोमतः मूले धनुषि दिवा ८।२० वादने। **गुरुः**-(वक्री) पुनर्वसौ मिथुने। **शुक्रः**-१ शनितः मूले धनुषि प्रातः ७।१५ वादने। **शनिः**-पू.भा.४ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-शतभिषा ४ चरणे **केतुश्च**-उ.फा.२ चरणे।

पौष शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१श. घं.	मि.	१र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	१०सो. घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	१५श. घं.	मि.
धनु	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३
मकर	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१९
कुम्भ	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५४	१०	५०
मीन	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२२	१२	१८
मेष	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६
वृष	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मिथुन	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	११	६	७
कर्क	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४
सिंह	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८
कन्या	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१
तुला	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७
वृश्चिक	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शनौ–**मूले शस्त्र घटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १ रवौ–**पूर्वाषाढ़ायाम्-पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्यः इष्टिका दहनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ सोमे–**उत्तराषाढ़ायाम् गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तः आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरण अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं, औषधि निर्माणं सेवनं च मकर चन्द्रे दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ३ भौमे–**रिक्ता दिवा १०।३३ वादनात्पूर्व श्रवणे पुंसवनं सीमन्त लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं चतुर्थ्यां रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ४ बुधे–**भद्रा रिक्ता दिवा १०।५३ वादनात्परं धनिष्ठायां-गर्भाधानं (रात्रौ) नामकरणं अन्नप्राशनं नववस्त्रधारणं हलप्रवहण-बीजवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः औषधि सेवनं दक्षिण दिग् यात्रा कुम्भ चन्द्रे सायं ५।५५ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ५ गुरौ–**शतभिषायां अन्नप्राशनं हलप्रवहणं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ जलयन्त्र कर्म आवेदन पत्रलेखनं शल्यकर्म औषधिसेवनं वाहन क्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। *

पं.३८ पौष शुक्ल १५ शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४००८
अयनांशाः २४/१२/१६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	८	८	२	८	११	१०	४
१८	१३	२०	७	२६	१७	२	१७	१७
८	७	३	३०	३९	३७	३	४१	४१
१२	३५	२६	२	४०	१	४७	३८	३८
६१	७२८	४६	९२	८	७५	३	३	३
२४	५५	१४	५३	० व	३३	५५	११	११

१०
११ रा.
बु.सू. ९मं.शु.
८
७
१२ श.
६
१
३ चं. गु.
५ के.
२
४

■किया जाता है। शाकम्भरी पीठ की अपनी मान्यता के अनुसार पौष शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक शाकम्भरी नवरात्र मनाया जाता है। पौष शुक्ल पूर्णिमा से ही प्रयाग में माघ मेला कल्पवास तथा स्नानदान इत्यादि प्रारम्भ हो जाता है। **पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य** २९ दिसम्बर सोमवार को दिन २।१५ बजे से आवेगा। तिल, तेल, गुग्गल, हल्दी, चपड़ी कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चाँदी अफीम का भाव तेज चलेगा। पक्ष के तीन शनिवार एवं शनिवार की अमावस्या तथा चतुर्ग्रही योग दैवी-प्राकृतिक आपदा का आमन्त्रण दे रहे हैं। ३० दिसम्बर के आसन्न मौसम फिर करवट लेगा तथा वर्षा, हिमपात हिमस्खलन के योग बन रहे है। कुल मिलाकर यह पक्ष भारी पड़ेगा।

* **तिथि ६ शुक्रे–**पूर्वाभाद्रपदे दिवा १०।० वादनात्परं सप्तम्यां पुंसवनं सीमन्तः आ.प्रसूति स्नानं धान्यच्छेदनं धान्यरोपणं जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य, भूमिक्रयः, रात्रि ११।५१ वादनात्परं मीन चन्द्रे उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ शनौ–**भद्रा दिवा ८।५३ वादनात्पूर्व उत्तराभाद्रपदे नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्र धारणं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ८/९ रवौ–**रेवत्यां प्रातः ७।२५ वादनम् यावत् जातकर्म पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानम्, विपणि व्यापारः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भःशस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं वाहन क्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १० सोमे–**अश्विन्यां आ.प्रसूति स्नानं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं वाहन क्रयः अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ भौमे–**भद्रा दिवा २।२० वादनात्पूर्व भरण्यां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १२ बुधे–**कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं गवां क्रय-विक्रयः। **तिथि १३ गुरौ–**रोहिण्यां प्रसूति स्नानं जातकर्म विपणि व्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १४ शुक्रे–**रिक्ता-भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १५ शनौ–**आर्द्रायाम् शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं।

राशिफल

मेष-	पापबुद्धिः
वृष-	रोगभयं
मिथुन-	गमनम्
कर्क-	रिपुनाशः
सिंह-	दैन्यम्
कन्या-	रोगं
तुला-	सुखम्
वृश्चिक-	क्षतिः
धनु-	स्थान हानिः
मकर-	द्रव्यनाशः
कुम्भ-	वित्ताप्तिः
मीन-	कर्मसिद्धिः

दि.मा.		माघ कृष्ण तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रा. द-		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रोदय	
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२६	१०	१	रवि.	१८	२५	दिन	२	८	पुनर्वसु	२६	१२	सायं	५	१५	ऐन्द्र वैधृति	१ ५३	३ २७	प्रातः	७ ४	११ ३४	को	१८	२५	तै	४६	२५	ध्वज	४	१	१९	१४	कर्क	११	५८	६	४६	५	१४	२२	४७	८	१९	९	३५	६१	२३	+	२	६	२४
२६	१२	२	सोम.	१४	२४	दिन	१२	३२	पुष्य	२४	२	दिन	४	२३	विष्कुम्भ	४८	३८	रात	२	१३	गर	१४	२४	व	४२	५२	धाता	५	२	२०	१५				६	४६	५	१४	२२	४१	८	२०	१०	५८	६१	२३	+	३	७	३२
२६	१३	३	मंगल	११	२१	दिन	११	१८	श्लेषा	२२	४१	दिन	३	५०	प्रीति	४३	३४	रात	१२	११	वि	११	२१	बव	४०	२१	आनन्द	६	३	२१	१६	सिंह	२२	४१	६	४६	५	१४	२२	३४	८	२१	१२	२१	६१	२३	+	३	८	३५
२६	१४	४	बुध	९	२०	दिन	१०	२९	मघा	२२	२५	दिन	३	४३	आयुष्मान	३९	२४	रात	१०	३१	बा	९	२०	कौ	३८	५६	चर	७	४	२२	१७				६	४५	५	१५	२२	२७	८	२२	१३	४४	६१	२३	+	३	९	३४
२६	१५	५	गुरु.	८	३२	दिन	१०	१०	पूर्वाफा.	२३	२१	दिन	४	५	सौभाग्य	३६	१२	रात	९	१४	तै	८	३२	गर	३८	४५	गद	८	५	२३	१८	कन्या	३८	५४	६	४५	५	१५	२२	१९	८	२३	१५	७	६१	२३	+	४	१०	२९
२६	१७	६	शुक्र	८	५८	दिन	१०	२०	उत्तराफा.	२५	३४	दिन	४	५९	शोभन	३४	०	रात	८	२१	व	८	५८	वि	३९	५०	शुभ	९	६	२४	१९				६	४५	५	१५	२२	११	८	२४	१६	३०	६१	२२	+	४	११	२३
२६	१९	७	शनि.	१०	४३	दिन	११	१	हस्त	२९	३	रात	६	२१	अतिगण्ड	३२	४९	रात	७	५२	बव	१०	४३	बा	४२	२१	मृत्यु	१०	७	२५	२०				६	४४	५	१६	२२	३	८	२५	१७	५२	६१	२२	+	४	१२	१५
२६	२०	८	रवि.	१४	०	दिन	१२	२०	चित्रा	३३	३८	रात	८	११	सुकर्मा	३२	३१	रात	७	४४	कौ	१४	०	तै	४५	५८	पद्म	११	८	२६	२१	तुला	१	२१	६	४४	५	१६	२१	५४	८	२६	१९	१४	६१	२२	+	५	१	९
२६	२२	९	सोम	१७	५६	दिन	१	५४	स्वाती	३९	१२	रात	१०	२५	धृति	३३	५	रात	७	५८	गर	१७	५६	व	५०	२२	छत्र	१२	९	२७	२२				६	४४	५	१६	२१	४५	८	२७	२०	३६	६१	२१	+	५	२	३
२६	२४	१०	मंगल	२२	४९	दिन	३	५१	विशाखा	४५	२६	रात	१२	५३	शूल	३३	५७	रात	८	१८	वि	२२	४९	बव	५५	३१	श्रीवत्स	१३	१०	२८	२३	वृश्चिक	२८	५२	६	४३	५	१७	२१	३५	८	२८	२१	५७	६१	२१	+	५	२	५८
२६	२५	११	बुध	२८	१२	रात	६	०	अनुराधा	५२	०	रात	३	३१	गण्ड	३५	१७	रात	८	५०	बा	२८	१२	कौ	६०	०	सौम्य	१४	११	२९	२४				६	४३	५	१७	२१	२४	८	२९	२३	१८	६१	२०	+	६	३	५३
२६	२८	१२	गुरु	३३	३८	रात	८	९	ज्येष्ठा	५८	२६	रात	६	४	वृद्धि	३६	३८	रात	९	२१	कौ	०	५५	तै	३३	३८	कालदण्ड	१५	१२	१	२५				६	४२	५	१८	२१	१४	९	०	२४	३८	६१	२०	+	६	४	४७
२६	२९	१३	शुक्र	३८	४०	रात	१०	१०	मूल	६०	०	स	म	स्त	ध्रुव	३७	३४	रात	९	४४	गर	६	८	व	३८	४०	स्थिर	१६	१३	२	२६	धनु	५८	२६	६	४२	५	१८	२१	२	९	१	२५	५८	६१	१९	+	७	५	३९
२६	३२	१४	शनि.	४२	५७	रात	११	५३	मूल	४	२१	दिन	८	२६	व्याघात	३८	२	रात	९	५५	वि	१०	४८	श	४२	५७	गद	१७	१४	३	२७				६	४२	५	१८	२०	५२	९	२	२७	१७	६१	१९	+	७	६	२६
२६	३४	३०	रवि.	४६	८	रात	१	८	पूर्वाषाढ़ा	९	२९	दिन	१०	२९	हर्षण	३७	४१	रात	९	४५	च	१४	३२	ना	४६	८	शुभ	१८	१५	४	२८	मकर	२५	२९	६	४१	५	१९	२०	४०	९	३	२८	३६	६१	१८	+	८	+	+

कर्कराशिः दिवा ११।३३ वादने। फसली माघ मासारम्भः। 'माघ मूलिकाम्ल्यजेत्' रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः २६।१२ (सा.५।१५) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १८।२५ (दि.२।८) या.। शुभाशुभत्रय पुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः (क)

भद्रा ४२।५२ (रा.११।५५) उ. (मर्त्ये)। **गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती** (५ जनवरी) नवीनमतानुसारेण। सर्वार्थसिद्धियोगः २४।२ (दि.४।२३) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २४।२ (दि.४।२३) उ.।

सिंहराशिः दिवा ३।५० वादने। भद्रा ११।२१ (दि.११।१८) या.। **संकष्टी (अंगारकी) श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.८।३५) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। **'गणेश चौथ इति लोके प्रसिद्धम्।' अद्य गणेशोत्पत्तिः।** (ख)

☞ काश्यद्रवे प्रयागे ये तपसि स्नान्ति मानवाः। दशाश्वमेध जनितं फलं तेषा भवेद् ध्रुवम्। - काशीखण्ड।

(ख) तिलकुटी ४। वक्रतुण्ड चतुर्थी ४। 'माघ कृष्ण चतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।' सर्वार्थसिद्धियोगः २२।४१ (दि.३।५०) या.। भौमे-जया सिद्धयोगः ११।२१ (दि.११।१८) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः २२।४१ (दि.३।५०) या.।

कन्याराशिः रात्रि १०।१९ वादने। रवियोगः २३।२१ (दि.४।५) उ.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ८।३२ (दि.१०।१०) या.।

भद्रा ८।५८ (दि.१०।२०) उ. ३९।५० (रा.१०।२०) या. (पाताले)। रवियोगः २५।३४ (दि.४।५९) या.। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ८।५८ (दि.१०।२०) या.।

सर्वाप्ति सप्तमी ७। स्वामी रामानन्दाचार्य जयन्ती ७। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती ७ (तिथिमतानुसारेण)। यमघंटयोगः २९।३ (रा.६।२१) या.।

तुलाराशिः दिवा ७।१६ वादने। **अन्वष्टका श्राद्धम् ८। ⊙ उत्तराषाढा नक्षत्रे रविः** २१।२० (दि.३।१६)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३३।३८ (रा.८।११) उ.।

भद्रा ५०।२२ (रा.१।५३) उ. (पाताले)। **स्वामी विवेकानन्द जयन्ती १२ जनवरी** (अंग्रेजी तारीख)। अन्वष्टका श्राद्धम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १७।५६ (दि.१।५४) या.। यमघंट योगः ३९।१२ (रा.१०।२५) उ.।

वृश्चिक राशिः सायं ६।१९ वादने। भद्रा २२।४९ (दि.३।५१) या.। (क) १८।२५ (दि.२।८) उ. २६।१२ (सा.५।१५) या.।

षट्तिला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। ⊙ सं.मकर राशौ रविः ३६।३० (रात्रि ९।१९)। मु.३० समा समतारकम्। पराः ४० घट्यः पुण्याः। **उत्तरायणे रविः-निरयन सौम्यायनं। शिशिर ऋतु प्रारम्भः। खरमास** (ग)

धनुराशिः रात्रि शेष ६।४ वादने। **मकर संक्रान्ति जन्य पुण्यकाल** दिवा १।१९ वादनम् यावत्। **(खिचड़ी)** पर्वः। पोंगल (द.भा.) बिहु (आसाम)। गंगा सागरे प्रयागे त्रिवेणी काश्यां दशाश्वमेधे गोदावर्याम् सर्वत्र गंगा नद्यां (घ)

भद्रा ३८।४० (रा.१०।१०) उ. (पाताले)। **प्रदोष व्रतम् १३। मासशिवरात्रि व्रतम् १३।**

(ग) **समाप्तिः।** दैवानाम् दिनम् दैत्यानाम् च रात्रि प्रारम्भः। सर्वार्थामृतसिद्धियोगौ ५२।० (रा.३।३१) या.।

भद्रा १०।४८ (दि.११।१) या.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ४२।५७ (रा.११।५३) या.।

(घ) च स्नानम्। तिल चावल मृद्गमोदक कम्बल उपानह आदि दानम्। **सौर माघ मासारम्भः।**

मकरराशिः दिवा ४।५३ वादने। **स्नानदान श्रादादौ अमा ३० पुण्यतमा। मौनी अमावस्या ३०। मौन व्रताचारेण स्नानम् विधेयम्।** प्रयागे त्रिवेणी, काश्यां दशाश्वमेधे वा **पश्चिम वाहिनी गंगायाम्** स्नानम्। मन्वादिः३०।(ङ)

(ङ) त्रिवेणी अमावस्या (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ९।२९ (दि.१०।२९) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४६।८ (रा.१।८) उ.। पाप वारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम				स्पष्ट मंगल				गति		स्पष्ट बुध				गति		स्पष्ट गुरु				गति वक्री		स्पष्ट शुक्र				गति		स्पष्ट शनि				गति		स्पष्ट राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.
१ र.	२	२७	३	५०	८	२०	४९	४०	४६	१५	८	९	२	५५	९३	५	२	२६	३१	४०	८	२	८	१८	५३	३४	७५	३२	११	२	७	४२	४	१	१०	१७	३८	२७
२ सो.	३	१०	४६	५२	८	२१	३५	५५	४६	१७	८	१०	३६	०	९३	२९	२	२६	२३	३८	८	२	८	२०	८	६	७५	३२	११	२	११	४३	४	६	१०	१७	३५	१६
३ मं.	३	२४	२५	४१	८	२२	२१	५२	४६	१८	८	१२	९	२९	९३	५१	२	२६	१५	३६	८	२	८	२१	२३	२८	७५	३२	११	२	१५	४९	४	१०	१०	१७	३२	५
४ बु.	४	७	४८	३९	८	२३	८	३०	४६	२०	८	१३	४३	२०	९४	१३	२	२६	७	३४	८	३	८	२२	३९	१०	७५	३२	११	२	१९	५९	४	१५	१०	१७	२८	५४
५ गु.	४	२०	५६	२१	८	२३	५४	५०	४६	२१	८	१५	१७	३३	९४	३७	२	२५	५९	३१	८	३	८	२३	५४	४२	७५	३२	११	२	२४	१४	४	१६	१०	१७	२५	४३
६ शु.	५	३	५०	१७	८	२४	४१	११	४६	२३	८	१६	५१	३०	९४	५६	२	२५	५१	२८	८	३	८	२५	१०	१४	७५	३२	११	२	२८	३०	४	२०	१०	१७	२२	३२
७ श.	५	१६	२६	११	८	२५	२७	३४	४६	२४	८	१८	२७	६	९५	९	२	२५	४३	२५	८	३	८	२६	२५	४६	७५	३०	११	२	३२	५०	४	२४	१०	१७	१९	२१
८ र.	५	२८	५६	३०	८	२६	१३	५८	४६	२६	८	२०	२	४६	९५	३१	२	२५	३५	२२	८	५	८	२७	४१	१६	७५	३०	११	२	३७	१४	४	२९	१०	१७	१६	१०
९ सो.	६	११	३६	५४	८	२७	०	२४	४६	२७	८	२१	३७	६	९५	५२	२	२५	२७	१७	८	५	८	२८	५६	४६	७५	३०	११	२	४१	४३	४	३१	१०	१७	१३	०
१० मं.	६	२३	४६	५	८	२७	४६	५२	४६	२८	८	२३	१३	२१	९६	१८	२	२५	१९	१२	८	५	९	०	१२	१६	७५	३०	११	२	४६	१४	४	३४	१०	१७	९	४९
११ बु.	७	५	४२	४९	८	२८	३३	२१	४६	३१	८	२४	४९	३६	९६	४४	२	२५	११	७	८	४	९	१	२७	४६	७५	३०	११	२	५०	४८	४	३९	१०	१७	६	३८
१२ गु.	७	१७	५१	४	८	२९	१९	५२	४६	३३	८	२६	२६	४०	९७	५	२	२५	३	३	८	४	९	२	४३	१६	७५	२९	११	२	५५	२७	४	४३	१०	१७	३	२७
१३ शु.	८	०	२९	२१	९	०	६	२५	४६	३४	८	२८	३	४५	९७	३९	२	२४	५४	५९	८	०	९	३	५८	४५	७५	२९	११	३	०	१०	४	४७	१०	१७	०	१६
१४ श.	८	१२	३७	४७	९	०	५२	५९	४६	३६	८	२९	४१	२४	९७	५९	२	२४	४६	५९	७	५५	९	५	१४	१४	७५	२७	११	३	४	५७	४	५०	१०	१६	५७	५
३० र.	८	२४	५७	२०	९	१	३९	३५	४६	३६	९	१	१९	२३	९८	२५	२	२४	३९	४	७	५०	९	६	२९	४१	७५	२७	११	३	९	४७	४	५४	१०	१६	५३	५४

पं.३९ माघ कृष्ण ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४०१६ अयनांशाः २४/१२/१७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	८	८	२	८	११	१०	४
२६	२९	२६	२०	२५	२७	२	१७	१७
१९	२२	१३	२	३५	४१	३७	१६	१६
१४	४०	५८	१५	२२	१६	१४	१०	१०
६१	७३४	४६	९५	८ ५ व	७५	४	३	३
२२	४६	२६	३१		३०	२९	११	११

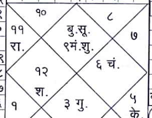

भौमादीनां चारः
भौमः-पूर्वाषाढायाम् धनुराशौ ८ रवौ उ.षा. रात्रि १।५० वादने ११ बुधतः मकरे सायं ५।२० वादने। **बुधः**-धनु राशौ १४ शनितः मकरे दि.१२।१० वादने। **गुरुः**-(वक्री) पुनर्वसौ मिथुने। **शुक्रः**-धनु राशौ ९ सोमतः मकरे रात्रि ३।३० वादने। **शनिः**-पू.भा. ४ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-शतभिषा ४ चरणे **केतुश्च**- पूर्वाफाल्गुन्यां २ चरणे।

माघ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१र. घं.	मि.	२सो. घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	९सो. घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.
धनु	७	२९	७	२५	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८
मकर	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५
कुम्भ	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६
मीन	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४
मेष	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३
वृष	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मिथुन	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३
कर्क	८	२०	८	१६	८	१२	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१
सिंह	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५
कन्या	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	८
तुला	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४
वृश्चिक	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१

लग्नांत ति.वा.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	३०र. घं.	मि.
मकर	८	३१	८	२७	८	२३	८	२०
कुम्भ	१०	२	९	५९	९	५५	९	५१
मीन	११	३०	११	२७	११	२३	११	१९
मेष	१	९	१	५	१	१	१२	५७
वृष	३	६	३	२	२	५८	२	५४
मिथुन	५	१९	५	१५	५	१२	५	८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.	
कर्क	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५
सिंह	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९
कन्या	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२
तुला	२	२०	२	१६	२	१२	२	८
वृश्चिक	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५
धनु	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०

पं.४० माघ कृष्ण ३० रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ७ अयनांशाः २४/१२/१८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	९	९	२	९	११	१०	४
३	२४	१	१	२४	६	३	१६	१६
२८	५७	३९	१९	३९	२९	९	५३	५३
३६	२०	३५	२३	४	४१	४७	५४	५४
६१	७३८	४६	९८	७ ५० व	७५	४	३	३
१८	५१	३६	२५		२७	५४	११	११

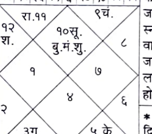

फलम्– यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन रविवार एवं रविवार की अमावस्या को चतुर्ग्रही योग दैवी प्राकृतिक दुर्घटनाओं को आमंत्रण दे रहे हैं। नवीन मत के अनुसार **गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती** ५ जनवरी सोमवार को मनाई जायेगी। **'गणेश चौथ'** के नाम से प्रचलित **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान ६ जनवरी मंगलवार को होगी। गणितागत चन्द्रोदय का समय काशी में ८।३५ बजे है अतः उसके बाद चन्द्रमा के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाने पर इस व्रत का पूजन एवं चन्द्रमा को अर्घ्य देकर सम्पन्न किया जायेगा। आज ही के दिन गणेश जी की उत्पत्ति मानी गई है। इसे तिलकुटी एवं वक्रतुण्ड चतुर्थी भी कहते है। पुत्र की दीर्घायु की कामना से मातायें इसे श्रद्धा एवं विश्वास के साथ करती हैं। **सर्वाप्ति सप्तमी** एवं सन्त **स्वामी श्री रामानन्दचार्य** की जयन्ती तथा तिथि मत से **स्वामी विवेकानन्द** की जयन्ती १० जनवरी शनिवार को होगी। वहीं अंग्रेजी तारीख के अनुसार **स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती** १२ जनवरी को मनाई जाती है। **षट्तिला एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १४ जनवरी बुधवार को है। भगवान भास्कर मकर राशि में १४ जनवरी बुधवार को रात्रि ९।१९ बजे से आयेंगे एवं इसी के साथ सूर्य उत्तरायण हो जायेंगे तथा **खरमास समाप्त** हो जायेगा। मकर संक्रान्ति का यह शास्त्रोक्त नियम है कि प्रदोष के बाद रात्रि में किसी भी समय संक्रान्ति लगती ■ है तो उसका पुण्यकाल दूसरे दिन होता है। इस प्रकार **मकर संक्रान्ति (खिचड़ी)** का पर्व १५जन. गुरुवार को मनाया जायेगा। स्नानदान के लिये यह पर्व अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। सर्वत्र गंगा नदी, अन्यत्र नदी तीर्थ एवं कुँआ सरोवर में स्नान किया जायेगा। ऊनी वस्त्र, दुशाला, कम्बल, जूता, धार्मिक पुस्तकें विशेषकर **पंचांग का दान** विशेष पुण्यफल कारक होता है। इस पर्व को पूरे देश में अपनी स्थानीय परम्परा एवं रीति रिवाज के समय मनाया जाता है। **प्रदोष का व्रत** १६ जनवरी शुक्रवार को होगा एवं **मासशिवरात्रि** का व्रत का मान भी आज ही हो जायेगा। **स्नान दान एवं श्राद्ध** के लिए **अमावस्या मौनी** अमावस्या १८ जनवरी रविवार को होगी। मौन व्रत रखकर गंगा स्नान किया जायेगा। प्रयाग राज की त्रिवेणी काशी के दशाश्वमेध तथा पश्चिमी वाहिनी गंगा में आज के दिन का स्नान-दान विशेष पुण्यफल कारक माना गया है। काशी-चन्दौली के चन्द्रावती-बलुआ घाट पश्चिम वाहिनी गंगा में आज का स्नानदान विशेष पुण्यफलकारी होता है। **उत्तराषाढ़ा नक्षत्र** का सूर्य ११ जनवरी रविवार को दिन ३।१६ बजे से आयेगा। उड़द, चावल, पटसन, गुड़, कपास, पीपला,मूल, लाख, चपड़ी, चावल, सरसों में तेजी चलेगी। हाड़ कपाँ देनी वाली सर्दी पड़ेगी। सूर्य के उत्तरायण हो जाने के बाद भी शुक्रास्त के कारण विवाहादि मांगलिक कार्यों के लिए मुहूर्त्त नहीं बन पायेंगे।

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ रवौ**–पुनर्वसौ-पुंसवनं सीमन्तः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं सायं ५।१५ वादनात्परं पुष्ये नृत्यगीतवाद्य-कलारम्भः शस्त्रधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्मः औषधि निर्माणं सेवनं च वाहन क्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ सोमे**–पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं, बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः जलयन्त्र कर्म, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं औषधि निर्माणं सेवनं च वाहन क्रयः पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ भौमे**–भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ बुधे**–रिक्ता दिवा १०।२९ वादनात्परं मघायां पूर्वाफाल्गुन्यां धान्यच्छेदनं कणमर्दनं जलयंत्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं, मुकदमा कार्यं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ५ गुरौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूतिस्नानं सायं ४।५ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां जातकर्मः नामकरणं अन्नप्राशनं धान्यच्छेदनं विपणिव्यापारः कणमर्दनं धान्यस्थापनं सेवारम्भ जलयंत्र कर्म (पू.फा.) शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं, भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ शुक्रे**–भद्रा दिवा १०।२० वादनात्पूर्व उत्तराफाल्गुन्यां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं सायं ४।५९ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे गर्भाधानं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ शनौ**–हस्त नक्षत्रे नीलमादिरत्न कृष्ण वस्त्र धारणं इष्टिका निर्माणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ८ रवौ**–चित्रायां, विपणि व्यापारः, लालवस्त्र धारणं शस्त्रधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं वाहनक्रयः दिवा १२।२० वादनात्परं रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ९ सोमे**–रिक्ता दिवा १।५४ वादनात्परं स्वात्यां आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदन * आवेदन पत्र लेखनं, वाहनक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १० भौमे**–विशाखायां-भद्रा दिवा ३।५१ उपरान्त लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, हलप्रवहण, दत्तकपुत्रग्रहणं, पश्चिम दक्षिण दिग् यात्रा, शस्त्रघटनं इष्टिका दहनं। **तिथि ११ बुधे**–अनुराधायां गर्भाधान, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापार, विक्रय, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, कणमर्दन, धान्यस्थापन, वृक्षारोपण, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं, शिल्पविद्यारम्भः, वाटिकारम्भः, अनुराधायां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनम्। **तिथि १२ गुरौ**–ज्येष्ठायां-नामकरणं, विक्रय, कणमर्दन, धान्यस्थापन, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, शस्त्रधारणं, मुकदमाकार्यं, इष्टिका निर्माणं, शल्यकर्म, नौकाजलयान घटनं। **तिथि १३ शुक्रे**–मूले-पुंसवन सीमन्तः, नामकरणं विक्रय, हलप्रवहण बीजवपनं, कणमर्दन, धान्यरोपण, वृक्षारोपणं, जलयन्त्रकर्म, मुकदमाकार्यं, नौकाजलयान घटनं, पूर्व उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १४ शनौ**–मूले-रिक्ता व्याप्तिः **तत्परम् मासान्तः।**

राशिफल
मेष- सुखम्
वृष- पापबुद्धिः
मिथुन- दौर्बल्यं
कर्क- सुखार्थ लाभः
सिंह- रोग हानिः
कन्या- शत्रुभयं
तुला- सुखं श्री प्राप्तिः
वृश्चिक- नेत्रकष्ट
धनु- पीड़ा भयम्
मकर- रोगं
कुम्भ- सुखं प्राप्तिः
मीन- शोकं

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ माघ शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं याम्य गोलः शिशिर ऋतुः। दि.१९ जनवरी - १ फरवरी सन् २०२६ ई. (रा.पौष २९ - माघ १२)

पश्चिम दिशायाम् शुक्रोदयः १ फरवरी २०२६ ई.

दि.मा.		माघ शुक्ल तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रा. द. -		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रास्त	
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२६	३६	१	सोम.	४८	१५	रात	१	५९	उत्तराषाढ़ा	१३	२९	दिन	१२	५	वज्र	३६	३१	रात	९	१७	किं	१७	११	बव	४८	१५	मृत्यु	१९	१६	५	२९				६	४१	५	१९	२०	२८	९	४	२९	५४	६१	१७	+	८	६	२
२६	३८	२	मंगल	४९	०	रात	२	१६	श्रवण	१६	१८	दिन	१	११	सिद्धि	३४	१९	रात	८	२४	बा	१८	३८	कौ	४९	०	लुम्बक	२०	१७	६	३०	कुम्भ	४७	५	६	४०	५	२०	२०	१५	९	५	३१	११	६१	१६	+	८	७	१
२६	४०	३	बुध.	४८	२४	रात	२	१	धनिष्ठा	१७	५२	दिन	१	४८	व्यतिपात	३१	७	रात	७	७	तै	१८	४२	गर	४८	२४	मित्र	२१	१८	७	१				६	३९	५	२१	२०	२	९	६	३२	२७	६१	१६	+	९	७	५८
२६	४३	४	गुरु	४६	३५	रात	१	१७	शतभिषा	१८	१३	दिन	१	५६	वरीयान	२६	५६	सायं	५	२५	व	१७	२९	वि	४६	३५	वज्र	२२	१९	८	२				६	३९	५	२१	१९	४९	९	७	३३	४३	६१	१५	+	९	८	५४
२६	४५	५	शुक्र	४३	४४	रात	१२	८	पूर्वाभाद्र	१७	२१	दिन	१	३४	परिघ	२१	५३	दिन	३	२४	बव	१५	१०	बा	४३	४४	ध्वांक्ष	२३	२०	९	३	मीन	२	३४	६	३८	५	२२	१९	३५	९	८	३४	५८	६१	१४	+	९	९	५२
२६	४८	६	शनि	३९	५४	रात	१०	३६	उत्तराभाद्र	१५	३३	दिन	१२	५१	शिव	१६	२	दिन	१	३	कौ	११	४९	तै	३९	५४	धूम्र	२४	२१	१०	४				६	३८	५	२२	१९	२१	९	९	३६	१२	६१	१३	+	९	१०	५२
२६	५०	७	रवि	३५	१५	रात	८	४३	रेवती	१२	५३	दिन	११	४६	सिद्ध	९	२९	दिन	१०	२६	गर	७	३४	व	३५	१५	प्रवर्धमान	२५	२२	११	५	मेष	१२	५३	६	३७	५	२३	१९	७	९	१०	३७	२५	६१	१२	+	१०	११	५३
२६	५३	८	सोम	३०	०	रात	६	३७	अश्विनी	९	३३	दिन	१०	२६	साध्य/शुभ	२/५२	२१/२९	प्रातः	७/४	३४/३३	वि	२	३७	बव/बा	३०/५६	०/४०	राक्षस	२६	२३	१२	६				६	३७	५	२३	१८	५२	९	११	३८	३७	६१	११	+	१०	१२	५८
२६	५६	९	मंगल.	२३	२१	दिन	३	५७	भरणी	५	४३	दिन	८	५४	शुक्ल	४७	५	रात	१	२७	कौ	२३	२१	तै	५०	२३	मुशल	२७	२४	१३	७	वृष	१९	४१	६	३७	५	२३	१८	३७	९	१२	३९	४८	६१	१०	+	१०	२	५
२६	५८	१०	बुध.	१७	२६	दिन	१	३४	कृत्तिका/रोहिणी	१/५५	३८/४९	प्रातः	७/८	१४/३४	ब्रह्म	३९	९	रात	१०	१६	गर	१७	२६	व	४५	४१	सिद्धि	२८	२५	१४	८				६	३६	५	२४	१८	२२	९	१३	४०	५८	६१	९	+	११	३	१४
२७	१	११	गुरु.	१२	३७	दिन	११	३९	मृगशिरा	५३	२४	रात	३	५८	ऐन्द्र	३१	२१	रात	७	८	वि	१२	३७	बव	३९	४६	मृत्यु	२९	२६	१५	९	मिथुन	२५	२७	६	३६	५	२४	१८	६	९	१४	४२	७	६१	८	+	११	४	२०
२७	४	१२	शुक्र.	६	५५	दिन	९	२१	आर्द्रा	४९	४१	रात	२	२७	वैधृति	२३	४३	सायं	४	४	बा	६	५५	कौ	३३	४७	पद्म	३०	२७	१६	१०				६	३५	५	२५	१७	५०	९	१५	४३	१५	६१	७	+	११	५	२०
२७	७	१३/१४	शनि.	०/५५	३८/१५	प्रातः	६/५	५८/५	पुनर्वसु	४६	३१	रात	१	११	विष्कुम्भ	१६	२९	दिन	१	१०	तै	०	३८	गर/व	२७/५५	५६/१५	छत्र	३१	२८	१७	११	कर्क	३२	१८	६	३५	५	२५	१७	३३	९	१६	४४	२२	६१	६	+	११	६	१२
२७	१०	१५	रवि	५३	०	रात	३	४६	पुष्य	४४	१०	रात	१२	१४	प्रीति	९	४५	दिन	१०	२८	वि	२४	७	बव	५३	०	श्रीत्वस	१	२९	१८	१२				६	३४	५	२६	१७	१६	९	१७	४५	२८	६१	५	+	११	+	+

वल्लभाचार्य जयन्ती १। गुप्त नवरात्रारम्भः गुप्त रुपेण पूजा-साधनाविधेयम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो १३।२९ (दि.१२।५) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १३।२९ (दि.१२।५) या.। (क) ४९।० (रा.२।१६) उ.।

कुम्भराशिः रात्रि १।३० वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। **चन्द्र दर्शनम्** मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। शुभाशुभं द्विगुण्यकरः द्विपुष्करयोगः १६।१८ (दि.१।११) उ. ४९।० (रा.२।१६) या.। भौमे-जयासिद्धियोगः(क)

राष्ट्रीय माघ मासारम्भः। मु.सावान ८ हिजरी सन् १४४७। ⊙ अभिजित् प्रवेशो रविः ७।३३ (दि.९।४०)। रवियोगः १७।५२ (दि.१।४८) उ.। (ङ) योगः ३०।० (रा.६।३७) उ.।

भद्रा १७।२९ (दि.१।३९) उ. ४६।३५ (रा.१।१७) या. (मर्त्य)। वैनायकी श्रीगणेश **चतुर्थी ४ व्रतम्। सोपपदा ४ वेदारम्भानध्यायः। उमा चतुर्थी ४ व्रतम्। तिल ४।** कुन्द पुष्पैः सदाशिवपूजनम्। काश्यां ढुण्ढिराज(ख)

मीनराशिः दिवा ७।४० वादने। **बसन्त पञ्चमी ५। श्रीपञ्चमी ५।** वाणी पूजा, वागीश्वरी जयन्ती। सर्वत्र सरस्वती पूजनोत्सवः। तक्षक पूजा। रतिकाममहोत्सवः। आम्रमञ्जरी भक्षणम्। लेखनी पूजन (बंगाल)। पुष्पाञ्जलि(ग)

मन्दार षष्ठी ६ (भविष्योत्तरे) **दारिद्र्यहरण षष्ठी ६** (स्कन्दपुराण)। **शीतला षष्ठी** (बंगाल)। ⊙ **श्रवण नक्षत्रे रविः** २३।४८ (दि.४।१०)। रवियोगः २३।४८ (दि.४।१०) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३९।५४ (रा.१२।२४) या.।

मेषराशिः दिवा ११।४६ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ३५।१५ (रा.८।४३) उ. (स्वर्ग)। **अचला सप्तमी ७। रथसप्तमी ७।** आरोग्य सप्तमी ७। अरुणोदये स्नानम्। सूर्यरथोत्सवः। मन्वादिः ७। **भानुसप्तमी**(घ)

भद्रा २।३७ (दि.७।४०) या.। **भीष्माष्टमी ८।** भीष्माय श्राद्धम् तर्पणञ्च सन्तति लाभाय। **भारतीय गणतन्त्र दिवसः।** राजधानी दिल्ली सहित सर्वत्र ध्वजोत्तोलनम् विविधोत्सवः सैन्यबल प्रदर्शनम् च। यायि (मुद्दई) जयद(ङ)

वृषराशिः दिवा २।२९ वादने। **महानन्दानवमी ९। ब्रह्मनायक श्रीहरसूब्रह्मदेव जयन्ती उत्सवः** (चैनपुर, रोहतास) स्थाने मेलोत्सवः दर्शन पूजनम् च। **गुप्त नवरात्र समाप्तिः।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५।४३ (दि.८।५४)उ.।(च)

भद्रा ४५।४१ (रा.१२।५२) उ. (स्वर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। रवियोगः ५५।४९ (रा.श.५।३४) या.। (ख) पूजन दर्शनञ्च। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ४६।३५ (रा.१।१७) उ.। रवियोगः १८।१३ (दि.१।५६) या.।

मिथुनराशिः दिवा ४।४७ वादने। भद्रा १२।३७ (दि.११।३९) या.। **जया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। भैमी एकादशी ११। (ग)** व्रतारम्भः(जैन)। **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती (२३जनवरी)।** रवियोगः १०।२४ (दि.१०।४०) या.।

प्रदोष व्रतम् १२। भीष्म द्वादशी १२। भीष्मोद्देशेन श्राद्धम् तर्पणञ्च दीर्घायुलाभाय। **वाराहद्वादशी १२।** तिल द्वादशी १२ (ब्रह्मपुराण) तिलेन श्रीविष्णु पूजनम्। सोपपदा १२ वेदारम्भानध्यायः। कल्पादिः १३। माघ दिन त्रयेऽपिस्नानं(छ)

कर्कराशिः रात्रि ७।३० वादने। भद्रा ५५।१५ (रा.५।५) उ. (मर्त्य)। रवियोगः ४६।३१ (रा.१।११) या.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ०।३८ (प्रातः ६।५८) उ.। (च) रवियोगः ५।४३ (दि.८।५४) उ.।

भद्रा २४।७ (दि.४।१३) या.। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा।** माघी पूर्णिमा १५। राजराजेश्वरी ललिता देवी जयन्ती १५। **सन्त रविदास जयन्ती १५।** शोभायात्रा। काश्यां सीर गोवर्धन जन्मस्थाने(ज)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

		स्पष्ट सोम				स्पष्ट मंगल				गति वक्री		स्पष्ट बुध				गति		स्पष्ट गुरु				गति वक्री		स्पष्ट शुक्र				गति		स्पष्ट शनि				गति		स्पष्ट राहु			
ति.	वा.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.
१	सो	९	७	२९	१७	९	२	२६	११	४६	३७	९	२	५७	४८	९८	४७	२	२४	३१	१४	७	५०	९	७	४५	८	७५	२७	११	३	१४	४१	४	५६	१०	१६	५०	४३
२	मं.	९	२०	१५	५१	९	३	१२	४८	४६	३७	९	४	३६	३५	९९	३३	२	२४	२३	२४	७	४७	९	९	०	३५	७५	२६	११	३	१९	३७	४	५९	१०	१६	४७	३२
३	बु.	१०	३	२९	१९	९	३	५९	२५	४६	४०	९	६	१६	८	१००	२८	२	२४	१५	३७	७	४०	९	१०	१६	१	७५	२६	११	३	२४	३६	५	३	१०	१६	४४	२१
४	गु.	१०	१५	४५	२६	९	४	४६	५	४६	४१	९	७	५६	३६	१००	५५	२	२४	७	५७	७	३२	९	११	३१	२७	७५	२४	११	३	२९	३९	५	८	१०	१६	४१	१०
५	शु.	१०	२९	१६	४४	९	५	३२	४६	४६	४१	९	९	३७	३१	१०१	१९	२	२४	०	२५	७	२६	९	१२	४६	५१	७५	२४	११	३	३४	४७	५	१२	१०	१६	३८	०
६	श.	११	१२	५८	२१	९	६	१९	२७	४६	४३	९	११	१८	५०	१०१	५२	२	२३	५२	५९	७	१९	९	१४	२	१५	७५	२३	११	३	३९	५९	५	१५	१०	१६	३४	४९
७	र.	११	२६	५०	४७	९	७	६	१०	४६	४४	९	१३	०	४२	१०२	३६	२	२३	४५	४०	७	१३	९	१५	१७	३८	७५	२२	११	३	४५	१४	५	२०	१०	१६	३१	३८
८	सो.	०	१०	५०	२८	९	७	५२	५४	४६	४६	९	१४	४३	१८	१०३	४६	२	२३	३८	२७	७	५	९	१६	३३	०	७५	२२	११	३	५०	३४	५	२६	१०	१६	२८	२७
९	मं.	०	२४	५६	४२	९	८	३९	४०	४६	४७	९	१६	२७	४	१०४	२०	२	२३	३१	२२	६	५६	९	१७	४८	२२	७५	२२	११	३	५६	०	५	३१	१०	१६	२५	१६
१०	बु.	१	९	३	१५	९	९	२६	२७	४६	४७	९	१८	११	२४	१०५	३७	२	२३	२४	२६	६	४९	९	१९	३	४४	७५	२०	११	४	१	३१	५	३७	१०	१६	२२	५
११	गु.	१	२३	११	१४	९	१०	१३	१४	४६	४९	९	१९	५७	१	१०५	५५	२	२३	१७	३७	६	४१	९	२०	१९	४	७५	२०	११	४	७	८	५	४२	१०	१६	१८	५४
१२	शु.	२	७	७	५	९	११	०	३	४६	५०	९	२१	४२	५६	१०६	४	२	२३	१०	५६	६	३५	९	२१	३४	२४	७५	१९	११	४	१२	५०	५	४८	१०	१६	१५	४३
१३	श.	२	२१	५	३९	९	११	४६	५३	४६	५०	९	२३	२९	०	१०६	१३	२	२३	४	२१	६	३०	९	२२	४९	४३	७५	१७	११	४	१८	३८	५	५३	१०	१६	१२	३२
१५	र.	३	४	५३	४६	९	१२	३३	४३	४६	५१	९	२५	१५	१३	१०६	२८	२	२३	५७	५१	६	२६	९	२४	५	०	७५	१७	११	४	२४	३१	६	०	१०	१६	९	२१

फलम्– चतुर्दशी तिथि की हानि हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। मंगलवार धनिष्ठा नक्षत्र मकर राशि का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। यदि आप पूरे माघ मास भर गंगा स्नान करने में असमर्थ हैं तो तीन दिन तक स्नान कर लेने से भी पूरे माघ स्नान का फल प्राप्त हो जाता है। माघ शुक्ल प्रतिपदा से **गुप्त नवरात्र प्रारम्भ** हो जायेगा। इसमें साधक गुप्त रूप से सिद्धि प्राप्त करने के लिए भगवती की पूजा आराधना अनुष्ठान करते हैं। **बसन्त पंचमी** माता भगवती के विद्यादायिनी सरस्वती स्वरूप की आराधना का पर्व २३ जनवरी शुक्रवार को मनाया जायेगा। वागीश्वरी जयन्ती वाणी पूजा वसन्तोत्सव, रतिकाम महोत्सव के साथ विद्यानुरागी श्रद्धालुजन माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर उत्सव पूर्वक पूजा अर्चना करेंगे। यह प्रकृति के उत्सव का भी पर्व है। **अचला सप्तमी, रथ सप्तमी** भी २५ जनवरी रविवार को है। **भीष्माष्टमी** २६ जनवरी सोमवार को है; इसमें सनातन धर्म के सार्वभौमिक सर्वकालिक पूर्वज पितामह भीष्म का श्राद्ध तर्पण सन्तान प्राप्ति के निमित्त किया जाता है। **महानन्दा नवमी** का मान २७ जनवरी मंगलवार को होगा। आज ब्रह्म नायक **श्री हरसू ब्रह्म देव की जयन्ती** उनके धाम चौनपुर रोहतास में दर्शन पूजन महोत्सव के साथ सम्पन्न होगी। **जया एकादशी** २९ जनवरी गुरुवार को होगी। इसे **भैमी एकादशी** कहते हैं। **प्रदोष का व्रत** ३० जन. शुक्रवार को किया जायेगा एवं आज ही **भीष्म द्वादशी** में ●

पं.४१ माघ शुक्ल ८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १५ अयनांशाः २४/१२/२०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	९	९	२	९	११	१०	४
११	१०	७	१४	२३	१६	३	१६	१६
३८	५०	५२	४३	३८	३३	५०	२८	२७
३७	२८	५४	१८	२७	०	३४	२७	२७
६१	८३२	४६	१०३	७	७५	५	३	३
११	२४	४६	४६	५ व	२२	२६	११	११

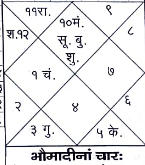

भौमादीनां चारः

भौमः-उत्तराषाढ़ायाम् मकरे १० बुधतः श्रवण नक्षत्रे रात्रि १०।५५ वादने। **बुधः**-मकरराशौ। **गुरुः**-(वक्री) पुनर्वसौ मिथुने। **शुक्रः**-मकर राशौ। **शनिः**-२ भौमतः उ.भा. १ चरणे दिवा १०।३० वादने। **राहुः**-४ गुरुतः शतभिषायां ३ चरणे **केतुश्च**-पूर्वाफाल्गुन्यां १ चरणे।

माघ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत	१सो		२मं.		३बु.		४गु.		५शु		६श		७र.		८सो.		९मं.		१०बु		११गु.		१२शु.		१३श.		१५र.	
ति.वा.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मकर	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४
कुम्भ	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	९	०	८	५६
मीन	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२८	१०	२४
मेष	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२
वृष	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९
मिथुन	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कर्क	७	२१	७	१७	७	१३	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०
सिंह	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४
कन्या	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७
तुला	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३
वृश्चिक	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०
धनु	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ सोमे–**उत्तराषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (ति.दा.) विपणिव्यापारः आभूषणं निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं इक्षुवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शय्यासनाद्युभोगं, आवेदन पत्र लेखनं दक्षिण दिग् यात्रा दिवा १२।५ वादनात्परं श्रवणे दिग् शूलं विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ भौमे–**श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः दिवा १।११ वादनात्परं धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, दत्तकपुत्रग्रहणं शल्यकर्म श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ बुधे–**धनिष्ठायां-शतभे गर्भाधानं (रात्रौ) नामकरणं अन्नप्राशनं क्रयः विक्रयः हलप्रवहणं इक्षुवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ४ गुरौ–**शतभे पू.भा. रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तिथि ५ शुक्रे–**पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं धान्यच्छेदनं धान्यरोपणं जलयंत्र कर्म मुकदमा कार्यं, भूमिक्रयः दिवा १।३४ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे गर्भाधानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं आभूषण निर्माणं धारणं च नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युभोगं, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं औषधि सेवनं च वाहन क्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ६ शनौ–**उत्तराभाद्रपदे नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं इष्टिका निर्माणं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ रवौ–**रेवत्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं दिवा ११।४६ वादनात्परं अश्विन्यां*

पं.४२ माघ शुक्ल १५ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २१ अयनांशाः २४/१२/२१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	९	९	२	९	११	१०	४
१७	४	१२	२५	२२	२४	४	१६	१६
४५	५३	३३	१५	५७	५	२४	९	९
२८	४६	४३	१३	५१	०	३१	२१	२१
६१	८२७	४६	१०६	६	७५	६	३	३
५	५६	५१	८	२६ व	१७	०	११	११

(घ) **पर्वः सूर्यग्रहण** सन्निभम् स्नानदानाय। ⊙ **अभिजित् नक्षत्र समाप्तिः** १५।४० (दि.१२।५३)। सर्वार्थसिद्धियोगः १२।५३ (दि.११।४६) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १२।५३ (दि.११।४६) या.। रवियोगः १२।५३ (दि.११।४६)या.। (छ) विधेयम् पूर्णमासस्य स्नान फल प्राप्ति हेतवः। सर्वार्थसिद्धियोगः ४९।४१ (रा.२।२७) उ. रवियोगः ४९।४१ (रा.२।२७) उ.। (ज) महोत्सवः। **पश्चिम दिशायाम् शुक्रोदयः सायं ६।० वादने।** सर्वार्थसिद्धियोगः ४४।१० (रा.१२।१४) या.।

● भीष्म को उद्देश्य कर श्राद्ध तर्पण करने से दीर्घायु की प्राप्ति होती है। **स्नान दान** एवं व्रत सहित **माघी पूर्णिमा** १ फरवरी रविवार को होगी। आज ही राज राजेश्वरी ललिता देवी की जयन्ती एवं सन्त रविदास की जयन्ती भी मनाई जायेगी। सन्त रविदास की जन्मस्थली काशी के सीर गोवर्धन नामक स्थान तक शोभायात्रा निकाली जायेगी एवं विभित्र समारोह सम्पन्न होंगे। माघी पूर्णिमा में तिल, कम्बल आदि का दान पुण्यफलदायक माना गया है। **श्रवण नक्षत्र का सूर्य** २४ जनवरी शनिवार को दिन में ४ बजे से आयेगा। शेयर बाजार में तेजी का झटका आयेगा। मादक द्रव्यों में तेजी चलेगी। पक्षान्त १ फरवरी को पश्चिम दिशा में शुक्र का उदय हो जायेगा। वर्षा होने तथा पुनः कड़ाके की ठंडक बढ़ जाने की सम्भावना है।

* शल्यकर्मः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ८ सोमे–**भद्रा प्रातः ७।४० वादनात्परं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा १०।२६ वादनात्परं भरण्यां धान्यच्छेदन। **तिथि ९ भौमे–**रिक्ता सायं ३।५७ वादनात्परं कृत्तिकायां इष्टिका दहनं। **तिथि १० बुधेः–**प्रातः ७।१४ वादनात्परं रोहिण्यां जातकर्म अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः हलप्रवहणं इक्षुवपनं कणमर्दनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग पूर्व-दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ११ गुरौ–**भद्रा दिवा ११।३९ वादनात्परं मृगशिरायां गर्भाधानं (रात्रौ) प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः हलप्रवहणं, इक्षुवपनं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं भूमिक्रयः, शल्यकर्म वाहन क्रयः दिवा ४।४७ वादनात्परं मिथुन चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ शुक्रे–**आर्द्रायाम् मुकदमाकार्यं। **तिथि १३/१४ शनौ–**पुनर्वसौ कृष्ण वस्त्र धारणं रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १५ रवौ–**भद्रा दिवा ४।१३ वादनात्परं पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः विपणिव्यापारः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं इक्षुवपनं शस्त्रधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्मवाहन क्रयः पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

राशिफल	
मेष-	कर्मसिद्धिः
वृष-	पापबुद्धिः
मिथुन-	रोग भयं
कर्क-	गमनम्
सिंह-	रिपुनाशः
कन्या-	दैन्यम्
तुला-	रोगं
वृश्चिक-	सुखं
धनु-	भयम्
मकर-	स्थान हानिः
कुम्भ-	पीड़ा
मीन-	वित्ताप्तिः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ फाल्गुन कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनम् याम्यगोलः शिशिर ऋतुः। दिनांक २ - १७ फरवरी सन् २०२६ ई. (रा. माघ १३ - २८)

दि.मा.		फाल्गुन कृ. तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रा. द-		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रोदय	
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२७	१३	१	सोम.	४९	५८	रात	२	३२	श्लेषा	४२	३७	रात	११	३६	आयुष्मान सौभाग्य	२ ५४	३९ ४३	प्रातः	८ ५	१ ५४	बा	२१	२९	कौ	४९	५८	सौम्य	२	१	१९	१३	सिंह	४२	३७	६	३३	५	२७	१७	०	९	१८	४६	३३	६१	३	+	१२	६	१५
२७	१६	२	मंगल.	४७	१२	रात	१	२६	मघा	४२	५	रात	११	२३	शोभन	५३	५५	रात	४	७	तै	१८	३५	गर	४७	१२	कालदण्ड	३	२	२०	१४				६	३३	५	२७	१६	४२	९	१९	४७	३५	६१	२	+	१२	७	१७
२७	१९	३	बुध.	४६	२९	रात	१	८	पूर्वाफाल्गु	४२	४७	रात	११	३९	अतिगण्ड	५०	२६	रात	२	४२	व	१७	५०	वि	४६	२९	स्थिर	४	३	२१	१५	कन्या	५८	१६	६	३२	५	२८	१६	२५	९	२०	४८	३७	६१	१	+	१२	८	१४
२७	२२	४	गुरु	४६	४७	रात	१	१५	उत्तराफा	४४	४४	रात	१२	२६	सुकर्मा	४७	५७	रात	१	४२	बव	१६	३८	बा	४६	४७	मातंग	५	४	२२	१६				६	३२	५	२८	१६	७	९	२१	४९	३८	६१	०	+	१२	९	१०
२७	२५	५	शुक्र	४८	४९	रात	२	३	हस्त	४७	५७	रात	१	४२	धृति	४६	३१	रात	१	७	कौ	१७	४८	तै	४८	४९	अमृत	६	५	२३	१७				६	३१	५	२९	१५	४८	९	२२	५०	३८	६०	५८	+	१२	१०	४
२७	२८	६	शनि	५१	५०	रात	३	१४	चित्रा	५२	१६	रात	३	२४	शूल	४५	५४	रात	१२	५२	गर	२०	१९	व	५१	५०	काण	७	६	२४	१८	तुला	२०	७	६	३०	५	३०	१५	३०	९	२३	५१	३६	६०	५७	+	१२	१०	५८
२७	३१	७	रवि.	५६	४	रात	४	५६	स्वाती	५७	४२	रात	५	३५	गण्ड	४६	१०	रात	१२	५८	वि	२३	५७	बव	५६	४	लुम्बक	८	७	२५	१९				६	३०	५	३०	१५	११	९	२४	५२	३२	६०	५५	+	१२	११	५३
२७	३५	८	सोम	६०	०	स	म	स्त	विशाखा	६०	०	स	म	स्त	वृद्धि	४७	३	रात	१	१८	बा	२८	९	बा	६०	०	मित्र	९	८	२६	२०	वृश्चिक	४७	१७	६	२९	५	३१	१४	५२	९	२५	५३	२७	६०	५४	+	१२	१२	४८
२७	३८	८	मंगल	०	५५	दिन	६	५०	विशाखा	३	४८	दिन	७	५९	ध्रुव	४८	२३	रात	१	४९	कौ	०	५५	तै	३३	३८	श्रीवत्स	१०	९	२७	२१				६	२८	५	३२	१४	३३	९	२६	५४	२२	६०	५३	+	१२	१	४४
२७	४१	९	बुध.	६	२३	दिन	९	१	अनुराधा	१०	२१	दिन	१०	३६	व्याघात	४९	४५	रात	२	२२	गर	६	२३	व	३९	१	सौम्य	११	१०	२८	२२				६	२८	५	३२	१४	१३	९	२७	५५	१५	६०	५१	+	१२	२	३८
२७	४४	१०	गुरु.	११	४१	दिन	११	७	ज्येष्ठा	१६	५१	दिन	१	११	हर्षण	५०	५३	रात	२	४९	वि	११	४१	बव	४४	१२	कालदण्ड	१२	११	२९	२३	धनु	१६	५१	६	२७	५	३३	१३	५४	९	२८	५६	६	६०	५०	+	१२	३	३१
२७	४८	११	शुक्र.	१६	३९	दिन	१	६	मूल	२२	५७	दिन	३	३७	वज्र	५१	३८	रात	३	६	बा	१६	३९	कौ	४८	५५	स्थिर	१३	१२	३०	२४				६	२६	५	३४	१३	३४	९	२९	५६	५६	६०	४८	+	१२	४	२०
२७	५१	१२	शनि.	२०	५१	दिन	२	४६	पूर्वाषाढ़ा	२८	१७	सायं	५	४५	सिद्धि	५१	४१	रात	३	६	तै	२०	५१	गर	५१	२३	मातंग	१४	१३	१	२५	मकर	४४	२१	६	२६	५	३४	१३	१४	१०	०	५७	४४	६०	४६	+	१२	५	५
२७	५४	१३	रवि.	२३	५५	दिन	३	५९	उत्तराषाढ़ा	३२	३२	रात	७	२६	व्यतिपात	५०	५०	रात	२	४५	व	२३	५५	वि	५४	५५	अमृत	१५	१४	२	२६				६	२५	५	३५	१२	५३	१०	१	५८	३०	६०	४५	+	१२	५	४६
२७	५८	१४	सोम.	२५	५३	दिन	४	४५	श्रवण	३५	४१	रात	८	४०	वरीयान	४९	१	रात	२	०	श	२५	५३	च	५६	१०	सिद्धि	१६	१५	३	२७				६	२४	५	३६	१२	३२	१०	२	५९	१५	६०	४३	+	१२	६	२२
२८	१	३०	मंगल.	२६	३०	सायं	५	०	धनिष्ठा	३७	३२	रात	९	२५	परिघ	४६	१३	रात	१२	५३	ना	२६	३०	किं	५६	८	उत्पात	१७	१६	४	२८	कुंभ	६	३७	६	२४	५	३६	१२	१२	१०	३	५९	५८	६०	४२	+	१२	+	+

सिंहराशिः रात्रि ११।३६ वादने। **फसली फाल्गुन मासारम्भः।** यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ४२।३७ (रा.११।३६) या.।

भौमे-जया सिद्धयोगः ४७।१२ (रा.१।२६) उ.। **(ख)** स्नानम्। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः २२।५७ (दि.३।३७) उ.।

कन्याराशिः रात्रि शेष ५।५० वादने। भद्रा १७।५० (दि.१।४०) उ. ४६।२९ (रा.१।८) या. (मर्त्य)। **शुक्र बालत्व निवृत्तिः** सायं ६।० वादने।

संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.९।१०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ४६।४७ (रा.१।१५) उ.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ४६।४७ (रा.१।१५)उ.।

⦿ **धनिष्ठा नक्षत्रे रविः** २९।२२ (सायं ६।१६)। शुक्रे नन्दा सिद्धयोगः ४८।४९ (रा.२।३) उ.। **पश्चिम दिशायाम बुधोदयः।** **(क)** (रा.३।२४) उ.।

तुलाराशिः दिवा २।३३ वादने। भद्रा ५१।५० (रा.३।१४) उ. (पाताले)। सर्वार्थसिद्धियोगः ५२।१६ (रा.३।२४) उ.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ५२।१६ (रा.३।२४) उ.। रवियोगः ५२।१६ **(क)**

भद्रा २३।५७ (दि.४।५) या.। **भानु सप्तमी पर्वः सूर्य ग्रहण** सन्निभम् स्नानदानाय। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ५६।४ (रा.४।५६) या.। रवियोगः ५७।४२ (रा.५।३५) या.।

वृश्चिक राशिः रात्रि १।२४ वादने। **अष्टका श्राद्धम् ८।** अद्य श्राद्धस्य सन्तति लाभाय सर्वोपरि। **जानकी जयन्ती ८।** मिथिलायां विशेष उत्सवः। यमघंट योगः यावद्दिनम्।

अन्वष्टका श्राद्धम्। भौमे जया सिद्धयोगः ०।५५ (दि.६।५०) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ०।५५ (दि.६।५०) या.।

भद्रा ३९।१ (रा.१०।४) ऊ. (स्वर्गे)। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो १०।२१ (दि.१०।३६) या.। मृत्युबाणः ४।४५ (दि.८।२२) उ.। **(ग)** २८।१७ (सा.५।४५) उ.।

धनुराशिः दिवा १।११ वादने। भद्रा ११।४१ (दि.११।७) या.। मृत्युबाणः ३।५४ (दि.८।१) या.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ११।४१ (दि.११।७) या.।

विजया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। ⦿ **सं.कुम्भ राशौ रविः** ३।४० (दि.७।५०) मु.३० समा समता करम्। पराः १६ घट्यः पुण्याः। गो-अन्न तिल आदि दानम् गोदावर्याम्**(ख)**

मकरराशिः रात्रि १२।१० वादने। **सौर फाल्गुन मासारम्भः। शनि प्रदोष व्रतम् १२।** पुत्रार्थिभिविधेयम्। मृत्युबाण आरम्भः २।४६ (दि.७।३२) वादने। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः**(ग)**

भद्रा २३।५५ (दि.३।५९) उ. ५४।५५ (रा.४।२३) या. (पाताले)। **श्री महाशिवरात्रि व्रतम् १३। कृति वासेश्वर (काशी विश्वनाथ)** दर्शन पूजन जलाभिषेकञ्च। काश्यां चतुर्दश**(घ)**

पारणा महाशिवरात्रि व्रतस्य। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ३५।४१ (रा.८।४०) या.।**(ङ)** यदि लभ्येत् कोटि सूर्य ग्रहे समा। पाप वारान्विते दर्शे दुर्भिक्ष च प्रजा भयम्।

कुम्भराशिः दिवा ९।३ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। **स्नानदान श्राद्धादौ अमा पुण्यतमा ३०। भौमवती अमावस्या ३०।** अमायाञ्च यदावारो भवेद् भूमिसुतस्य वै। गंगायाम्**(ङ)**

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.३ बुधे–भद्रा रात्रि १।८ वादनात्परं उ.फा. रेखा ८ लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (चं.दा.)। **तिथि ४ गुरौ**-उ.फा. रेखा ८ दिवा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। (चं.दा.) वा ल.गोधूलि वा लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० रात्रि १२।२६ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे रेखा ८ लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४, वा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०

तिथि ५ शुक्रे-हस्त नक्षत्रे रेखा ८ दिवा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४।। वा लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४ (रात्रि १।४२ वादनम् यावत्)। **तिथि ६ शनौ**-स्वात्यां रात्रि ३।१४ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः। **तिथि ७ रवौ**–भद्रा दिवा ४।५ वादनात्परं स्वात्यां राहुवेधः आ. रेखा ७ लग्नं गोधूलिः तत्परं पंचेष्टालग्नाभावः।

तिथि ८ भौमे–दिवा ७।५९ वादनात्परं अनुराधायां रेखा ८ दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।

तिथि ९ बुधे–अनुराधायां रेखा ८ दिवा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ (दिवा ८।२२ वादनात्परं मृत्युबाणः)। **तिथि १० गुरौ**–दिवा १।११वादनात्परं मूल नक्षत्रे रेखा ६ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४ वा लग्नं१० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०। **तिथि ११ शुक्रे**–मूले रेखा ६ दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः। **तिथि १२ शनौ**–सायं ५।४५ वादनात्परं उ.षा. मृत्युबाण। **तिथि १३ रवौ**–मृत्युबाण भद्रा व्याप्तिः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.		स्पष्ट सोम				स्पष्ट मंगल				गति वक्री		स्पष्ट बुध				गति		स्पष्ट गुरु				गति वक्री		स्पष्ट शुक्र				गति		स्पष्ट शनि				गति		स्पष्ट राहु			
		रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.
१	सो.	३	२०	३२	१३	९	१३	२०	३४	४६	५३	९	२७	१	४१	१०६	४०	२	२२	५१	२५	६	२०	९	२५	२०	१७	७५	१७	११	४	३०	३१	६	५	१०	१६	६	१०
२	मं.	४	३	५८	१९	९	१४	७	२७	४६	५३	९	२८	४८	२१	१०६	४	२	२२	४५	५	६	११	९	२६	३५	३४	७५	१६	११	४	३६	३६	६	९	१०	१६	२	५९
३	बु.	४	१७	१०	४१	९	१४	५४	२०	४६	५५	१०	०	३४	२५	१०५	४७	२	२२	३८	५४	६	१	९	२७	५०	५०	७५	१५	११	४	४२	४५	६	१४	१०	१५	५९	४८
४	गु.	५	०	४६	५३	९	१५	४१	१५	४६	५७	१०	२	२०	१२	१०४	५६	२	२२	२२	५३	५	५०	९	२९	६	५	७५	१५	११	४	४८	५९	६	१८	१०	१५	५६	३७
५	शु.	५	१३	२८	१२	९	१६	२८	१२	४६	५८	१०	४	५	८	१०४	२१	२	२२	२७	३	५	४३	१०	०	२१	२०	७५	१३	११	४	५५	१७	६	२०	१०	१५	५३	२६
६	श.	५	२५	५८	४१	९	१७	१५	१०	४७	०	१०	५	४९	२९	१०४	१	२	२२	२१	२२	५	३५	१०	१	३६	३३	७५	११	११	५	१	३७	६	२३	१०	१५	५०	१५
७	र.	६	८	१३	१७	९	१८	२	१०	४७	०	१०	७	३३	३०	१०३	४३	२	२२	१५	४५	५	२९	१०	२	५१	४४	७५	११	११	५	८	०	६	२५	१०	१५	४७	४
८	सो.	६	२०	२१	९	९	१८	४९	१०	४७	१	१०	९	१७	१३	१०३	५	२	२२	१०	२६	५	१२	१०	४	६	५५	७५	१०	११	५	१४	२५	६	२८	१०	१५	४३	५३
८	मं.	७	२	२९	४६	९	१९	३६	११	४७	३	१०	११	०	१८	१०२	३८	२	२२	४	५४	५	१८	१०	५	२२	५	७५	८	११	५	२०	५३	६	३२	१०	१५	४०	४२
९	बु.	७	१४	३०	३३	९	२०	२३	१४	४७	३	१०	१२	४२	५६	१००	२५	२	२१	५९	३६	५	११	१०	६	३७	१३	७५	७	११	५	२७	२५	६	३५	१०	१५	३७	३१
१०	गु.	७	२६	३२	१८	९	२१	१०	१७	४७	५	१०	१४	२३	२१	९८	५०	२	२१	५४	२४	५	५	१०	७	५२	२०	७५	७	११	५	३४	०	६	३९	१०	१५	३४	२०
११	शु.	८	८	४०	४९	९	२१	५७	२२	४७	६	१०	१६	२	११	९६	२९	२	२१	४९	२३	४	४४	१०	९	७	२७	७५	५	११	५	४०	३९	६	४१	१०	१५	३१	१०
१२	श.	८	२०	५६	१३	९	२२	४४	२८	४७	६	१०	१७	३८	४०	९०	४५	२	२१	४४	४९	४	४६	१०	१०	२२	३२	७५	५	११	५	४७	२०	६	४१	१०	१५	२७	५९
१३	र.	९	३	२६	४७	९	२३	३१	३४	४७	८	१०	१९	९	२५	८५	११	२	२१	३५	४३	४	३८	१०	११	३७	३७	७५	३	११	५	५४	१	६	४२	१०	१५	२४	४८
१४	सो.	९	१६	८	२१	९	२४	१८	४२	४७	८	१०	२०	३४	३६	८१	१	२	२१	३३	५	४	३३	१०	१२	५२	३०	७५	३	११	६	०	४३	६	४२	१०	१५	२१	३७
३०	मं.	९	२८	१६	३०	९	२५	५	५०	४७	१०	१०	२१	५५	३७	७८	३६	२	२१	३०	३२	४	२५	१०	१४	७	३३	७५	०	११	६	७	२५	६	४५	१०	१५	१८	२६

फलम्– अष्टमी तिथि की वृद्धि हो गई है इसलिये यह पक्ष १६ दिन का हो गया है। पक्ष के तीन सोमवार एवं तीन मंगलवार शुभाशुभफलकारक हैं। पहाड़ों पर भारी हिमपात होने से सर्दी का सिलसिला जारी रहेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान ५ फरवरी गुरुवार को है, **चन्द्रोदय रात ९।१०** बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **जनक नन्दिनी सीता जी की जयन्ती** ९ फरवरी सोमवार को सर्वत्र विशेषकर मिथिलांचल मे उत्सवपूर्वक मनाई जायेगी। **विजया एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १३ फरवरी शुक्रवार को होगा। **पुत्र की कामना** से **शनि प्रदोष** का व्रत १४ फरवरी को किया जायेगा। अखिल ब्रह्माण्ड के नियामक भगवान शिव के ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में प्रकटीकरण का अति महत्त्वपूर्ण पर्व **महाशिवरात्रि** १५ फरवरी रविवार को मनायी जायेगा। यह निराकार - **'ॐकार'** स्वरूप को साकार रूप में प्रकट होने की महारात्रि है। विश्वभर में फैले सनातन धर्मी शिवानुरागी भक्तजन इस पर्व को अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास के साथ दर्शन-पूजन, जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक कर मनाते है। आज के दिन का व्रत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। देश भर के ज्योतिर्लिंग के साथ सभी शिव मन्दिरों में विशेष पूजन अनुष्ठान का कार्य सम्पन्न होगा। काशी नगरी का कण-कण, कोना-कोना शिवमय ▮

▮हो जाता है। औघड़दानी बाबा भोलेनाथ के भक्त शिवभक्ति में सरोवर होकर शिव बारात निकालकर मस्ती में आकर इसे अति उत्साह के साथ मनाते हैं। शास्त्रीय मान्यता एवं परम्परा के सम्मिलित स्वरूप को मानते हुए आज के दिन बाबा भोलेनाथ का माता पार्वती के साथ विवाह हुआ था। काशी एक अकेली नगरी है जहाँ चतुर्दश शिवलिंगो का दर्शन पूजन किया जाता है। (प्रसंगवश स्कन्दपुराण) महाशिवरात्रि व्रत का पारण १६ फरवरी सोमवार को प्रातः काल किया जायेगा। **स्नानदान एवं श्राद्ध** के लिये अमावस्या एवं **भौमवती अमावस्या** १७ फरवरी को होगी। आज के दिन का गंगा स्नान करोड़ों सूर्य ग्रहण में किये गये गंगा स्नान के बराबर माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य ६ फरवरी शुक्रवार को सायं ६।१६ बजे से आयेगा। **कुम्भ राशि की सूर्य संक्रान्ति** १३ फर. शुक्रवार को दिन ७।५० बजे से आयेगी। मंगलवार को अमावस्या भारी पड़ेगी। मँहगाई बढ़ जायेगी।

(घ) लिंग पूजनम्। **श्रीवैद्यनाथ जयन्ती।** सर्वत्र शिवपूजनम् अभिषेकञ्च। रात्रि जागरणम्। **काश्यां शिव बारात-शोभायात्रा।** मृत्युबाण समाप्तिः २।१५ दिवा ७।१० वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ३२।३२ (रा.७।२६) या.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः २३।५५ (दि.३।५९)या.।

भौमादीनां चारः

भौमः-श्रवणे मकर राशौ १२ शनितः धनिष्ठायां रात्रि १२।४५। **बुधः**-२ भौमतः कुम्भ राशौ रात्रि १।२० वादने। **गुरुः**-(वक्री) पुनर्वसौ। **शुक्रः**-मकर राशौ ४ गुरुतः कुम्भ राशौ रात्रि १।३० वादने। **शनिः**-उ.भा. १ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-शतभिषायां ३ चरणे **केतुश्च**-पू.फा. १ चरणे।

पं.४३ फाल्गुन कृष्ण ८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २९ अयनांशाः २४/१२/२२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	९	१०	२	१०	११	१०	४
२५	२०	१८	९	२२	४	५	१५	१५
५३	२९	४९	१७	१०	६	१४	४३	४३
२७	९	१०	१३	१६	५५	२५	५३	५३
६०	७१९	४७	१०३	५ २२	७५	६	३	३
५४	२५	१	५	व	१०	२८	११	११

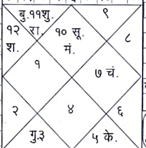

फाल्गुन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत	१सो		२मं.		३बु.		४गु		५शु		६श.		७र.		८सो		८मं.		९बु.		१०गु.		११शु.		लग्नांत	१२श.		१३र.		१४सो		३०मं.	
ति.वा.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ति.वा.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मकर	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	कुम्भ	८	४	८	१	७	५७	७	५३
कुम्भ	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	मीन	९	३२	९	२९	९	२५	९	२१
मीन	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	मेष	११	११	११	७	११	३	१०	५९
मेष	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	वृष	१	८	१	४	१	०	१२	५६
वृष	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	मिथुन	३	२१	३	१८	३	१४	३	१०
मिथुन	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	कर्क	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.	
कर्क	६	२६	६	२२	६	१८	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	सिंह	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१
सिंह	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	कन्या	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४
कन्या	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०	तुला	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०
तुला	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	वृश्चिक	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७
वृश्चिक	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	धनु	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२
धनु	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	मकर	६	२९	६	२६	६	२२	६	१८

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ सोमे–श्लेषायां धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्मः। **तिथि २ भौमे**–मघायां इष्टिकादहनं। **तिथि ३ बुधे**–पूर्वाफाल्गुन्यां भद्रा दिवा १।४० वादनात्पूर्व धान्यच्छेदनं कणमर्दनं जलयंत्र कर्म मुकदमा कार्यं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ४ गुरौ**–उत्तराफाल्गुन्यां रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ शुक्रे**–हस्त नक्षत्रे गर्भाधानं (रात्रौ) पुंसवनं सीमन्तः आ.प्रसुति स्नानं जातकर्म नामकरण अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदनं **चौल मुण्डनं ल.१२ वा २** विद्यारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः **उपनयनं ल.२, वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः ल.२,** विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं इक्षुवपनं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं दत्तकपुत्र ग्रहणः आवेदनपत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः ल.२ औषधि निर्माणं सेवनं च वाहन क्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ शनौ**–चित्रायां नीलमादिरत्न कृष्ण वस्त्र धारण दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ रवौ**–भद्रा दिवा ४।५ वादनात्परं स्वात्यां प्रसूति स्नानं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, **वरवरणं, कन्यावरणं,** दीक्षाग्रहणं, लालवस्त्रधारणं, इक्षुवपनं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं, शल्यकर्म, **सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः,** नौकाजलयान घटनं, औषधिसेवन, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ सोमे**–विशाखायां - धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं। **तिथि ८ भौमे**–प्रातः ६।५० वादनात्परं रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ९ बुधे**–रिक्ता दिवा ९।१ वादनात्परं अनुराधायां जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेध, कन्यानासिकाच्छेदनं, अक्षराम्भः, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, **आ.उपनयनं ल.१, वरवरणं,** कन्यावरणं, विपणिव्यापार, नववस्त्रधारणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं इक्षुवपनं, वृक्षारोपणं, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं, **गृहप्रवेश** (च.शु.), सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः औषधि निर्माणं सेवनं च अनुराधायां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा १०।३६ वादनात्परं ज्येष्ठायां **नामकरणं चौलमुण्डनं ल.२,** अक्षरारम्भः, गवां क्रय विक्रयः कणमर्दनं। **तिथि १० गुरौ**–भद्रा दिवा ११।७ वादनात्परं ज्येष्ठायां **नामकरणं चौलमुण्डनं ल.२** अक्षरारम्भः गवां क्रयविक्रयः कणमर्दनं दिवा १।११ वादनात्परं मूले **वधूप्रवेशः ल.३ वरवरणं-कन्या** वरणं दीक्षाग्रहणं, वृक्षारोपणं जलयंत्र कर्म मुकदमाकार्यं भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११ शुक्रे**–मूले-पुंसवन सीमन्तः, *

* नामकरणं, विद्यारम्भः, **वरवरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः, द्विरागमनं ल.१२,** विक्रय, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, कणमर्दन, धान्यरोपणं, धान्यस्थापन, वृक्षारोपणं, जलयन्त्रकर्म, मुकदमाकार्य (ति.दा.) भूमिक्रयः, नौकाजलयान घटनं, पूरब, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १२ शनौ**–पू.षाढ़ायां इष्टिका दहनं, शस्त्र घटनं, उग्रकर्माचरणं, सायं ५।४५ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायां नीलमादि रत्नकृष्ण, वस्त्रधारणं, **गृहप्रवेश ल.गोधूलि (भू.सु.)।** **तिथि १३ रवौ**–उत्तराषाढ़ायां-भद्रा सायं ३।५९ वादनात्पूर्व पुंसवन सीमन्तः प्रसुति स्नानं, वरवरणं, कन्यावरणं, विपणिव्यापारः, लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं, शल्यकर्म पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १४ सोमे**–श्रवणे रिक्ता व्याप्तिः। तत्परं **मासान्तदोषः।**

पं.४४ फाल्गुन कृष्ण ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७ अयनांशाः २४/१२/२३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	९	१०	२	१०	११	१०	४
३	२८	२५	२१	२१	१४	६	१५	१५
५९	१६	५	५५	३०	७	७	१८	१८
५८	३०	५०	३७	३२	३३	२५	२६	२६
६०	७८०	४७	७८	४ २५	७५	६	३	३
४२	३१	१०	३६	व	०	४५	११	११

राशिफल

मेष- सुखप्राप्ति
वृष- सुखम्
मिथुन-पापबुद्धिः
कर्क- हानिः
सिंह- लाभः
कन्या-रोगं
तुला- शत्रुभयं
वृश्चिक-श्रीप्राप्तिः
धनु- नेत्रकष्टं
मकर- पीड़ा भयम्
कुम्भ-शोकं
मीन-लाभ

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ फाल्गुन शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं याम्य गोलः शिशिर ऋतुः। दि.१८ फरवरी - ३ मार्च सन् २०२६ ई. (राष्ट्रीय माघ २९ - फाल्गुन १२)।

दि.मा.		फाल्गुन शुक्ल तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रा. द -		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रास्त	
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२८	५	१	बुध.	२६	४७	सायं	५	६	शतभिषा	३८	९	रात	९	३९	शिव	४२	२५	रात	११	२१	बव	२६	४७	बा	५५	४८	मानस	१८	१७	५	२९				६	२३	५	३७	११	५१	१०	५	०	४०	६०	४०	+	१२	६	४७
२८	८	२	गुरु.	२४	४९	दिन	४	१८	पूर्वाभाद्र.	३७	३३	रात	९	२३	सिद्ध	३७	३९	रात	९	२६	को	२४	४९	तै	५३	१९	मुद्गर	१९	१८	६	३०	मीन	२२	४२	६	२२	५	३८	११	३०	१०	६	१	२०	६०	३८	+	१२	७	४६
२८	१२	३	शुक्र.	२१	४९	दिन	३	६	उत्तराभा.	३५	५६	रात	८	४४	साध्य	३२	४	रात	७	११	गर	२१	४९	व	४९	५१	ध्वज	२०	१९	७	१				६	२२	५	३८	११	८	१०	७	१	५७	६०	३६	+	१२	८	४५
२८	१५	४	शनि.	१७	५३	दिन	१	३०	रेवती	३३	२८	रात	७	४४	शुभ	२५	४९	दिन	४	४१	वि	१७	५३	बव	४५	३०	धाता	२१	२०	८	२	मेष	३३	२८	६	२१	५	३९	१०	४७	१०	८	२	३३	६०	३५	+	१२	९	४७
२८	१९	५	रवि.	१३	६	दिन	११	३४	अश्विनी	३०	१८	रात	६	२७	शुक्ल	१८	५४	दिन	१	५४	बा	१३	६	को	४०	२६	आनन्द	२२	२१	९	३				६	२०	५	४०	१०	२५	१०	९	३	८	६०	३३	+	१२	१०	५१
२८	२२	६	सोम.	७	४७	दिन	९	२७	भरणी	२६	३६	दिन	४	५८	ब्रह्म	११	३२	दिन	१०	५६	तै	७	४७	गर	३४	५५	चर	२३	२२	१०	४	वृष	४०	३४	६	२०	५	४०	१०	३	१०	१०	३	४०	६०	३१	+	१२	११	५८
२८	२६	७/८	मंगल	३/५४	४/६	प्रातः	७/४	९/४७	कृत्तिका	२२	३२	दिन	३	२०	ऐन्द्र/वैधृति	३/५२	५३/११	प्रातः	७/४	२२/४५	व	२	४	वि/बव	२८/५४	५/६	गद	२४	२३	११	५				६	१९	५	४१	९	४१	१०	११	४	११	६०	२९	+	१२	१	५
२८	३०	९	बुध	५०	१५	रात	२	२४	रोहिणी	१८	२१	दिन	१	३८	निष्कुम्भ	४८	१४	रात	१	३५	ब	२२	१०	को	५०	१५	शुभ	२५	२४	१२	६	मिथुन	४६	१९	६	१८	५	४२	९	१९	१०	१२	४	४०	६०	२७	+	१२	२	१०
२८	३३	१०	गुरु.	४४	३३	रात	१२	६	मृगशिरा	१४	१८	दिन	१२	०	प्रीति	४०	४१	रात	१०	३१	को	१७	२४	गर	४४	३३	मृत्यु	२६	२५	१३	७				६	१७	५	४३	८	५७	१०	१३	५	७	६०	२५	+	११	३	११
२८	३७	११	शुक्र.	३९	१५	रात	९	५९	आर्द्रा	१०	३२	दिन	१०	३०	आयुष्मान	३३	१५	रात	७	३४	व	११	५४	वि	३९	१५	पद्म	२७	२६	१४	८	कर्क	५३	५	६	१७	५	४३	८	३५	१०	१४	५	३३	६०	२३	+	११	४	४
२८	४०	१२	शनि.	३४	३०	रात	८	४	पुनर्वसु	७	१५	दिन	९	१०	सौभाग्य	२६	२५	सायं	४	५०	बव	६	५२	बा	३४	३०	छत्र	२८	२७	१५	९				६	१६	५	४४	८	१३	१०	१५	५	५६	६०	२१	+	११	४	५१
२८	४४	१३	रवि.	३०	३९	रात	६	३१	पुष्य	४	४०	दिन	८	७	शोभन	२०	१२	दिन	२	२०	को	२	३४	तै/गर	३०/५९	३९/१०	श्रीवत्स	१	२८	१६	१०				६	१५	५	४५	७	४९	१०	१६	६	१७	६०	२०	+	१०	५	३१
२८	४८	१४	सोम.	२७	४१	सायं	५	१८	श्लेषा	२	५५	दिन	७	२४	अतिगण्ड	१४	४१	दिन	१२	६	व	२७	४१	कि	५६	४४	सौम्य	२	२९	१७	११	सिंह	२	५५	६	१४	५	४६	७	२६	१०	१७	६	३७	६०	१८	+	१०	६	६
२८	५१	१५	मंगल.	२५	४८	दिन	४	३३	मघा	२	१२	दिन	७	७	सुकर्मा	१०	०	दिन	१०	१४	बव	२५	४८	बा	५५	२७	कालदण्ड	३	३०	१८	१२				६	१४	५	४६	७	४	१०	१८	६	५५	६०	१६	+	१०	+	+

पयोव्रतारम्भः दिनात्मके १२ पुत्रकामनया। फाल्गुन शुक्ले प्रतिपदारम्भ द्वादश दिन पर्यन्तम्। तच्च भागवते द्रष्टव्यम्। कुलाकुल गण: दुर्लभ संन्धिकर योग: २६।४७ (सा.५।६) उ.(क)

मीनराशि: दिवा ३।२७ वादने। चन्द्र दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। याम्य श्रृंगम् दुर्भिक्षं। श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती २। फुलरिया २। ⊙ शतभिषा नक्षत्रे रविः ३८।५० (ख)

भद्रा ४९।५१ (रा.१२।८) उ. (मर्त्ये)। मु.रमजान १ हिजरी सन् १४४७। राष्ट्रीय फाल्गुन मासारम्भः। सर्वार्थामृतसिद्धियोगौ ३५।५६ (रा.८।४४) उ.। रवियोग: ३५।५६ (रा.८।४४) उ.

मेषराशि: रात्रि ७।४४ वादने। पंचक (पचखा) समाप्ति। भद्रा १७।५३ (दि.१।३०) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोग: १७।५३ (दि.१।३०) या.। (ग)

सर्वार्थसिद्धियोग: ३०।१८ (रा.६।२७) उ.। मृत्युबाणारम्भः ५७।१० (रा.शे.५।१८) उ.। रवियोग: ३०।१८ (रा.६।२७) उ.। (ज) चतुःषष्टी (चौसट्ठी) देवी यात्रा दर्शनम्।

वृषराशि: रात्रि १०।३४ वादने। रवियोग: २६।३६ (दि.४।५८) वा.। मृत्युबाण समाप्ति: ५७।१० (रात्रि शेष ५।१८)। यायि (मुदई) जयद् योग: १७ (दि.९।२७) उ. २६।३६ (दि.४।५८) या.।

भद्रा २।४ (प्रातः ७।९) उ. २८।५ (सा.५।३३) या. (स्वर्गे)। अर्कपुट सप्तमी ७, कामदा ७। कल्याण सप्तमी ७। सर्वार्थसिद्धियोग: २२।३२ (दि.३।२०) या.। भौमे जया सिद्धयोग: (घ)

मिथुनराशि: रात्रि १२।५० वादने। सर्वार्थसिद्धियोग: यावद्दिनम्। रवियोग: १८।२१ (दि.१।३८) उ.। (ख) (रा.९।५४)। यायि (मुदई) जयद् योग: ३७।३३ (रा.९।२३) उ.।

फागुदशमी १०। लट्ठमार होली (नन्दगाँव)। रवियोग: यावद्दिनम्। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोग: ४४।३३ (रा.१२।६) या.। (च) पश्चिमदिशायाम् बुधास्तः।

कर्कराशि: रात्रि ३।३४ वादने। रवियोग: उ. ३९।१५ (रा.९।५९) या. (स्वर्गे)। आमलकी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। इयमेव रंगभरी एकादशी। श्रीकाशी(ङ)

सुगति द्वादशी १२। श्रीकृष्ण इति मन्त्र १०८ जपनीया। मेला श्रीखाटू रामदेवस्य १२। शुभाशुभत्रयगुण्यकर: त्रिपुष्करयोग: ७।१५ (दि.९।१०) या.।

प्रदोष व्रतम् १३। रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोग: ४।४० (दि.८।७) या.। रवियोग: ४।४० (दि.८।७) उ.। यायि (मुदई) जयद् योग: ४।४० (दि.८।७) उ. ३०।३९ (रा.६।३१) या.। (च)

सिंहराशि: दिवा ७।२४ वादने। भद्रा २७।४१ (सा.५।१८) उ. ५६।४४ (रा.४।५६) या. (मर्त्ये)। व्रताय पूर्णिमा १५। भद्रा मुखं विहाय अर्धरात्रौ रात्रि १२।५० वादनात्पूर्व होलिका(छ)

स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। मन्वादि: १५। श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती १५। श्रीविष्णुदोलोत्सवः। ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहणम्। ग्रहणमोक्ष उपरान्त काश्यां(ज)

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.२ गुरौ– रात्रि ९।२३ वादनात्परं उ.भा. रेखा ८ लग्नं ४ इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ६ इष्टा: ६ ग्र.व.वि.१९। तिथि ३ शुक्रे– उ.भा. रेखा ८ दिवा लग्नं इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं २ इ. ५ ग्र.व.वि.१३। वा लग्नं ४ गोधूलि रात्रि ८।४४ वादनात्परं रेवत्यां रेखा ९ भद्रा रात्रि १।२८ से पूर्व लग्नं ६ इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं ९ इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१०। तिथि ४ शनौ– रिक्ता भद्रा दिवा १।३० वादनात्परं पंचम्यां रेवत्यां रेखा ९ ल.गोधूलि। तिथि ७ भौमे– भद्रा सायं ५।३३ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ८ लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ ल.७ इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१० (चं.दा.) वा लग्नं १० इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१०। तिथि ९ बुधे– रोहिण्यां रेखा ८ दिवा लग्नं १ इष्टा: ७ ग्र.व.वि.१८।। दिवा १।३८ उपरान्त मृगशिरायां रेखा ९ ल.गोधूलि: वा लग्नं ६ इष्टा: ५ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं ७ इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ९ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १०।। वा ल.१० इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१०। तिथि १० गुरौ– मृगशिरायां रेखा ९ दिवा लग्नं १ इष्टा: ७ ग्र.व.वि.१८।। तिथि १४ सोमे– दिवा ७।२४ वादनात्परं मघायां भद्रा सायं ५।१८ वादत्पूर्व दिवा लग्ने शुभलग्नाभावः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

		स्पष्ट सोम				स्पष्ट मंगल				गति		स्पष्ट बुध				गति		स्पष्ट गुरु				गति वक्री		स्पष्ट शुक्र				गति		स्पष्ट शनि				गति		स्पष्ट राहु			
ति.	वा.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.
१	बु.	१०	११	३०	३३	९	२५	५३	०	४७	१०	१०	२३	१४	१३	७३	४१	२	२१	२६	७	४	१७	१०	१५	२२	३३	७५	०	११	६	१४	१०	६	४८	१०	१५	१५	१५
२	गु.	१०	२४	५६	४७	९	२६	४०	१०	४७	११	१०	२४	२७	५४	६६	२५	२	२१	२१	५०	४	११	१०	१६	३७	३३	७४	५८	११	६	२०	५८	६	५०	१०	१५	१२	४
३	शु.	११	८	३६	१२	९	२७	२७	२१	४७	१३	१०	२५	३४	१९	४५	१७	२	२१	१७	३९	४	२	१०	१७	५२	३१	७४	५७	११	६	२७	४८	६	५२	१०	१५	८	५३
४	श.	११	२२	२६	५०	९	२८	१४	३४	४७	१३	१०	२६	१९	३६	३५	४३	२	२१	१३	३७	३	५३	१०	१९	७	२८	७४	५५	११	६	३४	४०	६	५५	१०	१५	५	४२
५	र.	०	६	२६	४१	९	२९	१	४७	४७	१४	१०	२७	५	१९	२९	३१	२	२१	९	४४	३	४७	१०	२०	२२	२३	७४	५४	११	६	४१	३५	६	५६	१०	१५	२	३१
६	सो.	०	२०	३०	१३	९	२९	४९	१	४७	१४	१०	२७	३४	५०	२६	१९	२	२१	५	५७	३	३९	१०	२१	३७	१७	७४	५४	११	६	४८	३१	६	५६	१०	१४	५९	२०
७	मं.	१	४	३८	३९	१०	०	३६	१५	४७	१४	१०	२८	१	९	११	४	२	२१	२	१८	३	१९	१०	२२	५२	११	७४	५१	११	६	५५	२७	६	५८	१०	१४	५६	९
९	बु.	१	१८	४८	११	१०	१	२३	२९	४७	१४	१०	२८	१२	१३	६व	१३	२	२०	५८	५९	२	५५	१०	२४	७	२	७४	५०	११	७	२	२५	७	१	१०	१४	५२	५८
१०	गु.	२	२	५६	४७	१०	२	१०	४३	४७	१४	१०	२८	६	०	१०	२४	२	२०	५६	४	२	३१	१०	२५	२१	५२	७४	५०	११	७	९	२६	७	३	१०	१४	४९	४७
११	शु.	२	१७	१	१९	१०	२	५७	५७	४७	१४	१०	२७	५५	३६	१५	३५	२	२०	५३	३३	२	१०	१०	२६	३६	४२	७४	४८	११	७	१६	२९	७	६	१०	१४	४६	३६
१२	श.	३	१	१	५६	१०	३	४५	११	४७	१४	१०	२७	४०	१	१७	२१	२	२०	५१	२३	१	५१	१०	२७	५१	३०	७४	४७	११	७	२३	३५	७	६	१०	१४	४३	२५
१३	र.	३	१४	५२	१५	१०	४	३२	२५	४७	१५	१०	२७	२२	४०	२०	१८	२	२०	४९	३२	१	२५	१०	२९	६	१७	७४	४७	११	७	३०	४१	७	८	१०	१४	४०	१४
१४	सो.	३	२९	२३	३९	१०	५	१९	४०	४७	१५	१०	२७	२	२२	२५	३१	२	२०	४८	७	१	७	११	०	२१	४	७४	४७	११	७	३७	४९	७	११	१०	१४	३७	३
१५	मं.	४	१२	५१	१०	१०	६	६	५५	४७	१५	१०	२६	३६	५१	२९	४९	२	२०	४७	०	०	५२	११	१	३५	५१	७४	४४	११	७	४५	०	७	१३	१०	१४	३३	५२

पं.४५ फाल्गुन शुक्ल ७ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४४ अयनांशाः २४/१२/२४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	१०	१०	२	१०	११	१०	४
११	४	०	२८	२१	२२	६	१४	१४
४	३८	३६	१	२	५२	५५	५६	५६
११	३९	१५	९	१८	११	२७	९	९
६०	८४८	४७	११	३/११	७४	६	३	३
२९	५०	१४	४	व	५१	५८	११	११

भौमादीनां चारः

भौमः-धनिष्ठायां मकरे ६ सोमतः कुम्भे दिवा १२।३० वादने। १५भौमतः शतभे रात्रि २।३० वादने। बुधः-कुम्भे ९ बुधतः वक्री। गुरुः-(वक्री) पुनर्भे मिथुने। शुक्रः-कुम्भ राशौ १३ रवितः मीन राशौ रात्रि १।१० वादने। शनिः-४ शनितः उ.भा. २ चरणे रात्रि २।२० वादने। राहुः-शतभे ३ चरणे केतु-पू.फा.१ चरणे।

फाल्गुन शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६सो. घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	१२श. घं.	मि.	१३र घं.	मि.	१४सो घं.	मि.	१५मं. घं.	मि.
कुम्भ	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	६	७	२	६	५८
मीन	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३४	८	३०	८	२६
मेष	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४
वृष	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१
मिथुन	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१९	२	१५
कर्क	५	२३	५	१९	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
सिंह	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६
कन्या	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९
तुला	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५
वृश्चिक	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२
धनु	४	२८	४	२४	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७
मकर	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२७	५	२३

पं.४६ फाल्गुन शुक्ल१५ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ५१ अयनांशाः २४/१२/२५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	१०	१०	२	११	११	१०	४
१८	१२	६	२६	२०	१	७	१४	१४
६	५१	६	३६	४७	३५	४५	३३	३३
५५	१०	५५	५१	०	५१	०	५२	५२
६०	७९२	४७	२९	०	७४	७	३	३
१६	२५	१५	४९ व	५२	४४	१३	११	११

(क) ३८।९ (रा.९।३९) या.। बुध-भद्रा सिद्धयोग: २६।४७ (सा.५।६)उ.। (ग) रवियोग: ३३।२८ (रा.७।४४) या०.। यायि (मुद्दई) जयद् योग:१७।५३ (दि.१।३०) उ. ३३।२८ (रा.७।४४) या.। (घ) २।४ (प्रात: ७।९) उ. ५४।६ (रा.शे.४।४७) या.। होलाष्टकारम्भः। होलाष्टके वर्जितः "विपाशे रावतीतीरे शुतुद्रयाश्च त्रिपुष्करे विवाहादि शुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम्।' स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योग: २।४ (प्रात: ७।९) उ. २२।३२ (दि.३।२०) या.। (ङ) विश्वनाथ अबीरेण शिवार्चनम् श्रृंगारोत्सवः शोभायात्रा। सर्वार्थसिद्धियोग: १०।३२ (दि.१०।३०) उ.। रवियोग: १०।३२ (दि.१०।३०) या.। (छ) दहन मुहूर्त्तः (रात्रि ११।५३ वादनात्परं १२।५० वादनम् यावत्) होलिका दहनं। ढुण्ढा राक्षसी पूजनम् तद्दहनं च। **"ओं होलिकायै नमः"** इति मन्त्रेण यथोपचारैः सम्पूजयेत्। हुताशनी जन्म १५।

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ बुधे**–शतभिषायां गर्भाधानं (रात्रौ), अन्नप्राशनं, **चौलमुण्डनं ल.३** (ति.दा.) विद्यारम्भः, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः **आ.उपनयनं ल.३ द्विरागमनं ल.३** दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं धान्यरोपणं वृक्षरोपणं जलयन्त्र कर्म सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः, नूतनवध्वा पाककर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि २ गुरौ**–पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **उपनयनं ल.३ वरवरणं-कन्यावरणं** दीक्षाग्रहणं धान्यच्छेदनं धान्यरोपणं चूल्ही स्थापनं जलयंत्र कर्म मुकदमाकार्यं भूमिक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा रात्रि ९।२३ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे गर्भाधानं **वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.७**। **तिथि ३ शुक्रे**–उत्तराभाद्रपदे रिक्ता दिवा ३।६ वादनात्पूर्व पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **उपनयनं ल.२ वा ३ वरवरणं कन्या वरणं वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.३** विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं इक्षुवपनं चूल्ही स्थापनं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा शलाशय वाटिकारम्भः ल.२ वा ३, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ४ शनौ**–रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। दिवा १।३० वादनात्परं रेवत्यां कृष्ण वस्त्र धारणं, शस्त्रघटनं, इष्टिका निर्माणं, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ५ रवौ**–अश्विन्यां प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **उपनयनं ल.३** विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं शस्त्रधारणं, दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म, सर्वदेव प्रतिष्ठा वाहन क्रयः अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ सोमे**–भरण्यां धान्यच्छेदनं, सप्तम्यां शय्यासनाद्युपभोगं, मुकदमा कार्यं। **तिथि ७/८ भौमे**–भद्रा दिवा प्रातः ७।९ वादनात्पूर्व कृत्तिकायां इष्टिका दहनं शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं भद्रा सायं ५।३३ वादनात्परं रोहिण्यां प्रसूति स्नानं (ति.दा.) लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं पूर्व-दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ बुधे**–रोहिण्यां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० गुरौ**–दिवा १२।० वादनम् यावत् मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं*

* अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं** विद्यारम्भ-**उपनयनं ल.१२ वा २ वरवरणं कन्यावरण-वधूप्रवेश-द्विरागमनं ल.१२ वा २**, विपणिव्यापार हलप्रवहण, इक्षुवपनं, सेवारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं, भूमिक्रयः, **गृहारम्भः-गृहप्रवेश ल.१२ वा २** (भू.सु.), सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशय-वाटिकारम्भः वाहनक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ शुक्रे**–भद्रा दिवा ११।३ वादनात्पूर्व आर्द्रायाम्- पुनर्वसौ नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध **चौलमुण्डनं** अक्षरारम्भः विद्यारम्भ-**उपनयनं ल.१ वा २, द्विरागमनं ल.२** दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं, इक्षुवपनं शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, भूमिक्रयः सर्वदेवप्रतिष्ठा औषधिसेवनं वाहनक्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १२ शनौ**–पुनर्वसौ पुष्ये नीलमादि रत्न धारणं, इष्टिका निर्माणं, पुष्ये-**गृहारम्भः गृहप्रवेशः ल.२** (भू.सु.) सर्वदेवप्रतिष्ठा शलाशयवाटिकारम्भः ल.२ दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ रवौ**–पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः विद्यारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं विपणिव्यापारः शल्यकर्म, आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं, सर्वदेव प्रतिष्ठा ल.१२दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा ८।७ वादनात्परं श्लेषायां, जलयन्त्र कर्म मुकदमाकार्य शस्त्रघटनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि १४ सोमे**–रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १५ भौमे**–दिवा ७।७ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूति स्नानं शस्त्रधारणं उग्रकर्माचरणं।

फलम्– अष्टमी तिथि का क्षय हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। चन्द्रदर्शन के फल में दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुओं का भाव चढ़ जायेगा। पुत्र की कामना से किया जाने वाला **पयोव्रत** १८ फरवरी से प्रारम्भ होकर आगामी १२ दिन तक चलेगा। २४ फरवरी मंगलवार से **होलाष्टक** प्रारम्भ हो जायेगा। स्मरण रखना चाहिए कि होलाष्टक में विपाशा एवं रावतीशुतुद्र तथा त्रिपुष्कर क्षेत्र में ही विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित रहते हैं न कि पूरे देश में। होलाष्टक से प्रभावित क्षेत्र के अन्तर्गत-लुधियाना, धवलपुर, फिरोजपुर, गुरदासपुर, होशियापुर, कांगड़ा, कपूरथला एवं इसके समीप के ही स्थान आते हैं। इसके अलावा पूरे भारत में सर्वत्र विवाहादि शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं लगता है। **फागुदशमी** २६ फरवरी गुरुवार को है एवं आज से ही ब्रजभूमि की **लट्ठमार होली** प्रारम्भ हो जायेगी। यह होली अपनी अनूठी शैली के लिए विश्वविख्यात है। **आमलकी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए २७ फरवरी शुक्रवार को है और इसी को रंगभरी एकादशी भी कहते हैं। काशी वासी इस एकादशी को उत्सव रूप में मनाते हैं। ऐसा माना गया है कि आज ही के दिन भोले बाबा माता गौरा का गौना कराकर काशी लाये हैं। इस विश्वास एवं परम्परा को मानते हुए रजत पालकी में विराजित गौरा-पार्वती के विग्रह का पूजन कर काशी वासी अबीर गुलाल उड़ाते हुए भक्ति भाव में सराबोर होकर निहाल हो जाते हैं। **प्रदोष का व्रत** १ मार्च रविवार को किया जायेगा। व्रत के लिए पूर्णिमा का मान २ फरवरी सोमवार को होगा एवं आज ही पूर्णिमा तिथि सायं ५।१८ बजे से प्रारम्भ हो जायेगी तथा इसी समय अर्थात् सायं ५।१८ बजे से भद्रा भी लग जायेगी जो रात शेष ४।५६ बजे तक ० रहेगी। इस वर्ष भद्रा मुख का परित्याग कर भद्रा पुच्छ में रात १२।५० बजे के पूर्व **होलिका दहन** का मुहूर्त्त निकाला गया है। अत: अर्ध रात्रि के आसन्न '**ॐ होलिकायै नमः**' इस मंत्र का उच्चारण करते हुए शास्त्रीय विधि से **होलिका दहन** किया जायेगा। **स्नान दान की पूर्णिमा** ३ मार्च मंगलवार को होगी। ३ मार्च मंगलवार को **ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** लगेगा अत: चन्द्र ग्रहण के मोक्ष के उपरान्त काशी में चतुर्षष्ठी देवी (चौसट्ठी देवी) की यात्रा दर्शन-पूजन एवं काशी की अपनी परम्परा के अनुसार रंग गुलाल चढ़ाया जायेगा। **शतभिषा नक्षत्र का सूर्य** १९ फरवरी गुरुवार को रात ९।५४ बज से आवेगा। सरसों, सन, कपड़ा, नील, तेल, हींग, जायफल, दाख सोंठ का भाव चढ़ जायेगा। चन्द्रग्रहण का फल अनिष्टकारक है।

राशिफल

मेष-	वित्ताप्तिः
वृष-	कर्मसिद्धिः
मिथुन-	पापबुद्धिः
कर्क-	रोगभयम्
सिंह-	गमनम्
कन्या-	रिपुनाशः
तुला-	दैन्यम्
वृश्चिक-	माननाशः
धनु-	सुखं श्रीः
मकर-	भयम्
कुम्भ-	स्थान हानिः
मीन-	द्रव्यनाशः

श्रीशुभ संवत् २०८२ शाके १९४७ चैत्र कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिर ऋतुः मीनाकर्त बसन्त ऋतुः।
दि.४ - १९ मार्च सन् २०२६ ई. (रा.फाल्गुन १३ - २८)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
२८	५५	१	बुध.	२५	६	दिन	४	५	पूर्वाफाल्गु.	२	३९	दिन	७	१७	धृति	६	१६	दिन	८	४३	कौ	२५	६	तै	५५	२३	स्थिर	४	१	१९	१३	कन्या	१८	५	६	१३	५	४७	६	४१	१०	१९	७	११	६०	१४	+	१०	६	५६
२९	५९	२	गुरु	२५	४१	दिन	४	२८	उत्तराफा.	४	२२	दिन	७	५७	शूल	३	३१	दिन	७	३७	गर	२५	४१	व	५७	११	मातंग	५	२	२०	१४				६	१२	५	४८	६	१८	१०	२०	७	२४	६०	१२	+	१०	७	५२
२९	२	३	शुक्र	२७	४१	सायं	५	१६	हस्त	७	१७	दिन	९	७	गण्ड	१	४८	प्रातः	६	५५	वि	२७	४१	बव	५८	१२	अमृत	६	३	२१	१५	तुला	३९	२१	६	१२	५	४८	५	५४	१०	२१	७	३६	६०	९	+	९	८	४६
२९	६	४	शनि.	३०	४३	सायं	६	२८	चित्रा	११	२४	दिन	१०	४५	वृद्धि	१	०	प्रातः	६	३५	बा	३०	४३	कौ	६०	०	काण	७	४	२२	१६				६	११	५	४९	५	३१	१०	२२	७	४५	६०	७	+	९	९	४१
२९	१०	५	रवि.	३५	४४	रात	८	२८	स्वाती	१६	३६	दिन	१२	४८	ध्रुव	१	४	प्रातः	६	३५	कौ	३	१३	तै	३५	४४	लुम्बक	८	५	२३	१७				६	१०	५	५०	५	८	१०	२३	७	५२	६०	५	+	९	१०	३६
२९	१४	६	सोम.	३९	४१	रात	१०	१	विशाखा	२२	३५	दिन	३	११	व्याघात	१	५२	प्रातः	६	५४	गर	७	४२	व	३९	४१	मित्र	९	६	२४	१८	वृश्चिक	६	६	६	९	५	५१	४	४४	१०	२४	७	५७	६०	३	+	९	११	३३
२९	१७	७	मंगल	४५	९	रात	१२	१३	अनुराधा	२९	४	सायं	५	४७	हर्षण	३	७	दिन	७	२३	वि	१२	२५	बव	४५	९	वज्र	१०	७	२५	१९				६	९	५	५१	४	२१	१०	२५	८	०	६०	१	+	९	१२	२८
२९	२१	८	बुध.	५०	२४	रात	२	१८	ज्येष्ठा	३५	४०	रात	८	२४	वज्र	४	३८	दिन	८	०	बा	१७	४६	कौ	५०	२४	ध्वांक्ष	११	८	२६	२०	धनु	३५	४०	६	८	५	५२	३	५७	१०	२६	८	१	५९	५९	+	९	१	२२
२९	२५	९	गुरु	५५	१३	रात	४	१२	मूल	४१	५१	रात	१०	५१	सिद्धि	६	०	दिन	८	३१	ते	२२	४९	गर	५५	१३	धूम्र	१२	९	२७	२१				६	७	५	५३	३	३४	१०	२७	८	०	५९	५७	+	९	२	१२
२९	२८	१०	शुक्र	५९	१८	रात	५	४९	पूर्वाषाढ़ा	४७	२३	रात	१	३	व्यतिपात	६	५९	दिन	८	५४	व	२७	१५	वि	५९	१८	प्रवर्धमान	१३	१०	२८	२२				६	६	५	५४	३	१०	१०	२८	७	५७	५९	५५	+	९	२	५८
२९	३२	११	शनि.	६०	०	स	म	स्त	उत्तराषाढ़ा	५१	५५	रात	२	५२	वरीयान	७	१९	दिन	९	०	बव	३०	४४	बा	६०	०	राक्षस	१४	११	२९	२३	मकर	३	३१	६	६	५	५४	२	४७	१०	२९	७	५२	५९	५२	+	८	३	४०
२९	३६	११	रवि.	२	११	दिन	६	५७	श्रवण	५५	२१	रात	४	१३	परिघ	६	४६	दिन	८	४७	बा	२	११	कौ	३३	६	गद	१५	१२	१	२४				६	५	५	५५	२	२३	११	०	७	४४	५९	५०	+	८	४	१८
२९	४०	१२	सोम	४	२	दिन	७	४१	धनिष्ठा	५७	१७	रात	५	३	शिव	५	२३	दिन	८	१४	ते	४	२	गर	३४	१५	शुभ	१६	१३	२	२५	कुंभ	२६	२४	६	४	५	५६	१	५९	११	१	७	३४	५९	४८	+	७	४	५३
२९	४३	१३	मंगल	४	२९	दिन	७	५१	शतभिषा	५८	१९	रात	५	२३	सिद्ध साध्य	२ ५६	५७ ३३	प्रात	७ ५	१४ ५१	व	४	२९	वि	३४	४	मृत्यु	१७	१४	३	२६				६	३	५	५७	१	३५	११	२	७	२२	५९	४६	+	७	५	२७
२९	४७	१४	बुध.	३	३९	दिन	७	३९	पूर्वाभाद्र	५८	०	रात	५	१५	शुभ	५५	३	रात	४	४	श	३	३९	च	३२	३७	पद्म	१८	१५	४	२७	मीन	४३	४	६	३	५	५७	१	१२	११	३	७	८	५९	४४	+	७	६	०
२९	५१	३० १	गुरु.	१ ५६	३६ ५१	प्रातः	६ ८	४० २४	उत्तराभाद्र	५६	३५	रात	४	४०	शुक्ल	४९	४८	रात	१	५७	ना	१	३६	किं बव	२९ ५६	१३ ५१	छत्र	१९	१६	५	२८				६	२	५	५८	०	४८	११	४	६	५२	५९	४१	+	६	+	+

कन्यराशिः दिवा १।२७ वादने। फसली चैत्र मासारम्भः। सर्वत्र होलिकोत्सव रंगोत्सवः (होली)। धुरेड्डी, छारंडी, फाग १ बसन्तोत्सवः, होलिका विभूतिधारणं, धूलिवन्दनम्(क)

भद्रा ५७।११ (रा.५।४) उ. (पाताले)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २५।४१ (दि.४।२८) उ.। (ख) छत्रपति शिवाजी जयन्ती ३।

तुलाराशिः रात ७।५६ वादने। भद्रा २७।४१ (सा.५।१६) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदये (रा.८।४६) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। कल्पादिः ३। प्राचीनमतानुसारेण(ख)

शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ३०।४३ (सा.६।२८) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३०।४३ (सा.६।२८) उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ११।२४ (दि.१०।४५) उ.।

रंग पंचमी ५। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १६।३६ (दि.१२।४८) या.। (ग) (रा.१०।१) उ.। यमघंटयोगः २२।३५ (दि.३।११) या.।

वृश्चिकराशिः दिवा ८।३५ वादने। भद्रा ३९।४१ (रा.१०।१) उ. (स्वर्गे)। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।३५ (दि.३।११) उ.। रवियोगः २२।३५ (दि.३।११) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३९।४१(ग)

भद्रा १२।२५ (दि.११।७) या.। रवियोगः २९।४ (सा.५।४७) या.।भौमे जया सिद्धयोगः ४५।९ (रा.१२।१३) उ.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ४५।९ (रा.१२।१३) उ.। **पश्चिम दिशायाम्(घ)**

धनुराशिः रात्रि ८।२४ वादने। **श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्।** पर्युषितान्नपानादिकमत्र विहितम्। **बुधाष्टमी पर्वः** सूर्यग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। यमघंटयोगः ३५।४० (रा.८।२४) उ.।

गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ५५।१३ (रा.४।१२) उ.। मृत्युबाणः ५२।२० (रा.३।३)उ.। **(घ) शनि अस्तः। वृद्ध अंगारक (बुढ़वा मंगल) पर्वः।** काशीस्थ लौकिक पर्वः संगीत आदि महोत्सवः।

भद्रा २७।१५ (सा.५।०) उ. ५९।१८ (रा.शे. ५।४९) या. (पाताले)। मृत्युबाणः ५२।३० (रा.३।६) या.।

मकरराशिः दिवा७।३०वादने।⊙**सं.मीन राशौ रविः**५२।३२(रा.३।७)। मु.३० **समा समताकरम्।** परदिने पुण्यकालः पराः १६ घट्यः पुण्याः। गोऽन्नदानं गोदावर्याम् स्नानम्। **खरमासारम्भः।**(ङ)

पाप मोचनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। सौर चैत्र मासारम्भः। शुभाशुभे द्वयगुण्यकरः द्विपुष्करयोगः ५५।२१ (रा.४।१३) उ.। **(च)** अत्र सोपवासं केदार कुण्डोदक पानम्।

कुम्भराशिः दिवा ४।३८ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। **सोम प्रदोष व्रतम् १२।** पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४।२ (दि.७।४१) उ. ५७।२७ (रा.शे.५।३) या.।

भद्रा ४।२९ (दि.७।५१) उ. ३४।४ (रा.७।४१) या. (मर्त्ये)। **मासशिवरात्रि व्रतम् १३। वारुणी पर्व योगः ४।२९ (दि.७।५१) या.। (त्रयोदशी-शतभिषा योगे)।**

मीनराशिः रात्रि ११।१७ वादने। **श्राद्धादौ अमा ३०। ⊙ उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे रविः** १३।५ (दि.११।१७)। काम महोत्सवः १४। अद्य शिवसन्निधो गंगास्नानम् प्रेतत्व मुक्तये। **(च)**

स्नानदानादौ अमा३०पुण्यतमा। अनुदया प्रतिपदायां अद्यैव चान्द्र नवसंत्सवर वसन्त नवरात्रारम्भः। शैलपुत्री तथा च नवगौरी यात्रा क्रमेण मुख निर्मालिका गौरी दर्शन(छ)

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ बुधे–दिवा ७।१७ वादनात्परं उ.फा. मृत्युबाणः। **तिथि २ गुरौ**–हस्त नक्षत्रे शनिवेधः। **तिथि ३ शुक्रे**-हस्त नक्षत्रे शनिवेधः भद्रा व्याप्तिश्च। **तिथि ४ शनौ**–दिवा १०।४५ वादनात्परं स्वात्यां भौमवेधः। **तिथि ५ रवौ**-स्वात्यां दिवा १२।४८ वादनम् यावत् भौमवेधः। **तिथि ६ सोमे**-दिवा ३।११ वादनात्परं अनुराधायां रेखा ९ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६।। वा लग्नं७इ.५ ग्र.व.वि.१३ (रात्रि१०।१वादनात्परं भद्राव्याप्तिः)। **तिथि ७ भौमे**–भद्रा दिवा ११।७ वादनात्परं अनुराधायां रेखा ९ दिवा लग्नं ३ वा ४ पंचेष्टा भावः। **तिथि ८ बुधे**–रात्रि ८।२४ वादनात्परं मूले रेखा ८ लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।। वा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०। **तिथि ९ गुरौ**–मूले रेखा ८ दिवा ल.१ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा ल.गोधूलि। **तिथि १० शुक्रे**–रात्रि १।३ वादनात्परं उ.षा. भद्रा मृत्युबाण व्याप्तिः। **तिथि ११ शनौ**–उ.षा.रेखा ७ दिवा ल.१ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा ल.९ इष्टाः६ ग्र.व.वि.१५।। **तत्परं मीनार्कः खरमासः।**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ बु.	४	२६	६	१७	१०	६	५४	१०	४७	१५	१०	२६	७	२	३४	४२	२	२०	४६	८	०	४५	११	२	५०	३५	७४	४२	११	७	५२	१३	७	१५	१०	१४	३०	४२
२ गु.	५	९	६	४२	१०	७	४१	२५	४७	१५	१०	२५	३२	२०	५०	३३	२	२०	४५	२३	०	३४	११	४	५	१७	७४	४०	११	७	५९	२८	७	१५	१०	१४	२७	३१
३ शु.	५	२१	५१	३८	१०	८	२८	४०	४७	१५	१०	२४	४१	४७	५५	१२	२	२०	४४	४९	०	२६	११	५	१९	५७	७४	३९	११	८	६	४३	७	१८	१०	१४	२४	२०
४ श.	६	३	२२	४९	१०	९	१५	५५	४७	१४	१०	२३	४६	३५	६०	३८	२	२०	४४	२३	०	२०	११	६	३४	३६	७४	३७	११	८	१४	१	७	१८	१०	१४	२१	१०
५ र.	६	१६	४०	१८	१०	१०	३	९	४७	१३	१०	२२	४५	५७	६७	५०	२	२०	४४	३	०	१५	११	७	४९	१३	७४	३६	११	८	२१	१९	७	२०	१०	१४	१७	५९
६ सो.	६	२८	४८	५७	१०	१०	५०	२२	४७	१३	१०	२१	३८	७	७२	४५	२	२०	४३	४८	०	५	११	९	३	४९	७४	३६	११	८	२८	३९	७	२०	१०	१४	१४	४८
७ मं.	७	१०	५०	५१	१०	११	३७	३५	४७	१३	१०	२०	२५	२२	६९	१६	२	२०	४३	४३	०मा	७	११	१०	१८	२५	७४	३३	११	८	३५	५९	७	२१	१०	१४	११	३७
८ बु.	७	२२	५१	१४	१०	१२	२४	४८	४७	१३	१०	१९	१६	६	६२	२६	२	२०	४४	५०	०	१५	११	११	३२	५८	७४	३२	११	८	४३	२०	७	२१	१०	१४	८	२६
९ गु.	८	४	५७	३४	१०	१३	१२	१	४७	१३	१०	१८	१३	४०	६०	२३	२	२०	४५	५	०	२३	११	१२	४७	३०	७४	३०	११	८	५०	४१	७	२१	१०	१४	५	१५
१० शु.	८	१७	१४	२१	१०	१३	५९	१४	४७	१३	१०	१७	१३	१७	५०	३५	२	२०	४५	२८	०	३१	११	१४	१	०	७४	२९	११	८	५८	२	७	२१	१०	१४	२	४
११ श.	८	२९	१०	२०	१०	१४	४६	२७	४७	११	१०	१६	२२	४२	४२	३२	२	२०	४५	५९	०	३७	११	१५	१५	२९	७४	२७	११	८	५	२३	७	२३	१०	१३	५८	५३
११ र.	९	११	५१	५६	१०	१५	३३	३८	४७	११	१०	१५	४०	१०	३०	८	२	२०	४६	३६	०	४२	११	१६	२९	५६	७४	२६	११	९	१२	४६	७	२३	१०	१३	५५	४२
१२ सो.	९	२४	४६	२९	१०	१६	२०	४९	४७	११	१०	१५	१०	२	२६	५७	२	२०	४७	१८	०	४९	११	१७	४४	२२	७४	२४	११	९	२०	९	७	२६	१०	१३	५२	३१
१३ मं.	१०	७	५६	१३	१०	१७	८	०	४७	११	१०	१४	४३	५	२०	५	२	२०	४८	७	०	५४	११	१८	५८	४६	७४	२३	११	९	२७	३५	७	२६	१०	१३	४९	२०
१४ बु.	१०	२०	२०	४४	१०	१७	५५	११	४७	१०	१०	१४	२३	०	१५	४४	२	२०	४९	१	०	५८	११	२०	१३	९	७४	२१	११	९	३५	१	७	२६	१०	१३	४६	९
३० गु.	११	३	५८	१५	१०	१८	४२	२१	४७	१०	१०	१४	७	२६	८	३१	२	२०	४९	५९	१	५	११	२१	२७	३०	७४	२१	११	९	४२	२७	७	२६	१०	१३	४३	५८

फलम्– शास्त्र का नियम है कि चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को ही **रंग की होली** धुरेड्डी, छारंडी, धूलिवन्दन मनाया जाय अतः पूरे देश में रंग की **होली का प्रसिद्ध पर्व ४ मार्च** बुधवार को मनाया जायेगा। आज होलिका भस्म को मस्तक पर स्पर्श कराकर आगामी संवत्सर की कुशलता की मंगल कामना की जायेगी। वास्तव में यह पर्व आपसी सद्भाव के उन्नयन एवं मनोविकारों के शमन का पर्व है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान ६ मार्च शुक्रवार को होगा। **चन्द्रोदय रात ८।४६ बजे** चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **रंग पंचमी** का पर्व ८ मार्च रविवार को होगा। काशी का **लौकिक पर्व वृद्ध अङ्गारक (बुढ़वा मंगल)** १० मार्च को काशी की प्राचीन परम्परा के अनुसार मनाया जायेगा। यह एक काशी का सांस्कृतिक पर्व है। **श्री शीतलाष्टमी का व्रत** ११ मार्च बुधवार को किया जायेगा। इसमें बासी पक्वान्न प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जाता है। **पाप मोचनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १५ मार्च रविवार को होगा। पुत्र की कामना से **सोम प्रदोष व्रत** १६ मार्च को किया जायेगा। **मास शिवरात्रि का व्रत** एवं वारुणी पर्वयोग १७ मार्च मंगलवार को है। चैत्र कृष्ण चतुर्दशी १८ मार्च बुधवार को शिव सान्निध्य में गंगा स्नान करने से प्रेत बाधाओं से मुक्ति मिलती है। आज काशी के केदार कुण्ड का जल ग्रहण करना अत्यन्त पुण्यफल कारक माना जाता है। **श्राद्ध के लिये अमावस्या** का मान १८ मार्च बुधवार को होगा। **स्नान दान की अमावस्या** १९ मार्च गुरुवार को होगी और इसी के साथ संवत् २०८२ की समाप्ति भी हो जायेगी। इस वर्ष एक विशेष परिस्थिति बन रही है कि चैत्र कृष्ण अमावस्या प्रातः ६।४० बजे तक है। इसके बाद प्रतिपदा (अगले ●

पं.४७ चैत्र कृष्ण ८ बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ५९
अयनांशाः २४/१२/२६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१०	२	११	११	१०	४
२६	२२	१२	१९	२०	११	८	१४	१४
८	५१	२४	१६	४४	३२	४३	८	८
१	१४	४८	६	५०	५८	२०	२६	२६
५९	७४२	४७	६२	०	७४	७	३	३
५९	५६	१३	२६ व	५५ मा	३२	२१	११	११

भौमादीनां चारः

भौमः-शतभिषायां कुम्भ राशौ। **बुधः**-(वक्री) कुम्भराशौ। **गुरुः**-(वक्री) पुनर्वसु मिथुने ७ **भौमतः मार्गी।** **शुक्रः**-मीन राशौ। **शनिः**-उ.भा.२ चरणे मीनराशौ। **राहुः**-शतभिषायां ३ चरणे। **केतुश्च**-पूर्वाफाल्गु.१ चरणे।

चैत्र कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१बु. घं.	मि.	२गु. घं.	मि.	३शु. घं.	मि.	४श. घं.	मि.	५र. घं.	मि.	६सो. घं.	मि.	७मं. घं.	मि.	८बु. घं.	मि.	९गु. घं.	मि.	१०शु. घं.	मि.	११श. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	११र. घं.	मि.	१२सो घं.	मि.	१३मं. घं.	मि.	१४बु. घं.	मि.	३०गु. घं.	मि.
कुम्भ	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	मीन	७	३८	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३
मीन	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	मेष	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१
मेष	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	वृष	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८
वृष	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	मिथुन	१	२७	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२
मिथुन	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	कर्क	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९
कर्क	४	२८	४	२४	४	२०	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	सिंह	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
सिंह	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	कन्या	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६
कन्या	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	२०	८	१६	तुला	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२
तुला	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	वृश्चिक	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९
वृश्चिक	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	धनु	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४
धनु	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	मकर	४	३५	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०
मकर	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	कुम्भ	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ बुधे–दिवा ७।१७ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां गर्भाधानं, पुंसवन सीमन्तं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशन, **वरवरणं, कन्यावरणं, द्विरागमनं ल. २**, विपणिव्यापार, विक्रय, नववस्त्र धारणं, हलप्रवहण, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, कणमर्दन, धान्यरोपण, धान्यस्थापन, चूल्हीस्थापन, वृक्षारोपण, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयावाटिकारम्भः, नूतन वध्वापकारम्भः, पूरब दिग् यात्रा। **तिथि २ गुरौ**–उ.फा. हस्ते नक्षत्रे गर्भाधानं (रात्रौ) पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशनं, कर्णवेध, कन्यानासिका छेदनं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, **उपनयनं ल.१२ वा २, वरवरणं, कन्यावरणं वधूप्रवेशः, द्विरागमन ल.१२ वा २** विपणिव्यापार, विक्रय, गवां क्रयविक्रय, नववस्त्र धारणं, दीक्षाग्रहणं हलप्रवहण, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापन, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, दतकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा वृक्षारोपणं, जलाशयवाटिकारम्भः, वाहनक्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ शुक्रे**–भद्रा सायं ५।१६ वादनात्परं चित्रायां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ शनौ**–रिक्ता सायं ६।२८ वादनात्परं स्वात्यां नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं पश्चिम दिग्। **तिथि ५ रवौ**–स्वात्यां प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **उपनयनं ल.१२ वा २** वरवरणं कन्यावरणं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म, वाहनक्रयः, दक्षिण दिग् यात्रा दिवा १२।४८ वादनात्परं विशाखायां इष्टिका दहन शस्त्र धारणं। **तिथि ६ सोमे**–विशाखायां गवां क्रय विक्रयः दिवा ३।११ वादनात्परं अनुराधायां आ.प्रसूति स्नानं (ति.दा.) जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (ति.दा.) **वरवरणं-कन्या वरणं वधूप्रवेश ल.गोधूलि** विपणिव्यापारः हलप्रवहणं इक्षुवपनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगः, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयं वाटिकारम्भः ल.गोधूलि. नूतनबध्वापाक कर्म वाहनक्रयः दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ७ भौमे**–भद्रा दिवा ११।७ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं दतकपुत्रग्रहणं, शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं सायं ५।४७ वादनात्परं ज्येष्ठायां उग्रकर्माचरणं। **तिथि ८ बुधे**–ज्येष्ठायां नामकरणं अक्षरारम्भः रात्रि ८।२४ वादनात्परं मूले **द्विरागमनं ल.७। तिथि ९ गुरौ**–मूले रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० शुक्रे**–पूर्वाषाढ़ायां भद्रा सायं ५।० वादनात्पूर्व पुंसवनं सीमन्तः आ.प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **वरवरणं***

पं.४८ चैत्र कृष्ण ३० गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ६७
अयनांशाः २४/१२/२७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१०	१०	२	११	११	१०	४
४	३	१८	१४	२०	२१	९	१३	१३
६	५८	४२	७	४९	२७	४२	४२	४२
५२	१५	२१	१६	५९	३०	२७	५८	५८
५९	८१८	४७	८	१	७४	७	३	३
४१	४२	१०	३९ व	५ मा	२१	२६	११	११

(क) स्वपच स्पर्शम्, रतिकाम महोत्सवः सायं चूत कुसुम प्राशनम्। तैलाभ्यङ्ग स्नानम्। स्वजन मेलनम्, मधुर पेय पानम्, मिष्ठान्न वितरणम्, विविधहास्य विनोद आयोजनम्। 'चैत्रे मासि महाबाहोपुण्या-प्रतिपदा परा। मस्तेस्यां ज्वपच स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्यांदुरितं किंचिन्ताधयोव्याधयोः नृपः।'⊙**पूर्वा भाद्रपद नक्षत्रे रविः** ५४।० (रा.३।४९)। मृत्युबाणः ५३।०(रात्रि ३।१५)या.। **(ङ) बसन्त ऋतु प्रारम्भः।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५१।५५ (रा.२।५२) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५१।५५ (रा.२।५२) या.। **(छ)** पूजनं च। कलशस्थापनम् प्रातः ६।४८ वादनात्परं यावद्दिनम्। ध्वजारोपणम्, पंचांग फल श्रवणम्। वर्षपति पूजनम्। नववर्षोत्सवः। साभ्यंग स्नानम्। **प्रपा (पौसरा)** दानारम्भः। अद्यप्रातः कालात् **सिद्धार्थ** नाम संवत्सरस्य पूजनम् विनियोगञ्च धार्मिक कृत्ये आरम्भ। कल्पादिः १, युगादिः १, गुड़ी पड़वा (मराठा) उगादिः (द.भा.)तेलगु नववर्षारम्भः। वायु परीक्षणम्, मिश्री (शर्करा) युत् निम्ब कोपल प्राशनम् विद्यारोग्यं तिलक व्रतम्।

● संवत्सर की) लग जायेगी जो अगले सूर्योदय से पूर्व ५।२४ बजे तक रहेगी। ऐसी परिस्थिति में शास्त्रीय आदेश के अनुसार १९ मार्च गुरुवार से ही क्षयवती प्रतिपदा में नया संवत्सर २०८३ बासन्तिक नवरात्र प्रारम्भ हो जायेगा। नवरात्र का **कलशस्थापन प्रातः ६।४० बजे** के बाद किसी भी समय किया जायेगा। शैलपुत्री एवं मुखनिर्मालिका गौरी का दर्शन पूजन आज ही किया जायेगा। **'सिद्धार्थ'** नामक नव संवत्सर का विनियोग पूजनादि सभी धार्मिक कृत्य मे किये जायेंगे। देवगुरु **वृहस्पति** इस संवत्सर के राजा होंगे। **पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य** ४ मार्च बुधवार को रात ३।४९ बजे से आवेगा। **मीन राशि की सूर्य संक्रान्ति** १४ मार्च शनिवार को रात ३।७ बजे से आयेगी एवं इसी के साथ **खरमास** प्रारम्भ हो जायेगा। **उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य** १८ मार्च बुधवार को दिन ११।१७ बजे से आयेगा। शुभम्।

***कन्यावरणं** धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं जलयंत्र कर्म मुकदमा कार्य, भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११ शनौ**–उ.षाढ़ायां वधूप्रवेशः ल.२ विपणिव्यापार, बीजवपनं, कृष्णवस्त्र, नीलमादि रत्नधारणं, मकरचन्द्रे दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ११ रवौ**–श्रवणे पुंसवनसीमन्त, लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, इक्षुवपनं, कणमर्दन, श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनम्। **तिथि १२ सोमे**–धनिष्ठायां-गर्भाधान, नामकरणं, अन्नप्राशनं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, विक्रय,आभूषण निर्माणं धारण हलप्रवहणं, इक्षुवपनं, धान्यच्छेदन, धान्यस्थापन, आवेदन पत्रलेखनं, वाहनक्रय, दक्षिण दिग्.यात्रा कुम्भे चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ भौमे**–शतभिषायां-लालवस्त्र धारणं, शल्यकर्म, पश्चिम दिग् दिवा ७।५१ वादनात्परं रिक्ता व्याप्ति। **तत्परम् मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	वित्ताप्तिः
वृष-	धनागमः
मिथुन-	धर्माचरणं
कर्क-	सुख लाभः
सिंह-	कष्टकरं
कन्या-	शोकः
तुला-	शत्रुभयं
वृश्चिक-	पुत्रोन्नति
धनु-	धनागम
मकर-	अर्थागमः
कुम्भ-	धनप्राप्तिः
मीन-	सुखं

सरल संध्या

शरीर पवित्र करने का मंत्र- **ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।**

इस मन्त्र को पढे, कुशा से अपने ऊपर जल छिडक कर शरीर पवित्र करें।

आसन पवित्र करने का मन्त्र-(विनियोगः) ॐपृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

मंत्रः-**ॐपृथ्वीत्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।** (इस मन्त्र से आसन पर जल छिड़कें और नीचे का संकल्प पढ़कर पृथ्वी पर छोड़ देवें)। (संकल्पः) ॐतत्सत् अद्य अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक शुभ पुण्यतिथौ अमुक वासरे स्वकायिक-वाचिक-मानसिक पापक्षायार्थ श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थञ्च प्राप्तः (मध्याह्न वा सायं) सन्ध्योपासनामहं करिष्ये।

आचमन मन्त्रः-ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः।। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोऽजायत।अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।। सूर्याच्चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।। (इस मंत्र से हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें और अपनी रक्षा के लिए गायत्री मन्त्र (ॐभूभुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ) पढ़कर चारो ओर जल छिड़के। तत्पश्चात नीचे लिखे प्राणायाम के विनियोगों को पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ें और प्राणायाम के मन्त्र से प्राणायाम करें)। **(विनियोगः)**- ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।।१।। ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाज गौतमात्रिवसिष्ठ कश्यपा ऋषयोगायत्र्युष्णिगनुष्टब्बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चिते प्राणायामे विनियोगः।।२।। ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः।।३।। ॐ शिरसः प्रजापति ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माग्निवायु सूर्या देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः ।।४।।

संक्षिप्त तर्पण विधिः

संकल्प- अपवित्रः पवित्रो वा इत्यादिमंत्र को पढ़कर शिखा बांधकर संकल्प करें (अक्षत तिल, जौ लेकर) संकल्प में देशकालादि का उच्चारण करने के बाद अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं (वर्माहं-गुप्तोऽहं-दासोऽहं) क्रमशः क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रादिको में जोड़कर) अद्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणंकरिष्ये।

आवाहन मन्त्रः-ब्रह्मादयः सुरा सर्वे, ऋषयः सनकादयः। आगच्छन्तु महाभागाः, ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः।।

१. तर्पणमन्त्र–(सव्य होकर पूर्वाभिमुख होकर कुश अक्षत हाथ में लेकर देवतीर्थ से जल गिरावे)।

देवासुरास्तथा यक्षा, नागा गन्धर्व राक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाःसिद्धाः कूष्माण्डास्तरवःखगाः।।
जलेचरा भूनिलया, वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु, मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।

२. इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अंगोछे को दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख होकर कुशा का मोटक अंगूठे से दबाकर लिखे मन्त्र को पढ़कर पिता आदि का ध्यान करते हुए पितृतीर्थ से तीन-तीन बार जल गिरावे-

तर्पणमन्त्रा- ॐ अमुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकास्तृप्यन्ताम् (३)।

इसके बाद अपसव्य होकर पहले ही जैसे जनेऊ और अंगोछे को दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख होकर मोटक दाहिने अंगूङ्ठे में दबाकर तिल से तर्पण करें।

मन्त्रः-१ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः। तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।। २. येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिमखिलायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।। ३.ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।।४. आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे, मातृमातामहादयः।। ५. अतीतकुलकोटीनां, सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्राह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

इसके बाद अंगोछे को चार तह कर उसमें तिल रखकर अंगोछे को जल से खूब भिगोकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर वस्त्र को निचोड़े -

मंत्र–ये के चास्मत्कुले जाता, अपुत्रा गोत्रिणो मृताः। ते गृहणन्तु मया दत्तं, वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।। इसके बाद भीष्मपितामह का तर्पण जल से करे- मंत्र–भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्धिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। इसके बाद सूर्य को अर्घ्य देकर प्रणाम करे। इति समाप्तम्।

प्रस्तुति- डा.राधाकान्त ओझा
पूर्व ज्योतिषाध्यापक, रणवीर संस्कृत विद्यालय, का.हि.वि.वि.वाराणसी।

अङ्गन्यास मंत्र

(१) ॐ हृदयाय नमः ।(२) ॐ भूः शिरसे स्वाहा। (३) ॐ भुवः शिखायैवषट्।(४) ॐ स्व कवचाय हुम्।(५) भुर्भुवः स्व नेत्राभ्यां वौषट् (६) ॐ भुर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

गायत्री के ध्यान करने का मन्त्र- **ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता।। आदित्यमण्डलस्था चब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।। गायत्री के आवाहन करने का मन्त्र** (विनियोगः)-ॐ तेजोऽसीति देवा ऋषयो शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दः गायत्र्यावाहने विनियोगः। मंत्रः-ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामना मसिप्रिय देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।

गायत्री के उपस्थान (प्रणाम) करने का मन्त्र-(विनियोगः)-गायत्र्यसीति मंत्रस्य विमलऋषिः पंक्तिश्छंदः परमात्मादेवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः। (मंत्रः)- **ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोमा प्रापत।।** इसके बाद प्रातःकाल में पूर्वाभिमुख, मध्याह्न में सूर्याभिमुख और सायंकाल में पश्चिमाभिमुख बैठ,सावधान होकर गायत्री का ध्यानपूर्वक शुद्ध उच्चारण (मन ही मन) करता हुआ जप करे।

गायत्री का जपस्वरुप- (विनियोगः) - ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लवर्णो जपे विनियोगः। ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिग्नुष्टुव् छन्दांस्यग्नि वायव्यादित्या देवता जपे विनियोगः।।२।। ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने जपे विनियोगः।।३।। ***(मंत्रः)-*****ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ॐ ।।** (हमलोग उस सविता सूर्य देवता का ध्यान करते है जो हमलोगों की बुद्धि को प्रकृष्ट प्रेरणा दिया करें।) सन्ध्या समाप्त होने पर ७ बार प्रदक्षिणा करके गायत्री देवी का विसर्जन करना चाहिए। ***प्रदक्षिणा मन्त्रः-*** **यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।** ***विसर्जन मन्त्रः-*****ॐ उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूदेति। ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ।।** *ॐ तत्सदब्रह्मार्पणमस्तु।*

प्राणायाम विधि

स्वस्थचित्त हो, आसन पर बैठ कर प्राणायाम करना चाहिए। उससमय नेत्र बन्द करके मन ही मन मंत्रो का उच्चारण करते हुए पूरक, कुम्भक और रेचक प्राणायाम करें। पहिले नासिका के दाहिने छिद्र को अंगूठे से मूंदकर, बायें छिद्र से धीरे-धीरे स्वाँस खीचते हुए अपने नाभि में नीलकमल के समान श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णु भगवान का ध्यान करतेहुए, प्राणायाम मन्त्र को तीन बार पढ़े। फिर कनिष्ठिका अनामिका, अंगुलियों से बायें छिद्र को भी मूंदकर स्वाँस को रोके रहें और प्राणायाम मंत्र को पूर्ववत् पढ़ते जायें। उस समय हृदय में कमलासन पर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्मा का ध्यान करें। अन्त में अंगूठा हटाकर धीरे-धीरे स्वाँस को बाहर निकाले और ललाट में स्थित श्वेतवर्ण त्रिनेत्र शिवजी का ध्यान करते हुए उसी मन्त्र को पूर्ववत् पढ़ते रहें। इस प्रकार क्रमशः पूरक, कुम्भक और रेचक भेद से तीन प्रकार के प्राणायाम होते हैं।

(प्राणायाम मंत्र) - ॐ भूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

इसके बाद खड़े होकर हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ता हुआ प्रातः काल तथा सायंकाल में तीन चार और मध्याह्न काल में एक बार सूर्य को अर्घ देवें।

(मंत्र) - ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्ध्यं दिवाकर।

अथ स्वप्न विचार

शुभस्वप्न - राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनके दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व, इनपर चढ़ना या दर्शन करना, रक्त से स्नान, रक्त, शय्यादि का ज्वलन स्वशिर का छेदन, अपना मरना, वेदध्वनि श्रवण, रक्तपात, पुष्प दर्शन दर्पण-प्राप्ति, दही, चावल भोजन, जुआ, रण, विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धन ऐश्वर्य तथा सम्मान की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि स्वप्न में फल पुष्प में श्वेत सर्प काट खाये तो निश्चय शीर्घ विशेष धन मिले। स्वपन में बिच्छू या सर्प द्वारा पैर में काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथ में हथकड़ी पैरो में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ जूता खड़ाऊँ तीक्ष्ण तलवार का मिलना, सर्प दिखना अपने पैर के माँस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रो में भोजन करना, शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्य मण्डल का देखना, अपना मरना, देखे तो रोगी पुरुष का रोग नाश और निरोग को लाभ होता है। वगुला, मुर्गी, मोरनी देखना चतुर स्त्री प्राप्ति सूचक है। स्वप्न में रक्त वा मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस चरबी का खाना, विष्टा अपने अंग में लगाना श्वेत चन्दन श्वेत पत्र पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो लाभ हो। नदी में तैरना, या तालाव में तैरकर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्ट निवृत्ति करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना भाग्योदय करता है। राजा गौ ब्राह्मण का प्रसन्न देखना, पर्वत वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हो तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ा पर चढ़कर नदी पार होने पर परदेश गमन होता है। स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है। अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न - लाल वस्त्र पहनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हँस-हँस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना नीम, पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई कपास तेल, लोहा मिलना इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना, किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु या भारी कष्ट को सूचित करता है। सिर के सारे बालों का वा मुख के दाँत का गिरना द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन या किसी वस्तु को टाँग कर ले जाना, द्रव्य हानि या कष्ट करता है। तेलपका गुलगुल ताँवा ताँवे के पैसे मिलना रोग सूचक है। अपनी स्त्री के वस्त्र को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो, हाथ नाक का कटना कीच (पंक) में फँसना ऊंचे गधे भैंस पर चढ़कर तेल मलकर दक्षिण को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्त वस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृ कार्यो का करना भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़े जाकर दक्षिम दिशा में जाना, इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में वह जाना, विना ऋतु के वर्षा का देखना, वाज रीक्ष गीदड़ बिलाव भैंस सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखर का तथा बड़े मंजिल के ध्वज को गिराते देखने अशुभफल वा चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती देव विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ या चिन्ता कारक होता है।

स्वप्न फल कब मिलेगा? - रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में द्वितीय का ८ मास में तृतीय का तीन मास में अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। बहुत बड़ा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है।

अशुभ स्वप्नदोष शांति - दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन, विष्णु सहस्र नाम, गजेन्द्र मोक्ष, व चण्डी पाठ , ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है। दुःस्वप्न निवारण मन्त्रः- "लंकायाः दक्षिणेकोणे कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः। तस्य स्मरण मात्रेण कुस्वप्नों सुस्वप्नो भवेत्।।"

अथ वृष्टिविचारः

आर्द्रादिकपञ्चाकं पू.भा. रेवत्यादिचतुष्टयम्। पूर्वाषाढ़ा चतुष्कञ्ज चन्द्राणि चतुर्दश।।१।। चैत्राणि रविनक्षत्राणि विज्ञेयानि मनीषिभिः।। रवेर्नक्षत्राणि रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, मूल, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद चन्द्र नक्षत्राणि आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी, श्लेषा, मृगशिरा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, पूर्वाभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा, इति सूर्य चन्द्रवर्गे वृष्टि चन्द्रे सूर्यर्क्षगे सति। उभौचंद्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदाभवेत्।. तावेनं यदि सूर्यक्षे तदा वृष्टिर्न जायते।। अथ सद्योवृष्टि विचारः वर्षाप्रश्ने शशिन्यराशिगे लग्नेऽपिवा। केंद्रगे वा शुक्ल पक्षे वाऽतिवृष्टि पापदृष्टे शुभेक्षिते।।१।। अल्पवृष्टि प्रावृट्कालेऽचिरादभवेत्। चन्द्रवत् भार्गवसर्वमेघगुणस्थिते।।२।। प्रावृर्ष्टेदुः क्षिप्रात्सराशिगः शुभ विक्षितः। शुक्रो यदा बुधसमीपगः। तयोर्मध्यगत भानौतदावृष्टि विनाशनः।।४।। पुरतः पृष्टतौ भानौ शुभायदि समीपगाः। तदा वृष्टि प्रकुर्वन्ति नचैते प्रतिलोमगाः।।५।। ग्रहाणामुदयास्ते वा राश्यन्तर्गतेऽपि पक्षतो प्रायो वृष्टिः प्रजायते।।६।। उदयास्तगतः शुक्रोः बुधश्च वृष्टि कारकः। चलत्यंगारके वृष्टि स्त्रियावृष्टिः शनैश्चरे।।७।। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पञ्चात्सञ्चरते गुरु। शुक्रोवास्तमितेर्मंदेवृष्टिःदिवाऽपि जायते।।८।।

वर्षा-विज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	१२	१६	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में जिस दिन वर्षा होवे उसके नीचे लिखे दिन तक जल वृष्टि उत्तम ढंग से न होगी।

उदाहरण - यदि रोहिणी नक्षत्र का सूर्य आने के पाँचवे दिन पानी बरस गया हो तो ३९ दिन तक सुन्दर ढंग से जल वृष्टि न हो सकेगी। जिस दिशा से बादल रोहिणी नक्षत्र में आते हुए दृष्टिगोचर होगा उसी दिशा में जलवृष्टि की आगे न्यूनता रहेगी।

विशिष्टयोगावली

दीर्घायुर्योगाः

१-तृतीयैकादशे चैव नवमे पंचमे भृगुः।सप्तमस्थे यदाजीवो जीवेद्वर्षशतं नरः।।

जन्म कुण्डली में यदि शुक्र लग्न से ३, ११, ९, ५ स्थानों में से किसी एक में हो और सातवें गुरु हो तो मनुष्य सौ वर्ष जीता है।

२-कण्टकस्थो यदा जीव सप्तमस्थोपि भार्गवः।बुधे च लग्नसंप्राप्ते शतं जीवति जातकः।

यदि बृहस्पति कुण्डली में कंटकस्थ १।४।७।१० में हो और शुक्र सप्तम में पड़ा हो, बुध लग्न में हो तो जातक की आयु सौ वर्ष कहिये।

३-लग्ने जीवस्तथा शुक्रः सौम्यश्चाष्टमगो भवेत्।पापाः सर्वे न पश्यन्ति जीवेद्वर्षशतं नरः।।

लग्न में यदि गुरु और शुक्र पड़े हो, आठवें शुभग्रह हों, सब पाप ग्रह से दुष्ट न हों तो बालक की आयु सौ वर्ष जानिये।

४-पूर्णे चन्द्रे शुभे वर्गे भिन्ने वा मित्रवीक्षिते।उच्चत्रिलाभ संस्थे वा पूर्णायुर्जातको भवेत्।।

पूर्ण चन्द्रमा यदि मित्र के घर में हो, मित्र से देखा जाता हो उच्च का हो, या तीसरे अथवा ग्यारहवें स्थान में बैठा हो तो जातक की आयु पूर्ण जानिये।

बालारिष्टयोगाः

१-षष्ठरिष्फाष्टगश्चन्द्रः क्रूरैश्च सह वीक्षितः।जातस्य मृत्युदः यद्यस्त्वष्टवर्षैः शुभेक्षितः।।

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा क्रूरग्रह के साथ या क्रूर दृष्टि युक्त हो ६, ८,१२ घर में बैठा हो तो बालक शीघ्र संसार छोड़ देता है,शुभ ग्रह की दृष्टि होने से उसकी आयु आठ वर्ष होती है।

२-व्यय-शत्रु-गतैः क्रूरैः मृत्युद्रव्यगतैरपि।पापमध्यगते लग्ने सत्यमेव मृतिर्वदेत् ।।

यदि पापग्रह लग्न से ६, १२, ८, २ में हो और लग्न पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक को अल्पायु समझिये।

३-शनैश्चरार्कभौमेषु रिष्फधर्माष्टमेषु च । शुभैरावीक्षमाणेषु यो जातो निधनं गतः।। लग्न से बारहवें शनि, नवें सूर्य और आठवें मंगल होवें और उनको शुभ ग्रह न देखें तो अल्पायु योग होता है।

४-शनिक्षेत्रगतो भानुः भानुक्षेत्रगतः शशी। विंशद्वर्षे वदेन्नाशो रक्षितो यदिशंकरः।।कुण्डली में सूर्य, मकर या कुम्भ का हो और चन्द्रमा सिंह राशि का हो तो बीसवें वर्ष के अन्त में निधन हो जाता है।

५-लग्नस्थितो यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमा।बालस्य तस्यारिष्टं स्याद्रक्षितो यदि शंकरः।। जिसकी कुण्डली में लग्न में राहु केन्द्र में चन्द्रमा हो तो वह जातक किसी भी जप, दान से नहीं बच सकता।

६-चतुर्थे च यदा राहुः केन्द्रषष्ठाष्टगः शशी। दशमेऽब्दे भवेन्मृत्युः सद्योजातो न संशयः।। जिसकी कुण्डली में चौथे राहु रहे तथा केन्द्र, छठवें या आठवें चन्द्रमा हो तो उस जातक की मृत्यु दस वर्ष में हो जाती है।

७-सप्तमस्थो भूमिपुत्रो लग्ने भवति चन्द्रमा। आत्मानं पितरं हन्ति मातरै च न संशयः।। जिस बालक की कुण्डली में सप्तम में मङ्गल और लग्न में चन्द्रमा रहता है वह माता पिता सहित अपना नाश कर देता है।

नोट-लग्न, द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह के होने से बालक को अरिष्ट योग होता है। लग्न लग्नेश पापग्रह के बीच में हो या पापयुक्त हो, सप्तम भां दो पापग्रह के बीच में हो (१) लग्नेश अष्टम में (२) अष्टमेश लग्न में (३) लग्नेश अष्टमेश का योग हो (४) चन्द्रमा लग्न पञ्चम सप्तम अष्टम नवम और द्वादश में पाप युक्त हो (५) सन्ध्या समय का जन्म हो (६) मधयाह्न का जन्म हो तो अरिष्ट समझिये।

पुत्र-भाव-विचारः

१- शुक्रेन्दुवर्गेः सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युते.थ दृष्टे। पापैरयुक्ते बहुपुत्रशाली शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः।। यदि पंचम भाव शुक्र या चन्द्र का वर्ण हो, या इस पर शुक्र, चन्द्र की दृष्टि हो और इसमें पापग्रह न बैठे हो तो उस मनुष्य को बहुत संतान सुख योग होता है। यदि शुक्र और चन्द्र की जगह शनि, मङ्गल का पूर्ववत् योग हो तो वह मनुष्य सन्तानहीन होता है।

२- पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहीनो थवा, पुत्रादष्टमशत्रुरिः फगृहगाः पापाः कुलध्वंसकाः। राहौ नन्दनराशिगे तदधिपे दुःस्थानगे पुत्रहा, पुत्रस्थे तनुपेतनौ सुतपतौ गृह्णाति दत्तात्मजम् ।। यदि लग्न से सप्तमेश पंचम में बैठा हो तो मनुष्य स्त्री-हीन वा पुत्र रहित होगा। पंचम भाव से छठे, आठवें तथा बारहवें यदि पाप ग्रह बैठे हो, तो उसी मनुष्य से परिवार-समाप्त हो जाता है। यदि पंचम भाव में राहु हो या पंचमेश ६,८,१२ वें घर में बैठा हो तो मृतवत्सा योग होता है। यदि लग्नेश पंचम भाव में और पंचमेश लग्न में हो तो दत्तक-पुत्र (गोद) का योग होता है।

३- दशमे शीतगुर्द्यूने भृगुभे पापिनः सुखे। तस्य सन्ततिविच्छेदो भविष्यति न संशयः।। यदि कुण्डली में लग्न से दसवें घर में चन्द्रमा, सातवें शुक्र और पापग्रह चौथे घर मे बैठे हो तो उसे सन्तति विच्छेदयोग होता है।

४- षष्ठाष्टमस्थो लग्नेशः पापयुक्तः सुताधिपः। दृष्टो वा शत्रुनीचस्थैः पुत्रहानि वदेद्बुधः।। यदि लग्नेश छठें या आठवें बैठा हो पंचमेश पापग्रह युक्त हो या शत्रु दृश्य हो तो मतृवत्सा योग होता है।

५- लग्नसप्तमधर्मान्त्यराशिगाः पामखेचराः। सपत्नराशिवर्गस्था वंशविच्छेदकारियाः।। यदि पाप ग्रह १, ७, ९ और १२ वे घर में बैठे हों और वे शत्रु क्षेत्र के हो तो वंशविच्छेद योग जानिये।

पुत्र प्राप्ति समय - लग्नेश, पंचमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उस पर जब गुरु आवे तो पुत्रोत्पत्ति का समय आता है।

दत्तक पुत्र योग-पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेथवा यदि। मन्दिमान्दयुते दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः।। पंचम भाव बुध या शनि की राशि में हो (३,६,१०,११,) बुध शनि से युक्त या दृष्ट हो तो दत्तक पुत्र योग होता है। पुत्र प्राप्ति धर्म करने से होती है। बुध, शुक्र और चन्द्रमा प्रतिबन्धक लों तो शिवजी का अभिषेक कराना चाहिए। बृहस्पति प्रतिबंधक हो तो मन्त्र, तन्त्र औषधि प्रयोग से कष्ट निवारण जानिये। शनि राहु और केतु बाधक हो तो कुलदेवता तथा सन्तान गोपाल की आराधना विहित है। पंचम स्थान में जो राशि हो उसकी संख्या तुल्य हरिवंश का पारायण प्राचीन देवस्थान में वा तुलसी के बीच में पुष्कर प्रादुर्भाव सम्पुटित प्रायश्चित करके स्त्री, पुरुष साथ होकर सुनने से कल्याण होता है। काशी से १७ मील उत्तर बृहत् पंचक्रोशी में श्री मार्कण्डेश्वर महादेव का मन्दिर इसके लिये सिद्ध तथा उपयुक्त स्थान है।

कलत्रभावविचार

१-शत्रुस्थाने यदा भौमः सप्तमे सैहिकासुतः। नैधने भानुपुत्रस्थेत्तस्यभार्या न जीवति।।जिसका कुण्डली छठे मङ्गल, सप्तम में राहु और बारहवें शनि पड़े हो तो उसकी स्त्री नहीं जीती है।

२-जयाधिपे लग्नशत्रुधर्मव्ययगते क्रमात् । एक-द्वि-त्रि-चतुर्भार्या भविन्ति नियतं नृणाम् ।।

यदि सप्तमेश लग्न, छठें, नवें और बारहवे घर में पड़ा हो तो उस व्यक्ति को क्रम से १, २, ३ और ४ स्त्रियों का योग होता है। **नोट**- (क) द्वितीय, सप्तम में पाप ग्रह हों, (ख) द्वितीयेश, सप्तमेश पाप युक्त हो (ग) शुक्र से चौथे, आठवें पाप ग्रह हों (घ) सप्तम घर पर पाप ग्रह की पूरी दृष्टि पड़ती हो (ङ) सप्तमेश अष्टम में और अष्टमेश सप्तम में हो, (च) शुक्र सप्तम में हो (छ) सप्तमेश पाप युक्त ६, ८, १२ में हो (ज) केवल बृहस्पति सप्तम में हो (झ) सन्तान प्रति बाधक योग पड़े हों तो मनुष्य स्त्री सुख से वंचित रहता है। यदि दाहिने हाथ में विवाह रेखायें ऊपर की ओर मुड़ी हो और मोटी हो तो उस मनुष्य का विवाह नहीं होगा।

स्त्री प्राप्ति समय - लग्नेश, सप्तमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उस पर बृहस्पति आ जाय तो स्त्री प्राप्ति का समय हो जाता है।

प्रकारान्तर से विशेष योग

लग्न में सूर्य का सम्बन्ध हो तो राजकार्य करने वाला हो (१) लग्न में पूर्ण चन्द्रमा या शुक्र का सम्बन्ध हो तो भोगी तथा विद्या-जीवी होता है। (२) मंगल का योग हो तो धातु विद्या जाने, अग्नि से जीविका करे (३) बुध का योग हो तो सूत का काम तथा व्यवसाय करता है (४) बृहस्पति का सम्बन्ध हो तो विद्वान् और ज्ञानी हो (५) शुक्र का योग हो तो भी राजकार्य में नियुक्त और दीर्घायु हो (६) शनि हो तो प्रसिद्ध कर्म से जीविका करे (७) राहु हो तो लोहा का व्यापार करे (८)केतु हो तो उत्तम व्यवसायी हो (९) रवि राहु लग्न में हो शुभ दृष्टि न हो तो सर्प का भय हो (१०) गुलिक लग्न में हो पाप दृष्टि हो तो वष का भय हो (११) लग्न में सूर्य का योग या दृष्टि हो तो राज प्रेम हो (१२) दशम में बुध हो तो प्रसिद्ध कर्म करने वाला हो (१३) शुभ ग्रह दशम में हो तो स्थिर हो (१४) रवि दशम में हो केवल बृहस्पति की दृष्टि हो तो गोपालक हो (१५) चतुर्थ में चन्द्रमा और शुक्र का सम्बन्ध हो तो गृह बनाने वाला हो (१६) नवम में शुभ दृष्टि योग हो तो धार्मिक हो। शनि राहु हो तो अपने भृत्य से विरोध करे (१७) लग्न में मंगल शुक्र का सम्बन्ध हो तो परदारा संसक्त हो (१८) सप्तम में शुक्र चन्द्रमा का सम्बन्ध हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी हो (१९) शनि का समन्बध हो तो स्त्री वयोधिका हो (२०) तृतीय में पापग्रह हो तो वीर हो शुभग्रह हो तो कायर हो (२१) तृतीया में षष्ट पाप ग्रह नवम में बृहस्पति हो तो कृषि कारक होता है (२२) द्वादश में शुभग्रह तथा केतु के होने से धार्मिक होता है (२३) नवम पंचम में पापग्रह हो तो मन्त्रज्ञ हो (२४) लग्न में चनद्रमा हो शुक्र का योग या दृष्टि हो तो रसायन जानने वाला हो (२५) चतुर्थ या पंचम में मंगल राहु हो तो क्षय रोग होता है। पाप सम्बन्ध से उदर विकार होता है (२६) लग्न पंचम में और द्वितीय में शुभग्रह का सम्बन्ध हो तो विद्वान होता है। (२७) द्वितीय अष्टम में पाप सम्बन्ध हो चन्द्रमा की दृष्टि हो तो केमद्रुम योग होता है। (२८) एकादश में शुभग्रह या पापग्रह या दृष्टि योग हो तो धनवान् होता है। शुभ सम्बन्ध से उत्तम मार्ग से पाप सम्बन्ध से नीच मार्ग से धन लाभ होता है (२९) द्वादश में अधिक ग्रह योग दृष्टि से अधिक व्यय होता है (३०) सप्तम में राहु केतु के होने से उदर रोग होता है। द्वितीय में केतु के होने से शीघ्र वार्धक्य चिन्ह हो जाते हैं (३१) सप्तम द्वितीय में चन्द्र बुध गुरु और शुक्र के योग से श्रीमान् हो (३२) जन्मलग्न , होरालग्न और घटि कालग्न को एक ही ग्रह देखता हो या तीनों के दृष्टि कोणों को एक ही ग्रह देखे या तीनों के नवांश को एक ही ग्रह देखे तो श्रीमान् होता है। जन्मेष्ट काल के घटी के तुल्य राशि जानना कलादि का आधा करके अंशादि जानना इन राश्यादि को स्पष्ट सूर्य के राश्यादि में जोड़ देने से घटि का लग्न होती है (३३) लग्न और सप्तम के राशि, अंश और दृष्टि कोण इन छवों पदार्थो को एक ही ग्रह देखे तो भी राजयोग होता है। इसमें जैसे-जैसे दृष्टि कम हो वैसे-वैसे योगों से भी तारातम्य जानना चाहिये (३४) जो ग्रह चर राशि में रहता है वह अपने द्वितीय स्थिति को छोड़कर बाकी तीनों स्थिर राशियों को देखता है। जो यह स्थिर राशि में रहता है वह अपने द्वादशस्थ चर को छोड़ कर बाकी सभी चरों को देखता है एवं द्विस्वभाव में रहता है यह अपने साथ वलों को छोड़कर बाकी सब द्विस्वभाव को तथा द्विस्वभाव गत ग्रहों को देखता है। इस प्रकार में इसी दृष्टि से व्यवाहर करना ठीक है (३५) दिनार्ध और रात्र्यार्ध में अढ़ाई दण्ड शुभ समय है इसमें उत्पन्न बालक श्रीमान् होता है। (३६) शुभ स्वामी के लग्न में चन्द्रमा हो द्वितीय में शुभ युक्त बृहस्पति हो वा उच्च गत ग्रह हो तो भी श्रीमान् हो (३७) सप्तम में शुभ ग्रह हो तृतीय में पाप ग्रह हो चतुर्थ में भी शुभ योग हो तो श्रीमान् हो (३८) चतुर्थेश सप्तमेश द्वितीयेश और लाभेश लग्न को देखते हो और एकादश को शुक्र देखता हो तो धनवान् हो (३९) नीच गत ग्रह भी लग्न को देखते हों तो भी भाग्य योग होता है (४०) चर लग्न का एकादश,स्थिर लग्न का नवम और द्विस्वभाव लग्न का सप्तम बाधा स्थान कहा जाता है। इनके स्वामी और इनमें रहने वाले अपनी दशा में हानिकारक होते हैं।

गुरु - शनि गोचर - फलम्

गुरु : - जीवे जन्मन्यपगतधनधीः स्थानभ्रष्टो बहुकलयुतः। प्राप्यार्थेऽर्थान् व्यरिरपि कुरुते कान्तास्याब्जे भ्रमरविलसितम् ।।१।। स्थानभ्रंशात्कार्यविघाताच्च तृतीयऽनेकैः क्लेशैर्बन्धु धुजनोत्थैश्च चतुर्थे। जीवे शांति पीडितचितश्च स विन्देन्नैव ग्रामे नापि वने मत्तमयूरे।।२।। जनयति च तनयभवनमुपगतः परिजनशुभसुत-करितुरगबृषान् । सकनपुरगृहयुवतिवसनकृन्मणिगुणनिकरकृदपि विबुधगुरुः।।३।। न सखीवदनं तिलकोज्जवलं न चं बनं शिखिकोकिलनादितम् । हरिणप्लुतशा-विचित्रितं रिपुगते मनसः सुखदं गुरौ।।४।। त्रिदशगुरुः शयनं रतिभोगं धनमशनं कुसुमान्युपवाह्यम् । जनयति सप्तमराशिमुपेतो ललितपदां चर गिरं धिषणां च।।५।। बन्धं व्याधिं चाष्ट में शोकमुग्रं मार्गक्लेशान् मृत्युतुल्यौंश्चरोगान् । नैपुण्याज्ञापुत्र-कर्मार्थसिद्धिं धर्मे जीवः शालिनीनाँ च लाभम्।।६।। स्थानकल्यधनहा दशर्क्षगस्तत्प्रदो भवति लाभगो गुरुः। द्वादशेऽध्वनि विलोमदुःखभाग्याति यद्यपि नरो रथोद्धतः।।७।।

शनिः- प्रथमे रविजे विषवाह्निहतः स्वजनैर्वियुतः कृतबन्धुवधः। परमदेशमुपैत्य सुहृद्भवनो विमुखार्थसुतोऽटकदीनमुखः।।१।। चारवशाद् द्वितीयगृहगे दिनकरतनये रूपसुखापवर्जिततनुर्विगतमदबलः। अन्यगुणैः कृतं वसुचय तदषि खलु भवत्यम्ब्विव वंशपत्रपतितं न बहु न च चिरम् ।।२।। सूर्यसुते तृतीयगृहगे धनानि लभते दासपरिच्छदोष्ट्रमहिषाश्वञ्जरखरान् सद्य विभूतिसौख्यममितं गदव्युपरमं भीरुरपि प्रशास्त्यधिरिपूश्च वीरललितैः।।३।। चतुर्थं गृहं सूर्यपूत्रेऽभ्युपेते सुहृद्वित्तभार्यादि-भिर्विप्रयुक्तः। भवत्यस्य सर्वत्र चासाधु दुष्टं भजुङ्गप्रयातानुकारं च चित्तम् ।।४।। सुतधनपरिहीणः पञ्चमस्थे प्रचुरकलहयुक्तश्चार्कपुत्रे। विनिहतरिपुरोगः षष्ठयाते पिबति च वनितास्यं श्रीपुटोष्ठम् ।।५।। गच्छत्यध्वानं सप्तमे चाष्टमे च हीनः स्त्रीपुत्रैः सूर्यजे दीनचेष्टः। तद्वद्धर्मस्थे वैरहृद्रोगबन्धैर्धर्मोऽप्युच्छिद्येद्वैश्वदेवीक्रियाद्यः।।६।। कर्म प्राप्तिदर्शमेऽर्थक्षयश्च विद्याकीर्त्योः परिहानिश्च सौरे। तैक्ष्ण्यं लाभे परयोषार्थ-लाभश्चान्तये प्राप्रोत्यपि शोकोर्मिमालाम् ।।७।। अपि कालमपेक्ष्य च पात्रं शुभकृद्विदधात्यनुरुपम् । न मधौ बहुकं कुडवे वा विसृजत्यपि मेधवितानः।।८।।

प्रसूती लग्न विचार

मेष - जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर उपसूतिका का २ या ३, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पैर से प्रसव, भूमि पर, घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे इन वर्षों के आरम्भमें तुलादान, गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षो से बचे तो १००वर्ष जीवे।

वृष- माता का दक्षिण में शिर,उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आयी, जन्मतेही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण अधोमुख पैर से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत, स्वच्छ वस्त्र जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया १।१८।३३।४४।६१ वर्षो में बालक कष्ट पावे। इन वर्षो के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षो से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का पश्चिम में शिर, उपसूतिका ३ या ५ माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव मुख ऊपर को जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाक छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म। माता ने पहले लवणयुक्त विचित्र अल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१३।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे इससे बचे तो १०० वर्ष जीवे,कष्टकारक वर्षों के प्रवेश समय तुलादान छायादान मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

कर्क-माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, वाम भाग में चिन्ह पैर के बल जन्म घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता का वस्त्र श्वेत या लाल, माता ने प्रसव के पूर्व मुधर एवं शीतल भोजन किया था। दीपक उठ ाया गया। बालक के वामांग मे लहसन आदिक का चिन्ह, बालक जन्मोत्तर देर से रोया ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षो में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्ट कारक वर्षों के प्रवेश समय तुलादान छायादान मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलिन-सा लाल वस्त्र शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३ पीछे से १ आई दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया। दक्षिण भाग में प्रसव स्थान। ५।१२।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे इनसे बचे तो ६४ वर्ष जीवे। कष्ट कारक वर्षो के प्रवेश होते हैं श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जप या आदित्य हृदय पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण होवे।

कन्या - माता का दक्षिण में शिर, रक्तजीर्ण वस्त्र मिष्ठ ान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५ दीपक हाथ में आठ ाया गया, बालक के जन्मते ही अर्ध शब्द किया, नैऋत्यकोण में सूतिका स्थान ४।१५।२३।३५।४५ इन कष्ट कारक वर्षो में गोदान मृत्युज्य जपादि और मूंग के मोदक भोजन कराना श्रेयस्कर है, यदि इन वर्षो में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला - माता का शिर पश्चिम या पूर्व को श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुजा हुआ। अन्न ठ ण्ड जल या कोई मामूली चीज क्रोध पूर्वक खाई गयी थी। जन्म समय स्त्री ३ या वहाँ एक कन्या भी हो दीपक उठ ाया गया बालक जन्म समय कुछ ठ हर कर अर्ध करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान ८।१५।३६।६२।६४ इन कष्ट कारक वर्षो के आरम्भ में नवग्रह दान, नवग्रह जप करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षो से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक - माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दुग्ध वस्त्र, अधिक अमधुर क्रोध पूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३ पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया दीर्खंश घर के पश्चिमी भाग में प्रसव स्थान, ११।२८।५८।६१ इन कष्ट कारक वर्षो के आरम्भ में मृत्युञ्जय जप औरतुलादान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षो से बचे तो १०० वर्ष जीये।

धनु-माता का शिर पश्चिम पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पकवान भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान १।१०।१८२१।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन महामृत्युञ्जय जप ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७१ वर्ष जीवें।

अथ होरा मुहूर्त्त चक्रम् (शुभ ग्रह का फल शुभ एवं पाप का नेष्ट)

वार	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा
घंटा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध
सोम	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंग.	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.

राहुकाल विचारः

सप्ताह के ७ दिनों में प्रतिदिन प्रायः १ घंटा ३० मिनट का समय राहुकाल होता है। इसकी गणना दिनमान पर आधारित है। नीचे प्रतिदिन के राहुकाल का स्थूल समय पाठकों के सुविधार्थ प्रचलित घड़ी के अनुसार-

सोमवार-प्रातः ७.३० से ९ बजे तक।
मंगलवार-अपराह्न ३ से ४.३० बजे तक।
बुधवार-मध्यान्ह १२ से १.३० बजे तक।
गुरुवार-मध्यान्ह १.३० से ३ बजे तक।
शुक्रवार-पूर्वान्ह १०.३० से १२ बजे तक।
शनिवार-प्रातः ९ बजे से १०.३० बजे तक।
रविवार-सायं ४.३० से ६ बजे तक।

मकर - माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दूध या कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था, जन्म समय १ स्त्री पीछे आई। दीपक हाथ से उठ ाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया और छींक भी किया। घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिका स्थान ५।१३।२७।३३।५७।६३।८४ इन कष्टकारक वर्षों के आरंभ में रुद्राभिषेक स्वर्णदान अन्नदान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवें।

कुम्भ - माता का पश्चिम को शिर, जीर्ण धूम्र-वस्त्र या मलिन वस्त्र मधुर शीत शाकादि भोजन कष्ट अधिक, जन्म के समय पास में स्त्रियाँ ४ या २, १ पीछे से आई उनमें से एक स्त्री गर्भिणी थी। दीपक स्वस्थान में टिका रहा,बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका गृह २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षो के आस-पास प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवें।

मीन - माता का शिर उत्तर, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र ढंग का भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५ दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था। बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशानकोण में सूतिका स्थान, १।७।१३।३६।४५ इन कष्टकर वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह शान्ति हवन, मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करना श्रेष्ठ है।यदि इन वर्षो से बचे तो ८६ वर्ष जीवें।

स्मरण रहें कि अधिकांश जिस लग्न में लक्षण मिले वही बालक का जन्म लग्न जानना, क्योंकि वह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

राशियों का वर्ण - मेष लाल, वृष सफेद, मिथुन हरा, कर्क पाटल, (गुलाब के फूल जैसा थोड़ा लाल) सिंह धूम्र, कन्या चित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक गौर, धनु गौर, मकर भूरा, कुम्भ और मीन श्वेत वर्ण का है।

ग्रहों का वर्ण - सूर्य लाल, चन्द्रमा गौर, मंगल लाल, बुध श्याम, गुरुपीत, शुक्र श्वेत, शनि काला, राहु और केतु भी काले होते हैं।

राशियों की दिशा - मेष, सिंह, धनु पूर्व का। वृष कन्या, मकर दक्षिण का। मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम का और कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर के स्वामी होते हैं।

ग्रह दिशा- सूर्य पूर्व, शुक्र अग्निकोण, मंगल दक्षिण, राहु नैऋत्य, शनि पश्चिम, चन्द्रमा वायव्य, बुध उत्तर और गुरु ईशान का स्वामी है। जो ग्रह अपनी राशि से मित्र की राशि में और उच्च में रहता है एवं शुभ ग्रह और मित्र के साथ रहता है वह बलवान कहा जाता है और ग्रह शत्रु के गृह में नीच में, पाप ग्रह से और शत्रु से युक्त होता है यह दुर्बल माना जाता है। जो राशि अपने स्वामी से तथा शुभ ग्रह से युत हो तो बलवान तथा पाप ग्रहयुक्त राशि दुर्बल होती है। जिसके घर का स्वामी छठे , आठवें और बारहवें भाग में पड़े अथवा षष्ठाष्टम द्वादशाधीश जिस भाव में पड़े उस भाव की हानि होती है।

जातक प्रकरण

अथादौ पितृपरोक्षज्ञानम्- जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे १, बुध शुक्र के भवन में चन्द्रमा हो, लग्न शनैश्चर चन्द्रमा से अष्टम हो ३, भौम सप्तम चन्द्रमा को न देखता हो ४- इन चार योगो में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना। जहाँ राहु शय्या वहाँ भंग तहाँ कुज होय।

अथ मातृ-सुख-नाश योग - (१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पाप ग्रह हो (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे (५) चौथे भाव में शनि पाप ग्रह से ही दृष्ट हो, इन पाँचों में से एक भी योग मिले तो माता का भय हो - जप दान करना चाहिये।

पितृनाशयोगः- (१) सूर्य मंगल दशम वा नवम में गये हों। (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो इन चारों योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोगः- भातृ गृह को ईश जो, भौम संग त्रिक होय, जाके ऐसे योग है, भ्रातृ हीन सो होय।

सन्तान सुख नाशक योग - गुरु से पञ्चम गेहपति, परे जाय त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव।। पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक यान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हानि।

नीच योगः- सहज सप्त धनु सदन में, क्रूर बसे रवि आई। भवन पाँचवे, गुरु बसे, नीच जातमान सोई।। सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विक्राल। म्लेच्छ होइ कुछ दिवस में यद्यपि ब्रज को बाल।। जिसके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज। लहै सर्वदा राज सुख होवे वेश्याबाज।

जारज योग - भानु, चन्द्र तनु ना लखै लग्नप लखे न लग्न। जो शिशु है पर परुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुल गुरु तिथि अष्टमी, चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तरा जन्म में नव शिशु कही वरार।।

अथ स्त्री जातक- क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहोय कोय। जाके कुज दश में बसे ऋणी हो पति तासु। लग्न राहुशनि सातवेंपति जीवे नहिं जासु। क्रूर युत लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुध वार कहें कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में, कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें, कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि, निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहै, पति को तजे तमारि। छठे आठ वें चन्द्र जो, क्रूर परे जिन अंग। भौम आठ वें भवन में, सो पति करिहै भंग।। राहु सातवें लग्न कुज संकट शुभसो हीन। ताको पति जीवित रहे, वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूर युत राहु बसे तन धाम। राँड हो कुछ दिवस में, कहत गणक गुणधाम। पाप ग्रहों के बीच में, लग्न होइ वा चन्द्र। सो तिय नाशे दूनों, भाषत कविकुल वृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसे, सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनुभृगु बसे, बुधजन कहत विचारि।।

वैधव्य (विष) कन्यायोगः- चौपाई-रविवार द्वितिया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय।।१।। कृत्तिका होय शनिश्चरवार। याते तिथि कर करो विचारं।।२।। शतभिषा मंगलवार । कहौ द्वादशी तिथि निर्धार।।३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानी सोय।।४।। जन्म लग्न द्वय शुभ ग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वय ग्रह मानो। तो कन्या को विधवा जानो।।६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार ।।८।। रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विशाखा जानो सोय।।९।। ऐसी योग ससि जो परै, तो कन्या को विधवा करे।।१०।। धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूरज होय सुत सदन में, कन्या विधवा जान।।११।।

वैधव्य (विष कन्या) भङ्गयोगः- जन्म लग्न वा चन्द्र ते, शुभ ग्रह अष्टम होय। अथवा सप्तम लग्नपति, शुभगा कन्या होय।

काकबन्ध्या योगः- द्वादशे अष्टमे काकबन्ध्याः। मन्दार्कांषष्ठमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।

स्त्रीणां राजयोगः- चौपाई केन्द्रभाव नभगा शुभ होई। नर तनु पाप कलत्र न कोई। रानी होई बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइहैं सुत वाके। चन्द्र तुंग बसे तन जाई। लाभ नवम गुरु आगे भाई। सोई तिय होय नृपति की रानी। जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षटवर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि रवि केन्द्र भवन में सोई। ऐसे योग बने सुकुमारी। रानी होय सदन बद भारी।। **दोहा**- कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि भरपूर। पुत्र पौत्र धन भूरियुत ताको पति नृप शूर।। लाभ भवन सित चन्द्र जी, सोमज सप्तम भौन। सुर गुरु परिपूरन लावै, रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभाव विचार- पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधिपतावपि केन्द्र कोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मासः-कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूती हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहाँ सर्वत्र सौर मास को ग्रहण करें। प्रसूती गौ आदि का तत्क्षण दान कर आहुति मन्त्रों से घृत युक्त पीली सरसों का हवन करे। कार्तिक में बच्चा जन्म तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ हो।

त्रिखल जन्म फल-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा ३ पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं। कृपणता त्याग कर त्रिखला शान्ति करे तो शुभ होता है।

यदि बच्चे को सर्व प्रथम ऊपर की दंत पक्ति निकले तो मातुल को भयप्रद हो। सदन्तौर्ध्वपंक्ति वाला बालक जन्मे तो माता पिता आदि को भयप्रद होता है। शान्ति करानी चाहिए।

अथैकनक्षत्रजन्मफलम्- वृद्धगर्ग जी कहते हैं कि- यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता का एक नक्षत्र में और एक ही चरण में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

कन्याजन्म नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठ	विशाखा
फलम्	श्वसुरहानि	सासनाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतश्वसुरहन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नव तथाऽऽश्लेषाद्यपादज।।

अथ मूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठ	मूल	रेवती

यह ६ नक्षत्र गन्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करनेवाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन भवन तथा घोड़ो का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र को ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए। तत्पश्चात् शान्ति कराके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा के चरण जन्म फल

मूल			आश्लेषा		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	४	में.	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

अथ मूलनिवास-फाल्गुन ज्येष्ठे वैशाखे मार्गे मूले रसातले। आषाढ़े वा आश्विने माघे स्वर्गे भाद्रपदे स्थितिः। श्रावणे कार्तिके चैत्रे पौषे च मृत्युमण्डले शुभं स्यात् स्वर्गपाताले मृत्युलोके च मृत्युदः।। तृतीय दशमी षष्ठी शनिः भौमः समन्वितः। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्। यदि गण्डे प्रसूयेत् महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृती शूले, गण्डतिगण्डे च परिघे यमकंटके। ब्रहदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गण्डदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शांतिकम्।। यथा सर्वविषं च मन्त्र श्रवण विलीयते। तथैव गण्डदोषीऽपि विधानेन विलीयते।। यत्नैः शतौषधीमूले सप्तमृत्सि पूरयेत्। शतच्छिद्रं घटं तस्मात्रिसृतेन जलेन हि। बालकान्वापित्रस्नाने विप्रसम्पादिते सत्ति। जप होमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धाचरणे मूले कष्टं स्मृतं बुधैः मुनीनां वचनं सत्यं मन्त व्य कल्याणं इप्सिभिः।।

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
७	८	११	११	१२	१२	३	३
मूल नाश	वंश क्षय	मातृ पीड़ा	मातुल नाश	राज्य लाभः	राज्य मंत्री	राज्य प्राप्ति	श्र.श्रा.

ज्येष्ठ नक्षत्र की अन्तिम पाँच घटी, किसी के मत से चार घटी किसी के मत से एक घटी और किसी के मत से आधी घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की आठ घटी किसी के मत से चार घटी, दो घटी और आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है, इस समय में जो बच्चा जन्मे उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष तक मुह न देखे। घनगण्डे दरिद्रोऽपि शान्ति कुर्यात् स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोतिचाभुक्तर्क्षे विशेषतः।

अश्विनीनक्षत्रफलम्- अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय होता है। विशेषः-पितृहा तु दिवाजातो रात्रीजातस्तु मातृहा। आत्मकष्ट सन्ध्योर्जातो नास्तिगण्डो निरामयः।

आश्लेषापाद फलम्- आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो शुभ सम्पत्तिदायक फल, द्वितीय चरण में धन का नाश, तृतीय चरण में माता का नाश, चतुर्थ चरण में पिता का नाश होता है। इसी नक्षत्र के दिन शांति करनेसे दोष नष्ट हो जाते हैं।

मघापाद फलम् - आद्यपादे मघायाः स्यान्मातृपक्षस्य नाशनम्। द्वितीये पितृनाशः स्यात्तृतीये सुखसम्पदः। चतुर्थे द्रविणं विद्यादिति शंकरभाषितम्।

ज्येष्ठपादफलम्- आद्यपादोऽग्रजं हन्ति अनुजं च द्वितीयजे। तृतीये जननीनाशः आत्मानं च तुरीयके। ज्येष्ठजपादयो ज्येष्ठे घ्नन्ति बाला न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षमातरं तथा।

रेवतीपादफलम्- रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या प्रबन्धक, तीसरे में सुख सम्पत्ति युक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

सामान्य योग विचार

जन्मकुण्डली में जन्मराशीश बलहीन होकर पंचम नवम में हो तो क्रोधी होता है। जन्म लग्नेश और राशीश षष्ठ हो तो दुर्बल होता है। षष्ठ मेश अष्टमेश नवमेश पापयुक्त हो तथा पाप दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री व्यभिचारिणी होती है। चन्द्रमा मेष या वृष में मंगल शनि के साथ हो तो उसको दुष्ट रोग होता है। चन्द्रमा शुक्र मंगल कर्क वृश्चिक और मीन में हो तो भी कुष्ट रोग हो। बृहस्पति षष्ठाष्टम द्वादश में हो तो गुप्त रोगी हो मंगल और शनि षष्ठ वा द्वादश में हो तो वह व्रणयुक्त होता है।

मेष मीन कर्क मकर और वृश्चिक राशि में शनि, चन्द्रमा होकर नवम स्थान में पापयुक्त हो तो वह अंगहीन होता है। मंगल शनि और बृहस्पति चतुर्थ में हो तो हृदय रोग होता है। चतुर्थ में मंगल, पंचम में सूर्य बुध राहु और अष्टम शनि पड़ा हो तो वह सदैव दुःखी रहता है। मंगल और बुध एकत्र शुभग्रह के राशिमें हो अथवा शनि के राशि में हो, रवि की दृष्टि हो तो वह विदूषक होता है। मंगल बुध और चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो शीघ्रोत्तर दानशील होता है।

शुक्र और बुध सप्तम में हो (१) दशम में हो (२) शुक्र और मंगल दशम तथा सप्तम में हो (३) या दशम चतुर्थ में हो (४) चन्द्रमा से दशम स्थान में और शनि से चतुर्थ में शुक्र हो (५) सो व्यभिचारी होता है।

शुक्र शनि ग्रह मंगल के राशि में हो (१) सप्तम में शुक्र लग्नेश हो (२) शनि चन्द्रमा मंगल से दशम या चतुर्थ में हो तो उसकी स्त्री उससे सन्तुष्ट नहीं रहती।

सूर्य पंचम नवम वा द्वादश में पापयुक्त हो तो नेत्र विकार होता है और शनि हो तो कर्ण विकार होता। शुक्र मंगल अष्टम में हो (१) मंगल और शुक्र मंगल की राशि में हो (२) शुक्र और चन्द्रमा मंगल की राशि में हो या शनि बृहस्पति को देखता हो तो शुष्क वृद्धि होती है। धनु मेष या वृष लग्न हो पापग्रह देखते हो तो दन्त विकार होता है। पापग्रह का लग्न हो वा धनु या वृषलग्न हो और पापग्रह होतो खल्वाट होता है। नवम द्वितीय द्वादश और पंचम में पापग्रह हो तो वन्ध्यायोग होता है।

लग्न चन्द्रमा से सप्तम स्थान अपने स्वामी और शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट होतो उसका विवाह होता है। लग्न चन्द्रमासे पंचम स्थान स्वामी शुभ ग्रह से युक्त हो तो सन्तति होती है। कन्या लग्न में सूर्य और चन्द्रमा हो तो स्त्री पुरुष दोनों की आँख में विकार होता है।

शुक्र सप्तम स्थान में मंगल या शनिके वर्ग में हो मंगल शनि देखते भी हो तो वह स्त्री संसक्त हो,यदि ये चन्द्रमा के साथ हों तो उसकी स्त्री पुंश्चली होती है शुक्र और चन्द्रमा से सप्तम मंगल हो तो वह पुरुष स्त्री पुत्रहीन हो, सप्तम में स्त्री पुरुष दोनों ग्रह हो पाप ग्रह की दृष्टि हो तो अधिक अवस्था में विवाह होता है। शुक्र मंगल सप्तम में पाप दृष्ट हों तो प्रत्यक्ष रोग होता है। चन्द्रमा कर्क और वृश्चिक के नवांश में पाप युक्त हो तो गुप्त रोग होता है। द्वितीय और द्वादश में दो पाप ग्रह हो चन्द्रमा लग्न में और सूर्य दशम में हो श्वेत कुष्ठ होता है। चन्द्रमा दशम में मंगल सप्तम में और शनि द्वितीय में हो तो अंगहीन होता है। चन्द्रमा दो पाप ग्रह में रहकर सूर्य हो तो श्वास इत्यादि रोग होते हैं।

(१) अथ तेजी मन्दी निकालने का ध्रुवा

अथ दिन ध्रुवा ।।१।।

सूर्य १३०। चन्द्र ९४। मंगल ८०९। बुध ७०२। बृहस्पति ७१३। शुक्र ८०८। शनि ८५। पृथ्वी भर का ध्रुवा २०८५।

अथ तिथि ध्रुवा।।२।।

प्रतिपदा ६१०। द्वितीया ७१०। तृतीया ४८१। चतुर्थी २५० पंचमी ३३४। षष्ठी ३०४। सप्तमी ८१२। अष्टमी १११। नवमी ५६५। दशमी ३०५। एकादशी २२३। द्वादश २६१। त्रयोदशी ५२४। चतुर्दशी ५५२। पूर्णिमा ६३०। अमावस्या १६६।।

अथ नक्षत्र ध्रुवा।।३।।

अश्विनी १७६। भरणी ६८३। कृत्तिका ३७०। रोहिणी ७७५। मृगशिरा १०२। आर्द्रा १४६। पुनर्वसु ५४०। पुष्य ६३४। श्लेषा १७०। मघा ७३। पू.फा. ८५। उ.फा. १४८। हस्त ८१०। चित्रा ३०५। स्वाती ८६१। विशाखा ७३४। अनुराधा ७१२। ज्येष्ठ ७१६। मूल ६४३। पू.षा.६१४। उ.षा. ५२३। अभि.६८३। श्रवण ६५७। धनिष्ठ ५००। शतभिषा ५६४। पू.भा.प.३३६। उ.भा.प.१८३। रेवती ८३०।

अथ मास ध्रुवा ।।४।।

चैत्र ६१। वैशाख ६३। ज्येष्ठ ६५। आषाढ़ ६७। श्रावण ६९। भाद्र ७९। आश्विन ७३। कार्तिक ५१। मार्ग ५३। पौष ५५। माघ ५७। फाल्गुन ६५।

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ।।५।।

मेष ५२०। वृष ७६२। मिथुन ५१०। कर्क २१८। सिंह ८३०। कन्या २६०। तुला ५०३। वृश्चिक ७११। धनु ५२४। मकर ५५४। कुम्भ २७०। मीन ५८६।

अथ देश तथा नगरों की ध्रुवा।।६।।

कलकत्ता ३४७। नागपुर १६६। असाम ७९१। इटावाँ ८९०। हरद्वार १७२। बीकानेर २१३। अजमेर १६७। बम्बई १६८। मध्यप्रान्त १६८। नेपाल १५४। चीन ६४२। पंजाब ४१९। रंगून १६७। सूरत १२८। यूरोप २७६। अमेरिका ३२२।

अथ पदार्थों की ध्रुवा ।।७।।

सोना २५३। चाँदी ७६०। तांबा ५६३। पीतल २५८। लोहा ९१५। कांसा-पत्थर १६३। मोती १४२। रूई ६१७। कपड़ा १२७। पाट ४७६। हैसियन ७३८। सूर्ती १०३। तम्बाकू २४०। सुपारी २५२। लाह ८८। मरिच २६८। घृत ४६४। अतर ७५ गुड़ ३५६। चीनी ३२८। ऊन ११२। शाल ८११। धान ७१२। गेंहू ३३२। तेल मूंग ८०२। चावल ७७४। तीसी ३८६। गौ १३२। बैल १६३। भैंस ६२८। हाथी ८३०। घोड़ा ८३५।

अथ तेजी मन्दी देखने का चक्र।।८।।

सूर्य १ तेज। चन्द्र २ अतिमन्द। भौम ३ तेज। बुध ४ अतितेज। बृहस्पति ५ मन्द। शनि ६ तेज। राहु ७ सम। केतु ८ तेज। शुक्र ९ तेज।

जिस देश की, जिस वस्तु की, जिस दिन तेजी मन्दी निकालनी हो उस देश, वस्तु, तिथिवार, नक्षत्र मास, राशि इन सबके ध्रुवाओं का योग (जोड़) कर ९ का भाग देकर शेष से जिस दिन को विचारना है, उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ आठ वें चक्र में देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेवें।

(२) दैनिक तेजी मन्दी निकालने की रीति

वस्तु विंशोपक धातु

सोना ९६। चाँदी ७१। पीतल ५९। मूंगा ५१। लोहा ५४। शीशा ९०। कांसा १२७। मोती ९५। रांगा ६७। ताँबा १०। कुमकुम २५।

किराना

कपूर १०२। गुड़ ७३। जीरा ७०। शक्कर १०२। मिश्री १०३। ज्वार १००। घृत ५०। तैल १०। नमक ५९। हींग ६२। सुपारी ३०४। अरहर ७२। मिर्च ८३। सूत ९४। सरसों ८०८। कपड़ा १००। चमड़ा ८७। मूंग १५। सोंठ १००। गुड़ ४०। बिनौला ८८। मजीठ १४४। नारियल ७८१। छोहारा १४४। चावल १७। जौ ५७। साठी १६५। गेहूँ १४ उड़द ८०। तिल ५३। अरहर ७२। चना ५६। कपास १२७। अफीम १९२ रूई ७७।

पशु

अश्व ७७०। हाथी ६४। भैंस ९२। गाय ७७ बैल ८७। बकरी ६०। सांड़ ९४ ऊँट ८५।

नक्षत्र विंशोपक

अश्विनी १०। भरणी १०। कृत्तिका ९६। रोहिणी २०। मृगशिरा ५६। आर्द्रा ८६। पुनर्वसु २१। पुष्य ६४। आश्लेषा १३५। मघा १५०। पू.फा.२२०। उ.फा. ७२। हस्त ३३४। चित्रा २१। स्वाती २१०। विशाखा ३२०। अनुराधा ४९३। ज्येष्ठा ५५९। मूल ५५२। पू.षा. १४२। उ.षा.४२०। श्रवण ४५०। धनिष्ठा ७३६। शतभिषा ५७६। पू.भा. २७५। उ.भा. २२६। रेवती २५६।

संक्रान्ति राशि विंशोपक

मेष ३७। वृष ८४। मिथुन ६६। कर्क १०९। सिंह १२५। कन्या १०२। तुला १०४। वृश्चिक १४४। धनु १४४। मकर १९८। कुम्भ १९०। मीन १८०।

तिथि		विंशोपक		वार		विंशोपक
१	१८	१०	१७	मंगल	५०	निकालनी हो उस
२	२०	११	१५	बुध	७२	महिने की संक्रान्ति
३	२२	१२	११	गुरु	६५	का ध्रुवांक तिथि
४	२४	१३	१३	शुक्र	२४	वार उसमें सब का
५	२६	१४	८	शनि	१४	ध्रुवांक जोड़ देवे।
६	२५	अमावस्या	९	**तेजी मन्दी**		फिर ३ का भाग देने
७	२३	पूर्णिमा	१६	जिस मास की		से १ शेष तो मन्दी
८	२१	रवि	४०	या जिस दिन की		२ समान और ०
९	१९	चन्द्र	५०			बचे तो तेजी।

(३) तेजी मन्दी निकालने का तृतीय प्रकार

वस्तु	स्वामी राशि	पुरश्चरण
गेहूँ	कुम्भ	नियम पूर्वक ब्रह्मचर्य
सुवर्ण	मेष	से कामनानुकूल
मोती	मीन	कार्य करना
खाँड़	कुम्भ	
चावल	मेष	
ज्वार	वृश्चिक	
रूई	मिथुन	
चाँदी	कर्क	

चन्द्रमा- जिस वस्तु के स्वामी राशि से आठ वां तथा बारहवाँ चन्द्रमा हो तो वस्तु तेज होवे। उस वस्तु के दशमी राशि से पहले दूसरे, तीसरे, पांचवे, छठे , सातवें, नवे, दसवें और ग्यारहवे स्थान में चन्द्रमा आवे तो वह वस्तु मन्दी कारक है।

सूर्य-मं.श.रा. के यह क्रूर ग्रह कहलाते हैं। ये क्रूर जिन प्रभाव राशि से तीसरे छठे दसवें ग्यारहवें रहे हो वह वस्तु मन्दी करेंगे। वही क्रूर जिस वस्तु के स्वामी राशि से पहले, दूसरे चौथे, पांचवे, सातवें, आठ वें नवें, बारहवें, जा रहे हों वह वस्तु तेज करेंगे। जितने अधिक क्रूर उपर्युक्त स्थान में गये होंगे, उतनी अधिक तेजी आवेगी।

अग्नि बुझाने का मन्त्र (आग बाँधना)

ॐ नमो कोरा करावा जल सा झरिया, ले गौरा के शिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द साँचा पिड काँचा फूरी मन्त्र ईश्वरी वाचा। मन्त्र ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें।

विधि-कूप सन्निकट से सात कंकड़ों को लेकर प्रत्येक पर सात बार पढ़ कर अग्नि की ओर देवे।

नजर झाड़ने का मन्त्र

गरुर चरण दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चाटी हुँकारे फूकार उडाय माटी शलिकेर पाँव देख, ठुकरिया आय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा। दीपावली में सिद्ध करके इस मन्त्र से झारने का विधान है।

सर्प विषनाशक मन्त्र-औषधिः

गरुड़ास्त मन्त्र - ॐ सुपर्णोसिं स्मरुत्मां स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुबृहद् यन्तरेवक्षी। सोम आत्माछन्दा स्ययंमानि यजूंषिनाम साम। त तनुर्वाम देवं यज्ञयज्ञि यम्य छन्विष्टायाऽशम्या सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवं गच्छ स्वःपत ॐ। इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झारने का विधान है।

दधि मधु नवनीता, पीप्पली श्रृङ्गवेरं मिरचमपि कूटो प्रतिहन्सा सुकेशी। यदि डसति सरोष तक्षको वासुकीवा यम सदन, गतानाँनास्ति मृत्युर्नाराणाम्।

गाय के ताजे दूध से निकाला जाता मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल अदरक मिर्च और कूट, बराबर मात्रा में मिलाकर साँप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाता है।

(१) चिन्ता निवारण लक्ष्य प्राप्ति मन्त्र -

ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मैय नमः।

(२) पुत्र कन्या के विवाह में यदि कठिनाई उपस्थित होती हो या विघ्न होता हो तो श्रीकात्यायनी देवी का पूजन विधि से करावे।

स्थायीधन स्थिति मन्त्र - ॐ ह्री क्लीं महालक्ष्मै नमः।।

प्रसवसमयेजलमन्त्रः- आकाश टले पर्वत टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली वसिया बाहिर हब असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़े।। ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढ़कर परोरने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

मन्त्र - शक्ति

अथ मृत्युञ्जय मन्त्र - ॐ हौं जूंसः भुर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिंपुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ।

पुराणोक्तामृत्युञ्जयमन्त्रः "मत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाह महादेवाय ते नमः।।"

ॐ हौंजूसः त्र्यक्षरमन्त्र है

इनके विनियोग न्यास नित्यकर्म प्रयोगशाला में देख लीजिये।

धन धान्य पूर्णकर- अन्नपूर्णा का मन्त्र

ॐ ह्री क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णस्वाहा क्लींश्री ह्री ॐ- इस मन्त्र के प्रभाव से धन धान्य पूर्ण रहता है। लक्षजप-तिल लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। २ लक्षजप का पुरश्चरण। क्षेत्र के भीतर मन्त्र या तावीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

आपदुद्धारक बटुक भैरव मन्त्र

ॐ नमो भगवते बुटुकाय आपादुद्धारकाय कुरु कुरु वटुकाय हौं। भात और सरसो चन्दन चूरा आदि से हवन करना चाहिये।

सब सिद्धिप्रद हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मन्त्र

ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा। खीर, दाख, ऊखरसा पखाड़, पीपल खैर की लकड़ी से हवन १ लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के अनुकूल हवन वस्तु होना चाहिए।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना

आदित्यरथवेगेन विष्णुवालबलेन च ताक्ष्यं पक्ष निपातेन भूम्या गच्छ महाविष। राई से उतारना। (ताक्ष्यं - गरुड़)

आँख झाड़ने का मन्त्र- शर्याति सुकन्यां च्यवनं शुक्रमश्विनी संध्योः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति। जल से धुलवाना।

ज्वर झाड़ना - ॐ नमो नरहरे रोगापहारिने ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

अन्तरा तिजरा चौथिया का मंत्रखलंकायाम् दक्षिणेतीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरण मात्रेण ज्वरो याति दशोदिश। पीपल के पत्ते पर लिख कर डोरा से बाँध देवे।

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिये चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करके पिलावें।

मंत्र-हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनामयक्षिणी तस्य नूपुरशब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्।

चिंरचिरा (चिचिड़ी) मस्तक में बाँधने से सुख से प्रसव होता है। इन सब मंत्रों को १०८ बार पढ़ना।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्र - यः स्मरेत्तुलसी सीतां रामं सौमित्रणा सह। कार्यं कृत्वा रिपूञ्जित्वा क्षेमेणायाति वैनरः। दही थोड़ी सी अपने खाकर यात्रा करें और चंदनतिलक से सदा पूर्ण रहे।

गाँव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिये गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तर पूर्व में मिट्टी के कड़े कसोरे (परई) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दे तो बिमारी नहीं होगी।

मंत्र-अर्जुनः फाल्गुनी विष्णुः किरीटीश्वेतवाहनः। वीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजय। कपिध्वजी गुड़ाकेशो गांडवी कृष्णसारथिः।

एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च योलिखेत् न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते।

ज्वर झाड़ने का मंत्र - ॐ नमो अजैपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहे। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सातबार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिये।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र-

यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रं प्रजापतेयत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्ज शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र-

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्णत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्तव परित्यागो गच्छ सूत्रं यथासुखम्।

सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पयमां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।

औषधी खाने का मन्त्र

अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चरण भेषजात्। नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

आयु-निर्णये

राशि सन्धिश्चखेटानां दशा रोगप्रदः भवेत्। त्रिशद्भागमनुक्रान्तदशायां मरणं नृणाम्।।१।। षष्ठाष्टमस्थो रिपुद्दणमूर्ति पापग्रहः प्रागृहोपगश्चेत् स्यात्तदशायां मरणं नराणां वदन्तिबुद्धे विजितस्वदाये।।२।। पञ्चम्यारदशामृत्यु दद्यात्षष्ठीगुरौदशा। दानेश्चतुर्थीमृत्यु स्याद्दशाराघरपंचमी।।३।। नीचारातिविमूढस्य विपत्प्रत्परिनैधनाः। दशदद्यमूर्ति तस्य पापयुक्त विशेषतः।।४।। यदद्यदभावार्थकामेष दशास्वन्तर्दशासु तराद्भावविनाशः स्वात्तयुतकेक्षितकारकैः।।५।। अष्टमस्यत्रिभागीश पतिः स्थितगृहशनौ। तदीशनवभागर्यागतेवा मरणं भवेत्।।६।। रन्ध्रेश्वरौरन्ध्रयुक्तो रन्ध्रद्रष्टारमेश्वरः। रन्ध्राधिपयुतश्चैव चतुः षट्यंशः नायकः।।७।। रन्ध्रेश्वराधिशत्रुश्च सप्तछिद्र ग्रहाः स्मृता। तेषांमध्येवलीग्रहस्तु तस्यदायेमृति वदेत्।।८।। ततद्भावादव्यवस्यस्य तद्भावादीश्वरस्य वा। वीर्योपतस्यखेट स्यपाकेमृत्युर्न संशयः।।९।। जीवमृत्युतनुयोगराशिने गोचरेणारथ रविजे धनक्षयः। तत्रिकोण गृहगेवा नृणां तत्रनाशकयुते तत्वैदेवः।।१०।।

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथिभानि। सद्भाराः चन्द्रबुधगुरुशुक्राःतिथयः १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ शुभ भानि पुष्य, अश्वि, रोहिणी,मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा ऐषु. भेषु।। दक्षिणाँगेऽखिले पुंसा वामांगे च मृगीदृशाम् शुभम्।। जन्मभेमृत्युयोगऽह्नि दग्धेविष्यादिदूषिते।। शुभम्।। अथपल्लीपतने विशेषफलम्।। पादयोर्जघ्ने जान्वोः गुदे गुह्यो च मृत्युदा। अन्यत्र शुभदा प्रोक्ता सतैलं स्नानमाचरेत्।।१।। पल्या प्रपतने चैव शरटस्याधिरोहणे।। यत्रोक्तं हि मनुष्यस्य शुभाशुभफलप्रदम्। स्त्रीणांतुतद्विपरित्यागोष्याबुद्धिमता सदा इति। पल्लीपतनस्यानिष्ट फल निवाराणार्थमंत्रदानजपमाह।। तिलमादिदानं च स्नात्वादेवं द्विजन्मने नमस्तस्यजपेन् मन्त्रं षडक्षरम् (ॐ नमः शिवाय) शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिवारणम्। शिवालये प्रदद्याद्वा दोषं दोषोपाशान्तये।।१।। अशुभध्वंस्य मृत्युञ्जयजपस्वर्ण गोदानं कार्यमिति शुभम्।।

अङ्गस्थविभागेन पल्लीपतने फलम्

स्थानम्	फलं
केशान्ते	अतिकष्टम्
उदरे	भूषणलाभः
अधरोष्टे	धनैश्वर्यलाभः
नाभौ	बहुधनाप्तिः
वामपादे	बंधुनाश
भ्रूमध्ये	राज्यसभा
वामकर्णे	बहुलाभः
स्तनद्वये २	दौर्भाग्यम्
हस्तद्वये	वस्त्रलाभः
बा.मणिव.	कीर्तिनाशः
दक्षिणापादे	गमनम्
नेत्रयोः	वन्धनप्रा.
पृष्ठ देशे	वुद्धिनाशः
हृदये	धनलाभः
पादान्ते	स्त्रीनांशः
शिरसि	राज्यलाभः
नासाग्रे	व्याधिपीड़नं
वाममुखे	राजभीतिः
जानुद्वये	शुभागमः
कटि भागे	अश्वलाभः
गुल्फयो	धनलाभः
दक्षिणमुखे	नृपतुल्यता
स्कन्धयोः	विजयः
मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
ललाटे	बंधुदर्शनम्
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः
कण्ठे	शत्रुनाशः
२ जंघे	शुभावहः
द.मणिव.	मनस्तापं

रविभातुल्हीचक्रम्

पृष्ठे	६	श्रीलाभः
शीर्षे	४	मृत्युश्रवम्
वामे	८	सुखम्
मर्मे	५	विनाशः
हस्ते	२	सुभुक्ति
पादे	२	कलत्रमृतिः

गृहारम्भे वृष वास्तु चक्रम् गणना साभिजित

स्थानम्	नक्ष.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अग्रपादे	४	शून्यम्
पृष्ठ पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
दक्षकुक्षौ	४	लाभः
पुच्छे	३	स्वामीनाशः
वामकुक्षौ	४	दरिद्र
मुखे	३	पीड़ा

अथगृहप्रवेशे कुम्भ चक्रम् रविभादस्यगणना

स्थानम्	नक्ष.	फलम्
मुखे	१	अग्निदाह
पूर्वे	४	उद्वसनम्
दक्षिणे	४	लाभः
पश्चिमे	४	लक्ष्मीप्राप्ति
उत्तरे	४	कलहः
गर्भे	४	विनाशः
गुदे	३	धैर्यम्
कण्ठे	३	स्थिरत्वम्

अथ द्वारशाखाचक्रम् सूर्यभादत्रापिगणना

स्थान	नक्ष.	फलम्
शिरसि	४	श्रीलाभः
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखायां	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	स्वामीनाशः
मध्ये	४	सौख्यम

ग्रामवास चक्रम् नक्षत्रावधि गणना अथग्रामभाद्वासकर्त्तुः

मस्तके	७	धनं सौख्यम्
पृष्ठे	७	हानि-निर्धनम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	निर्धनम

कूपचक्रम् । सूर्यभाद्गणना

स्थान	नक्ष.	फलम्
मध्ये	३	शीघ्राज्जलम्
पूर्वे	३	निर्जलम्
अग्नि	३	आशुजलम्
दक्षिणे	३	निर्जलम्
नैऋत्ये	३	अमृतजलम्
पश्चिमे	३	निर्जलम्
वायव्ये	३	जलहानिः
उत्तरे	३	मधुरजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

रोहिणीभात्कूपचक्रम्

स्थान	नक्ष.	फलम्
मध्ये	३	स्वादुजलम्
पूर्वे	३	खंडितजलम्
अग्नि	३	स्वादुजलम्
दक्षिणे	३	जलहानिः
नैऋत्ये	३	स्वादुजलम्
पश्चिमे	३	निर्मलजलम्
वायव्ये	३	मिश्रजलम्
उत्तरे	३	पूर्णजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

अथ गृहे शिलाप्रमाणानि

शिलाप्रमाणं क्रमशः प्रदिष्टं वर्णानुपूर्वेण तथांगुलानाम्।। अथैकविंशद्धनविश्वनन्दविस्तारके व्यासमिदं तदर्धम्।। तदर्धमानं त्वथपिण्डकास्यात् ऊर्ध्वाऽधिका न्यूनतरा न कार्यम्। नामानि च। नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णेति। पञ्च कुम्भ नामानिपद्ममहापद्म शंख मकर समुद्र इति प्रधानशिलाधः पञ्चाधारशिलाभवन्ति।

अथेष्टनक्षत्रकल्पनाऽनेन गणनाविचारः। आर्द्रादितिर्गुरुश्चैव सर्पश्चैव पितृमृगः। शतभपूर्वयुग्मञ्च नेष्टा गृहतारकाः।।१।। तत्रराशि कूटादिकं सर्वदाम्पत्योरिवचिन्तयेत्।। सेव्यसेवकयोश्चै-वगेहतत्स्वामिनोरपि परस्परं मित्रयोश्च एकनाड़ी प्रशस्यतेऽइति।

अथ गृहप्रवेशे मुहूर्तबोधचक्रम्।

मासः	वैशाख, ज्येष्ठ , माघ फाल्गुन जीर्णे गृहे श्रा. मार्गशीर्ष कार्तिक मासे अपिनवेप्यग्न्यादिभयसत्वे।
तिथयः	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३
वाराः	सोम, बुध. बृह. शुक्र, शनि।

भानि	रोहिणी,मृगशिरा,उत्तराफाल्गुनी,चित्रा,अनुराधा, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद रे.केचन्मते अश्वि.पु.ह.स्वा.मू.श्र. ध. श. नक्षत्रे कुम्भ चक्रशुद्धौ।
लग्नानि	२।५।८।११ एषु शुभ ३।६।९।१२ एषु मध्यम्।
	जन्मलग्न जन्मराशिभ्यामुपचये स्थिर राशौ। लग्नात् १।२।३।५।७ ९।१०।११ स्थानेषु शुभाः श्रेष्ठाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः श्रेष्ठाः४।८ शुद्धौ वामार्केशुभम्।

प्रवेशलग्नात्-वामोरविमृत्युसुतार्थलाभार्थतोऽर्के पञ्चमे प्राग्वादनादि मन्दिरम्।

अथ वापीचक्रम् रोहिणीभाद्दिनक्षत्रावधि गणना

कोष्ठे	४	श्रीलाभः
नाभौ	४	मृत्युभयम्
हृदि	४	सुखं
मध्ये	४	विनाशः
नेत्रे	४	सुमुक्तिः
पादे	४	कलत्रमृतिः

अथ चरणीचक्रम्।

पृष्ठे	४	शुभम्
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरतां
मध्ये	४	कलहः
नेत्रे	४	धनप्राप्तिः
पादे	४	अनर्थ

अथ चरणी विचार स्वामि हस्तप्रमाणे-नदीर्घविस्तारसंयुतम्। अष्टभिश्च हरदे भागं शेषं चरणिरुच्यते। पशुहानिः पशौरोगः पशुलाभः पशुक्षयः पशुनाशः पशुबृद्धिः पशुभेदः बहु पशुः।

अग्नेर्वासज्ञानम्- प्रतिपादितस्तिथिर्वारयुता सैक ४ भक्ता ०।३ शेषे भूमौवासः १ शेषे स्वर्गे २ पातालेवासः। भूमौ वासः शुभः।

शल्यानयनरीतिः

अ.	क.	च.	ट.	त.	प.	य.	श.	ह.षय.	वर्णा.
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिक्
मनुष्य	खरस्य	मनुष्य	शुनः	शिशोः	तुषांगार	विप्रश.	गोशल्यः	नृकपाल	शल्य
१।।	२	२	१।।	१।।	४	२	१	३	हस्त
मृत्यु	राजभ.	स्वा.मृ.	वा. मृ.	गृ.वि.	दुःस्व.	दरिद्र.	गो.ना.	कु.ना.	फलानि

स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम्। गृहीत्वा च ततः शल्याशल्ये पूर्व विचारयेत्। इत्युक्त्वा-प्रश्नाक्षराणामादिम वर्णतोविचारः कर्तव्यः।

अथ शिलान्यासस्तत्र वाराहः- छत्रं सुगन्धयुक्तं कृतधूपविलेपनं। स्तम्भ स्थाप्यस्तथैव कार्यो द्वारोच्छायः प्रयत्ने न।। दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमाम्। शेषाः प्रदक्षिणान्ताः स्तम्भाश्चैव प्रतिस्थाप्याः।।२।। शार्ङ्धरः प्रसादेषु च हर्म्येषु गृहेस्वन्येषु सर्वदा। आग्नेय्यां प्रथमं स्तम्भं स्थापेत्तद्विधानतः।३। तथा च व्रह्मशम्भुः क्षेत्रभित्तिशिलान्यासः स्तम्भस्यारोपणं तथा। पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः।।४।।

पिण्डतः आयाद्यानयनप्रकारः

पिण्डे क्रमात् ९।९।६।८।३।८।८।४।८ नवस्थानस्थापिते एतैगुणिते एतैऽ ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० विभक्तशेषेक्रमात् आयः १ वारः २ अंशकः ३ द्रव्यं ४ ऋणं ५ ऋक्षं ६ तिथिः ७ योगः ८ आयुश्च ९ भवति। बहुऋणाल्पद्रव्यं गृहमसत्। गृहगृहेशनक्षत्रैक्यं च न सदिती सर्वमादौ विचार्यम्।।६।। आयोध्वजादिः वारोऽर्कादिः। अंशको मेषादि-नवमांशाः। तारापि न अंशस्तु त्रिषट् नवं एवं शकाः रामशास्त्र निधि संज्ञका धनं तु वेद वसु भानु संज्ञकम्।

अथायानां नमानिउपयोगस्य कथनञ्च

१	२	३	४	५	६	७	८
ध्वज	धूम्र	हरिः	श्वानः	वृषः	गर्दभः	हस्ती	काकः

वापीकूपतड़ागादौगजो देयो विचक्षणैः। आसनेयोजयेत्सिहं शयने-काककुञ्जरो।१। वृष भोजनापात्रेषु दद्याच्छालादिषु ध्वजम्। महानसे-ऽग्निशालायां गृहे वाग्न्युपजीविनाम्।।२।। धूम्रं दद्यात्तथाश्वानं यवनान्त्यजयोगृहे। खरो वेश्यागृहेयोज्यो ध्वांक्षः पक्षिपतेर्गृहे।।३।। वृषं सिंह गजं दद्यात् प्रासादे पुर मन्दिर इति शुभम्।।

बीजोप्तिचक्रं राहुभाद्दिनमवधिः

८	९	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभः	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

हवनचक्रं सूर्यभात्भेचान्द्र

३	३	३	३	३	३	३	३	३
र.	बु.	शु.	श.	सो.	मं.	बृ.	रा.	के.
असत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत	असत्	असत्

अथ देवालये गेह विधौ जलाशये राहुमुख ज्ञानम् यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठ कोणे खात शुभं भवति

कोण	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋत्यां	आग्रेयां
देवालयारम्भे	मी.मे.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	मि.क.सि. राशिस्थितेसूर्ये	कं.तु.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	ध.म.कु. राशिस्थितेसूर्ये
जलाशयारम्भे	म.कु.मी. राशिस्थितेसूर्ये	मे.मि.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	क.सिं.कं. राशिस्थितेसूर्ये	तु.वृ.ध. राशिस्थितेसूर्ये
गृहारम्भे	सि.क.तु. राशिस्थितेसूर्ये	ध.वृ.म. राशिस्थितेसूर्ये	कु.मी.मे. राशिस्थितेसूर्ये	वृ.मि.क. राशिस्थितेसूर्ये

अथगृहकरणे चैत्रादिमासे पृथक् पृथक् फलबोधकचक्रम्

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
शोकम्	धान्यम्	पशुमृत्तिः	पशुनाशः	द्रव्यवृद्धिः	नाशः	युद्धम्	भृत्यक्षयः	धनम्	लक्ष्मीप्रा.	अग्निभयं	लक्ष्मीप्रा.

अथ गृहारम्भे मुहूर्तबोधकचक्रम् (देवालयादि सहित)

मासः	वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, फाल्गुनमासे, मे.क.सिं.वृ.म. कु. राशस्थिसूर्ये च शुभम्।
श्रेष्ठभानि	रो. म. पुष्य, उ.फा. ह. चि. स्वा. उ.षा. ध. शत. उ. अनु. रो. एषु भेषु वृषभचक्रशुद्धौ शुभम्।
शुभवाराः	चं.बु.बृ.शु. शनयः रविभौम, रिक्ता, अमा. चरलग्न वर्जितम्।।
शुभतिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ शुक्लेपक्षे।
शुभलग्नानि	२।७।९।११।१२ ३, ५६ स्वस्वामि शुभदृष्टे शुभम्।
	लग्नात्- १।४।७।१०।५।९ शुभाः। पापा ३।६।११ स्थानेषु ८।१२ शुभ पापरहितेषु शुक्लपक्षे। अष्टम शुद्धौ गुरुशुक्रयोरुदये वालवार्द्धक्य नीचराश्यादि स्थितदोषरहिते समये शुभे।

कूपजलविचारः

अतृणे सृतणा यस्मिन सतृणे तृणवर्जिता मही यत्र ।।
तस्मिन् शिरा प्रदिष्टा वक्तव्यं जलं चास्मिन् ।।१।।
कण्टकाकण्टकानां व्यत्यामेऽप्यस्त्रिभिः करैः पश्चात् ।
ज्ञात्वा पुरुषत्रितयं त्रिभागयुक्तं धनं सा स्यात् ।।२।।
नदति मही गम्भीरं यस्मिश्चरणाहता जलं तत्र ।।
सार्द्धं स्त्रिभिर्मनुष्यैः कौबेरा तत्र च शिरा स्यात् ।।३।।
वृक्षस्यैका शाखा यदि विनता भवति पांडुरा वास्यात् ।।
विज्ञातव्यं शाखातले जलं त्रिपुरुषं ज्ञात्वा ।।४।।
पूर्वोत्तरेण पीतोर्यदि वाल्मीकी जलं भवति पश्चात् ।
उत्तरागमना च शिरा विज्ञेयै पञ्चभिः पुरुष ।।५।।
चिन्हं दर्दुर आदौ मृत कला तत्परं भवेद्धरिता ।।
भवति च पुरुषेऽधोऽमातस्य तलेऽम्भोविनिर्दश्यम् ।।६।।
पीतोरेव प्राच्यां वाल्मीकोऽतोऽद्धिपंञ्चभिर्हस्तः ।।
दिशि याम्यां तोयं वक्तव्यं सप्तभिः पुरुष ।।७।।
प्रथम पुरुषे भुंजगः सितासितो हस्तमात्रमूर्तिश्च ।।
दक्षिणतः वहति शिरा साक्षरं भूरि पानीयम् ।।८।।

सर्वघातचक्रम्। रोगातगोसनेरणं दो मंगले

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं. घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं. घा.	५	९	१	६	१०	२	७	१	८	१२	३	७
बु. घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
वृ. घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु. घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा. घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति. घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वा. घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.
न. घा.	म.	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
यो. घा.	वि.	शू.	प.	धृ.	प्र.	शु.	शु.	व्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र. घा.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.
धा. घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
व. घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.
सं. घा.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
सं. घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
सं. घा.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.
व. घा.	रक्त	श्वे	हरि	पां.	धूम्र	चि.	कृ.	लक	पी.	कृ.	धू.	श्वे.
स्त्री	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.
चं. घा.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

दीर्घः	विस्ता.	आयः	वार	अंश	धन	ऋण	ऋक्षं	तिथिः	योगः	आयुः	दीर्घ	विस्तार	आयः	वार	अंश	धन	ऋण	ऋक्षं	तिथिः	योगः	आयुः
२१	१९	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५९	५३	१	५	९	१२	३	१५	१२	२१	७२
२५	२१	५	७	९	१२	७	१६	१५	२१	१२०	६१	५५	७	६	९	१२	५	२१	३	२४	४८
२७	२५	३	६	९	१२	१	२७	१५	२७	१२०	६१	५३	१	५	३	४	३	२५	४	२६	६४
३१	२९	३	६	३	४	१	१७	७	५	११२	६१	५५	३	४	६	८	१	२	५	१	८०
३३	२७	३	४	९	१२	१	२७	३	२७	४८	६३	५७	३	७	९	१२	१	९	१२	१८	७२
३५	२९	७	७	६	८	५	२०	५	१०	८०	६३	५९	१	७	९	१२	३	१८	१५	९	१२०
३५	३३	३	७	९	१२	१	६	१५	३	१२०	६३	५३	७	७	९	१२	५	२७	३	२७	४८
३७	३१	३	५	६	८	१	२३	१०	२५	५६	६५	५७	५	७	९	१२	७	९	६	१८	९६
३७	३३	५	६	९	१२	७	२१	३	२४	४८	६५	५९	५	२	६	८	७	२०	५	१०	८०
३९	३३	७	५	९	१२	५	९	६	१८	९६	६५	६३	१	४	९	१२	३	२१	१५	२४	१२०
३९	३५	५	७	९	१२	७	१२	१५	६	१२०	६५	५५	३	४	६	८	१	८	५	४	८०
४१	३५	३	७	६	८	१	५	५	१६	८०	६७	६१	७	७	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
४१	३९	७	६	९	१२	५	२१	१२	२४	७२	६७	६५	५	६	६	८	७	२३	५	२५	८०
४३	३५	१	७	३	८	३	२५	१०	२६	४०	६७	६१	७	५	६	८	५	२६	११	१३	५६
४३	४१	२	५	३	४	१	१०	४	५	६४	६९	६५	३	२	३	४	१	१०	१०	५	४०
४५	३७	१	५	९	१२	३	९	१५	१८	१२०	६९	६१	१	४	९	१२	३	३	१२	१५	७२
४५	४३	७	६	९	१२	५	९	१५	१८	१२०	७१	६३	३	७	९	१२	१	२७	६	२७	९६
४७	४१	७	४	६	८	५	२६	११	१३	५६	७१	५७	७	२	९	१२	५	३	६	१५	९६
४७	४५	३	२	९	१२	१	१८	१५	९	१२०	७१	६५	७	४	६	८	५	११	५	१९	८०
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१७	११२	७३	६१	३	५	९	१२	१	२५	१२	२१	७२
४९	४३	३	७	६	८	१	८	११	४	५६	७३	६१	५	२	६	८	७	११	१४	१९	१०७
४९	४५	५	७	९	१२	७	९	१५	१८	१२०	७५	६३	७	७	९	१२	५	१८	१२	९	७२
५१	४५	७	५	९	१२	५	२७	१५	२७	१२०	७५	६५	१	५	३	४	३	२१	१०	२६	४०
५१	४७	५	६	९	१२	७	६	६	३	९६	७५	६३	५	७	९	१२	७	२७	१५	२७	१२०
५१	४९	३	७	९	१२	१	१२	१२	६	७२	७५	६५	३	६	५	१२	१	१२	१५	६	१२०
५५	४७	१	४	३	४	३	२५	१०	२६	४०	७५	६७	१	५	९	१२	३	२४	१५	१२	१२०
५५	४९	७	७	६	८	५	२४	५	७	८०	७५	६९	७	४	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
५५	५३	३	६	३	४	१	१९	१०	२३	४०	७७	७३	३	२	९	१२	१	६	५	३	१२०
५७	५१	३	४	९	१२	१	९	६	१८	९६	७७	६५	५	७	६	८	७	२६	११	१३	८८
५७	५५	७	५	९	१२	५	२४	१५	१२	१२०	७७	७१	३	७	६	८	१	२१	१५	२५	५६
५९	४९	३	७	३	४	१	१६	१३	८	८८	७७	७५	७	७	९	१२	५	३	७	१५	१२०
५९	५३	७	३	६	८	५	१४	११	७	५६	७७	६७	७	७	३	१	५	१६	७	८	११२

अथ गृहे गृहस्योच्छ्रायनिर्णयः

विस्तारषोडशांश सचतुर्हस्तो भवेद् गृहोच्छ्रयः द्वादशभार्गेन भूमौ वा स्यात्समस्तानाम्। गृहस्यभित्तिप्रमाणम्। व्यासात् षोडशभागः सर्वेषां सद्मनां भवति भित्तिमै पक्वेष्टका कृतानां दारुकृतानान्तु विकल्पः।। तथा च गर्गः।। विस्तारषोडशांशेन गृहभित्तिम् प्रकल्पयेत्।। नवत्रयोदशांशैश्च करैर्ज्ञात्वा प्रकल्पयेत्।।

वास्तुभूमिशुभाशुभज्ञानप्रकार- सायंकाले हस्तप्रमितायां विस्तृतिप्रमाणं गर्तं विधाय जलपूर्णंकृत्वां प्रातःकाले पुनर्विलोक्यम् तत्सजलं शुभम्। निर्जलं मध्यम्। स्फुटितं असदिति।

गृहेसूर्यचन्द्रवेधनिर्णयः - चन्द्रविद्धं गृहं कार्यं सूर्यविद्धं जलाशयम्। हृदो वा वाटिका वापि द्वाभ्यां विद्धा प्रशस्यर्ते।। पूर्वापरदैर्घ्ये रविवेधो याम्योत्तर दैर्घ्ये चन्द्रवेध उक्तः। अन्यच्च- मन्दिर देवायतनं तत्र पिण्डविचारोऽपि न कर्तव्यः।

कदा द्वादशस्थचन्द्रमा शुभदः

आदाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।
अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु।
यात्रायुद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशः शुभः।
उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहस्थितोऽपि वा।
मित्रवर्ग मित्र दृष्टः स ग्रह सबलः स्मृतः।

यात्रायां प्रस्थानस्थापनम्

प्रस्थापने भूमिपालो दशदिवसमभिव्यापय-पञ्चरात्रमित्यादि। दिक्परत्वेन प्रस्थान-स्थापनं।। सप्ताहएव पूर्वस्यां प्रस्थाने पञ्चं दक्षिणे। पश्चिमे त्रीणिशस्तानि सौम्यायान्तु दिनद्वयम्।

वाटिकाचक्रं शिवयामलोक्तम्

वृक्षं चक्रं कल्पयित्वा चक्रमेव न्यसेत्पुनः।।
सूर्यभाद्दिनम् यावद्वृक्षचक्रं विधीयते।।
मूले त्रयं रोगभयं त्वचि त्रीणि धनागमः।।
शाखासुवेदनाशः स्यात् पत्रे युग्मं दरिद्रता।।
शीर्षत्रीणि कृतं प्रोक्तं पूर्वचैकस्तु मृत्युदः।।
याम्ये पञ्चात्मकोऽप्यस्य पश्चिमे दोषागमः।।
उत्तरेवेद लाभाय।

शूल चंद्र एवं योगिनी चक्र

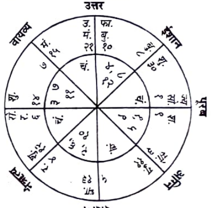

यात्रा विचार-
अथ यात्रायां शुभाशुभनक्षत्रज्ञानाय चक्रम्

अश्वि.	पुन.	अनु.	मृग.	पुष्य	रेवती	हस्त	श्रवण	धनिष्ठा	एषु शुभाः
रोहि.	पू.३	उ.३	ज्येष्ठा	मूल	शतभिषा		एषु भेषु मध्याः		
भरणी	कृत्ति.	आर्द्रा	श्लेषा	मघा	चित्रा स्वाती विशा.		एतद्धे निन्द्याः		
श्रवण	हस्त	मृग.	पुष्य	एषु सर्वदा दिक्शूल दिनं विहाय शुभाः					
पू.३	कृत्ति.	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठा	विशा.	आश्ले.	चित्रा	एषु आवश्यके
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	१४	यात्रायां त्याज्य घट्यं

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम्

आद्यचन्द्रः श्रियः कुर्यात् द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राज सन्मानं चतुर्थेकलहागमः।।१।। पञ्चमे ज्ञान वृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा। सप्तमे सुखकृतचन्द्रोह्यष्टभे मरणं भवेत् (कष्टं वा)।।२।। नवमे भाग्य वृद्धिश्च दशमे सुख सम्पदः। एकादशे सर्वलाभो द्वादशे चाशु भयावहः।।३।। आवश्यके द्वादशः-गतेऽपि यात्रा कार्यानिष्ट चन्द्रदानात्। दान-सामग्री दधि श्वेततण्डुल घृत रजत मुक्तादयः।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रायां छिक्का फलम्

पूर्वे अशुभम्। अग्रये दुःखी। दक्षिणे अनिष्टः। नैऋत्ये शुभम्। पश्चिमे सुभोज्यं। वायव्ये धन प्राप्ति। उत्तरे कलहः। ईशाने शुभम्। मध्ये भयः।

अथ यात्रायां समयशूलचक्रम्

पूर्वस्मिन्	प्रातःकाले
दक्षिणे	मध्याह्नकाले
पश्चिमे	सन्ध्यायाम्
उत्तरस्यां	अर्द्धरात्रौ

यात्रायां समयविचारः

तत्र सर्वासु यात्रासु शुक्रास्तो निषिद्धः। तदा जन्मदशेशेऽस्तंगतेऽपि न गन्तव्यम् तीर्थं यात्रासु गुरु शुक्र रस्त कालो वर्ज्यः सिहस्थ गुरुतोच्च गोऽपि वर्ज्यः।।

संमुखेह्यर्थलोभायदक्षिणेसुख संपदः। पृष्ठतोमरणं चैववामेचन्द्रेधनक्षयः।।
सर्वे दोषा लघु यान्ति पूर्णचन्द्रे हि संमुखे।

अथ पथिराहुचक्रमिदम्

अश्विनी	पुष्य	अश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शतभिषा	धर्मभानि
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू.भा.	अर्थभानि
कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	कामभानि
रोहिणी	मृगशिरा	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षभानि

समरे (मुकदमा अथ कुल-अकुल बोधचक्रम्

कुलगणः	स्थायी समरे जयः	अकुलगणः (यायि) जयः	कुलाकुलगणः (सन्धिः समरे)
तिथयः	८।१२।४।१४	१।३।५।७।९।११।१३।१५	२।६।१०
वाराः	भौम, शुक्र	रवि,चन्द्र, गुरु, शनि	बुध
भानि	पू.३ अश्वि.वि.म. मृ.कृ.चि.ज्ये.श्र.पु.	भ.श्ले.स्वा.रे.ह.ध. अनु.पुन.उ.३ रो.	श.मू.आर्द्रा अभि.

अथ वारपरत्वेन पाशचक्रम्

पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
मं.	चं.	गु.	०	श.	शु.	गु.	बु.	वारा

सूर्यधर्म्मगते चन्द्रो न मोक्षे शुभप्रदः। सूर्येधनगते धर्म्म मोक्षमार्गेशुभः शशी।। कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थे-संस्थचन्द्रो जयप्रदः मोक्षऽर्केधर्म-गतश्चन्द्र शुभोऽन्यत्र न शोभनः।

यात्रायां सर्वदिक शूलज्ञानाय चक्रम्।

पूर्व	आग्रे.	दक्षि.	नै.ऋ	प.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिक् ८
चं.श.	चं.गु.	गुरु.	सू.शु.	सू.शु.	मं.	मं.बु.	बु.श.	वाराः

यात्रायां - लग्नशुद्धिः। जन्मराशिलग्ने। कुम्भकुम्भांशकोमीनपृष्ठोदयराशयः त्याज्याः। लग्नात् १।४।७।१०।५।९ स्नाथेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः १० शनि ७ शुक्रो नेष्टः। लग्नात् १।६।७।८ स्थानगश्चन्द्रो १।६।७।८।१२ लग्नेशो न सत्। शुभाशुभहीनमष्टमभवनम्।

यात्रायामशुभशकुनानि–बन्ध्या स्त्री, चर्म, तुषा, अस्थि, सर्प, लवण निर्धूमाग्नि, इन्धन नपुंसक, विष्ठा, तपस्वि, उन्मत्त, चर्बी, ओषध, शत्रु, जटावान्, सन्यासी, तपस्वी, व्याधिमान्, नग्नतैलाभ्यंग, अंगभंग, जातिभ्रष्ट क्षुधार्त, रुधिर, स्त्री, पुष्प, नरट, छिक्का, स्वगृहदाह, मार्जारयुद्ध, रक्तवस्त्र गुड़, तक्र, पंक, विधवा, कुब्ज, कुटुम्बेकलह, वस्त्रादेस्खलनं, महिषयुद्ध कृष्णवस्त्र तूल वमनं, दक्षिण गर्दभशब्दः अत्यन्त क्रोधी, गर्भवती मुण्डी, आद्राम्बर, दुष्टवाणी, अन्ध, बधिर, रजस्वलाम्बर, कुमारहीन, अतिरोगी, गधादर्शन, जातकदर्शन, सूकरदर्शन, शशकदर्शन, मर्कट दर्शन, ऋक्षशब्दयाते, प्रयाणसमये दृष्टाः सन्त न शुभाः नद्युतार भय प्रवेश युद्धाषटार्थजन संवीक्षणे अशुभाशकुनाः शोभनाः नृपदर्शनेवलायां यात्रोदिता, शोभनाः।

यात्रायां शुभशकुनानि – ब्राह्मण २, अश्व, गज, फल, अग्र, दुग्ध, दधि धेनु, सर्षप, कमल विमलवस्त्र वेश्या, वाद्य, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, आदर्श ससुतस्त्री, सन्मुखछत्र, नघः नीलकण्ठ रज्वादिनाबद्धपशु २ चम्पकादिपुष्प, कन्या कार्यसिद्धिवाक्य, मृतिका सजलपूर्णघट, घृत, इक्षुदण्ड, रत्नमाल्यादि शिरोवेष्टन, श्वेतवृषभ मदिरा कज्जल, पीताम्बर, गोरोचन, अरोदनशव, १ पताका, मेष, रजक, वेदशब्द, मंगलवस्तु, गीतगानादि भरद्वाज पक्षी, शिवाका, अंकुशहस्तिचालक पश्चाद जलघट, मंगलशब्द, दुर्वा कोकिला पल्ली, सूकरी रला भैरवी, छछून्दरी, श्रृङ्गाली, कपोत, खंजन तित्तिर हंसादयः। मेखर शब्दः। प्रयाणसमये दृष्टाः फलदा भवन्ति।

आसन्न मृत्यु लक्षणम्–अरुन्धन्ती ध्रुवं चैव नभो मन्दाकिनी तथा सर्वं नाशाग्रं च चन्द्रार्कमायु हीनो न पश्यति। पांशु पंकादिषु न्यस्त चरणं खण्डितं यदि। स्वाम्बु लिप्त गात्रस्य यस्यात्यं प्राक् प्रशुप्यति। पिहिते कर्ण युगले यस्य घोषोनुपश्रुतिः। अदर्शनं स्व शिरसः प्रति बिम्बे जलादिषु। छिद्रं प्रतिच्छायायां स चिरं नैव जीवति। दीप निर्वाण गन्धे च सुहृद्वाक्य-मरुन्धतीम्। न जिघ्रन्ति न श्रृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः।। (१) जब कान पर हाथ रखने से कान में से घोष न होवे। (२) जल में अपना मस्तक न दिखाई दे। (३) अपनी छाया में छिद्र का आभास हो। (४) अपनी नासिका का अग्रभाग न दिखाई दे। (५) कीचड़ या धूल में पांव रखने से पदचिन्ह खण्डित दृष्टि गोचर हो। (६) ध्रुवतारा न दिखाई दे इत्यादि, तो समझ जाइये कि आयु सम्बन्धी कष्ट आने वाला है।

आवश्यके दिग्शूल दोषनाशाय वारक्रमात् वस्तुनाम

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
घृतम्	पुष्पं	गुड़म्	तिलान्	दधिः	यावान्	माषात्र	भक्षणं
ताम्बूलम्	चन्दनं	मृदु	पुष्पं	दधिः	घृतम्	तिलम्	धारणं

दिग्लग्नानि।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिक
१।५।९	२।१०।६	३।७।११	४।८।१२	शुभ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्य
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	नेष्ट
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	नेष्ट

यात्रायां वारदोहदज्ञानायचक्रम्

रविः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
रसालं	पयस्	कांजी	पक्वदु.	दधि	पयः	तिल

यात्रायां दिनमानस्याष्ट मांशेन रात्रौ रात्रिमानास्याष्ट मांशेन च (चौघड़िया मुहूर्त) बेलाफलज्ञानाय चक्रम्

श्री	र.दि.	चं.दि.	मं.दि.	बु.दि.	गु.दि.	शु.दि.	श.दि.
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
४	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
४	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
४	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
४	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
४	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
श्रीः	र.रा.	चं.रा.	मं.रा.	बु.रा.	गु.रा.	शु.रा.	श.रा.
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
४	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
४	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
४	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
४	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
४	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशः। षष्ठ्यष्टमोविष्णुदिनानि रिक्तां विहाय चित्रोत्तररोहिणी च। मृगान्त्यमैत्रेशनिवित्सितेज्येर्निवृत्य गेहं प्रविशेत्यत्राणात्। स्थिरराशिलग्ने ४।८ शुद्ध १।७।४।१०।५।९। स्थानेषु शुभैः। ३।६।११ स्थानेषु पापैः योजनान्तं लघुयात्रा २५ योजनं मध्यान्तः परं दीर्घा ज्ञेया।

दिन रात्रि में समान साधन युक्त 'सहम'

सहमा	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	सहमाः	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
मातृ	शनि	गुरुतः	लग्न	श्रद्धाः	भौमः	शुक्रात्	तनु
पुत्र	चन्द्र	गुरुतः	लग्न	प्रमाद	पुण्यः	शुक्रात्	तनु
रोग	चन्द्र	तनुतः	तनु	व्यापा.	बुधः	ज्ञानात्	तनु
बंधु	चन्द्र	बुधात्	तनु	कन्या	चन्द्रः	भौमात्	तनु
मृत्यु	चन्द्र	८भावात्	शनि	संताप	चन्द्र	शुक्रात्	तनु
यात्रा	धर्मेश	धर्मतः	तनु	गर्भ	शनि	ज्ञानात्	तनु
धन	धनेश	धनात्	तनु	जलाध्व	लग्न	शतशः	६भा.
परस्त्री	सूर्य	शुक्रात्	तनु	राज	गुरु	कर्काद्धत	मतम
वणिक	बुध	चन्द्रात्	तनु	घातक	पुण्यः	चन्द्रतः	तनु
विवाह	शनि	शुक्रतः	तनु	घातक	पुण्य	गुरुतः	तनु

उदाहरण-दिन में पूर्ण सहम बनाने के लिये चन्द्र से सूर्य को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिए। रात्रि में सूर्य में चन्द्र को और लग्न जोड़ दे अतः दिन में जो घटता है उस पर एषऊन जिसमें घटता है उस पर अस्मिन् लिखा है। कुछ सहम दिनरात्रि में समान ही रहते हैं एषउन अस्मिन् यह संकेत दिन के लिये ऊपर रात्रि के लिये नीचे लिखा है। उसमें से जो घटता है उन दोनों के बीच में लग्न न आये तो स्पष्ट सहम राशि में १ राशि जोड़ना चाहिए।

अथ नक्षत्रचक्रम्

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशाः
ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.	भानि

अथ यात्रायां दिग्वाहनानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशाः
गज	रथ	अश्व	शिवि.	वाहन

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

दिशाः	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायु	उत्तर	ईशान
वस्तूनि	घृतम्	तंडुलं	तिलोदं	सक्तुकं	मत्स्य	गोधूम	दुग्धम्	पायस

अथ योगिनीवासचक्रम्

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथयः

अथैकस्मिन् दिनेप्यावश्यके योगिनीभोगस्तद्बोधकचक्रं

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	घटी
४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल
३३	३७	४१	४५	४८	५२	५६	६०	घटी
४४	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल

अथास्यफलम्

योगिनी सम्मुखेद्यूते गमे युद्धे च मृत्युदा।। अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा।

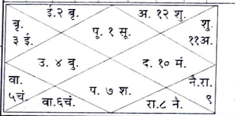

समयशूल-

उषाकाल में पूरब को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्न काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये।

सहमसारिणी दिनरात्रिवश जिन सहमों के शोध्य में भेद होता है

दिने	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	दिने	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
पुण्यः	सूर्यः	चन्द्रे	तनु	प्रसूति	बुध	गुरुतः	तनु
गुरु	चन्द्र	रवौ	तनु	जाढय	शनि	भौमतः	बुध
यशः	पुण्यः	गुरौ	तनु	जल	चन्द्र	शनौ	लग्न
मित्र	गुरुस.	पुण्ये	तनु	शत्रु	शनि	भौमतः	लग्न
भाहा	भौमः	पुण्ये	तनु	दरिद्र	बुध	पुण्यतः	बुध
आशा	शुक्रः	शनौ	तनु	शास्त्र	शनि	गुरुतः	बुध
राज	सूर्यः	शनि	तनु	वंदक	सूर्य	चन्द्रात्	तनु
जाता	शनिः	गुरौ	तनु	बन्धनं	शनि	पुण्यात्	तनु
जीवि.	गुरु	शनौ	तनु	अश्व	सूर्य	पुण्यात्	लाभः
कर्म	बुधः	भौमतः	तनु	अन्यक.	शनि	चन्द्रात्	तनु
कलि	भौमः	गुरुतः	तनु	वृद्धि	सूर्य	जीवात्	तनु
चेतु.	भावः	१२ भा	तनु	अरि	शनि	भौमात्	तनु
रात्रौ	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं	रात्रौ	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं

विद्या १ ज्ञान २ ज्ञाति ३ सहम गुरु सहम ही होता है। पिता सहम राजा सहम समान है। बल १ देह २ यश के सदृश है। विवाह सहम से स्त्री का विचार होता है। सामर्थ्य सहम के साधन में लग्नेश यदि भौम हो तो भौम को गुरु में घटायें। गौरव सहम के लिये दिन में वृ.-चं.+सू रात्रि में वृ.-र+चं. कार्य सहम दिन में चं.-लग्नप+ लं.रात्रि में लग्नप - चं.+ल कार्यसिद्धि श.-सू.+सू रा.प. रात्रि में श.-च+चं. रा. प. गुरुता दिन में सूर्योच्च-सू.+ल. रात्रि में चन्द्रोच्च चं.+ल.।।

श्रीकाश्यां लग्न सारणीयम्

०	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	रा.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
७	०	४१	५६	४	११	१८	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२१	२९	३८	४६
२२	मे.	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
०	रा.	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
८	१	५४	३	११	२०	२८	३७	४५	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१५	२५	३५	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
२६	वृ.	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०	रा.	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
१०	२	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	८
८	मि.	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०	रा.	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
११	३	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३
२४	क.	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०	रा.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
११	४	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०
३०	सि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०	रा.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
११	५	४१	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५
१०	कं.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०	रा.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
११	६	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	४८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	३०	४१	५३	०	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
१०	तु.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०	रा.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
११	७	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०
३०	वृ.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०	रा.	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
११	८	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२३	३५	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४
२४	ध.	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०	रा.	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
१०	९	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	६	१४	२२	३१	३९	४८	५६	५	१३	२१	३०	३८	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४६	५४	३	११
८	म.	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२६	५२	१८	४४	१०	३३	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	१८	१४	४०	६	३२
०	रा.	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
८	१०	१९	२८	३६	४५	५३	२	१०	१९	२६	३३	४१	४८	५५	३	१०	१७	२५	३२	४०	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३८	४६	५३	१
२६	कुं.	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	२	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
०	रा.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
७	११	८	१५	२३	३०	३७	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२१	२८	३५	४३	५०	५७	५	१२	१९	२७	३४	४२
२२	मो.	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४

लग्न स्पष्ट करने की विधि-

यत्सूर्यराश्यंश समान कोष्ठे घट्यादिकंस्वेष्टघटी युतंतत्।
तत्तुल्य् घट्यादि भवेद्धि यत्र तत्तिर्यगुर्ध्वांकमितं हि लग्नम्।

सूर्य राश्यंश के समान कोष्ठ के घटी पल में इष्ट काल घटी पलादि जोड़ने से आने वाली संख्या को उपरोक्त लग्न सारिणी में देखिये, जहाँ कही भी लग्न सारीणी में उक्त संख्या या उसके लगभग वाली संख्या मिले उसके बाई ओर लग्न की राशि तथा ऊपर लग्न के अंश होंगे।

उदाहरण-जन्म कालिक सूर्य ५।१२ इष्ट घट्यादि १५।३० है। लग्नसारिणी में सूर्य की ५ राशि १२ अंश का समकोष्ठ देखा तो ३०।५५।५० सूर्यफल मिला, इसमें इष्ट घट्यादि १५।३० जोड़ा तो ४६।२५।५० हुआ। अब लग्न सारिणी में इसे देखा तो ४६।२७।४८ मिला। इसके बाईं ओर धनुलग्न तथा ऊपर ४ अंश मिला अतः ८।४।४६।४७ राश्यादि लग्न हुआ।

यही लग्न सारिणी गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, झांसी, बलिया, बाँदा, इलाहाबाद, छपरा, पटना, मुँगेर, भागलपुर, हाजीपुर, हैदराबाद, चित्रकूट, बूँदी, पूर्णिया, शाहाबाद, सहसराम, कुदरा, डुमराँव, मालदह आदि स्थानों के लिये भी है।

शिववास फल विचारः

तिथिं च द्विगुणी कृत्वा पुनः पञ्च समन्वितम्। मुनिभिस्तु हरेद्भागं शेषं च शिववासनम्।।
एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ। तृतीये वृषभारुढः सभायां च चतुर्थके।।
पंचमे भोजने चैव क्रीड़ायां च रसात्मके। श्मशाने सप्तमे चैव शिववासः उदीरितः।।
कैलाशे लभते सौख्यं गौर्य्यां च सुख सम्पदौ। वृषभेभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभायांतापकारकौ।।
भोजने च भवेत् पीड़ां क्रीडायां कष्टमेव च। श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत्।।

चक्रमिदम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथयः शु. पक्ष
७	१	२	३	४	५	६	७	८ ३०	९	१०	११	१२	१३	१४	तिथयः कृष्ण पक्ष
मृत्युकारकः	शुभम्	कष्ट कारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धिः	पीड़ा	मृत्युः	शुभम्	कष्ट कारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धिः	पीड़ा	मृत्युः	फलम्
श्मशाने	गौरी सन्निधौ	सभायाम्	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	गौरीसन्निधौ	सभायां	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	शिववासः

विशेषमाहः-कृष्णपक्षस्य तिथि गणनायां पञ्चदश संख्यां मेलयित्वा अस्मिन् चक्रे फलादेशो निर्दिष्टः। शिवप्रतिष्ठयां, महामृत्युञ्जय जपे तथा पार्थिव पूजने शिववासः विचारयेत्। नित्यं शिवपूजने न विचारणीयम्।

स्पष्टार्थ अथवा शिवास जानने की रितिः–कृष्ण पक्ष की तिथि में पहले १५ जोड़कर तब गणित करें। ० शेष बचे तो उसको ७ माने। जैसे ७ तिथि को लें–७ + १५ = २२ × २=४४ + ५ = ४९÷७ = शेष ० अर्थात् ७। शिव प्रतिष्ठा, महामृत्युञ्जय जप तथा पार्थिव पूजन में इसका विचार करें। रुद्राभिषेक में शिववास मिल जाये तो अच्छा है किन्तु अनिवार्य नहीं है। श्रावणमास में शिववास देखना आवश्यक नहीं है।

अथ चैत्रादिमासेषु मन्वादि तिथयः

चै.शु.	ज्ये.शु.	आषा.शु.	भा.प.शु.	आश्वि.शु.	कार्ति. शु.	पौष शु.	माघ शु.	फा.शु.	श्राव.कृ.
३।१५	१५	१०।१५	३	९	१२।१५	११	७	१५	८।३०

अथ युगादि तिथयः

वैशा.	भाद्रपद	कार्तिक	माघ	मासाः
शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	पक्षः
३	१३	९	३०	तिथयः
त्रेता	द्वापर	कृत	कलि	अनध्यायं प्रकुर्वीत
युगादिः	युगादिः	युगादिः	युगादिः	मन्वादि युगादिषु

सामान्य सुभिक्षादिकम

प्रभवात् द्विगुणं कृत्वा त्रिभिनूनञ्च कारयेत्।।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम्।।
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम्।।
त्रिषष्ठे च समता ज्ञेया शून्ये पीड़ा न संशयः।।

कल्पादि तिथयः-चैत्रशुक्ल १, वैशाख शुक्ल ३, कार्तिक शुक्ल ७, मार्गशीर्ष शुक्ल ९, माघ शुक्ल १३, चैत्र कृष्ण३।

दशावतार - मत्स्यावतारः चैत्रशुक्ल ३, अपराह्ने। रामावतारः चैत्रशुक्ल ९ मध्याह्ने। परशुराम अवतारः वैशाख शुक्ल ३, प्रदोषे। नृसिंहावतारः वैशाख शुक्ल १४, सायंकाले। कूर्मावतारः वैशाख शुक्ल १५, मध्याह्ने। कल्कि अवतारः श्रावण शुक्ल ६ सायंकाले, कृष्णावतारः भाद्रपद कृष्ण ८ निशीथे। वामनावतारः भाद्रपद शुक्ल १२ मध्याह्ने। बौद्धावतारः आश्विन शुक्ल १०, सायंकाले। वाराहावतारः भाद्रपद शुक्ल ३ अपराह्ने।

अथ जन्मकुण्डलीत प्रतिवर्षीयप्रतिभाव विचार - जन्मागं प्रथमं विद्धि द्वितीयञ्च द्वितीयकम्। एवं द्वादश भावाः स्युर्द्वादशवर्षस्य सूचकाः।। द्विरावृत्या लग्न भावात् त्रयोदश पुरस्सराः, त्रिरावृत्तस्तु षट्त्रिंशद्वर्षाणि स्युरिहायुषाम्।। आवृत्तितस्तु दशभिः पूर्णतः पुरुषायुषः। वर्ष संज्ञक भावास्युर्यदि कोणेषु १।५।९ सद्ग्रहाः।। दैहिकं सकलं सौख्यं वर्षेऽस्मिन्नियतं शुभम्। तद्वर्षमासा लग्नात्स्युतथा भावाः धनादयः। तत्तद्भावस्य कोणस्था यदि सर्वेशुभंग्रहाः।। तद् वर्षे तस्य भावस्य विशेषात्सुख कारकाः।। एवं पापग्रहास्तेषु कोणेषु यदि संस्थिताः सखलाः भावनाशाय निर्बलास्त्वसुखाय च।। शुभैस्तु शुभाधिक्यं पापैस्तु भाव संक्षयः। मिश्र मिश्र फले ज्ञेयं बलाबल विशेषतः। इति।।

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकान्तिः	मृतिः	धनप्राप्तिः	वृत्ति हानिः	विपत् हानिः	सुखं	फलम्
पुष्पं	०	मृत्	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

समानगोत्रप्रवरविवाहेमहापातकमुक्तम् - आपस्तम्बः समानगोत्रप्रवरांकन्यामुद्वोपगम्य च। तस्यामुत्पाद्य चाण्डालं ब्राह्मण्यादेव हीयते। अन्यच्च एकस्मिन्प्रवरेतुल्यमातृगोत्रेवरस्य च। तमुद्वाहनं कुर्वंतिं सा भगिनी कन्या भवेत्।। आरूढ़पतितापत्यं ब्राह्मण्यां यश्चशूद्रजः। सगोत्रोढ़्वा सुतश्चैवचाण्डालास्त्रयईरितः।।

अथ समानां क्रियादि विचारः-एकमातृजयोरेकवत्सरे पुरुषस्त्रियो। न समानक्रियां कुर्यान्मातृभेदेविधीयते।। नारदोऽपि विवाहस्त्येक जन्यानांषण्मासाभ्यन्तरे यदि।। असंशयात्त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैकाविधवा भवेत्।। एकोदरप्रसूतयोः पुत्रयोः कन्ययोः कन्यापुत्रयोश्चापिनिषेधः सकलशुभ कर्मणाम्।। पुत्रविवाहानन्तरंपुत्र्युद्वाहनिषेधः पुत्रोद्वाहात्परं पुत्रीविवाहो न ऋतुत्रये। वर्षभेदे तु षण्मासाभ्यन्तरे विहितः शुभः।। कन्योद्वाहात्परं पुत्रविवाहः श्रेष्ठ ।। सोदरकन्ययोः सोदराभ्यामुद्वाहे निषेधश्च नारद। नचैकजन्मनोः पुंसो नैकजन्मे तु कन्यके।। नूनं कदाचिदुद्वाहे नैकदा मण्डपद्वयमिति।।

अथ रव्यादिग्रहाणां जन्मभाद्गोचरफलवेधयोज्ञानाय चक्रम्।

श्री	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
१	स्थान नाशःपथा	पुष्टि अन्नलाभः	भयम् पीडाच	बंधनम् भयम्	अरिष्टादि भयम्	सुखं शत्रु नाशः	सर्वनाशः पीडाभयम्	हानिः कष्ट भयम्	हानिः रोगभयम्
२	हानिः भयम्	धननाशः सुखम्	धननाशः नेत्रार्ति	धनलाभः	धनादि लाभः	सुखम् धनप्राप्तिः	शोकः धनहानिः	नैस्वः व्ययं	वैर वित्तनाशः
३	सुखम् श्रीप्राप्तिः	द्रव्याप्तिः सुखम्	सुखं श्रीप्राप्तिः	भयम् शत्रुतः	भयम् रोगाप्तिः	सुखम् अर्थलाभ	सुखार्थ लाभः	नैरुज्यं धनप्राप्ति	सुखलाभ वृद्धिः
४	रोगभयम् माननाशः	रोगःमा-नार्थहानिः	कष्टं शत्रुः भीतिः	धनसुखा-दिप्राप्तिः	धनहानिः भयं	धनागमः	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धिः	वैरशोकश्च	भीति पीड़ा
५	दैन्यम् अर्थनाशः	सुखं कार्य नाशः	रुग्भयम् धननाशः	रोगभयम् शोकश्च	लाभः सुखम्	सुखम् पुत्रलाभ	धनपुत्रयोः नाशः	हानिः शोकश्च	सुखमर्थः नाशः
६	रिपुनाशः सुखम्	वित्तलाभः	सुखार्थ लाभः	अलाभ-स्थितिः	रोगः शोकश्च	शत्रुभयं पीड़ाच	सुखम् वित्तलाभ	सुखम् लक्ष्मीप्रा.	सुखम् वित्तलाभ
७	गमनम् धनहानिः	द्रव्यप्राप्तिः सुखम्	कार्श्यं धननाशः	पीड़ाभयं विग्रहः	सुभोग सुखञ्च	शोकः अतिभयं	दोषः पीड़ाभयं	दारिद्रयं हानिः	दुर्गति पीड़ा च
८	रोगार्त भयम्	क्लेश मृत्युभयं	भयंपाप बुद्धिः	धनादि लाभः	मृत्युभयं पीडाच	विपत्तिः धनदः	पीड़ाभयं शोकः	रुग्भयं व्यसनञ्च	पीडाभयं हानिश्च
९	कांतिक्षयः पापबुद्धिः	मानम् नृपभयम्	रुग्भयम् सुखम्	रुग्भयं धननाशः	सुखं सुमानं	सुख लाभः	पापम् धननाशः	पापकर्म रतः	पापं दैन्यश्च
१०	सौख्यसुख कर्मसिद्धि	शुभम् सुखम्	सुखम् शोकञ्च	सुखं सुखभागः	अति भयम्	धर्मलाभः असुख	वैमनस्य शुभः	वैरम् सुखम्	भयम् शोकञ्च
११	वित्ताप्ति सुखम्	विविधार्थ लाभः	लाभः सुखप्राप्ति	शुभः अर्थागमः	सौख्यं लाभः	दुःखम् धनागमः	सुखम् वित्तलाभः	सुखवृत्तिः प्राप्तिः	सुयशो ऽर्थलाभ
१२	द्रव्यनाशः पीड़ाभयम्	रोग धननाशः	रोग शोकञ्च	शोकः धननाशः	पीडा भयम्	धनागमः	क्लेशोऽ नर्थश्च	हानिः पीडाच	पीड़ाभयम् वैरञ्च

सहोदर भाई और सहोदर बहिन का विवाह शास्त्रोक्त नहीं है। एक मण्डप में दो विवाह नहीं करना चाहिये।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुधः	बृहस्पति	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
१।६।१०।११	१।२।३।५।६	३।६।१०।११	२।६।१०।११	२।५।७।९।११	१।२।३।९।११	३।६।१०।११	शुभाः
१।२।५।७।९	७।९।१०।११	१।२।५।७।९	१।३।५।७।९	१।३।६।१०	१।२।५।७।९	१।२।५।७।९	पूज्याः
१।२।४।८	४।८।१५	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्याः

अथ वारपरत्वेन कालचक्रम्	पूर्व	अग्नि	दक्षि.	नैऋ.	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशः
	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	भौम	चन्द्र	सूर्य	०	वाराः

अथात्रप्रत्येक ग्रहाणां रेखाष्टकज्ञानाय सारणीयम्

तत्रादौखेरष्टकवर्गाङ्काः ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९	९	११			९	१२	११
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथचन्द्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ४९

चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	४	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
१०	८	११	१०		११		१०
	११	१०	१२	११			
		११					

भौमस्याष्टकवर्गाङ्काः

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
			१०				१०
११				११			

अथ बुधस्याष्टकवर्गाङ्काः

बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
	८	९		११	९	१०	
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

अथगुरोरष्टकवर्गाङ्काः ५६

गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१/२	२	१/२	१	१/२
२	५	५	३	५	४	२	४
३	६	६	४	७	७	४	५
४	९	१२	७	९	८	५	६
७	१०		८	११	१०	६	७
८	११		९		११	९	९
१०			१०			१०	१०
११			११			११	११

शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	ल.
१/२	३	८	१/२	३	३	५	१
३	४	११	३	५	५	८	२
४	५	१२	४	६	६	९	३
५	८		५	९	९	१०	४
८	९		८	११	११	११	५
९	१०		९	१२			८
१०	११		११				९
११			१२				११

अथशनेरष्टकवर्गाङ्काः ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्नस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	३	३	१	१	१/२	१	१
३	४	६	३	२	४	२	३
४	६	१०	६	४	५	३	४
५	१०	११	१०	६	६	४	६
७	११		११	८	७	५	१०
९				१०	९	८	११
१०				११	१०	९	
११					११	११	

अष्टकवर्गराशिगुणकाः- मे.७, वृ.१०, मि.८, क.४, सिं.१०, कं.५, तु.७, वृ.८, ध.९, म.१०, कुं.११ मी.१२। ग्रहगुणकाः सू.५, चं.५, मं.८, बु.५, बृ.१०, शु.७, श.५।। रेखाफलम् १ क्लेशः, २ अर्थहानिः, ३ प्रवासकषटम्, ४ समलाभः, ५ सुखं, ६ धनप्राप्तिः, ७ परमानन्दं ८ कार्यसिद्धिः।।

अथ ग्रहाणामधिप्रत्यधिदेवताज्ञानमाहः ईश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो विष्णुस्तथैव च।। ब्रह्मणेन्द्र यमश्चैव कालश्चैव तथाष्टमम्। चित्रगुप्तन्तु नवमं अधिदैवत कीर्तित।. अग्निश्चैव तथा आपः पृथिवी विष्णुरेव च। इन्द्रश्चैव तथैन्द्राणी तथैव च प्रजापतिः।। सर्पश्चैव तु ब्रह्मा च एता प्रत्यधिदेवताः।।

अथाधान काले चन्द्रवशात् प्रसवस्य ज्ञानाय चक्रम्

चन्द्रराशयः				दिनानि
१	४	७	१०	२७१
२	५	८	११	२९७
३	६	९	१२	२८१ वा २७६

अथ ग्रहाणां गोत्र ज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि.	राहु.	केतु	ग्रहाः
कश्यपः	आत्रेयम्	भारद्वाजम्	आत्रेयम्	आङ्गिरसः	भार्गवः	काश्यपः	पेठनस्	जैमिनियम्	गोत्राणि

अथ भद्रयाः मुखपुच्छादि परिज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	१४	तिथिनाम
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेषु आदौ
५	५	५	५	५	५	५	५	घटयः शराः विष्टेरास्यं
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेषु अन्त्ये
३	३	३	३	३	३	३	३	घटित्रयं पुच्छे शुभकरं

प्रश्न कालात् आधानतो वा प्रसव कालिक चन्द्रविज्ञानमत्राह

यावत्संख्या द्वादशांशे शीतरस्मिव्यवस्थितः।। तत्संख्यावा ततो राशिर्जन्मादौ तद्गते भवेत।।

यस्मिन् द्वादश भागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्च चन्द्रः। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवो गर्भस्थ नियतमादिशेत्प्राज्ञः।। समुद्रजातकेऽपि- यतमे द्वादश भागे सूतिस्तत्संख्यके विधावित। अत्र लग्न चन्द्रयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिर्ज्ञेयः इत्युक्तं लघुजातके लग्नतो यो बलवान् तस्याद्रिरसांशकान्विते विधौ प्रसवः।।

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग फलं विधिः-

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकान्ति	मृतिः	धन प्राप्ति	वृत्ति हानिः	विपत हानिः	सुखं	फलम्
पुष्पं	०	मृत्	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

तैलाभ्यंग वर्ज्यं तदत्राह–रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रान्तौ वैधृति अपि। षष्ठ्यै अष्टभ्यां च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु। अत्र तात्कालिकास्तिथयो ग्राग्ह्याः।।

अथात्रतैलाभ्यंगदोषापवादमाहः– तैलाभ्यंग न दोषाय प्रत्यहं क्रियते च यः। उत्सवे वात रोगे वा यत्र वाचनिकोपिवा। मैश्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्प वासितम्। द्रव्यांतरयुतं वापि नैवदुष्येत्कदाचन।।

वर्णादिपरिहार शौनक-वर्ग वैरं योनि वैरं गण वैरं नृदूरकम्। दुष्ट कूट फलं सर्वं ग्रह मैत्रेण नश्यति।।१।। न वर्ण वर्गोन गणो न योनि द्विर्द्वादशे चैव षडष्ट के वा। वरेऽपि दूरे नव पञ्चमे वा मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः।।२।। सद्भकूटं योनि शुद्धिः ग्रह संख्यं गुण त्रयम्। एष्वेकतमसद्भावे कन्या रक्षोगणा शुभा।।३।। राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे चांश नाथयोः। गणदिदौष्ठ ये प्यु द्वाहः पुत्र पौत्र प्रवर्धनः।।४।। स्त्री राशेर्वरभं दूरं कन्या दूरं शुभावहम्। व्यस्तं नृदूरमशुभं वश्यत्वात्तदपीष्टदम्।।५।।

वार बेला ज्ञानाय चक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
४।५	७।२	६।२	५।३	६।८	३।४	१।६।८	दिने
६।४	७।४	२	६।४	५।८	३	६।१	रात्रौ

दिने–रवौ बर्ज्यं चतुष्पञ्च सोमे सप्तद्वयन्तथा। कुजे षष्ठद्वयञ्चैव बुधे पञ्चतृतीयकम्।। गुरौ षष्ठाष्टकञ्चैव शुक्रे वेद तृतीयकम्। शनावाद्यन्तषष्ठञ्च वार वेलेति निन्दिता।।

रात्रौ-रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे च बुधे रसाब्धी। गुरौ शराष्टौ भृगुजे तृतीये रसाद्यां निशिवार वेला।।

अथ अज्ञात जन्म राशेः विशेषस्तमाहः-अज्ञात जन्मानां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत्। तैनैव चिन्तयेत् सर्वं राशिकूटादि जन्मभवम्। जन्मभं जन्मधिष्णयेन नामधिष्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्यो निधनं भवेदिति।।

कालज्ञानम्–तात्काले दिवस निशासंज्ञा समुदेति राशि भागो यः। यावानुदयस्तावान् वाच्योदिवसस्य रात्रेर्वा।।

अथ वर्षाज्ञानाय सर्पाकारनाडीचक्रमिदम्

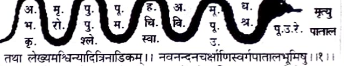

सर्पचक्रं तथा लेख्यमश्विन्यादित्रिनाडिकम्।। नवनन्दनचर्क्षाणिस्वर्गपातालभूमिषु।।१।।
एकनाडोस्थितिः सर्वे क्रूराः सौम्याश्च खेचराः तदा सद्यो वदेद्वृष्टि प्रभूतं जलमादिशेत्।।२।।
स्वर्गनाडीगतक्रूराः सौम्या पातालचारगाः।। तदा वृष्टि भवेदेव क्षिपेत्तोयं समुद्रगम्।।३।।
नपुंसकानां योगः स्याद्वायुः स्त्रीयोगतो ध्रुवम्। पुंस्त्रीसंयोगतो वृष्टि ग्रहाश्च बलास्तदा।।४।।
क्लीवस्त्रीयोगतः शीतं पुंयोग वातजं भयम्। वातनाडयादिगाखेटाः कुर्युनाडीभवं फलम्।।५।।
एकोऽपि तत्फलं दते सुनाडी संस्थितो ग्रहः। भूसुतः सर्वनाडीषु दत्ते नाडीभवं फलम्।।६।।
बुधशुक्रमहीसुनुः गुरवश्चैकनाडिगः। निःसंशयं तदाकाले, जायते वृष्टि रुत्तमा।।७।।
चलयङ्गारके वृष्टि रुदये च बृहस्पतौ। शुक्रस्यास्तङ्गते वृष्टि स्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे।।

काशी से अक्षांश-देशान्तर-सारिणी

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
अयोध्या	२६।४८	०।८	३प.
अमृतसर	३१।३९	१।२१	३२प.
अलीगंज	२६।१२	०।१४	६पू.
अमरावती	२०।५४	०५२	२१प.
अमेठी	२६।७	०।१२	५प.
अजमेर	२६।२८	१।२३	३३प.
अमरपुर	२६।५०	०।३८	१५पू.
अहमदनगर	१९।६	१।२२	३३प.
अलवर	२७।३२	१।४	२६प.
अलमोड़ा	२९।३५	०।३३	१३प.
अलीगढ़	२७।५३	०।५९	२०प.
अम्हर्स्ट (बर्मा)	१६।४	२।२५	५८पू.
अहमदाबाद	२३।१	१।४४	४२प.
आरा	२५।३४	०।१५	६पू.
आजमगढ़	२६।४	०।२	१प.
आगरा	२७।१२	०।४९	२०प.
आबा(मंडा)	२१।५५	२।१०	५२पू.
आसनसोल	२३।४३	०।४०	१६पू.
ओटावा(कना.)	४५।२४	२६।२७	६३५प.
इटावा	२६।४६	०।४०	१६प.
इन्दौर	२२।४४	१।१२	२९प.
इच्छागढ़	२३।५	०।२९	१२पू.
इम्फाल	२४।४८	१।५०	४४पू.
उज्जयिनी	२३।११	१।११	२८प.
उदयपुर	२४।३४	१।३३	३७प.
उन्नाव	२६।४८	०।२३	९प.
एटा	२७।३४	०।४३	१७प.
कछार	२४।५०	१।३८	३९प.
कलकत्ता	२२।३३	०।५३	२१पू.
कर्नाल	२९।४२	१।००	२४प.
कटक	२०।३०	०।२९	१२पू.
करांची	२४।५१	२।३९	६४प.
कन्नौज	२७।३	०।२९	१२प.
काश्मीर	३४।६	१।२५	३४प.
कानपुर	२६।२८	०।२७	११प.
काशी	२५।१८	०।०	००
कासगंज	२७।४७	०।४३	१७प.
काल्पी	२६।१०	०।३१	१२प.
काठमाण्डू	२७।४३	०।२२	९पू.
कृष्णगढ़ (बं.)	२३।२३	०।५५	२२पू.
कोटाबून्दी	२५।१०	१।१०	२८प.
कोहिमा	२५।४०	१।५०	४४पू.
कुरुक्षेत्र	२९।५७	१।१	२५प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
कूचबिहार	२६।२०	१।४	२६प.
के.आ.दीप.अं	३३।५६	१०।४४	२५८प.
क्वेटा	३०।१२	२।४०	६४प.
काबुल	३४।३३	२।१८	५५प.
काञ्जीपुरम्	१२।५०	०।३२	१३प.
कुम्भकोणम्	१०।५७	०।३५	१४प.
कोल्हापुर	१६।४३	१।२७	३५प.
केनबरा (आ)	१५।१९	११।०	२६४पू.
कोलम्बो (श्री)	६।५४	०।३२	२३प.
खण्डपारा	२०।१६	०।२२	९पू.
गया	२४।४९	०।२०	८पू.
गाजीपुर	२५।३५	०।६	२पू.
गोरखपुर	२६।४७	०।३	१प.
गोंडा	२७।८	०।१०	४प.
ग्वालपाड़ा	२६।११	१।१६	३०पू.
ग्वालियर	२६।१२	०।४८	१९प.
गिद्धौर	२४।५१	०।३३	१३पू.
गोलाघाट आ.	२६।३१	१।५०	४४पू.
गौहाटी आ.	२६।११	१।२७	३५पू.
गोविन्दपुर	३२।५०	०।३६	१५प.
ग्रीनिच (ब्रिटेन)	५१।२९	१३।४९	३३२प
गोकर्ण	१४।३२	१।२६	३४प.
गोवा	१५।२७	१।३१	३६प.
चरखारी	२५।१२	०।३२	१३प.
चन्दौसी	२८।२८	०।४२	१७प.
चित्रकूट	२५।१२	०।२१	८प.
चुनारगढ़	२५।७	०।१	०प.
चाईबासा	२२।३३	०।२८	११पू.
चण्डीगढ़	३०।४४	१।०	२४प.
छटक (शिल.)	१५।१	१।२६	३४पू.
छतरपुर	२४।५५	०३३	१३प.
छपरा	२५।४६	०।१७	७पू.
छयगाँव आ.	२६।५	१।२३	३३पू.
जयपुर	२६।५३	१।११	२८प.
जबलपुर	२३।१२	०।३०	१२प.
जगन्नाथपुरी	१९।४९	०।२८	११पू.
जामनगर	२२।२७	२।९	५२प.
जनकपुर	२३।४३	०।१२	५पू.
जालौन	२६।९	०।३६	१४प.
जमालपुर	२४।५८	१।१०	२८पू.
जोधपुर	२६।२०	१।४०	४०प.
जौनपुर	२५।४४	०।३	१प
जलपाईगुड़ी	२६।३२	०।५७	२३पू

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
जमशेदपुर	२२।४८	०।३२	१३पू.
जूनागढ़	२१।२९	२।५	५०प
जिनिया	४६।१२	१२।५०	३०७प.
जकार्ता	६।१६द	४।०	९६पू.
झांसी	२५।२८	०।४४	१८प
टेकारी	२४।५८	०।१७	७पू.
टोकियो	३५।४०	९।२५	२२६
डुमरांव	२५।३२	०।१२	५पू.
ढाका	२३।४२	१।१५	३०पू.
तिलहर	२७।५०	०।३२	१३प.
तञ्जावर	१०।४५	०।३८	१५प.
तिरुमति	१३।४०	०।४३	१५प.
त्रिवेन्द्रम	८।३१	१।०	२४प.
तेहरान (ईरान)	३५।४१	५।१७	१२७
दतिया	२५।४०	०।४५	१८प.
दरभंगा	२६।८	०।२९	१२पू.
दार्जिलिंग	२७।३	०।५३	२१पू.
दीनाजपुर	२५।३७	०।५६	२२पू.
देहली	२८।३८	०।५७	२३प.
देहरादून	३०।१९	०।५०	२०प.
द्वारिका	२२।१४	२।२०	५६प.
डिब्रूगढ़	२७।२९	२।०	४८पू.
धवलपुर	२६।४२	०।५१	२०प.
धुले	२०।५३	१।२२	३३प.
नरसिंहपुर	२२।५७	०।३७	१५प.
नागौद (बुन्दे.)	२४।३४	०।२४	१०प.
नासिक	१९।५९	१।३२	३७प.
नागपुर	२१।१०	०।३८	१५प.
नीमच	२४।२७	१।२१	३२प.
नैनीताल	२९।२३	०।३५	१४प.
नेपालगंज	२८।०	०।१३	५पू.
पवानर	२४।०	१।२	२५पू.
पटियाला	३०।२०	१।५	२६प.
पटना	२५।३६	०।२२	९पू.
प्रतापगढ़	२५।३४	०।१०	४प.
पीलीभीत	२८।३८	०।३१	१२प.
प्रयाग	२५।२८	०।१२	५प.
पूर्णिया	२५।४९	०।४५	१८पू.
पूना	१८।३०	१।३०	३६प.
पुष्कर	२६।२९	१।२५	३४प.
पुरुलिया	२३।२०	०।३५	१४पू.
पेशावर	३४।२	१।५४	४६प.
पोरबंदर	२१।३९	२।१५	५४प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
प्रोम	१८।४७	२।०	४८पू.
पिंडरा	२२।४५	०।१०	४प.
पेरिस (फ्रांस)	४८।५०	१३।२६	३२२प.
फतेहपुर	२५।५५	०।२१	८प.
फैजाबाद	२६।४७	०।९	४प.
फरुखाबाद	२७।२६	०।३४	१४प.
बलिया	२५।४६	०।१२	५पू.
बहराइच	२७।३४	०।१४	६प.
बरेली	२८।२२	०।३५	१४प.
बक्सर	२५।३३	०।१०	४पू.
बड़ोदा	२२।१८	१।३७	३९प.
मुम्बई	१८।५६	१।४०	४०प.
बलरामपुर	२७।२७	०।८	३प.
वर्धमान	२३।१७	०।४८	१९पू.
बांदा	२५।२८	०।२७	११प.
बिहार	२५।११	०।२६	१०पू.
बीकानेर	२८।२	१।३६	३८प.
बेतिया	२६।४९	०।१५	६पू.
बालेश्वर	२१।३०	०।३९	१६पू.
बिलासपुर	३१।२०	१।०	२४प.
बून्दी	२५।२६	१।१३	२९प.
बुलन्दशहर	२८।२४	०।५१	२०प.
बराकर	२३।४६	०।३८	१५पू.
बाँसी(बस्ती)	२७।१०	०।१	०प.
बाकरगंज	२०।३०	१।१३	२९पू.
बदायूं	२८।२	०।३८	१५प.
बस्ती	२६।४८	०३	१प.
बाराबंकी	२६।५६	०।१८	७प.
बगदाद	३३।२४	६।१९	१५२प
बर्लिन(जर्मनी)	५२।३०	११।३५	२७८प
बंगलोर	१२।५८	०।५५	२२प.
बेलगाँव	१५।५०	१।२४	३४प.
बरहाणपुर	२१।१८	१।५	२६प.
बैंकाक(थाई)	१३।४४	२।५५	७०पू.
भरोच	२१।४१	१।४०	४०प.
भरतपुर	२७।१४	०।५५	२२प.
भागलपुर	२५।१४	०।४०	१६पू.
भुज (कच्छ)	२३।१५	२।१२	५३प.
भोपाल	२३।१६	०।५५	२२प.
भुवनेश्वर	२०।१५	०।२७	११पू.
मद्रास	१३।४	०।२८	११प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
मधुबनी	२६।२०	०।३१	१२पू.
मण्डाले	२२।०	२।११	५२पू.
मथुरा	२७।३१	०।५२	२१प.
मझौली राज्य	२६।३८	०।१	०प.
मालदा	२५।३	०।५१	२०पू.
माण्डवी (कच्छ)	२२।५०	२।१५	५४प.
मेरठ	२९।१	०।५२	२१प.
मेदिनीपुर	२२।२५	०।४३	१७पू.
मोतीहारी	२६।४०	०।१०	४पू.
मैहरराज्य	२४।१६	०।२२	९पू.
मुरादाबाद	२८।५१	०।४२	१७प.
मुंगेर	२५।२३	०।३५	१४पू.
मैनपुरी	२७।१४	०।४०	१६प.
मिर्जापुर	२५।९	०।५	२प.
मुजफ्फरपुर	२६।७	०।२५	१०पू.
मैमनसिंह	२४।४६	१।१४	३०पू.
मौलमीन	१६।२९	२।२६	५८पू.
मुर्शिदाबाद	२४।११	०।५३	२१पू.
मक्का	२१।२५	७।७	१७१प
मैसोर	१२।१८	१।२	२५प.
मछलीपट्टन	१६।१२	०।१७	७प.
मदुरा	९।५८	०।४७	१९प.
मास्को(रूस)	५५।४५	७।३५	१८२प
रंगपुर	२४।४५	१।२	२५पू.
रानीगंज	२३।३५	०।४१	१६पू.
राँची	२३।३५	०।२३	९पू.
राजमहल	२५।२	०।४८	१९प.
रायबरेली	२६।१४	०।१७	७प.
रीवाँ	२४।३१	०।१७	७प.
रायपुर	२१।१५	०।१३	५प.
रुड़की	२९।५२	०।५१	२०प.
रावलपिण्डी	३३।३५	१।४०	४०प.
रोम(इटली)	४१।५६	११।४५	२८२प
राजकोट	२२।१८	२।२	४९प.
राजमहेन्द्री	१७।०	१०।०	४प.
रामेश्वर	९।१७	०।३७	१५प.
रंगून (बर्मा)	१६।४७	२।२०	५२पू.
रायचूर	१६।१२	०।५५	२२प.
लखनऊ	२६।५१	०।२०	८प.
लखीमपुर	२७।५७	०।२२	९प.
लाहौर	३१।३५	१।३०	३६प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
लोहरदगा	२३।२७	०।१७	७पू.
बीरभूमि	२३।५४	०।४५	१८पू.
बारहभूमि	२३।१०	०।३४	१४पू.
वीरसिंहपुर	२४।३३	०।२०	८प.
वैद्यनाथ	२४।३०	०।३७	१५पू.
वाशिंगटन	३८।५४	२६।३९	६४०प.
विशाखापट्टनम्	१७।४३	०।३	१पू.
शक्तिगढ़	२३।१५	०।५०	२०पू.
शाहजहाँपुर	२७।५३	१।५६	४६पू.
शिवसागर	२६।५९	१।५६	४६पू.
शिमला	३१।६	०।५७	२३प.
सहारनपुर	२९।५७	०।५५	२२प.
सागर	२३।५०	०।४३	१७प.
सोहावल	२४।३५	०।२२	९प.
शिलचर	२४।५०	१।३८	३९पू.
सिलहट	२४।५३	१।३०	३६पू.
सीतामढ़ी	२६।३४	०।२४	१०पू.
सीतारामपुर	२३।४५	०।३९	१६पू.
सरगुजा	२३।५	०।२	१पू.
सीतापुर	२७।३४	०।२३	९प.
सुलतानपुर	२६।१६	०।२	१प.
सॅनफर्नेंडो(स्पे.)	३६।२८	१४।५३	३५७प
सिंगापुर	१।२१	३।३०	८४पू.
सिडनी	२३।५५	११।२३	२७३प.
सातारा	१७।४१	१।३०	३६प.
सूरत	२१।१२	१।४४	४२प.
सोलापुर	१७।३९	१।१०	२८प.
सिलीगुड़ी	२६।४४	०।५५	२२पू.
श्रीनगर	३४।६	१।२२	३३प.
श्रीरंगपट्टम	१२।२६	१।३	२५प.
हजारीबाग	२३।५९	०।२५	१०पू.
हरिद्वार	२९।५८	०।४८	१९प.
हैदराबाद (द.)	१७।२५	०।४५	१८प.
हैदराबाद (सि.)	२५।२५	२।२६	५८प.
हाजीपुर	२५।४४	०।२२	९पू.
हमीरपुर	२५।५८	०।२८	११प.
हरदोई	२७।२३	०।२८	११प.
हलद्वानी	२९।१५	०।३४	१४प.
हाथरस	२७।३७	०।४८	१९प.

ग्रीनविच से काशी का देशान्तर १३ घटी ५० पल (५ घंटा ३२ मिनट) होता है। गणितागत सूर्य घड़ी के अनुसार यह अन्तर वाराणसी और इलाहाबाद के बीच आता है। या मद्रास के देशान्तर में पड़ता है। काशी से देशान्तर पूरब (+) एवं पश्चिम (-) होता है।

काशी से अन्य स्थानों के लिये लग्न-परिवर्तन की आसान विधि

श्रीमहावीर पंचाग में मेषादि द्वादश लग्नो का समाप्तिकाल दिया गया है, यह काशी या इसके आस-पास के स्थानों के लिये उपयोगी है, काशी से दूरस्थ स्थानों के लिये लग्नारम्भ एवं समापन में काफी अन्तर आता है, कई बार तो लग्न भी बदल जाता है।

नीचे दी गयी लग्न-परिवर्तन सारणी की सहायता से भारत के सभी प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्ति का समय सामान्य सरल गणित द्वारा तुरन्त ही ज्ञात किया जा सकता है। लग्नपरिवर्तन सारणी में अर्थात् नगर के आगे और लग्न के नीचे जो संस्कार मिनट है, उन्हें चिन्हानुसार यदि संस्कार (+) है, तो जोड़ने से और ऋण (-) है तो काशी की लग्नों में उसे घटाने से इष्टदेश या प्रदेश में लग्नों के समाप्त होने का समय ज्ञात हो जायेगा। जैसे ता.१ जनवरी २००१ ई. को दिल्ली में मेष लग्न समाप्ति का समय ज्ञात करना है, तो गणित इस प्रकार की जायेगी।

	घं.	मि.	
दिन में.	१	- ३१	मे। लग्नात काशी में (महावीर पंचांग में)
	+ ०	- १७	दिल्ली के लिये मेष लग्न का संस्कार धन (+)
दिन	१	- ४८	बजे दिल्ली में मेष लग्न समाप्ति का समय ज्ञात हुआ। रेलवे समयानुसार इसे १३-४८ भी लिखा जा सकता है।

इस प्रकार भारत के सभी प्रमुख स्थानों के लिये लग्न ज्ञात करके आप स्वयं कुण्डली बनाकर भावी घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कुण्डली में लग्न एव दशम बिन्दु को स्थान की विशेष महत्ता एवं उपयोगिता है, अतः जन्मपत्रादि गणित में सूक्ष्म शुद्ध लग्नों का ही उपयोग करना चाहिये। यदि सारणी में आपका नगर न मिले तो उसके नजदीक का दूसरा शहर ग्रहण करें। कुण्डली का सम्पूर्ण शुभारम्भ फलादेश लग्न शुद्धि पर आधारित होता है।

नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अगरतला	-३१	-३०	-३०	-३१	-३३	-३४	-३५	-३६	-३६	-३५	-३३	-३२
अमृतसर	+२२	+१९	+२०	+२५	+३२	+३८	+४४	+४६	+४६	+४१	+३४	+२८
अयोध्या	+ ०	+ १	+ ०	+ १	+ ३	+ ५	+ ६	+ ७	+ ७	+ ५	+ ३	+ २
अल्मोड़ा	+ ५	+ २	+ ३	+ ७	+१२	+१७	+२१	+२४	+२३	+१९	+१४	+ ९
अलीगढ़	+१५	+१४	+१४	+१६	+१९	+२२	+२४	+२६	+२५	+२३	+२०	+१७
अहमदाबाद	+४५	+४६	+४६	+४४	+४२	+४०	+३८	+३७	+३७	+३९	+४१	+४३
आगरा	+१७	+१६	+१७	+१८	+१९	+२१	+२३	+२४	+२३	+२२	+२०	+१९
इलाहाबाद	+ ४	+ ४	+ ४	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४
ऊना (हि.प्र.)	+१६	+१२	+१४	+२०	+२६	+३४	+४०	+४४	+४२	+३६	+३०	+२२
उज्जैन	+३३	+३४	+३३	+३२	+३०	+२८	+२५	+२४	+२५	+२६	+२९	+३१
कांगड़ा(हि.प्र.)	+१५	+११	+१२	+१८	+२५	+३२	+३९	+४२	+४२	+३५	+२८	+२१
कटक	- ३	- १	- २	- ५	-११	-१६	-२०	-२३	-२२	-१८	-१३	- ८
कलकत्ता	-१७	-१५	-१६	-१८	-२१	-२३	-२५	-२७	-२६	-२४	-२२	-१९
काण्ठमाडु	-१४	-१५	-१५	-१२	-१०	- ७	- ५	- ३	- ४	- ६	- ८	-११
कानपुर	+ ९	+ ८	+ ९	+१०	+१०	+१२	+१३	+१४	+१३	+१२	+१२	+१०
कुरुक्षेत्र	+१७	+१४	+१५	+१९	+२४	+२९	+३३	+३५	+३५	+३१	+२६	+२१
गया	- ७	- ७	- ७	- ८	- ८	- ८	- ९	- ९	- ९	- ९	- ८	- ८
गोण्डा	+ १	+ ०	+ १	+ २	+ ४	+ ६	+ ७	+ ८	+ ८	+ ६	+ ५	+ ३
गढ़वाल	+ ९	+ ६	+ ७	+११	+१६	+२१	+२५	+२८	+२७	+२३	+१८	+१३
चण्डीगढ़	+१४	+११	+१३	+१७	+२३	+२१	+३५	+३८	+३६	+३२	+२६	+२०
जम्मू	+१८	+१४	+१६	+२३	+३१	+३९	+४६	+५०	+४९	+४२	+३४	+२६
जालंधर	+२०	+१७	+१८	+२३	+२८	+३४	+४०	+४३	+४१	+३७	+३१	+२५
जवलपुर	+१६	+१७	+१६	+१५	+१३	+१४	+८	+७	+ ८	+ ९	+११	+१४
जमशेदपुर	- ९	- ८	- ९	- ९	- १२	-१४	-१७	-१७	-१७	-१६	-१३	-११
जमालपुर	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४

नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
जहानाबाद	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७
झरिया	-११	-११	-११	-१२	-१३	-१५	-१६	-१६	-१६	-१५	-१४	-१३
तरवंगज	+१	+ ०	+ १	+ २	+ ४	+ ६	+ ७	+ ८	+ ८	+ ६	+ ५	+ ३
दिल्ली	+१७	+१६	+१६	+१९	+२२	+२६	+२९	+३०	+३०	+२७	+२४	+२०
द्वारिका	+६२	+६३	+६२	+६०	+६०	+५४	+५१	+४९	+५०	+५२	+५६	+५९
देहरादून	+१२	+९	+१०	+१४	+१९	+२४	+२८	+३१	+३०	+२६	+२१	+१६
धनबाद	-१२	-११	-१२	-१२	-१४	-१५	-१६	-१७	-१७	-१६	-१४	-१३
दरभंगा	-१३	-१४	-१४	-१३	-१२	-११	-१०	-१०	-१०	-११	-१२	-१३
नीमच	+३४	+३४	+३४	+३३	+३३	+३२	+३१	+३१	+३१	+३१	+३२	+३३
नवलगढ़	+२७	+२५	+२७	+२८	+३०	+३३	+३५	+३६	+३५	+३४	+३१	+२९
नालंदा	- ९	- ९	- ९	- ९	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०
पूना	+४८	+५१	+५०	+४५	+३८	+३१	+२५	+२२	+२३	+२८	+३५	+४२
पोर्ट ब्लेअर	-१७	-११	-१४	-२३	-३४	-४७	-५७	-६३	-६१	-५२	-४०	-२७
पटना	-९	-१०	-१०	- ९	- ९	- ९	- ८	- ८	- ८	- ८	- ९	- ९
बुलन्दशहर	+१५	+१४	+१७	+१७	+२०	+२३	+२५	+२६	+२४	+२४	+२१	+१८
बद्रीनाथ	+४	+१	+२	+७	+१२	+१८	+२४	+२७	+२६	+२१	+१५	+१०
बाराबंकी	+४	+ ३	+ ४	+ ५	+ ७	+ ९	+१०	+११	+११	+ ९	+ ८	+ ६
बलरामपुर	+०	- १	- ०	+ १	+ ३	+ ५	+ ६	+ ७	+ ७	+ ५	+ ४	+ २
बड़ौदा	+४४	+४६	+४५	+४३	+४०	+३७	+३४	+३२	+३३	+३५	+३८	+४२
बम्बई	+५१	+५३	+५२	+४८	+४२	+३६	+३१	+२८	+२९	+३३	+३९	+४५
बक्सर	- ५	- ५	- ५	- ४	- ४	- ४	- ३	- ३	- ३	- ३	- ४	- ४
बोकारो	-१०	-९	-१०	-१०	-१२	-१३	-१४	-१५	-१४	-१४	-१२	-११
भागलपुर	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६
भोपाल	+२६	+२७	+२७	+२५	+२३	+२१	+१९	+१८	+१८	+२०	+२२	+२४
भिवानी	+२१	+१९	+२०	+२३	+२७	+३०	+३४	+३६	+३५	+३२	+२८	+२५
मथुरा	+१८	+१८	+१९	+१९	+२१	+२३	+२५	+२४	+२३	+२४	+२२	+१९
मद्रास	+३०	+३५	+३३	+२४	+१४	+३	-८	-१३	-११	-२	+८	+१९
मुजफ्फपुर	-११	-१२	-१२	-११	-१०	- ९	- ८	- ८	- ८	- ९	-१०	-११
मधुबनी	-१४	-१४	-१४	-१३	-१२	-१२	-११	-११	-११	-१२	-१२	-१३
मुंगेर	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४
मेरठ	+१५	+१३	+१४	+१७	+२०	+२४	+२७	+२९	+२९	+२६	+२२	+१८
रांची	-७	- ६	- ६	- ७	- ९	-११	-१२	-१३	-१३	-१२	-१०	- ८
रानीखेत	+६	+३	+४	+८	+१३	+१८	+२२	+२५	+२४	+२०	+१५	+१०
रुदौली	+२	+ १	+ २	+ ३	+ ५	+ ७	+ ८	+ ९	+ ९	+ ७	+ ६	+ ४
रेवाड़ी	+२१	+१९	+२०	+२२	+२५	+२७	+३०	+३१	+३१	+२८	+२६	+२३
लखनऊ	+५	+ ५	+ ५	+ ६	+ ८	+१०	+१०	+१२	+१२	+१०	+ ९	+ ७
लुधियाना	+१८	+१५	+१७	+२१	+२७	+३३	+३९	+४२	+४०	+३६	+३०	+२४
सासाराम	- ७	- ६	- ६	- ७	- ७	- ७	- ८	- ८	- ८	- ८	- ७	- ७
सीतामढ़ी	-२१	-२२	-२२	-२१	-१९	-१८	-१७	-१६	-१७	-१८	-१९	-२०
शिमला	+१३	+१०	+११	+१६	+२४	+२८	+३३	+३६	+३५	+३०	+२५	+१९
हरिद्वार	+११	+९	+१०	+१४	+१९	+२३	+२८	+३०	+२९	+२५	+२१	+१६
हम्मीरपुर	+१४	+१०	+११	+१८	+२४	+३१	+३८	+४१	+४१	+३४	+२७	+२०
हम्मीरपुर	+१०	+१०	+११	+११	+११	+१२	+१३	+१३	+१३	+१२	+१२	+११
हापुड़	+१५	+१३	+१३	+१६	+२०	+२४	+२७	+२९	+२८	+२५	+२२	+१८

अथ जन्मकालाद्दीर्घादि ३ भेदत्रयाणामत्र-चरादिराशिवशादायुर्बोधकचक्रमिदम्

दीर्घायु	मध्यायुः	अल्पायुः
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेष	चरभे लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ अष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः	स्थिरभे २ लग्नेश स्थिरभेश २ रन्ध्रेश
द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	द्विस्वभावभे३लग्नेशः द्विस्वभावभे३रन्ध्रेशः	द्विस्वभावभे३लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः

अथायुनिर्णयचक्रानुसारेण

अथायुनिर्णयः। चक्रानुसारेण। जन्मलग्नाष्टमेशाभ्यां लग्न सप्तमयोः स्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथाशनिचन्द्राभ्यां लग्न होरालग्नाभ्यां चेति प्रकारत्रयेणायुनिर्णेतव्यम्। प्रकारत्रयेऽप्येकरूपायुष्यागते तदेव ग्राह्यम्। विभेदे वा प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विवादे लग्नहोरालाग्रायुर्ग्राह्यम्।। जन्मलग्ने विषभे द्वितीयाष्टमाधीशयोर्योबली लग्नेशभे द्वादश-षष्ठाधीशतोर्मन्ये यो वली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः। पणफरे स्थित्या मध्यायुः। आपोक्लीमे स्थित्या हीनायुरेव। एवमेवात्मकारकवशेनापि निर्णेतव्यम्। लग्नाष्टमेशयोः कारकेण सहोच्चे वा योगे सर्वदामध्यमायुरेव।। विषमे जन्मलग्ने कारकः तृतीये, समे जन्मलग्ने कारकः एकादशे भवेद्वा कारक युति केन्द्रे हीनायुः पणफरे मध्यायुः आपोक्लीमे दीर्घायुः लग्नेशो रवेमित्रदीर्घायुः, समश्चेन्मध्यायुः शत्रुश्चेदल्पायुरिति।। सारण्युदाहरणम् कस्यचिज्जन्मेष्टम् २।८।५ जन्मलग्न ७।३५।६।५४ होरालग्नं १।३०।५१।३ लग्नेशो भौमः ९।१९।३०।३० अष्टमेशो बुधः २।३।१।४७ चन्द्रः १०।१६।२०।० अत्रलग्नेशाष्टमेशयोः प्रथमान्तयोः स्थित्या अल्पायुः। मन्देन्दुभ्यामल्पायुः लग्नहोरालग्नाभ्यामप्याल्पायुः। एवं अल्पायुरेव सिद्धम्। तत्र भौम, बुध लग्न चन्द्रलग्न होरालग्नानां णण्णामेशाणां योग-मासादि ६।१८।१४ विकलानां दिनादि १।१०।२४ एषामेकोपचितस्थानयोगातभुक्तवर्षादिः १०।१।२५।३४।२४ अल्पायु-विशुद्धं स्पष्ट मायुषो भोग्यवर्षादिकम् २१।१०।४।२५।३६ एकमेव भोग्यांशैरपि भवेदिति। एवं ३६।४० वर्षखण्डाभ्यामपि।।

रोगत्रिनाडीचक्रम्

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
पू.फा.	मघा	आश्लेषा
उ.फा.	हस्त	चित्रा
अनुराधा	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.
धनिष्ठा	श्रवण	उ.षा.
शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा

रवीन्दुनामनक्षत्रमेक-नाड्यां यदाभवेत्।
तदा मृत्युं विजानीयादिति।

दशम लग्न सारिणी

०	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	रा.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	२	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
९	०	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
१६	मे.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
९	१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३४	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
५८	वृ.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
१०	२	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
४६	मि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५१	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
१०	३	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
४६	क.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
९	४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
५८	सि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
०	रा.	२८	२	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
९	५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
१६	कं.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
०	रा.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
९	६	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
१६	तु.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
९	७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	३१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
५८	वृ.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
१०	८	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३४	४६	५६
४६	ध.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
१०	९	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
४६	म.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
९	१०	१२	२	३२	४२	५४	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
५८	कु.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	९
०	रा.	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
९	११	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
१६	मी.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

दशम लग्न निकालने की विधि- लग्न सारिणी द्वारा प्राप्त सूर्यफल में इष्ट काल जोड़ने से घट् यादि अंक आया हो उसमें १५ घटी घटाकर जितनी संख्या मिले उस संख्या को दशम सारिणी में देखिए, उक्त संख्या उसके लगभग वाली संख्या जहाँ सारिणी में हो उसके बाई ओर दशम लग्न तथा ऊपर उसके अंश होगें।

सूर्यदशाफल– सूर्य महादशा में एक नये व्यापार से धनप्राप्ति, अग्नि-चतुष्पद से कष्ट, नेत्रकष्ट, उदरविकार, दाँत कष्ट, बच्चों से अलग वास, बड़ों में किसी का वियोग। सूर्य में मंगल, गुरु, शुक्र का अन्तर शुभ चन्द्र राहु, शनि, बुध और केतु का अन्तर अशुभ।

चन्द्रदशाफलम् - "हिम-किरण दशायां मन्त्रदेव द्विजाप्ति ...."

चन्द्र में चन्द्र, गुरु बुध, शुक्र, सूर्य का अन्तर शुभ मंगल, राहु, शनि केतु का अन्तर अशुभ।

भौमदशाफल- यदि भूमिसुतस्य शस्त्रहतसुरभूपाला-वाद्दैनं भैषज्यानृतवञ्चनैश्च विविधैःकार्यैर्धनस्यागमम्। पित्तासृग्ज्वरपीडनं तु सततं नीचांगनासेवनं विद्वेषं सुतदार-गुरुभिदुष्टा भोगं कष्टं विदुः।। ***भौम में–*** भौम, राहु, शनि, केतु सूर्य चन्द्र का अन्तर अशुभ गुरु, शुक्र का अन्तर शुभ।

राहुदशाफल-सौख्यादिवित्तस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोग दुखम् अतीवरोगं परदेशवासं विवादवृद्धिकुस्तेफनीशः।।

विंशोत्तरीयमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम

सूर्यदशावर्ष६				चन्द्रदशावर्ष १०				भोमदशावर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रोहि.ह.श्रवण				मृ.चि.ध.			
अन्तर्दशादि १८				अन्तर्दशादि ३०				अन्तर्दशादि २१			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	गु.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा.स्वा.शत				पुन.वि.पू.भा.				पुष्य.अनु.उ.भा.			
अन्तर्दशादि ५४				अन्तर्दशादि ४८				अन्तर्दशादि ५७			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
गु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	गु.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
आश्ले.रे.ज्ये.				मघा.मू.अश्वि.				पू.फा.पू.षा.भर.			
अन्तर्दशादि ५१				अन्तर्दशादि २१				अन्तर्दशादि ६०			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	गु.	२	८	०
रा.	२	६	१८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

जन्मभं त्रियुतं तष्टमष्टभिः शेषतो दशा।। मंगलाद्या वृषेधृद्धाया संकटाष्टौदशामता।।१।।
भस्यभुक्त घटी स्वीय वर्षगुण्याभभोगतः।। लब्धं वर्षादिकं भुक्तं भोग्यं तच्छेषमुच्यते।।

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थ चक्रम्

मंगला १			पिंगला २			धन्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	वृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	घा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	घा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०
घा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	स.	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	स.	१३	१०	म.	२	०	पि.	४	२०	घा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	स.	१०	२०	म.	१	२०	पि.	४	०	घा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	स.	८	०	म.	१	१०	पि.	३	१०	घा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	स.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०	घा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
स.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	घा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्र.आर्द्रा चित्रा			घ.,पुनर्वसु स्वाती			पुष्य,विशाखा शतभिषा			अश्वि.,श्लेषा अनु.,पू.भा.			भर.,मघा, ज्ये.उ.भा.			कृ.,पू.फा. मूल,रेवती			रो.उ.फा. पू.षा.			मृग.,हस्त उ.षा.		

जन्मराशि जन्मलग्ना दरिष्टवर्षाणि

जन्म ल.	वर्षाणि					आयु
मेष	४	११	१६	४४	५८	१००
वृष	१	२८	३३	४४	६१	९०
मिथुन	४	१०	१४	३८	५८	८६
कर्क	५	२५	४०	४८	६२	१००
सिंह	५	१३	२८	३६	४८	६२
कन्या	४	१६	२३	३६	४५	१००
तुला	१५	३१	३५	६२	६४	७५
वृश्चि.	११	२१	३८	५२	६२	१००
धनु	२	१०	१८	३१	४२	६७।८१
मकर	५	१३	३६	५७	६२	९५
कुम्भ	२	२८	३३	४८	६४	९०
मीन	१	८	१३	३६	४८	८३

राहु में–राहु, शनि, केतु मंगल का अन्तर कष्ट कर। गुरुबुध शुक्र का अन्तर सुखद।

गु.द.फ.–स्थानप्राप्ति वित्तयांनाम्बराप्तिराजस्नेहचित्तशुद्धि विभूतिम्। ज्ञानचारं पुत्रदारादिलाभं देवाचार्यः स्वेविपाके करोति।।

गुरु में–गुरु, बुध, शुक्र, रवि चन्द्र का अन्तर शुभ फल, शनि केतु, मंगल का अन्तर अशुभ है।

शुक्र में – शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, बुध, अन्तर शुभ, सूर्य चन्द्र राहु, केतु अन्तर अशुभ।।

गु.द.फ.-स्वकीयदाये गुरुबन्धुमित्रार्थजनं कीर्तिसुखं करोति। दौत्यं च सत्कर्महिरण्यपण्येधनायति वातरुजं कुमारः।।

बुध शुक्र, रवि, राहु, शनि का अन्तर, शुभ, शेष अशुभ।

के.द.फ.-केतोर्दशायामरिनीच पीड़ा न शस्त्रक्षतिमुष्णरोगम्। मिथ्यापवादं कुल दूषितत्वं वह्रेभयं प्रोषणामात्मवेशात्।।

शनि में–शनि केतु, सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु का अन्तर अशुभ। बुध शुक्र और गुरु का अन्तर शुभ फलप्रद होता है।

केतु में–केतु राहु, चन्द्र मंगल, राहु शनि का अन्तर कष्ट दायक शेष शुभ।

शुक्रदशाफलम्–स्त्रीपुत्रवित्ताप्तिमतीवसौख्यंसुगन्धमाल्याम्बर भूषणाप्तिम्। यानादिभाग्यं नरपालतुल्यं यशः स्वपाके भृगुजः करोति।

अर्घ्य मन्त्रः- प्रसीद देवदेवेश विघ्नहर्ताधनप्रदः गृहाणार्घ्यं ममशान्तिं प्रयच्छमे।। दान-प्रति भौमवार को ताँबे के बर्तन में गुड़ गेहूँ रखकर दान देना चाहिए। इसे ऋणाधिक्य भूतवेताल डाकिन्योत्पादितसन्तानोत्पत्तिकष्ट से छुटकारा मिलता है।

तीनो नामों की कल्पना की जाती है। फिर भक्तीपूर्वक रक्तधान्य, रक्त पुष्प, गंध, धूप दीप और नैवेद्य से मंगल पूजन की विधि है।

अथमारकस्थानायुस्थानयोज्ञानमाह - अष्टमर्क्ष तृतीयञ्च लग्नादायुरदाहतम् द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिदरोगेशव्ययेशाष्टमेशदशास्वपि मारकसम्भवः परस्परमष्टमेशयोर्दशाऽन्तरञ्च न शोभनम्। मारके मारकान्तरान्तरै न शोभनम्। व्ययद्वितीयेशवद्ग्रहा सम्बन्धतः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽनिष्ठ सन्बन्धरहिता न मारककारिणी पापदशास्वनिष्टवेति।।

जन्म-चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन-सारणी

(जन्म कालिक चन्द्रमा के राशि, अंश, कला, विकला से विंशोत्तरीदशा के भुक्त वर्ष मास दिन-बोधक सारणी)

	मेष, सिंह धनु राशिस्थ चन्द्र				वृष,कन्या मकर राशिस्थ चन्द्र				मिथुन,तुला कुम्भ राशिस्थ चन्द्र				कर्क,वृश्चिक मीन राशिस्थ चन्द्र			
अंश	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१	के.	०	६	१	सू.	१	११	१२	मं.	४	०	९	वृ.	१३	२	१२
२		१	०	१८		२	४	२४		४	६	१८		१४	[illegible]	[illegible]
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श.	०	११	१२
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८
७		३	८	३		४	७	२४	रा.	०	५	१२		५	२	२२
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०
११		५	९	९	चं.	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६
१३		६	९	२७			३	०		८	६	१८		१३	९	९
१४	शु.	१	०	२७		३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	७	१५
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२	बु.	०	५	३
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८		१	८	१२
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०
२१		११	६	०		८	३	०	वृ.	१	२	१२		५	६	९
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७
२४		१६	०	०	मं.	०	४	६		४	९	१८		९	४	६
२५		१७	६	०		०	१	१५		६	०	०		१०	७	१५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४
२७	सू.	०	१	२४		१	११	३		८	४	२४		१३	२	३
२८		०	७	६		२	५	१२		९	७	६		१४	५	१२
२९		१	०	१८		२	११	२१		१०	९	१८		१५	८	२१
३०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०		१७	०	०

उदाहरणार्थ– किसी का जन्म मकर के चन्द्रमा के १८ अंश, ३० कला ४१ विकला पर हुआ है। अतः उपरोक्त राशि-अंश की सारिणी में मकर राशि के खाने में १८ अंश के सामने देखने से चन्द्रमा की महादशा का ६ वर्ष, ० मास, ० दिन फल प्राप्त किया। पुनः कला का फल अनुपात करके ४ मास १५ दिन प्राप्त किया। पुनः विकला का भी फल अनुपात करके ३ दिन प्राप्त किया। सभी को जोड़ दिया तो ६ वर्ष, ४ मास, १८ दिन चन्द्रमा की महादशा का भुक्त समय प्राप्त हुआ। उक्त समय को चन्द्रमा की महादशा मान १० वर्ष में से घटाने पर शेष चन्द्रमा महादशा का भोग्य समय होगा।

अथ ग्रहाणां स्वगेहोच्चनीचमूलत्रिकोणभवनानि तथा जातिवर्णादयः भाग्योदयाब्दबोधकचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः	ग्रहा	तैलिक चक्रम्		
सिंह	कर्कः	मे.वृश्चि.	मि.कन्या	धनु मीन	वृष तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन	गेहभानि			
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन	धनु	उच्च राशि अं.	स्था.	न.	फ.
मध्यान्ह	अपराह्न	मध्यान्ह	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या	कालबलम्	श्रृंगे	७	संवत्
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह	मूलत्रिकोणानि	मध्ये	३	शोकः
ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्वादि संज्ञा	तले	२	विपत
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	अन्त्यज	अन्त्यज	अन्त्यज	जातयः	कर्णे	७	धनम्
चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप	पश्वादि संज्ञा	दास्यु	३	ऋणम्
पुरुष	वनिता	पुरुष	नपंसुक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं.स्त्री.संज्ञा	संभार	७	सुखं
क्रूर	सौम्य	पापः	सौम्यपाप	सौम्य	सौम्य	पापः	पापः	पापः	सौम्यादि संज्ञा			
रक्त	श्वेत	रक्त	हरितः	पीत	कर्पूर	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	वर्णानि	अर्कभात्		
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर	संज्ञान्तराणि			
नृलोक	भूलोक	नाग	स्वर्ग	स्वर्ग	नाग	नाग	नाग	नाग	लोकानि	न.	फलम्	
पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदयादि संज्ञा	३	अशुभ	
पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	कफल	वात	वात	वात	प्रकृतयः	३	शुभ	
कटुक	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	क्षाराम्ल	तिक्तं	तिक्त	तिक्त	कटुकादिरसा	४	अशुभ	
व्योमदृक्	समदृक्	व्योमदृक्	तिर्यग्दृक्	समदृक्	तिर्यदृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अवलोकनानि	२	अशुभ	
पूर्व मुख	प.मुख	द.मुख	उ.मुख	उ.मुख	पूर्वमुख	प.मुख	द.मुख	द.मुख	गृहदिङ्मुख	३	शुभ	
मुक्ता	रजत	वपु.	स्वर्ण	रत्न	रजत	लोह	अस्थि	अस्थि	पदार्थानि	१	अशुभ	
वृद्ध	मध्य	युवा	वाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था	५	अशुभ	
पशुस्थान	जलगृह	दग्धम्	गोष्ठम्	देवस्थान	जलस्थान	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	निवास स्थान	२	शुभ	
हरिवंशश्र	शिवार्चन	रुद्राभिषेक	कन्यादान	आमात्र	गोप्रतिमा	मृत्युञ्जय	भुजगदा.	ध्वजदा	क्षेमार्थमुपाय	४	शुभ	
२४ वर्ष	२४ वर्ष	२८ वर्ष	३२ वर्ष	१६ वर्ष	२५ वर्ष	३६ वर्ष	४२ वर्ष	४८ वर्ष	भाग्योदय	भाग्योदयावदस्थ		
शुष्क	सजल	शुष्क	जल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्कादि	संज्ञा				
अयन	मुहूर्त	दिवस	ऋतु	मास	पक्ष १	वर्ष	कालानां	उच्चासप्त				
सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	सत्वादिगुण	नीचसर्वेषु				
वह्नि	अम्बु	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	देवी	ब्रह्मा	वायु	आकाश				

भाग्योदयवर्षाणि प्रयोजनमाह।। यः खेचरः स्वगृहेस्वतुंगभवने षडवर्ग शुद्धश्चतस्यादिदेहिनृणां भवति सुख भाग्योदयं निश्चितमिति।।

गुरुसर्ययोर्वलविचारः

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठ पुरुषाणां रवेर्वलम्। द्वयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठ मितिगर्गेण भाषितम्।।१।। जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदोगुरु।। विवाहेऽथचतुर्थाष्ठ द्वादशस्थो मृतिप्रदः।।२।। स्वोच्चेत्वभेस्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे स्वराशावत्रापि शुभः।।

अथ मेषादीनां स्वामिवर्णधातुसंज्ञादिबोधकचक्रमिदम्

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेषादिराशयः
भौमः	शुक्रः	बुधः	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्रः	भौमः	गुरु	शनिः	शनिः	गुरु	राशीशाः
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेता रुण	पाण्डुर	विचित्र वर्ण	कृष्ण	कनक सदृश	पिंगल	कर्पूर	बभ्रुव	स्वच्छ	राशीनां वर्णा
क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	जातयः
पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्तादि संज्ञा
चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विश्व भाव	चरस्थिरादिसंज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष स्त्री संज्ञा
पृष्ठो दयः	पृष्ठो दयः	शीर्षो दयः	पृष्ठो दयः	शीर्षो दयः	शीर्षो दयः	शीर्षो दयः	शीर्षो दयः	पृष्ठो दयः	पृष्ठो दयः	शीर्षो दयः	उभयो दयः	पृष्ठ्यादिसंज्ञा
रात्रिः	रात्रिः	रात्रिः	रात्रिः	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्रिः	रात्रिः	दिन	समान	दिन रात्रि बल
चतु ष्पद	चतु ष्पद	द्विपद	जलचर	चतु ष्पद	द्विपद	द्विपद	कीट	अ.द्वि. ज.च.	अर्द्धच. अर्द्धद्व	जलचर	जलचर	चतुष्पदादि संज्ञा
शीर्ष	मुख	बाहुः	हृदयः	उदर	कटि	वस्ति	शिश्न	उरुद्वय	जानु २	जंघा २	पादद्वय	कालांगनिवास
दक्षिण	अग्नि	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	अग्नि	याम्य	ईशानं	पश्चिम	पश्चिम	ईशान	प्लवत्वदिशा
ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम	ह्रस्वदीर्घादिकम्
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूरसौम्यस्वसंज्ञा
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राशीनां दिशा
मेष भूमि	गोच राशय	गीत नृत्य स्थान	युद्ध जल समीप	अरण्य भूमि	स्त्री गृह नौका	स्वसद्म ऊपरभू	युद्ध सर्प निवास	युद्धभू. वाजि स्थान	वन जल समीप	शि.गृ. पा.भा.	जल समीप	राशिनांनिवास स्थानानि

अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थाज्ञानम्

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुखितः।। विकलश्च कोपी नवधा खेचरो भवेत्।।१।। उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वोच्चाधिमित्रभे।। मुदितो मित्रभेशान्तस्मभवेदीनउच्यते।।२।। शत्रुभं दुःखितोऽतीवविकलः पापसंयुतः।। खलऽखलगृहे ज्ञेयः कोपीस्यादर्क सयुतः।।३।। भावानांस्थिरकारकाः।। सूर्यो १ गुरु २ कुजः ३ सोमः ४ गुरु ५ भौम ६ सितः ७ शनिः ८ गुरु बुधः १० जीवो ११ मन्दश्च १२ भावकारकाः।

अथाङ्गस्फुरणफलचक्रम्

स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि
मस्तकस्फुरणे	पृथ्वीलाभः	वक्षःस्फुरणे	विजयध्रुवम्	कण्ठ स्फुरणे	ऐश्वर्य लाभः
ललाटस्फुरणे	स्थानलाभः	हृदयस्फुरणे	वांछितसिद्धिः	ग्रीवास्फुरणे	रिपुभयम्
स्कन्धस्फुरणे	भोगसमृद्धिः	कट यांस्फुरणे	प्रमोदोबलश्च	पृष्ठस्फुरणे	युद्धपराजयः
भ्रुवोयुग्म	सुखप्राप्तिः	कटि पार्श्वे	प्रीतिरनुत्तमा	कपोलस्फु	वरांगनाप्राप्ति
भ्रुवोर्मध्ये	महत्सौ भाग्यं	आंत्रिकस्फुरणे	कोश वृद्धिः	बाहुस्फुरणे	मधुरभोजनम्
नेत्र १ स्फुरणे	धनाप्तिः	भगस्फुरणे	पति प्राप्तिः	बाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रकोणयोः	लक्ष्मीलाभः	कुक्षिस्फुरणे	सुप्रीतिलाभः	वस्तिदेशस्फुरणे	अभ्युदयः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	उदरस्फुरणे	कोश प्राप्तिः	उरोस्फुरणे	वस्त्रलाभः
नेत्रपक्ष स्फुरणे	राज्यलाभः	लिंगस्फुरणे	स्त्रीलाभः	जानुस्फुरणे	शत्रुवृद्धि
नेत्रपक्ष २ स्फुरणे	संग्रामेजयः	गुदस्फुरणे	वाहन प्राप्तिः	जंघस्फुरणे	स्वामीप्राप्तिः
नेत्रकोपांगदेश १	कलत्रलाभः	वृषस्फुरणे	पुत्रलाभः	पादोपरि	स्थानलाभः
नासिका १ स्फुरणे	प्रीतिसुखम्	ओष्ठ स्फुरणे	प्रियवस्तुलाभः	पादतले	नृपत्वम्
हस्तस्फुरणे	सद्द्रव्यलाभः	हनुदेशस्फुरणे	भयंमहत्	पादयोस्फुरणे	अलाभः

अथ तिथिवारयोर्भवारयोर्योगादनेकयोगानां बोधकचक्रम्

योगनामानि	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
चराख्ययोग	पू.षा.	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
क्रकचयोगः	११ ति.	११ ति.	१० ति.	१ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
दग्धयोगः	१२ ति.	११ ति.	५ ति.	३ ति.	६ ति.	८ ति.	९ ति.
विषाख्ययोगः	४ ति.	६ ति.	७ ति.	२ ति.	८ ति.	९ ति.	९ ति.
हुताशनयोगः	११ ति.	६ ति.	७ ति.	८ ति.	९ ति.	१० ति.	११ ति.
यमघंट योगः	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
दग्धयोगः	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उत्तरा.फा.	ज्येष्ठ	रेवती
यमदंष्ट्र योगः	म.घनि.	वि.मू.	कृ.भ.	पू.षा.पुन.	उ.षा.अभि.	रोहि.अनु.	श्र.घ.
सर्वार्थसिद्धि-	ह.मृ.	श्र.रो.	अश्विनी	रो.अनु.	रेवती अनु.	रेवती अनु.	श्रवण
योगः।भवा,	उ.३,पुष्य	मृ.अनु.	उ.भा.	ह.कृ.	अश्विनी	अश्विनी	रोहिणी
रयोर्योगात्	अश्वि	पुष्य	कृ.श्लेषा	मृगशिरा	पुष्य पुनर्वसु	पुन.,श्रवण	स्वाती
अमृतसिद्धियोग	हस्त	मृ.श्र.	अश्वि.	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

अथ ग्रहयोगशान्तिः

वामने-दुर्भिक्षादि भयं चैव चतुर्ग्रहसमन्वये। महारोगभयं राष्ट्रक्षयो वृष्टि विनाशनम्।।१।।
पञ्चग्रहसमायोगे दुर्भिक्षं सङ्गरादिकम्। जनक्षयो नृपवैरं गर्भनाशस्तु जायते।।२।।
ग्रहषट्समायोगे मन्त्रिणो मरणं भवेत्। पश्वादि भयं सर्वं सङ्करादि जनक्षयः।।३।।
पट्टराज्ञीविनाशो वा महाभयमथाऽपि वा। सप्तग्रहसमायोगे क्षितीशमरणं ध्रुवम्।।४।।
जगत्प्रलयेनवाऽपि तदा निर्मानुषं जगत्। अत ऊर्ध्वं महोत्पातनानादुःखमहाकुलम्।।५।।
सूर्यदव्यतिरिक्तश्चेत्तद योगोमहाद्भुतः। बिना चन्द्रेण योगोऽपि जगत्प्रलयकारणम्।।६।।
तदृक्षजातजन्तूनां महारोगी महाभयम्। अर्थनाशः स्थाननाशः मानहानिनृपपीडनम्।।७।।
वात्तपित्तादिसम्भूतमहापीडा महद्भयम्। सप्त योगग्रहानृणां दोषान्कुर्वन्ति सर्वदा।।८।।
षण्मासाभ्यन्तरे वाऽपि आयुर्हानिः श्रियस्तथा। जन्माष्टद्वादशे राशौ चतुर्थे पञ्चमेऽपि वा।।९।।

पूर्वोक्तफलमेवात्र तस्माच्छान्ति प्रयत्नतः। कुर्याद्दोषानुसारेणवित्तशाठ्यं न कारयेत्।।१०।।
तत्तद्ग्रहाकृतिं कृत्वां सौवर्णेन प्रयत्नतः। सुवर्णेन तदर्द्धेन पादेनाऽपि कनीयसीम्।।११।।
वित्तशाठ्यं न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यंशक्तितो नरैः। पूर्वोक्तलक्षणेनैव ग्रहमूर्ति च कारयेत्।।१२।।
ग्रहस्यैकैककलशग्रहयोगप्रमाणतः। कारयेत्कुम्भमेकं वा निर्व्रणं सुदृढं नवम्।।१३।।
ग्रहस्येशानदिग्भागे शुद्धदेशे समस्थले। कुण्डे वा स्थण्डिले वाऽपि होमं कुर्याद् विधानतः।।१४।।
तस्य पूर्वोत्तरे देशे पूजास्थानं प्रकल्पयेत्। चतुरस्रं हस्तमात्रं स्थण्डिलं तण्डुलेन तु।।१५।।
लिखेद्ग्रहाकृतिं तत्र स्थापयेत्प्रतिमांततः। अधिप्रत्यधिदेवादीन् दक्षिणोत्तरतः क्षिपेत्।।१६।।
उक्तगन्धैस्तथा पुष्पैस्तत्तन्मन्त्रैः फलैरपि। तत्तद्ग्रहोक्तमन्त्रेण पूर्वोक्तेनैव पूजयेत्।।१७।।
स्वस्तिवाचनपूर्वेण आचार्य ऋत्विजैः सह। ग्रहपूजादिकं कृत्वा नैवेद्यान्तं समर्पयेत्।।१८।।

ततो होमं प्रकुर्वीतस्वगृहोक्त विधानतः। चतुर्थ्यन्तं प्रकुर्वीतं कलशस्थापनं ततः।।१९।।
पूर्वोक्तेनैवविधानेन शुद्धतोयेनपूरयेत्। पञ्चामृतपञ्चगव्यं पञ्चत्वक पञ्चपल्लवम्।।२०।।
तत्र मन्त्रैविनिक्षिप्य औषधानि विनिक्षिपेत्। तद्ग्रहोक्ता विधिना मूल्यान्यादाय निःक्षिपेत्।।२१।।
अलिंगैर्वारुणैवाऽपि कलशं पूरयेद्गुरु। तत्तद्ग्रहोक्तविविधैस्तनमन्त्रैहुतेद् भक्तिभिः।।२२।।
चर्वाज्ये जुहयात्पश्चात्तिलाहुतिसमाचरेत्। अथ स्विष्टकृत् हुत्वा होमशेषं समापयेत्।।२३।।
भद्रासनोपविष्टस्य यजमानस्य ऋत्विजैः कलशस्योदकेनैवमभिषेकं समाचरेत्।।२४।।
योगग्रहोक्तमन्त्रैश्च अभिप्रत्यभिमन्त्रतः। नवग्रहोक्तमन्त्रैश्च जातवेदादिपंचकः।।२५।।

त्र्यम्बकेन मन्त्रेण क्षेत्रस्य पतिना अपि। तत इन्द्रद्वयेनैव लोकपालावृकैरपि।।२६।।
सुरारत्वा इति मन्त्रेण येन देवादयः क्रमात्। अन्यैश्च पुण्यसूक्तैश्च अभिषेकं समाचरेत्।।२७।।
अभिषेकाप्लुत वस्त्रमाचार्याय निवेदयेत्। ततः शुक्लाम्बरधरः कुर्यादाज्यावलोकनम्।।२८।।
ऋत्विग्भ्यां दक्षिणां दद्याद्धेनुशंखादिकानपि। तद्भावे यथाशक्ति हिरण्यमपि दापयेत्।।२९।।
ब्राह्मणान्भोजयेतपश्चात्तथादिभवसारत। एवं यः कुरुते भक्तया ग्रहदोपविवर्जितः।।३०।।
पूर्वोक्तसर्वदोषैश्च विमुक्त पुत्रवान् सुखी। आयुरैश्वर्यसम्पन्नो जीवेद्वर्षशतं नरः।।३१।।
इह लोके सुखं भुक्त्वा सुखी पश्चाच्छिवापुरं व्रजेद् - इति ग्रहयोगशान्तिः।।

राशियों का परस्पर शुभाशुभ योग

शुभ नव-पञ्चम		मध्यम नव-पञ्चम		श्रेष्ठ द्विर्द्वादश		अशुभ द्विर्द्वादश		प्रीति-षडाष्टक		शत्रु-षडाष्टक		अशुभ केंद्र	
९	५	९	५	२	१२	२	१२	६	८	६	८	४	१०
मेष	सिंह	कुम्भ	मिथुन	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	मेष	वृश्चि.	वृषभ	धनु	मेष	कर्क
वृष	कन्या	मीन	कर्क	मिथुन	वृष	मकर	धनु	मिथुन	मकर	कर्क	कुम्भ	वृष	सिंह
मिथुन	तुला	कर्क	वृश्चि.	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	सिंह	मीन	कन्या	मेष	कर्क	तुला
सिंह	धनु	कन्या	मकर	तुला	कन्या	वृष	मेष	तुला	वृष	वृश्चि.	मिथुन	कन्या	धनु
तुला	कुम्भ	अशुभ	सप्तक	धनु	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	धनु	कर्क	मकर	सिंह	वृश्चि.	कुम्भ
वृश्चि.	मीन	मकर	कर्क	कुम्भ	मकर			कुम्भ	कन्या	मीन	तुला	मकर	कर्क
धनु	मेष	कुम्भ	सिंह	अपवाद								मीन	मिथुन
मकर	वृष			कन्या	सिंह								

विशेष - तृतीय - एकादश संबध किन्ही भी राशियों का शुभ ही होता है, किंतु सम-सप्तक (राशि-प्रतियोग) तथा केंद्र (चतुर्थ-दशम) संबन्ध उपर्युक्त अशुभ समपसप्तक तथा अशुभ केंद्र की राशियों के अलावा शेष राशियों का ही शुभ होता है।

चन्द्र श्रृंगोन्नति का स्थूलं ज्ञान मेष और मीन राशि के चन्द्रमा का सिरा दक्षिण में (बायें) ऊंचा होता है। वृष और कुंभ राशि के चन्द्रमा का सिरा बराबर होता है। बाकी राशियों के चन्द्रमा का सिरा उत्तर में (दाहिने) ऊंचा होता है।

पुष्यनक्षत्र प्रंशसा-

पुष्य को नक्षत्र सम्राट कहा जाता है। पुष्य नक्षत्र में स्वयं ही सभी दोषो को नष्ट कर देने की क्षमता है। पापैर्विद्धेयुते हीने चन्द्रताराबलेऽपि च। पुष्येसिध्यन्ति सर्वाणि कार्याणि मंगलानि च।। ग्रहणे विद्धोप्यशुभान्वितोऽपि विलोमगोऽपि करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहमैव पुष्ये।। पुष्य की बलवत्ता को देखते हुये इसमें पाणिग्रहण निषिद्ध है।

पञ्चक विचार-

जब घनिष्ठ नक्षत्र के आधे अर्थात् कुंभ राशि पर चन्द्रमा आता है। तब पञ्चक या पचखा आरम्भ होता है। जब अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि पर चन्द्रमा आता है तो पञ्चक समाप्त हो जाता है।

एकादशी व्रतम्

अथाष्ट वर्षादूर्द्धमशीतिवर्षपर्यन्तमेकादशी, व्रताधिकारः।।

शक्तस्य तु वयसोऽर्ध्यमध्याधिकारः।। सभर्तृकाणां स्त्रीणां भर्त्रानुज्ञां पुत्राज्ञां च विनायासतव्रताद्याचरणे व्रतवैफल्यं भत्रायुक्षयो नरकश्च।। अशक्तायां तु स्वोदन वापि वायुः प्रशस्तमात्रेत्तनुरक्तं च इति। अशक्तेषु शक्तितारतम्यात्पाहारः न त्वेकादशीत्यागः। प्रमादादिनैकदश्यामुपोषणाद्यकरणे व्रतवैफल्ये द्वादश्यामपि व्रतं कार्यम्।। द्वादश्यामकरणे वा मध्यचन्द्रायण प्रायश्चित्तम्। वास्तिर्वोद्वारणे पिपीलिका मध्यचान्द्रायणम्।। अशक्तेसति, पुत्राच्चदेशेव स्त्रीपुत्रभगिनी भ्रातादिभिरेकादशीव्रताचरणे क्रतुशतजं पुण्यम्।

स्त्रियों के लिये पति आज्ञा प्राप्त करके ही एकादशी व्रत करना चाहिये। इसमें बारम्बार जलपान दिन में सोना, ताम्बूल भक्षण विशेष बोलना तथा विलास वर्जित है। आठ वर्ष से अस्सी वर्ष तक आयु वालों के लिए यह व्रत है। ॐ नमोनारायणाय मन्त्र जप करना चाहिये।

नियमित रूप से एकादशी व्रत रहने वालों को यदि कोई असमर्थता आ जाय तो उनकी पत्नी व्रत रखे। उसी प्रकार पत्नी की असमर्थता में पति व्रत करे पुत्र, भगिनी, और भ्राता भी इसके अधिकारी है।

प्रदोष व्रतम- तत्र त्रयोदशीशुक्ला पूर्वा, कृष्णापरा ग्राह्यमिति माधवःशुक्ला त्रयोदशी प्रदोष-समये हेमाद्रि गौडग्रन्थेषु व्रतत्र्य-प्रदोषेऽस्तसमया दूर्ध्वं घटि काद्वयमप्युच्यते। यस्तु-त्रिमुहूर्तः प्रदोष स्याद्रवावस्त गते सति।। यद्वागौण प्रदोषकालपरः।। तेन प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी विलोक्यम्।। द्वितीयदिन व्रतम्।। दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ तदेकरतदेसव्याप्तै वा उत्तरा उक्त इति। उद्वैव तिथियोःषव्यापि प्रदोषव्यापिनी तिथिः। तत्र वा त्रिविभाग स्याप्तोभयत्रापि मन्यते। यदा तु कृष्णपक्षे तु परविद्धा न लभ्यते। तदा वात्रापि पूर्वाविद्धा च ग्राह्यवेति- वशिष्ठ एकादशी तृतीया च षष्ठीचैव त्रयोदशी पूर्वाविद्धापि कर्तव्या यदि न स्यात्परेऽहनि।। प्रदोषे शनिवार योगस्य विशेषफलम्। शनिवार प्रदोषोऽयं दुर्लभः सर्वदेहिनाम् तत्रापि दुर्लभस्तस्मिन् कृष्णपक्षे समागते।। अथ श्रावणे सोमवासरे व्रतं प्रदोष व्रतवदस्य विधिः।। सोमवासरे व्रतं कार्य श्रावणे वैवयाविधिः। शक्तैस्तोषणं कार्यमथवा निशि भोजनमिति।।

शनि प्रदोष व्रत का विशेष फल है। श्रावण सोमवार व्रत प्रदोष के समान है इसमें रात्रि समय भोजन हो सकता है।

अथोपनयनसंख्यस्तत्रमनुः अपोडाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नाति वर्तते।। आषोडशाद्राजन्यस्य आद्वाविंशतेर्विशः।। अतऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः। सावित्रीपतिता व्रात्या प्रभुवन्त्यार्यविगर्हिताः।।२।। अथोपनयने द्वादशलग्नानांफलानि। मेषे भवति पण्डितः विशक्तायुता वृषे। युग्मे वेदान्तदर्शी स्यात्कुलीरे च षडांगवित्।। शिल्पधर्म करः सिंहे षष्ठे भवति पण्डितः। तुलायां वणिजः प्राप्तिः काण्डपृष्ठश्च वृश्चिके। सर्वत्रपूजितस्चापे शूद्रवृत्तिमृगे तथा राजप्रेष्यो भवेत्कुम्भे मीने वेदांगपारगा इति। अन्यविशेषः शास्त्राधिपतिवारेच शाखाधिपः बलं शशी शास्त्राधिपतिलग्नश्च। व्रताय दुर्लभवते।। राजमतंहे।। पितुः सूर्य बले श्रेष्टं शाखाकर्णशयोघटोः सर्वेषा गुरुबन्द्रार्कबलं श्रेष्ठं व्रतादिपुरा। उपनयन कालविशेषः- मुख्यकालस्तु बलवान्हतो गोचरशुद्धितः।। व्रतं निषिद्धकालस्य शान्तिर्दत्त्वते क्वचित्। ब्राह्मण का १६ क्षत्रिय का २२ वर्ष वैश्य का २४ वर्ष तक अवश्य यज्ञोपवीत हो जाना चाहिये।

वैशाख मास - वैशाखे सकले मासे मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमस्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्। माघवे मेषगे भानौ मुरारेमधुसूदन। प्रातस्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन्।। वैशाखे त्याज्यम्।। कांस्यं मांसं मसुरात्रं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधुरात्रं च पुनर्भोजनं मैथुनं इति। मेषार्क दानविशेषः। यो मेषस्याऽर्के ददाति सक्तूनाम्बूघटान्विताम्। उद्दिश्यपितृन् देवांश्च सर्वपापैः प्रमुच्यते।। दानमन्त्रः सक्तवो धर्मदा नित्यं ब्राह्मणप्रीतिकारकाः। त्वद्दानास्यपापानां क्षयोऽस्तु सुखमस्तु च।। वैशाखे सम्पूर्णस्नानाशक्तावन्ते त्रयोदश्यादिदिनत्रयम्।। अपि सभ्यग्विधानेननारी पुरुषोऽपिवा प्रातःस्नायी सनियमः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। इति।।

अक्षयतृतीया कृत्यम्-सर्वतीर्थे स्नानं देवदर्शनं दानञ्चाक्षयफलम्।। दानम्-उदक्कुम्भान् सकनकान् सान्नसर्वरसैः सह।। यवगोधूमचणकान्सक्तुकुम्भान्तथा। व्यजनछत्रंकुंभंचातपत्रमुपानहौ।। दानमेतद्देयान्पितृन चोदिश्यकुर्यात्।। संकल्पः-नामगोत्रमुच्चार्य अद्येतत्रं शीतलोकदकयुतं घटं च विष्णुप्रीतये अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं राम्प्रददे। प्रार्थना एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्माविष्णु शिवात्मकः। अस्य प्रदानात्स फला मम सन्तु मनोरथाः।। गन्धोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं फलान्वितम्। विष्णवेसंप्रदास्यामि अक्षयमुपतिष्ठतु।। पितृन्नद्दिश्यदाने-पितृभ्यसंप्रदानेन मम सन्तु मनोरथाः।। पितृभ्यः संप्रादास्यामीतिपदप्रक्षेपः-संकल्पोपितृणां प्रीतये इति विशेषः। अद्यपरशुरामं विधिवत्संपूज्यार्घ्यदद्यात्- तन्मंत्रः। जामदग्न्य महाबीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। तत्र विष्णोश्चन्दनपूजनफलम्।। यः करोति तृतीयायां विष्णोश्चन्दनपूजनम्।। वैशाखस्य सिते पक्षे स याति हरिमन्दिरमिति। युगादितिथौ दानादि फलम्।। कृतोपवासः सतिलं युगादिदिनेषु तु। दास्यन्त्यन्नानि सलिलं तेषां लोका महोदयाः।

ज्येष्ठ मास - कंजजपूजनेनानावस्त्रविभूषणैः वर्षकोटिशत सायंसूर्यलोकेमहीते। कंजजो ब्रह्मा। वामनपुराणे-उदकुम्भं जलं धेनु तालवृक्षः सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थ प्रदद्यात् ज्येष्ठ मासि च।। इति।।

अथामायां वट सावित्रीविधिः।। अमायांञ्च तथा ज्येष्ठे वट पूजे महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिनानेन संयुक्ता सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। विधिनाषोडशोपचारैः संपूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्।। तन्मंत्रः सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्राह्मणायसती प्रसन्नार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यतामिति ज्येष्ठ शुक्लैकादश्यां दशाश्वमेधस्नानफलम्-ज्येष्ठ मासि सितेपक्षे प्राप्य प्रतिपदां तिथिम्। दशाश्वमेध के स्नात्वा मुच्यते सर्व किल्विषैः। दशहरा ज्येष्ठ मासि सितेपक्षे दशमीहस्तसंयुता। हरतेदशपापानितस्माद् दशहरा स्मृताः शुक्लपक्षेसु ज्येष्ठ मासि कुजेऽहनि।। अवतीर्णा यतः स्वर्गात् हस्तक्षेपं च सरिद्वरा।। दशहरां गंगा पूजनमन्त्र।। नमो भगवत्यै दशपाप हरायै गंगायै कृष्णायै विष्णुरूपिण्यै नन्दिन्यै नमोनमः।। दशहरायां दशोयागाः-ज्येष्ठ मासि सिते पक्षे दशमीबुधहस्तयोः व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। बुधभौमयोः कल्पभेदन व्यवस्था। इयं च यत्रैव योगाधिक्यं सैव ग्राह्या।

आषाढ़ मास - आषाढ़शुक्ल २ रथयात्रा।। आषाढ़स्य सिते पक्षे द्वितीयाः पुष्यसंयुता तस्यां रथे समारोप्यं रामं सौभद्रयासह। यात्रोत्सव प्रवर्त्यार्थ प्रीणयेत द्विजान्वह्न। ऋक्षाभावे तिथौ कार्या स सदा प्रीतये मम। अथ रामो बलरामः।। आषाढ़े पूर्णिमायां धान्यानां तोलनम्। आषाढ्यां सर्वधान्यानि संध्यायञ्च पृथक पृथक। तोलयेद्वर्णनाने-जलादीन्यपिसर्वथः।। मन्त्रतोऽभिमन्त्र्य निशितानभिवासयेत् तोलयेच्चततः प्रातस्तेन मानेन दैववित्।। वृद्धौवृद्धिः समेसाम्यं ह्रासेहानिस्तथैव च।

आषाढ़ पूर्णिमायां वायुपरीक्षा।। आषाढ़पूर्णिमायाञ्च प्रदोषे वा दिवा।। निशि।। प्राच्यां वायुसुवृष्टिः स्याद्धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा।।१।। अल्पवृष्टिस्तथाऽग्नेयामग्नि-भीतिर्महर्घता। स्वल्पवृष्टिः भवेद्याम्यां प्रजापीडा महर्घता।।२।। दुर्भिक्षंरौरबंघोरमनावृष्टि श्च नैऋते। वारुण्याञ्च महावृष्टिः धान्योत्पत्तिश्च मध्यमा।।३।। वायौ वायुः प्रचण्डश्च वृष्टि धान्यश्च मध्यम्।। बहुधान्यसुवृष्टि श्च उत्तरायां सुखी जनः।। ईशान्यां सस्य सम्पत्तिधान्यानि सुखिनो जना इति।।

श्रावण मास - श्रावणशुक्लपाञ्चमीयं परविद्धा। पंचमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।। तस्यान्तु तुषिता नागा इतरा सचतुर्थिका।।१।। श्रावणे पंचमी शुक्ला सम्प्रोक्ता नागपंचमी। ताम्परित्यत्य पंचम्याचतुर्थीसंहिता हिता।।२।। नागपूजनविधिः।। श्रावणे मासि पंचम्या शुक्लपक्षे बरानने।। द्वारस्योभवतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः (सर्पा)।। घृतोदकाभ्यां पयसा तर्पयित्वा बरानने। गोधूमः पयसा सैव लाजैश्च विविधंस्तथा पूजयेद्विविध दीपैर्दधिदुर्वा प्रचुरैस्तथा। मांल्यपुष्पोपहारैश्चब्राह्मणानामपि तर्पणम्। तेनतुष्टि समायान्ति पद्मकास्तक्षकादयः। आ सप्तमात्कुले तस्य न भयं सर्पतो भवेत।। मन्त्रोऽयमुच्यते सर्वविषस्य प्रतिशोधकः। तस्य जपं तस्यामात्रेण न विषक्रमते क्वचित्। मन्त्रः - ॐ कुंकुलाय हुँफट् स्वाहा अस्य जपात्सर्पविषक्षयः आदौ लिखितस्थले सर्वनागेभ्यो नमः। सर्वनागानावाहयामीत्यावाहनं।। "सर्वनागेभ्योनमः इति मन्त्रेयथौपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत्।। मन्त्राः अनन्त वासुकि शेष पद्मकम्बलमेव च।। तथा कर्कोट क नागं नाममश्वतरं तथा धृतराष्ट्रं शंखपालंकालाख्यं तक्षके तथा। पिंगरंगञ्च महानागं प्रणमामि मुहूर्मुहुरिति।। स्नान क्षौर विचार - सिरः स्नानं प्रकुर्वीत दैव पित्र्ये च कर्मणि उदङ्मुंखः प्राङ्मुखोवा श्मश्रुकर्मचकारयेत्।।

भाद्रपदमास - भाद्रपदे-हृषीकेशप्रीत्यर्थ गुड़ोदनलवणादेर्दनम्। गणेशचतुर्थी।। विनायकवचनानि।। चतुर्थीगणनाथस्य मातृविद्धाप्रशस्यते। अन्यदपि चतुर्थी तृतीयायां महापुण्यफलप्रदा।। कर्तव्याव्रतिना एव गणनाथसुतोषिता।।१।।

चन्द्रोदयेर्ध्यदानमंत्र- क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भवः। गृहाणार्ध्यंशशांकेदंरोहिणी सहितोमम।। ज्योत्सनांपतयेतुभ्यंज्योतिष्ठोपतयेनमः। नमस्तेरोहिणीकान्त सुधावास नमोस्तु ते।।२।। नमोमण्डल दीपाय शिरोसाय धूर्जटेः। कालाभिर्वर्द्धमानायनमश्चन्द्राय चारवे।।३।।

अगस्त्यार्ध्यदानमन्त्रः- ऋग्वेदसंहितायाम्- अगस्त्य श्वनमानःखनेत्रः प्रजामपत्यंबलमिच्छमानः। उभौदर्णावृषिपुत्रःपुपोषसत्यादेवेष्वाशिषोजगत्।।

जन्माष्टम्यांविशेषाः । अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणी ऋक्षसंयुता। भवेत्प्रोष्ठपदे मासि जयन्तीनाम सा स्मृता। विष्णुधर्मोत्तरे। रोहिण्यामर्द्धरात्रेतु सदा कृष्णाष्ट मी भवेत्। तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति पापं त्रिजन्मजम्।। समायोगे तु रोहिण्यांनिशीथे राजसत्तम्। समाजायतगोविन्दो बालरूपी चतुर्भुजः।। अष्ट मीरोहिणीयुक्ता निश्यर्द्धे यदिदृश्यते। मुख्यकालइतिख्यातस्तत्रजातो हरिः स्वयम्। रोहिणी च यदा कृष्णपक्षेऽष्ट म्यां द्विजोत्तम। कृष्ण जयन्ती सा प्रोक्ता। सर्वपापहरी तिथिः।

जन्माष्टमीव्रतपारणनिर्णयो निर्णयसिन्धौ ।। स्मार्त्तानां द्वितीय-दिनेऽष्टम्यायामद्वयादिखसत्वेऽपि प्रातःकाल एवं पारणोक्ता। तिथ्यन्ते तिथि भान्ते वा पारणा यत्रचोदिता। यामद्वयोर्ध्वगामिन्यां प्रातरेवहि पारणम् सर्वत्रव्रते पारणायसमयः। तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते चव्रतीकुर्वीतपारणम्।। अथव्रतनाशकराणि असकृज्जलपानाच्च सकृताम्बूलभक्षणात्। उपवासः प्रणश्येत्। दिवास्वापाच्च मैथुनात्।। अथ व्रतीनां विशेषनियमाः। गात्राभ्यङशिरोऽभ्यगं ताम्बूलंचानुलेपनम्। व्रतस्थोवर्ज्जयेत्सर्व यच्चान्यत्र निराकृतम् कथञ्चिदाचारितेऽपि। प्रायश्चितं व्रती कुर्यांज्जपेन्नाम सहस्रकम्। मिथ्यावादे दिवास्वापे बहुशोऽम्बुनिषेवणे।। अष्टाक्षरंव्रतीजप्त्वाशतमष्ठेत्तरं शुचिः अष्टाक्षरमन्त्र-ॐ नमो नारायणाय।

हरतालिकाव्रतनिर्णयः- तत्र चुर्थीसहिता या तु सा तृतीया फलप्रदा अवैधव्यकरा स्त्रीणांपुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। चतुर्थ्याचन्द्रदर्शनदोषशमनाय पठनीयमन्त्रः सिंहोप्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवताहतः। सुकुमारकुमारोहि स्तवह्योषस्यमन्तक।। इति।। पंचम्यामपाभार्गदन्तधावनमन्त्रः - आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजापशुवसू निच ब्रह्माडां च मेधांच त्वन्नों देहि वनस्पते।।१।। मुखदौर्गन्ध्यनाशाय दन्तानांच विशुद्धये षष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।।२।। षष्ठ्यां सूर्यपूजनम्। निर्णयसिन्धौ।। शुक्ल भाद्रपदे षष्ठ्यां स्नानं भास्करपूजनम्। प्राशनात्पंचगव्यस्य अश्वमेघफलाधिकम्।। पंचगव्यप्राशनमन्त्रः - यत्त्वगस्थिगतं पापं देहेतिष्ठ ति मामके। प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्वाग्नरिवेन्धनमिति।। श्रवणयुक्तानां द्वादश्यां विष्णुपरिवर्तनोत्सवः। रात्रौषोडशोपचारैः। श्री विष्णु संपूज्य प्रार्थयेत्।। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तिथिः। पार्श्वेन परिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधवः। श्रवण १२ उत्तराषाढ़युक्ता नैवोपोष्या। उत्तराषाढ़संयुक्ता श्रीणामाध्याह्नगेपि वा आसुरी सैव तारास्याद्धन्तिपुण्यपुराकृतम्।। बुधे श्रवण संयुक्ता सैव द्वादशी भवेत्। अत्यन्तमहतीपोष्याव्रतं भवति चाक्षयम् अनन्तचतुर्दशीनिर्णये। मध्याहव्यापिनी त्रिमुहूर्तोदयकालव्यापिनी चतुर्दशीपक्षे च वचनानि लभ्यन्ते तत्र माधवः सूर्योदयकालव्यापिनी हि अन्ये दिवोदासगतपमार्तण्ड-कालविश्वरूपकालिदासादयः मध्याह्नव्यापिनी या च भाद्रशुक्ला चतुर्दशी। सैवानन्तव्रते ग्राह्या पर्वयुक्त विशेषतः। ज्योतिर्विदापरे मध्याह्नकालान्तगता-चतुर्दशीहितासिहाभाद्रपदेनयोपितम्। बुधैरनन्तमाहतव्वदा तदा कलोनापि ततः फलाप्तये। माधव निर्णयनिर्णयसिन्धुकाराः भ्रान्ति कथयन्ति। तत्कथाप्रसंगेकमुक्तव्रतादि निर्णयविरोधादिनाऽयुक्तमेव। अतोसंध्याव्यापिन्येव ग्राह्या।

आश्विनमास - जीवत्पुत्रिकामहालक्ष्मीव्रतयोर्निर्णयः महालक्ष्मीव्रतेऽष्टमीचन्द्रो व्यापिनी ग्राह्या। पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदये सदा जीवत्पुत्रिका-तुलक्ष्मीव्रतंचाष्टम्युदिते शशांके यदष्टमी सौ आश्विनकृष्णपक्षे यत्रोदयं वैकुरुते दिनेशस्तदा भवेत्ज्जीवत्पुत्रिकासा।। अत्रविशेष पूर्वयुक्तेन्दुः वा प्रदोषे यत्र चाष्टमी। तत्र पूज्यः स नारीभिः राजा जीमूतवाहनः। अन्यच्च प्रदोषसमयेस्त्रीभिः पूज्योजीमूत वाहन। इति मैथिल निबन्धनिर्णयः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानांकाल विभागः- पूर्वाह्नेदैविकं श्राद्धमपराह्ने पार्वणम्। एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। शुक्लपक्षस्य पूर्वाह्ने श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः।। कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहिणं न तु लंघयेत्।। क्षयाहे विशेषः।। न ज्ञायते मृताहश्चेत्प्रतिविज्ञातदशाध्यातमृतेऽहनि। श्राद्धविर्नेनिर्णयः श्राद्धविरुपसंमुपर्व्यविज्ञाता मृतेऽहनि कर्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषतः।। इति श्राद्धकालः।। मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायांकार्मुकेघटे। दुर्लभंत्रिषुलोकेषु गयायां पिण्ड पातनम्।। मकरे वर्तमाने च ग्रहण चन्द्रसूर्ययोः। दुर्लभं त्रि।। गयायांसर्वकालेषुपिण्डंदद्याद्विचक्षणः।। अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरुशुक्रयोः।। न कर्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च वृहस्पतौ।। गयाश्राद्धं प्रकुर्वीतसंक्रान्तकालेऽपरपक्षेःवा चतुर्थ्यादितिथिष्वपि महालयं गयाश्राद्धं मातापित्रोमृतेऽहनि। कृतोद्वाहोऽपि कुर्यात् पिण्डदानं यथा विधि।। मृताहंचसपिण्डज्यं गयाश्राद्धं महालयम्।

आश्विनशुक्लप्रतिपदा - कलशस्थापनम्।। तत्र विधिः- स्नानं मांगलिकं कृत्वा ततो देवी प्रपूजयेत्। शुभाभिमृत्तिकाभिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम्।।१।। अन्नाद्यं वापयेत्तत्र जलकुम्भसमन्वितान् तत्र संस्थापयेत्कुम्भं विधिनामन्त्र पूर्वकम्।।२।। सावर्णं रजतं वाषि ताम्रमृण्मयनुर्वते। आदौसंकल्पः देशकालौसंकीर्त्य ममेहजन्मनि दुर्गाप्रीति द्वारा सकलापच्छान्ति पूर्वक दीर्घायुविपुल धन पुत्र पौत्राद्यनवच्छिन्नसन्तति वृद्धि स्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ शत्रु पराजय सदाभीष्ट सिद्धयर्थंशारदनवरात्रप्रतिपदिहित-कलशस्थापनं दुर्गापूजन कुमारी पूजनादिकं च करिष्ये।। ततो यथाविधिकलश वैदिकमन्त्रैः संस्थाप्य तदुपरि वरुणमावाह्य सम्पूज्य नूतनप्रतिमाया वा दुर्गामावाह्य पूजयेत्। पूजनमन्त्रः।। जयन्तीमंगलाकाली भद्र कालीकपालिनी दुर्गाक्षमाशिवाधात्री स्वाहास्वधानमोस्तुते।। ॐ दुर्गे २ रक्षीणी २ स्वाहेतिमन्त्रेण सम्पूज्य प्रार्थयेत आनन्द वरदे देवि दैत्यदर्पनिपातिनी। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।१।। सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितं। इम घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैस्सह।।२।। दुर्गेदेवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय। बलि पूजां गृहाणत्वमष्ट भिः शक्तिभिः सह एकैक पूजनातकन्या मेकवृद्ध्यापि वा पुनः। द्विगुणां त्रिगुणां वापि प्रत्यहं नवकन्तु वा नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु। एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थेतां विवर्जयेत।। कन्यापूजनेऽन्योविशेषः। ब्राह्मणी सर्वकार्येषु युद्धार्थे क्षत्रियः तथाधनार्थे वैश्यवंशस्य सुखार्थे शूद्रवंशजा। दारुणां चान्त्यजातीयां पूजयेद्विधिना नरैरिति।।

हनुमज्जन्मनिर्णय- वाराहपुराणे:-कार्तिकस्यासितेपक्षेस्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिव। शुक्लादिमासगणनया आ.कृ.।। का.कृ. तुलार्के मेषलग्नेसालोक जन्मोत्सवः द्वितीय दिने दर्शन पूजनं चाते। अमायां लक्ष्मी पूजा। देशकालौ संकीर्त्य ममगृहेऽचल श्रीवासायलक्ष्मी पूजनं करिष्ये। विहितोपचारैः पूजान्ते प्रार्थना।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्तव प्रपन्नानां सा मे भवतु तव दर्शनात्।

तुलासंक्रमणदीपदानम्-तुलायांतिलतैलेन सायंकालेसमागते। आकाशदीपं यो दद्यात्मासमेकं हरिं-प्रति। महता श्रियमाप्नोति जय सौभाग्यसम्पदः। आकाशदीपदान मन्त्रः। दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽन्ताय बेधसे।

प्रतिपदादितुलासंक्रान्ति यावत्।। अथगोवत्सद्वादश्यां-सवत्सरं पयस्विनी गां-अलंकृत्य विधिवत्सम्पूज्य ताम्रपात्रेण अर्घ्यंदद्यात्।। मन्त्रः। क्षीरोदार्णवसंभूते सुरासुर नमस्कृते। सर्वदेवमयी मातर्गृहाणार्घ्यं नमोनमः।। कार्तिकृष्ण त्रयोदश्याम्-सायंकालेऽपमृत्युनिवारके गृहाद्बहिर्यमाय दीपदानम्। तत्र मन्त्रः। मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात सूर्यजः प्रीयतां ममेति। कार्तिकस्यासितेपक्षे निशामुखे। यमदीपं बहिदद्यादपमृत्युविनश्यतीति। अद्यैव नरकोद्देशेन चतुर्वर्तिसमायुक्तं सर्व पापप्रणुत्तये।। अत्रयमतर्पणमुक्तंमदनपारिजाते वृद्धमनुना। दीपोत्सवे चतुर्दश्यां कार्तिके यमतर्पणम्। अपामार्गस्य पत्राणि भ्रामयन्मस्तकोपरि। ततश्चतर्पणं कार्य धर्मराजं नमामि इति। कार्तिकमास कृत्यम-विष्णुं कार्तिकं सकलं मासं प्रातः स्नायी च जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यं भृगुदन्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते। वामनपुराणे-अद्य कनकं दीपान्मणिफलादिकम्। दामोदरस्य प्रीत्यर्थम् प्रदद्यात् कार्तिकेमासे। प्रबोधनोत्सवः। अत्रैकादश्यां द्वादश्यां वा षोडशोपचारैः विष्णुं तुलसीं च विधिवतसंपूज्य प्रबोधयेत्। प्रबोधमन्त्रा वाराहपुराणोक्ताः।। ब्रहोन्द्र रुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दितबन्दनाय।। बुद्धस्वदेवेश जगन्निवास मन्त्रप्रभावेण सुखेन चैव। इयन्तु द्वादशी देवप्रबोधानार्थं विनिर्मिता। त्वमेव सर्वलोकानां हितार्थशेषाशायिना।। उत्तिष्ठोतिष्ट गोविन्द त्यजनिद्रां जगत्पते। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। स्थिते बोध्यते सर्वं उत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गतामेकधा विजयत्वेव निर्मूलं निर्मला दिशः। शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशवः। इन्द्रविष्णुरितिप्रोक्तो मंत्र उत्थापन हरेरिति चतुर्मास्य व्रत समाप्ति का मंत्र इदंव्रतं मया देव कृतं प्राप्त तव प्रभो। तेन मे पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन इति।। **कार्तिकशुक्ल सूर्यषष्ठी निर्णयः**।। कलाकाष्ठानिमेषोऽपि यदि स्यादपरेऽहनि। षष्ठ्याः कथंचिदद्विपेन्द्रसेवोपोष्यामहातिथिः। षष्ट्यामुपोष्य विधिवत् सप्तम्यामर्कं पूजयेत्। सद्द्रव्यभोग्यायुश्चैव सम्प्राप्नोतीप्सितं फलम्।। उपोष्यगमा ६, त्यक्त्वा च यदैक पूजयेदिति विधौ श्वोऽर्ध्यादिना पुनरस्यैव प्राधान्यापगमात्, पूर्वदिनेऽर्ध्यादिना पूजयेत् सायं ६ वा ७ तिथिः ग्राह्येति नियमः।। ध्रुव निर्णयोरामनाथकृतातिथिनिर्णय, ल्लिखितो व्रतस्य तत्देशीयत्वात्। यमद्वितीया निर्णयः- यामद्वितायां प्रतिपद्युताग्राहा।। यमद्वितीया मध्याह्न व्यापिनी पूर्वविद्ध, चेति हेमाद्रि। ऊर्जेशुक्लद्वितीया यामापराह्नेऽर्चयेत् यमम। स्नानंकृत्वाभानुजायां यम लोकं न पश्यति। प्रतिपदिविध रूक्तः लभ्ये यदि वा प्रातः प्रतिपदघटि त्रैकापरयुक्तान्यायपूर्वा।।५।। स्कन्दव्रतंऽविरिक्ता परा सदा।।७।। पूर्वाविध्यैव सर्वदा।।८।। कृष्णेपूर्वा शुक्लेपरा शिवदेवोसंवादे कृष्णाऽपि परैव।।२।। कार्यम् नारीनिराजनं प्रातः मंगलमालिका।। गोवर्धन पूजापानगोवर्धनं पूज्य व्रतं चापि समाचरेत।। गोवर्धनपूजैव गोवर्धनपूज- भ्रातृभोजन-पूर्वागम् गोवर्धनपूजयेति।

अस्तापवादमाह । नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधान के वधूप्रवेशे मांगल्ये न मौढ्यं गुरुशुक्रयोः। गोदावर्यां गयायां च तीर्थेषु ग्रहणद्वये। अयने विषुवेचैव चातुर्मास्यव्रतादिषु। उत्सवेषु च सवेषु सीमन्ते च ऋतुत्रये सुरासुरेज्ययोश्चात्र मौढप्रदोषो न विद्यते इति।।

पौषपूर्णिमातो माघस्नानमन्त्राः।। दुःखदारिद्रयनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्यमाघेपापविनाशने। मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव। सपित्रेप्रसवित्रे देवे यथोक्तफलदोभव।। मंत्राविमौ पठन स्नायाततोऽर्ध्यदानमन्त्रः सवित्रेसावित्रे च परं धाम जले मम।। त्वत्ते जसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा। ततस्तर्पणादिकं कर्त्तव्यमिति।।

यावन्माघस्नानमसक्तौ दिनत्रयम्।। माघमासे पुरस्कृत्य स्नायात दिनत्रयमिति।। माघे प्रयागस्नान माहत्म्यं प्रयागे माघमासे तु त्र्यहं स्नानस्य यत्फलं अश्वमेघसहस्रेण तत्फलं लभते भुवि।। अथ मकरसंक्रांति फलं स्कान्देधेनुं तिलमयो राजन् योदद्याच्चोत्तरायणे सर्वान् कामनावाप्नोतिविन्दते परम् सुखम्।। माघे देयाः तैलकम्बलकाश्चैवतीर्थे देयास्तु नित्यशः। ततः प्रज्वालयेद्वह्नि सेवनार्थ द्विजन्मनाम्।।१।। एवं स्नाना वासाने तु भोज्यं देयं च वस्त्रादिकम्। भोजयेदद्विजदाम्पत्यं भूषयेद्वस्त्रभूषणैः।।२।। कम्बलाजिनरत्नादि वासांसि विविधानि चोलकानि च देयानिप्रच्छादनबस्त्रानि।।३।। उपानहौ तथा ? गुप्तमोचको पापमोचको अनेन विधिना स्नानेन माधवः प्रीयतामिति।।४।। माघमासनियमः।। भूमौ शयीत होतव्या आज्यन्तिलसमन्वितम्। सर्वान् कामनावाप्नोति विन्दते परम् सुखम्।। विष्णुधर्मोत्तरेः सौम्यायने तु विप्राय वस्त्रदाने महत्फलम्। तिलपूर्णमाषां दत्वा रोगैः प्रमुच्यते।। शिवरहस्ये च तस्यां कृष्णतिलैस्नानं कार्यचोद्वर्तनं शुभम्।। तिलादेयाश्च विप्रेभ्यः सर्वदैवचोत्तरायणे।। तिलतैलेन दीपश्च देयाः शिवगृहे शुभा इति।। प्रयागे तीर्थ स्नानमुक्तं काशीखण्डे।। काश्यां दशाश्वमेध ये तपसि स्नान्ति मानवाः। दशाश्वमेधजनितं फलं तेषां भवेद्ध्रुवमिति।। माघकृष्णचतुर्थ्यांतु प्रादुर्भूतो गणेश्वर इति। अन्नषट् तिला पापनाशनीति।। अमायांऽवशेषमाघे क्रियते दानं तद्दान मेरुसन्निभम्। तत्र सावित्रीसहित ब्राह्मणं पूजयित्वा धेनुदद्यात् हेमाद्रि भविष्योत्तरः। अमायां माघमासस्य पूजयित्वा पितामह। गायत्रीं सहितं देववेदांगभूषितम्।। नवनीतमयी धेनुं फलैर्नानाविधैर्युताम्। सहिरण्यां सवस्त्राणांचब्राह्मणाय निवेदयेत्।। कीर्तयेत्प्रीयतामत्र सनातनः पद्मयोनिः। स्थाने स्वर्गेऽथपाताले यन्मर्त्ये किंचिदुत्तमम् तदाप्नोप्यसंदिग्ध पद्मयोनेः प्रसादतः।

माघ शुक्लसप्तसंख्या येनार्चयतेरवितत् पापविनाशाय- श्री भास्करप्रीत्यर्थमरुणोदये स्नानमन्त्रः यद्यदाचरितं पापं मया जन्मसुजन्मसु। तन्मे च शोकं च माकरीहन्तु सप्तमी। यद्यदत्र कृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं स्यापि ज्ञाताज्ञातेचयेपुनः- इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तिसप्तके। सप्तव्याधिसमायुक्तेहर माकरिसप्तमी।। स्नानान्तर अर्घ्यम् दद्यात्। सप्तर्षिसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर इति। जननी सर्वलोकानां सप्तमीं सप्तप्तिके। भीष्माष्टम्यां तर्पणम्। तत्र मंत्रः। वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्य प्रवराय च। गंगापुत्राय भीष्माय सर्वदाब्रह्मचारिणे। इति।।

अथ शिवरात्रिव्रतमहात्म्यम् - परात्परं नास्ति शिवरात्रिः परात्परम्। येनार्चितं भक्तेशं रुद्रत्रिभुवेनश्वरम्।।१।। जन्म-जन्मसहस्रेषु भ्रमते नात्रः संशयः वर्षे वर्षे महादेवो नरोनारीपतिव्रता ।।२।। शिवरात्रौ महादेव नित्यं भक्त्या प्रपूज्येत्। अर्णवोयादिवा शुष्येत् क्षीयतेहिमवानपि।।३।।

फाल्गुनशुक्लपूर्णिमायां होलिका दाहः- तत्रपूजा- देशकालौ संकीर्त्य मम सुकुटुम्बस्य ढुण्ढाराक्षसीपीड़ापरिहारार्थ होलिका पूजनमहं करिष्ये। असक्तयाभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वम् होलिवालिशै। अतस्त्वां पूजयित्वाभूते-भूतिप्रदाभव इति ध्यात्वा। होलिकाये नमः इति। विहितोपचारान्ते दीपनमन्त्र। दीपयाम्यद्यते घोरे चिति रक्षांसि सप्तमे। हिताय सर्वजगतां प्रीतये पार्वतीपतेः। अनेनार्चनेन होलिका-धिष्ठत्रीदेवताप्रीयताम्। होलिकायां ज्वलितायाम्। तमग्निं त्रिपरिक्रम्यं शब्दैलिंगभगादिगतैः तेन शब्देन सा पापाराक्षसी तृप्तिमाप्नुयात्। द्वितीयदिने होलिका भस्मधारण मन्त्रः- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वं पाहिनो देवि विभूतिर्भूतिदाभवति।। होलिकावायु परीक्षा- पूर्वे राजा प्रजासुखं आग्नेमर्ग्निर्भयं दक्षिणनैऋत्येदुर्भिक्षं पश्चिमे महावृष्टि वायव्ये वायुवृद्धिः, उत्तरे सुभिक्षं इशान्याञ्च प्रजासुखं संक्षेपात्सकाल-तिथिनिर्णयः। रमभाहित्वापरविद्धा।। गणेशव्रते चन्द्रोदये ग्राहयम् ।।५।। नागपूजायां सर्वत्र पूर्वविद्धम्।।१०।। नवमीयुक्तं च शुभाऽलाभे औदयिकी ।।१।। स्मार्तरुदयव्यापिनी ।५९। दण्डालिकोपोष्या। पारणार्थाद्वादश्यांलाभे १० विद्धाप्युपोष्या। परमपोष्या।। परमवैष्णवे ५३ दण्डाधिकाया द्वादश्या मुपवासतेनकदाचिद् दशमी विद्धाया सामान्य वैष्णवः ५५ दण्डाधिकाया द्वादश्या मुपलासीनकदाचिद् दशमी विद्धाया सामान्य वैष्णवः ५५ दण्डात्मिका-एकादशी नैवोपोष्या।१२। सर्वत्र सर्वान पूर्वविद्धाकृष्णा परविद्धा कृष्णापूर्वा शुक्लापरा।।१५।।

संक्षिप्त पूजन विधि

पूजा प्रारम्भ करने से पूर्व पूजक (यजमान या स्वयं) स्वस्थचित्त होकर आसन पर बैठकर 'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः' कहकर आचमन करे तत्पश्चात् 'ॐ हृषीकेषाय नमः' उच्चारणपूर्वक हस्तप्रक्षालन कर 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥' इस मन्त्र के साथ सबसे पहले बाये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर की पवित्रता हेतु जल छिड़कने के बाद प्राणायाम करें। 'ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाःस्वति नः पूषा-व्विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्प्पतिर्द्दधातु।' इत्यादि मन्त्र के साथ स्वस्ति वाचन तथा गणपत्यादि देवताओं का स्मरण करें अनन्तर तदनन्तर हाथ में जल, पुष्प, सुपारी, दक्षिणा लेकर संकल्प करें-'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽहनि द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते बौद्धावतारे.......... नाम्नि संवत्सरे...... अयने......... ऋतौ......... मासे.....पक्षे.....तिथौ...... वासरे......नक्षत्रे शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानेषुस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां....... गोत्रोत्पन्नः....... नामाऽहं मम कायिक-वाचिक-मानसिकज्ञाताज्ञात-सकलदोषपहिार्थं श्रुति-स्मृतिपुराणोक्त-फलप्रात्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सकलकामना-सिद्ध्यर्थञ्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः पूजनमहं करिष्ये।' तत्पश्चात् सुपारी पर मौली लपेट कर चावलों पर स्थापित करें और नीचे लिखे आवाहन मन्त्र पढ़कर अक्षत छोड़ें। यदि मूर्ति हो तो पुष्प छोड़े। **आवाहनम्**- गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्॥ उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्॥ आगच्छ भगवन्देव। स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥ **आसनम्**- रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!॥ (आसनं समर्पयामि) **प्रतिष्ठा**- अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ **पाद्यम्**- उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥ (पाद्यं समर्पयामि) **अर्घ्यम्**- अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते। (अर्घ्यं समर्पयामि)। **आचमनम्**- सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्॥ आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥ (आचमनीयम् समर्पयामि) **स्नानम्**- गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥ (स्नानम् समर्पयामि)। **दुग्धस्नानम्**- कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥ (दुग्धस्नानम् समर्पयामि) **दधिस्नानम्**- पयसा तु समुद्भूतं मधुराम्लं शक्तिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (दधिस्नानम् समर्पयामि) **घृतस्नानम्**- नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकं। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (घृतस्नानम् समर्पयामि) **मधुस्नानम्**- तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधुः। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (मधुस्नानम् समर्पयामि)। **शर्करास्नानम्**- इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (शर्करास्नानं समर्पयामि)। **पंचामृतस्नानं**- पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करा युतम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम॥ (पंचामृतस्नानं समर्पयामि)

चन्दनम्- मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम्। चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (चंदन स्नानं समर्पयामि) **शुद्धोदकस्नानम्**- मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि) अनन्तर शुद्धोदवस्त्र से भगवान को पोछें तत्पश्चात् **वस्त्रम्**- सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥ (वस्त्रम् समर्पयामि) **यज्ञोपवीतम्**- नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ (यज्ञोपवीतम् समर्पयामि) **गन्धम्**- श्रीखण्डश्चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥ (गन्धम् समर्पयामि) **रोली**- कुंकुमं कामनादिव्यं कामिनीकामसम्भवम्। कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर॥ (रोली समर्पयामि) **सिन्दूरम्**- सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥ (सिन्दूरम् समर्पयामि) **अक्षतम्**- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥ (अक्षतान् समर्पयामि) **पुष्पम्**- पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः। पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥ (पुष्पम् समर्पयामि) **पुष्पमालाम्**- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो! मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर। (पुष्पमालां समर्पयामि) **बिल्वपत्रम्**- त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥ (बिल्वपत्रम् समर्पयामि) **दूर्वा**- त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि। सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरो भव॥ (दूर्वा समर्पयामि) **दूर्वांकुरम्**- दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥ (दूर्वांकुरान् समर्पयामि) **शमीपत्र**- शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टकी। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी। (शमीपत्रम् समर्पयामि) **अबीरगुलालम्**- अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ (अबीरगुलालम् समर्पयामि) **आभूषणम्**- अलंकारान्महादिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान्। गृहाण देवदेवेश प्रसीद परमेश्वरः॥ (आभूषणम् समर्पयामि) **धूपम्**- वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ (धूपम् दर्शयामि) **दीपम्**- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥ (दीपम् दर्शयामि) **नैवेद्यम्**- शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्। उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (नैवेद्यम् निवेदयामि) **मध्ये पानीयसमर्पणम्**- अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धि च पिबेच्छया। त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि॥ (मध्ये पानीयं समर्पयामि) **ऋतुफलम्**- इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि। (ऋतुफलम् समर्पयामि) **आचमनम्**- गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशेस्थितम्। आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम्॥ (आचमनीयं समर्पयामि) **ताम्बूलम् पूंगीफलञ्च**- पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ (ताम्बूलं पूंगीफलञ्च समर्पयामि) **दक्षिणा**- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ (दक्षिणां समर्पयामि) **आरती**- चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (आर्तिक्यं दर्शयामि) **पुष्पाञ्जलि**- नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ (पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि) **प्रार्थना**- रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात्॥ (प्रार्थनां समर्पयामि) अनया पूजया श्रीमहागणपतिः प्रीयतां न मम॥ इसी प्रकार अन्य देवों की भी पूजा करनी चाहिये। □

सदिग्ध व्रत-पव निणय

१. नवसंवत्सरारम्भः- 'प्रभवादि' कुल साठ संवत्सरों की शृंखला में ५२वाँ **'कालयुक्त'** नामक संवत्सर चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवार, ३० मार्च सन २०२५ से प्रारम्भ होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रविवार होने से **'सूर्य'** इस संवत्सर के **राजा** हुए। चूंकि मेष संक्रान्ति के दिन भी रविवार पड़ रहा है अतः **मंत्री का पद भी सूर्य** को प्राप्त हुआ है। वासन्तिक (चैत्र) नवरात्र का कलश स्थापन प्रतिपदा तिथि पर्यन्त दिन में २/१४ बजे तक किया जायेगा।

२. रक्षाबन्धन- रक्षाबन्धन तथा श्रावणी में इस वर्ष भद्रा आदि किसी प्रकार का दोष अथवा संदिग्ध स्थिति नहीं है अतः **९ अगस्त** शनिवार को **रक्षा बन्धन** का पवित्र पर्व दिन भर मनाया जायेगा।

३. श्रीकृष्णजन्माष्टमी- इस वर्ष भाद्रपद कृष्ण अष्टमी अर्धरात्रि में तथा रोहिणी नक्षत्र का संयोग एक साथ एक ही दिन नही बन पा रहा है, ऐसी परिस्थिति में उदय कालिक अष्टमी तिथि की प्रधानता को शास्त्र वचनों के आधार पर **१६ अगस्त शनिवार** को **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** का व्रत पर्व सबके लिए होगा। **"दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्ति चे द्रोहिणी कला रात्रियुक्तां प्रकुर्वीत विशेषेणन्दु संयुताम।"**

४. शारदीय नवरात्र- शारदीय नवरात्र में व्रत के लिए अष्टमी अर्थात् **महाष्टमी ३० सितम्बर मंगलवार** को होगी तथा **महानवमी १ अक्टूबर** बुधवार को होगी।

५. विजयादशमी- उदय कालिक दशमी तिथि अपराह्न दिन २।५६ बजे तक है एवं प्रातः ६।१८ बजे के बाद श्रवण नक्षत्र दोनों का अत्यन्त शुभफलदायी योग **२ अक्टूबर गुरुवार** को प्राप्त हो रहा है अतः **विजयादशमी** का पवित्र पर्व **२ अक्टूबर गुरुवार** को ही निर्विवाद मनाया जायेगा। इसमें किसी प्रकार के किसी सन्देह का स्थान ही नहीं है। **"उदये दशमी किञ्चित-संम्पूर्णैकादशी यदि। श्रवणर्क्ष यदा काले सा तिथिर्विजयामिधा।"** *निर्णयसिन्धु।*

६. धनतेरस- प्रदोष काल में त्रयोदशी मिलने के कारण धन **त्रयोदशी धनतेरस** एवं धन्वन्तरि जयन्ती १८ अक्टूबर शनिवार को होगी।

७. दीपावली- २० अक्टूबर सोमवार को दिन में २ बजकर ३२ मिनट तक चतुर्दशी तिथि है उसके बाद अमावस्या तिथि प्रारम्भ हो जायेगी। दीपावली के लिये प्रदोष काल में अमावस्या रहनी चाहिए जो निशीथ काल अर्धरात्रि में भी व्याप्त हो अतः **दीपावली का सुप्रसिद्ध पर्व २० अक्टूबर सोमवार** को पूरे देश में मनाया जायेगा। दीपावली में **लक्ष्मी पूजन** के लिये तीन मुहूर्त्त निर्धारित किये जा रहे हैं। १.व्यावसायिक प्रतिष्ठान जहाँ दिन में ही लक्ष्मी पूजन करने की अनिवार्यता हो वहाँ **स्थिर कुम्भ लग्न दिन २।१३ बजे से ३।४४** बजे तक। २.सर्वोत्तम **प्रदोष काल** का स्थिर **वृष लग्न ६।५१ से ८।४८ बजे** तक तथा ३.महानिशा में काली पूजा एवं तंत्र सिद्धि के लिए स्थिर **सिंह लग्न १।१९ से ३।३३ बजे** तक। स्थानीय समय के अनुसार स्थान विशेष का समय निर्धारित किया जायेगा। कृपया लग्न परिवर्तन तालिका से काशी के उपरोक्त समय में स्थानीय समय के अनुसार धन-ऋण कर समय निर्धारित कर लें।

८. होलिकादहन- होलिका दहन तीन शास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए किया जाता है। १.फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि हो। २.रात का समय हो एवं ३.भद्रा बीत चुकी हो। इस वर्ष **२ मार्च सोमवार** सायं **५।१८ बजे** से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा प्रारम्भ हो रही है तथा इसी के साथ भद्रा भी शुरु हो रही है जो रात शेष (भोर में) ४।५६ बजे तक है अतः भद्रा मुख को छोड़कर भद्रापुच्छ में रात्रि ११।५३ बजे लेकर १२।५० बजे के मध्य होलिका दहन का मुहूर्त्त बन रहा है। **"प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या पौर्णिमा फाल्गुनी सदा। तस्यां भद्रा मुखं त्यक्त्वा पूज्या होलानिशामुखे।"**

९. होली धुरेड्डी सर्वत्र- इस वर्ष ३ मार्च मंगलवार को पूर्णिमा तिथि दिन (सायं) ४।३३ बजे तक है तथा **ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** भी लग रहा है। ऐसी परिस्थिति में **चैत्र कृष्ण प्रतिपदा** ४ मार्च बुधवार को पूरे देश में एक साथ रंग की होली धुरेड्डी मनाई जायेगी। काशी में काशी की परम्परा के अनुसार ३ मार्च मंगलवार को ग्रहण मोक्ष के उपरान्त **चतुर्षष्टी (चौसट्टी)** देवी का दर्शन पूजन कर अबीर-गुलाल चढ़ाया जायेगा।

भारतीय पर्व एवं व्रतोपवास संवत् २०८२

विक्रम नवसंवत् बसन्त नवरात्रारम्भ	३० मार्च	रवि.
झूलेलाल जयन्ती	३० मार्च	रवि.
मुस्लिम पर्व ईद	३१ मार्च	सोम.
चैती छठ	३ अप्रैल	गुरु.
श्रीरामनवमी	६ अप्रैल	रवि.
महावीर जयन्ती (जैन)	१० अप्रैल	गुरु.
चैत्री पूर्णिमा, श्री हनुमद् जयन्ती	१२ अप्रैल	शनि.
मेष संक्रान्ति (सत्तू संक्रान्ति)	१३ अप्रैल	रवि.
अम्बेडकर जयन्ती, मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल	१४ अप्रैल	सोम.
बाबू कुँवर सिंह जयन्ती	२३ अप्रैल	बुध.
परशुराम जयन्ती	२९ अप्रैल	मंगल.
अक्षय तृतीया	३० अप्रैल	बुध.
आद्यजगत गुरु शंकराचार्य जयन्ती	२ मई	शुक्र.
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती	३ मई	शनि.
गंगा सप्तमी	४ मई	रवि.
श्री नृसिंह जयन्ती	११ मई	रवि.
वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती	१२ मई	सोम.
वट सावित्री व्रत (बरगदाई)	२६ मई	सोम.
भौमवती अमावस्या	२७ मई	मंगल.
श्रीगंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती	५ जून	गुरु.
निर्जला एकादशी (भीमसेनी)	६ जून	शुक्र.
सन्त कबीर जयन्ती, ज्येष्ठ पूर्णिमा	११ जून	बुध.
रथयात्रा	२७ जून	शुक्र.
हरिशयनी एकादशी	६ जुलाई	रवि.
गुरु पूर्णिमा	१० जुलाई	गुरु.
धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जयन्ती	२६ जुलाई	शनि.
हरियाली तीज (कजरी तीज)	२७ जुलाई	रवि.
नाग पंचमी	२९ जुलाई	मंगल.
रक्षाबन्धन	९ अगस्त	शनि.
कज्जली (रतजग्गा)	११ अगस्त	सोम.
कज्जली तीज, संकष्ठी बहुला गणेश चतुर्थी	१२ अगस्त	मंगल.
हलषष्ठी, ललही छठ	१४ अगस्त	गुरु.
भारतीय स्वतन्त्रता दिवस	१५ अगस्त	शुक्र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सबकी	१६ अगस्त	शनि.
कुशोत्पाटिनी अमावस्या	२३ अगस्त	शनि.
हरितालिका तीज	२६ अगस्त	मंगल.
वैनायकीवरद श्रीगणेश चतुर्थी, गणेशोत्सव	२७ अगस्त	बुध.
ऋषि पंचमी	२८ अगस्त	गुरु.
लोलार्क षष्ठी	२९ अगस्त	शुक्र.
महारविवार व्रत	३१ अगस्त	रवि.
मु.पर्व बारावफात	५ सितम्बर	शुक्र.
अनन्त चतुर्दशी	६ सितम्बर	शनि.
खग्रास चन्द्रग्रहण	७ सितम्बर	रवि.
पितृपक्ष श्राद्ध तर्पणारम्भ	८ सितम्बर	सोम.
महालक्ष्मी पूजन समापन	१४ सितम्बर	रवि.
जीवित्पुत्रिका व्रत, सोरहिया मेला समाप्त	१४ सितम्बर	रवि.
मातृनवमी	१५ सितम्बर	सोम.
विश्वकर्मा पूजा	१७ सितम्बर	बुध.
सर्वपैतृ अमावस्या, पितृ-विसर्जन	२१ सितम्बर	रवि.
शारदीय नवरात्रारम्भ	२२ सितम्बर	सोम.
महाअष्टमी	३० सितम्बर	मंगल.
महानवमी	१ अक्टूबर	बुध.
गांधी व शास्त्री जयन्ती, विजयादशमी	२ अक्टूबर	गुरु.
पापांकुशा एकादशी, भरत मिलाप (काशी)	३ अक्टूबर	शुक्र.
कोजागरी शरद पूर्णिमा	६ अक्टूबर	सोम.
पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती	७ अक्टूबर	मंगल.
करक चतुर्थी, करवा चौथ	१० अक्टूबर	शुक्र.
अहोई अष्टमी	१३ अक्टूबर	सोम.
राधाष्टमी, राधा जयन्ती	१४ अक्टूबर	मंगल.
धनतेरस, धन्वन्तरी जयन्ती	१८ अक्टूबर	शनि.
नरक चतुर्दशी, हनुमत जयन्ती	१९ अक्टूबर	रवि.
दीपावली	२० अक्टूबर	सोम.
अन्नकूट, काशी से अन्यत्र गोवर्धन पूजा	२२ अक्टूबर	बुध.
काशी गोवर्धनपूजा, भईयादूज, चित्रगुप्तपूजा	२३ अक्टूबर	गुरु.
सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ, नागनथैय्या (काशी)	२५ अक्टूबर	शनि.
सूर्यषष्ठी (डाला छठ)	२७ अक्टूबर	सोम.
गोपाष्टमी	२९ अक्टूबर	बुध.
अक्षय नवमी	३० अक्टूबर	गुरु.
हरिप्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाहोत्सव	१ नवम्बर	शनि.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	४ नवम्बर	मंगल.
कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानकजयन्ती, देवदीपावली	५ नवम्बर	बुध.
श्रीकालाष्टमी, कालभैरवाष्टमी जयन्ती	१२ नवम्बर	बुध.
रुद्रवत (पीड़िया)	२१ नवम्बर	शुक्र.
विवाह पंचमी	२५ नवम्बर	मंगल.
मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती	१ दिसम्बर	सोम.
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	४ दिसम्बर	गुरु.
क्रिसमस डे, बड़ा दिन, मालवीय-अटल जयन्ती	२५ दिसम्बर	गुरु.
गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन मत)	२७ दिसम्बर	शनि.
गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (नवीन मत)	५ जनवरी २६	सोम.
गणेश चौथ	६ जनवरी	मंगल.
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथि मत)	१० जनवरी	शनि.
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (अंग्रेजी दिनांक)	१२ जनवरी	सोम.
मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल (खिचड़ी पर्व)	१५ जनवरी	गुरु.
मौनी अमावस्या	१८ जनवरी	रवि.
बसन्त पंचमी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती	२३ जनवरी	शुक्र.
भारतीय गणतन्त्र दिवस	२६ जनवरी	सोम.
हरसूब्रह्मदेव जयन्ती, महानन्दा नवमी	२७ जनवरी	मंगल.
माघी पूर्णिमा, रविदास जयन्ती	१ फरवरी	रवि.
जानकी जयन्ती	९ फरवरी	सोम.
महाशिवरात्रि	१५ फरवरी	रवि.
आमलकी रगंभरी एकादशी	२७ फरवरी	शुक्र.
होलिकादहन	२ मार्च	सोम.
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	३ मार्च	मंगल.
होली, धुरेड्डी रंगोत्सव सर्वत्र	४ मार्च	बुध.
वारुणी पर्व योग	१७ मार्च	मंगल.
संवत्सर २०८२ समाप्त एवं नव संवत २०८३ प्रारम्भ	१९ मार्च	गुरुवार

जन्म कुण्डली निर्माण आदि

'श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्' के कार्यालय में हस्त निर्मित जन्म कुण्डली निर्माण की उत्तम व्यवस्था है।

हिन्दी में सप्तवर्गीय कुण्डली विस्तृत फलादेश के साथ
पारिश्रमिक २३००/- (डाक व्यय सहित)
नोट-पूर्ण विवरण रजिस्टर्ड डाक से एवं पूर्ण भुगतान मनीआर्डर द्वारा अथवा Online भेजने पर ही कुण्डली बनाई जायेगी।

1. कुण्डली बनवाने के लिए नाम, पिता का नाम, पितामह (दादा) का नाम, गोत्र, जन्म दिनांक, जन्म समय दिन/रात तद्नुसार अंग्रेजी तारीख का उल्लेख करते हुए जन्म-स्थान, को स्पष्ट अक्षरों में लिखते हुए अग्रिम भुगतान **मनीआर्डर** द्वारा 'श्रीमती कान्ति ओझा' के नाम से भेजने पर कुण्डली पंजीकृत डाक द्वारा भेजी जायेगी। **पूर्ण विवरण के साथ पूर्ण भुगतान भेजना आवश्यक है।** यदि आप आनलाईन/फोन के माध्यम से विवरण एवं कुण्डली का पारिश्रमिक भेजना चाहते हैं तो-9650573653 पर श्रेयांश ओझा के नाम से Google Pay अथवा PhonePe से भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए उपरोक्त मोबाईल नम्बर पर सम्पर्क करें। अपना पूरा पता पिन कोड एवं मोबाईल नम्बर सहित अवश्य दें जिस पर तैयार कुण्डली भेजी जायेगी।

☛ केवल कुण्डली निर्माण के लिये ही इस नम्बर पर सम्पर्क करें।

2. यदि आप मात्र ज्योतिष से सम्बन्धित परामर्श या समाधान चाहते हैं तो अपना नाम, जन्म का दिनांक, जन्म का समय तथा जन्म का स्थान मोबाईल फोन पर भेज दें। संक्षिप्त कुण्डली बनाकर आवश्यक फलादेश कर आपके प्रश्न का उत्तर मोबाईल फोन (whatsapp) से भेज दिया जायेगा। इस कार्य के लिये निर्धारित पारिश्रमिक 1100/- गूगल पे, अथवा फोन पे से 9650573653 पर भेजना होगा। पारिश्रमिक एवं विवरण दोनों एक साथ भेजें।

पत्र व्यवहार का पता-

रामेश्वरनाथ ओझा एम.ए. ज्योतिषाचार्य
प्रधान सम्पादक

श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्
कार्यालय

बी. ३७/१८२-क, खन्ना वाटिका, बिरदोपुर, वाराणसी-२२१०१०
ज्योतिष सम्बन्धी विमर्श के लिये पत्र भेजें, उत्तर दिया जायेगा।

सत्वाधिकारी रामेश्वरनाथ ओझा की ओर से आनन्द अग्रवाल द्वारा मुद्रित तथा सह प्रकाशक सावित्री ठाकर प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित।

नोट-प्रस्तुत पंचाङ्ग में हर संभव सावधानी बरती गयी है। फिर भी मुद्रण या मानवीय भूल संभव है। सुझाव या समाधान के लिए फोन नं. 9369516832 पर संपर्क करें।